

कृष्णप्रिया ॥

अर्थात्

श्रीमद्भागवत दशमस्कन्धका भाषा उल्था

जिसमें

श्रीपरब्रह्मपरमात्मा कृष्णचन्द्र अविनाशी सच्चिदा-
नन्दराशीकी लीलाओंका वृत्तान्त और कंस
जरासन्ध आदिक राक्षसोंका बध अत्युत्तम
छन्द प्रबन्धमें वर्णितहै

जिसको

विद्वद्वृन्द शिरोमणि मुंशीमङ्गलीलालजी मुख्य पाठक
पैंतेपुर प्रदेश सीतापुरने विद्यारसविलासियों
और श्रीकृष्णलीला उपासकों के अनुरा-
गार्थ संस्कृत श्रीमद्भागवतका ब्रज
भाषामें उल्था किया

द्वितीय बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
दिसम्बर सन् १८९५ ई० ॥

२६ जुज २ वर्क ॥

सूचना ॥

अनेक प्रकार की पुस्तकें इस यंत्रालय में मुद्रितहुईहैं उसमें से जितनी काव्य हैं उनसे चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखीजाती हैं जिन महाशयों को इसमें से किसी पुस्तककी आवश्यकता होवे इस प्रेसके मेनेजरको पत्र लिखकर मँगालें तथा पुस्तकों का जो सूचीपत्र छपा है वह भी मँगाकर देखलें ॥

विश्रामसागर ॥

जिसको महन्त श्री रघुनाथदास रामसनेहीने प्रेमियों के लिये बनाया जिसमें छहों शास्त्र और अठारहों पुराणों के मत और नवीन रीति से श्रीकृष्णचन्द्र व रामजी के सरल चरित्र पद्य में रचे हुये हैं ॥

हफ़ीजुल्लाहखांकाहज़ारा ॥

बातसवीर जिसका संग्रह हरदोई प्रदेशान्तर्गत बन्नापुरके मुदर्रिस हफ़ीजुल्लाहखांने किया है इसमें उत्तमोत्तम भाषा कवियों के कवित्त हरएक विषयके युक्तहैं जिसके देखने से रसिकोंको बड़ाही आनन्द प्राप्तहोताहै ॥

नखशिखहज़ारा ॥

जिसमें श्रीराधिकाजी महारानीके नखशिखका वर्णन पद्माकर, पजनेश, परताप, प्रवीन, बेनी, बलदेव, बलभद्र, ब्रह्म, भूषण, भगवंत, मतिराम, मुबारक, रघुराज, रघुनाथ, रसखानि, शम्भु, हठी द्विवाकर, सेनापति दूलह इत्यादि कवियोंके बनायेहुये २३७ दोहे व १००० कवित्त और सवैया विद्यमान हैं ॥

गोवर्द्धनबिलास ॥

गोवर्द्धनदासकृत इसमें ब्रजबिलासकी सम्पूर्ण कथा मंगल, दोहा, सोरठा आदि छन्दों में है छापा पत्थर है ॥

कृष्णप्रिया का सूचीपत्र ॥

अ०	वर्णन	पृष्ठ	अ०	वर्णन	पृष्ठ
१	पीढ़ाबंध कंस जन्म देवस्तुति	२१	२९	बरुण लोक बैकुण्ठ चरित्र	१०९
२	देवकी बसुदेव विवाह नारदोपदेश बालक बध ॥	२७	३०	श्रीकृष्ण अन्तर्धान	११४
३	संकर्षण जन्म गर्भ स्तुति	३२	३१	गोपी बिरह	११८
४	श्रीकृष्णचन्द्र जन्म	३५	३२	गोपी बिरह कथनं	१२०
५	कन्याबध कंसोपद्रव	३८	३३	गोपी श्याम सम्वाद	१२३
६	श्रीकृष्ण जन्मोत्सव नंद मथुरा गमन	४१	३४	पंचध्यायीरहस्यलीलाकथनं	१२७
७	पूतना बध	४४	३५	विद्याधर मुक्ति शंखचूड़ बध कथनं	१३०
८	सकटासुर तृणावर्त बध	४७	३६	गोपी विनोद	१३२
९	कृष्ण बाललीला यशोदा विश्व दर्शन	५२	३७	कंस नारदादि सम्बाद	१३९
१०	श्रीकृष्णचंद्र दाम बन्धनं	५४	३८	केशी व्योमासुर बध	१४२
११	यमलार्जुन मोक्ष	५७	३९	अक्रूर वृन्दाबन गमन	१४५
१२	गोकुल बास प्रयाग बच्छासुर बकासुर बध	६१	४०	अक्रूर विष्णुरूप दर्शन	१४९
१३	अघासुर बध	६३	४१	अक्रूर स्तुति	१५१
१४	ब्रह्मा बच्छ बालक हरण कृष्ण माया	६६	४२	श्रीकृष्णचंद्र मथुरा प्रवेश	१५६
१५	ब्रह्मा मोह	६८	४३	कंस स्वप्न दर्शन	१६०
१६	धेनुक बध	७१	४४	कुबलया बध	१६४
१७	काली मर्दन	७१	४५	कंसासुर बध	१६७
१८	दावाग्नि मोचन	७७	४६	शंखासुर बध	१७८
१९	प्रलम्बासुर बध	७९	४७	ऊधौ वृन्दाबन आगमन	१८२
२०	दावाग्नि हरण	८१	४८	गोपीसम्बोधनऊधौआगमन	१९०
२१	बर्षा शरत्ऋतु वर्णन	८३	४९	कुब्जा केलि	१९२
२२	बंशी आख्यान	८४	५०	अक्रूर हस्तिनापुर गमन	१९५
२३	चीर हरण	८८	५१	जरासंध पराजय द्वारकाबास कालयमन आगमन	२०५
२४	द्विज पत्नी दर्शन	९४	५२	कालयमन बध मुचकुंद उद्धार मथुरा परित्याग	२११
२५	गोबर्धन पूजन	९९	५३	श्रीकृष्णप्रति रुक्मिणीसंदेश	२२१
२६	इंद्र मानभंग	१०२	५४	रुक्मिणी हरण	२२८
२७	परस्पर बार्त्ता	१०३	५५	रुक्मिणी विवाह चरित्र	२३७
२८	इंद्र स्तुति	१०६	५६	प्रद्युम्नस्य उत्पत्य सम्बरबध	२४२
			५७	जामवंती सतिभामा विवाह	२४९
			५८	शतधन्वा बध	२५७

अ०	वर्णन	पृष्ठ
५९	श्रीकृष्ण पंच बिवाह	२६७
६०	भौमासुर बध	२७७
६१	श्रीकृष्ण रुक्मिणी हास्य बिवाद	२८१
६२	अनिरुद्ध बिवाह रुक्म बध	२८७
६३	ऊषा स्वप्न अनिरुद्ध ग्रहण	३०२
६४	ऊषा चरित्र	३१२
६५	राजा नृग मोक्ष	३१६
६६	बलभद्र ब्रज गमन	३२०
६७	नृपति पौन्द्रक मोक्ष	३२५
६८	द्विबिद बध	३२७
६९	साम्बु बिवाह	३३१
७०	नारद माया दर्शन	३३५
७१	युधिष्ठिर संदेश	३३८
७२	श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गमन	३४१
७३	जरासंध बध	३५०
७४	श्रीकृष्ण नृप गण संयुक्त हस्तिनापुर गमन	३५३
७५	शिशुपाल मोक्ष	३५९
७६	दुर्योधन मानभंग	३६१
७७	शालव दैत्य बध	३६७
७८	बक्रदंत बिदूरथ सुत बध	३७०
७९	बलराम तीर्थ यात्रा	३७३
८०	सुदामा द्वारकाँ गमन	३७७
८१	सुदामा दरिद्र हरण	३८०
८२	श्रीकृष्ण बलराम कुरुक्षेत्र गमन	३८६
८३	स्त्री गीत	३८८
८४	बसुदेव यज्ञ	३[illegible]
८५	देवकी मृतक पुत्र याचन	३९४
८६	सुभद्रा हरण श्रीकृष्ण मिथिलागमन	३९८
८७	वेद स्तुति	४०१
८८	बकासुर मोक्ष	४०४
८९	द्विज कुमारा गमन	४१०
९०	द्वारका बिहार	४१४

इति ॥



अथ कृष्णप्रिया

पूर्वार्द्ध

सोरठा

धर्म अनुज पितु मित्र ता अरि तनय कृपाल चित।
जिनके अमित चरित्र बन्दौं पद तिनके सहित॥
सिन्धु सुता पति जौन रक्षक भुवन सुचारिदश।
दया करौ प्रभु तौन बन्दि चरण वरणौं सुयश॥
उमा रमण यशधाम पञ्च बदत सुन्दर सुखद।
द्ववौ सुदायक काम संत अमंतन को दुखद॥
सरवरसुत सुत नाम वेद बदन शोभित सुभग।
वरणत हरिगुण ग्राम द्रवौ लहौं शुभ ग्रंथ मग॥
बंदौं शक्ति अनादि जाकृतत्रै अरु पंचदश।
लखत न सुर ब्रह्मादि द्रवौ सुवरणौं कृष्णयश॥

गुरुपदरज हरि कर सम जानी। बंदौं समुद जोरि युग पानी॥
कुमतितिमिरहरसुमतिबढ़ावनि। ज्ञान कंज सर उर हुलसावनि॥
भ्रम तारे अदृश्य कृत सोहै। कृष्णाचंद मलिन द्युति जो है॥
दुबिधा निशा अंशजनु मेटनि। बुधि आतम चकईपति भेटनि॥
छल प्रपंच अज्ञान अपारे। विघ्न विषय तस्कर हियहारे॥

मन सुजान भल पाइ प्रकाशू । शुचिह्वै हरियश बरणहिंआशू ॥
गुरु उपमाके योग तिहुँलोका । कविकोबिद काहू न बिलोका ॥
पुनि अब बन्दि मात पितु देवा । जिनके शुक्र बपुष मम एवा ॥
दो० सोदयाल ह्वै मातु पितु आशिष दीजिय नीक ।
नशै सकल कलिकालिमा होइ सुभग मति ठीक ॥
बहुरि बन्दि हनुमान कपीशा । जिनयशसरवरभणतकबीशा ॥
चारुघाट रघुवीर मिलानी । सिन्धु तरब शुभभरा सुपानी ॥
सुरिसा तोषब निशिचर मारिब । लंकिनिहनबन अदुखउजारिब ॥
रावण सुत संग्राम अपारा । बन्धन रावण बचन बिचारा ॥
बढ़ब लँगूर लंककर जारन । सोइजनुबसतजीव जलचारन ॥
सियसुधि रामहिं कहब सहेता । सेतु बंध रण चरित समेता ॥
रजनीचर मारण बहुतेरे । ते जलजन्तु लसत जल नेरे ॥
औषधिसहित द्रोणगिरिलाउब । शरअगाधता लषणजियाउब ॥
दो० कुम्भकरण रण भांति बहु अपर निशाचर युद्ध ।
सोहत सर ढिग वृक्ष जनु सफल सपल्लव शुद्ध ॥
हरिजिनि रावण विविध लराई । सरतट चतुर चारु अमराई ॥
दुहिता मिथिलप राममिलावन । सोइनिरमलताजनुजलपावन ॥
कहब भरतसन प्रभु आगमनू । बुध मधुरत्व सुजन दुखदमनू ॥
अपर अनेक चरित हरिकेरे । प्रफुलित सरजस कमलघनेरे ॥
राम भरत सन कह कपिकरणी । अलिवत ताहिपावीशनवरणी ॥
हरिहयमखरण विविध विलासा । शुभ पराग मकरन्द सुबासा ॥
अचल भक्ति रघुपतिपदपावनि । मनुसमीरशुभबहत सोहावनि ॥
ब्रह्मज्ञान रत हरिय अभंगा । शुचि तड़ाग जनुउठततरंगा ॥
अबुध जेन हरिरस लवलीना । तृषा मनोरथ फिरत मलीना ॥
बिषयक नैन सूझसर नाहीं । कौनभांति सरढिगलघुजाहीं ॥
ब्याकुलफिरत नरनजगबूझत । मधुरोदकसरसो नहिं सूझत ॥
मेधा धाम चतुर भव जेई । मज्जत यहि सरसानँदतेई ॥
दो० दुबिधा दोष अनेक जे बिघ्न भयंकर भाव ।

जानि मैल जनु आपु कर तनसे सकल छुड़ाव ॥
जाकर यश अस सुभगसर सो कृपालकपिराज ।
बिघ्न दोष सब नाशिये रहै दासकी लाज ॥
यह यशहौं बरणौं बहु बारा । सुन्दर कबिता विविध प्रकारा ॥
आकांचा जो जीव मम भयऊ । कपिपतिदास जानिसोदयऊ ॥
अबकी बार भरोस तुम्हारा । करयो कृपा जेहिलागौं पारा ॥
दोष अमित ममतन अनुमानी । कोपन करयो चम्योजनजानी ॥
सालंकार विविध कबिताई । छन्द ग्रन्थ नानाबिधि गाई ॥
नवरस कबित भाव कबितीनी । उपमा अमित भांति करिदीनी ॥
संधि दोषयुत भंग कराला । उत्क्रमछन्द दीख गणमाला ॥
देशकाल आगम बिपरीता । अनरस कबिता भणी अभीता ॥
अक्षर ललित अर्थ बिधिनाना । कीन अमितधा कबिनबखाना ॥
सो मोरे बल एको नाहीं । कह्यों एकरस कबितामाहीं ॥
आश पवनसुतकी उर मोरे । बारबार तेहि कहौं निहोरे ॥
सकल दोष कविता के जोई । नाशिहिसकलकीशपतिसोई ॥
दो० दयासिन्धु अंजनितनय जानि दास निजमोहिं ।
बिघ्न दोष रक्षाहि लगि याँचौं स्वामी तोहिं ॥
बहुरि शारदा पद जलजाता । विनऊंसमुद्‌जानि बुधिदाता ॥
चारि खानि संगम संसारा । तिनमहँ उत्तममनुजविचारा ॥
सो प्रताप वाणी करभाई । जेहिकरि बिबुधकरतनिपुणाई ॥
होहु सहायकमे कमलासिनि । जिह्वाग्रेममहोहुविलासिनि ॥
पाइ प्रताप तोर सुनु माता । वरणौं कृष्णचरितसुखदाता ॥
दश दिग्पालन शीश नवाऊँ । दूवौसमस्त सुमतिजेहिपाऊँ ॥
सर्व देव जे तेंतिस कोरी । विनवौं सबहिं दोउकरजोरी ॥
निज जन जानि दूवौ सबसोई । मोर मनोरथ पूरण होई ॥
दो० पितृदेव ऋषिराज मुनि सब के चरण मनाइ ।
वरणौं विशद चरित्र यह सुनिकलिकलुषनशाइ ॥
सूरज चंद्र सकल तारागन । विनवौंदूवौजानिसबनिजजन ॥

सनकादिक ऋषि नारदयोगी । परमारथ रत राग वियोगी ॥
सुनि विज्ञप्ति जानि अनुगामी । बुधिवर वरददवौमुनिस्वामी ॥
इलाविवुध गुणखानि अपारा । वेदवाक्य भव करण प्रचारा ॥
निर्णय करनहार आगमके । अपरमनुज भूसुरकेसमके ॥
चरण तामरस तिनके ध्याऊँ । दयाकरैं निर्मल बुधि पाऊँ ॥
ब्रह्मवंश सम तिहुँपुर माहीं । ज्ञानदृष्टिकरि दीसति नाहीं ॥
चरण प्रहार सहाँगरुड़ासन।चिह्नितअजहुं चिह्नलहदासन ॥

दो० विप्रवृंदजन जानिनिज अमल बुद्धिवरदेहु ।
अर्थभंग अचलितवरण शोधिसुधारखोतेहु ॥

बहुरि विप्रमंडलिहि प्रणामा । करिवरणौंयदुपति गुणग्रामा ॥
भूत कालके कवि बुधिवाना । वरणेजिनहरियशविधिनाना ॥
वर्तमान कबि विबुधघनेरे । जेगावत हरि यश हरिचेरे ॥
होनहार जे अगमन भाई । प्रणवौं सबहि सुप्रेम दृढ़ाई ॥
कस्यो अनुग्रह बालक जानी । जेहि न होइ पाछेते ग्लानी ॥
संतन सभा देवसरि बन्दौं । जिनअशीशविधिसकलअनन्दौं ॥
प्रगटी धर्म हिमाचल सोई । जल विचार परिपूरण जोई ॥
पर उपकार विराग करारे । शुभआचरण मिलतनदनारे ॥

दो० भक्तिधार आवर्त शुभ तर्कविबुध विज्ञान ।
जहँ तहँ सुजननहातजनुभल इतिहासपुरान ॥

चलत विवेक समीर सुजाना । उठत तरंग ज्ञान विज्ञाना ॥
ढाहत कुमति कूरता रूखा । छहुऋतुसरसकतहुँनहिंसूखा ॥
मोक्ष उदधि मिलत सोधाई । बड़भागी यहि सरि जो नहाई ॥
निमिषमात्रसंगातिजलकणजनु।परतिभक्तिमनकरतिअचलमनु॥
सतसंगति जिनकी सुरसरिता । सबविधिफलदमनोहरचरिता ॥
तेहरिभक्त जानि निजदासा । करौ दया पूजै मम आसा ॥
मूरख वादी सुमति विहीना । तिनमहँप्रथमआपुमैं चीना ॥
हरिजन चम्यो मूढ़ता मोरी । करतकथाबड़ि ममम‌तिथोरी ॥
दो० जिमि दारिद्री जन्मकरकरतमनोरथराज ।

बिन सहाय छलबलअनी अंतउठावत लाज ॥
यहिकारण मैं सन्त मनाऊँ । आशिष राज मनोरथ पाऊँ ॥
वेदव्यास बिनवौं करजोरी । पुरवौ नाथ शुभेच्छा मोरी ॥
मीन कमठ बन्दौं पदकोला । नरहरि दायाकरौ अतोला ॥
बावन भृगुनायक रघुनाथा । द्रवौछोह निधिजानि अनाथा ॥
कहा चहौं तुम्हारि प्रभुताई । कृष्ण रूपधरि करयो गोसांई ॥
पुनि बसुदेव देवकी दोऊ । ध्यावति द्रवौ जान जनसोऊ ॥
तुम्हरे गेह जन्म हरिलीना । सुखदचरितनानाबिधिकीना ॥
बहुरि नंद यशुमति पदध्याऊँ । जिनकी कृपा कृष्ण यशगाऊँ ॥
गोप सखा जे हरिके साँचे । परिहरिं सकल कृष्ण रसराँचे ॥
धेनु बच्छ जे कृष्ण सँघाती । जड़ जंगम पुनिनाना जाती ॥
बन्दौं सब ब्रज भूमि बसेरी । जेहिते सदृढ़ होइ मति मेरी ॥
भानुज सरि प्रणाम करि आसू । कृष्ण स्थल विहार तटजासू ॥
दो० बन्दि बहुरि राधा जननि सखी सहेली तास ।
ह्वै प्रसन्न दीजौ सुमति हरि यशकरौं प्रकास ॥
निजकुल पूज्य बड़े अरु बारे । सुहृद बन्धु जे हितू हमारे ॥
पद सरोज तिनके शिरनाऊँ । कृपाकरैं उत्तम मति पाऊँ ॥
शेषनाग पद कमल नमामी । करौ अनुग्रहलखि अनुगामी ॥
अबहौं दुष्टन करौं प्रणामू । अनस्वारथ भव जे अघधामू ॥
क्रूर कुटिल क्रोधी बिन कारण । धर्मबृक्ष करि मूल उपारण ॥
हरि हर यश हरिरूप निहारी । चपरिचलहिं खलजग छलकारी ॥
प्रफुलित पर अकाज कृत कैसे । लहिनिधि रंकमुदितमनजैसे ॥
पर अवगुण बरणत मुदपाई । जिमिजनहरियशकहहरषाई ॥
पिशुन कर्म महँ असबलदाई । नागार्जुन को सुररिपु भाई ॥
साधु समाज लखत नहिं सोई । अचत अक्ष अंधवत होई ॥
परतिय परधन लखत सहेतू । लहत प्रभुत्व जगोदय केतू ॥
हित अनहित सुसती व्यभिचारी । निरखतअधमाधमअघकारी ॥
दो० हरिहर अज गणपति गिरा अपर देव इन्द्रादि ।

प्रेत पूज्य चांडाल नर इनहिं कहत शठबादि ॥
ऐसे आन कराल खल गनिन सिराहिं अपार।
मनबच क्रम कर्त्तव्य तजिलेहु प्रणाम हमार ॥
भयकर भय मोहिं यहिथलनाहीं। जसहौं डरत खलन मनमाहीं॥
जोरेकर विनवत यहि तेरे। ह्वै दयाल सुख लहहु घनेरे ॥
बालक वय बुधि थोरि हमारे। दयादृष्टि सों रहेउ निहारे ॥
यदपि विनय मैं कीन्ह बहूता। सुन्योनतिन जनुबाहिर सूता॥
जिमि सपेर कोउपाल भुजंगा। क्षीर पियाइ चढ़ावत अंगा॥
अतिहित सहराखत नित ताहीं। तदपि दुष्ट कतहुँक डसिखाहीं॥
हितून अनहित हीयें नीके। कटुते मग्न विनय ते फीके ॥
सत्य अनुख असत्य प्रियबाणी। मगविपरीतमिलतजड़प्राणी ॥
दो० जो दुष्टन नयके चलत तासु करत खलनास।
बैर प्रीति मोहिं भाव नहिं संग तजब अनयास ॥
अब बन्दौं श्रीकृष्ण कृपाला। जनमन रंजन दीनदयाला ॥
विपति विभंजन सज्जन पालक। श्रीबसुदेव देवकी बालक ॥
साधुबन्धुखलनिशिचरघालक। सुजनसुहृद अरुअरिउरशालक ॥
नील सरोज रूप मृदुबोला। अधर बिंबशुचि सोह कपोला॥
दाड़िम पंक्ति दशन की शोभा। हास्यविलोकिउडुपमनलोभा॥
कीरतुंड नासा छबि सोहै। कर्णोपमा कहै कबि को है ॥
अरुण नयन भृकुटी धनुमारा। बिशद त्रिपुंड्र बिराज लिलारा॥
मेचक कच कुंचित कंगोला। काकपच्छलखिमुनिमनडोला॥
दो० मुकुटसोह शिर नाग रिपु पच्छ कहत कविराज।
कंबु कंठ कंधासु हरि भुजा प्रलंब बिराज ॥
अरुण कमल श्यामल यथा तथा हस्त ब्रजनाथ।
जेहिकर जलथल व्योमचर सबकोउहोत सनाथ ॥
उर बिशाल कटि केहरि सोहै। पीत बसन तापर मन मोहै ॥
कोमल कंज चरण अरुणारे। संत मनालि निरखि अपुहारे॥
नखद्युतिद्विजपतिकरकर हाँसी। तापइषूजंकुमतिलखिनासी ॥

कहिको कहै को कहिहै आगे। वरणत रूप चित्त अनुरागे॥
जो स्वछंद अद्वैत कहावै। पटतर तासु कहां कबिभावै॥
उपमा सकल कही यहनीकी। समुझत रूप लगतसो फीकी॥
रूपजासु अस अलख अपारा। कृपा करौ शरणागत पारा॥
उज्ज्वल यथा चपाकर आहीं। तस चरित्र तव दूषित नाहीं॥
जानिअनाथदयानिधिस्वामी। करौ छोह हरि अंतरयामी॥
यशतुम्हार अति अगम अपारा। कथनतासु हौं हृदय बिचारा॥
अस हौं मूढ़ कहौ को ऐसो। दुखिया चहत भूपपद जैसो॥
जोपै कृष्ण कृपा तव होई। कहौंकछुकनिजमतिसमसोई॥

दो० बंदि बहुरि रेवतिरमण दयाधीश सुख खानि।
सुमतिदीजियेकृपाकरि निजकिंकरअनुमानि॥

कृष्णमीत अर्जुनहिं मनाऊं। जानि धनुर्द्धर शीश नवाऊं॥
उद्धव उग्रसेनि इत्यादी। छपन कोटि यदुवंशी गादी॥
करि प्रणाम अति सहित सनेहू। कहा चहौं हरियशयुत नेहू॥
श्री शुकदेव परम विज्ञानी। द्वादश खंड पुराण बखानी॥
दशमस्कंध कृष्णकर लीला। कही महामुनि ज्ञानसुशीला॥
सुन्यो परिक्षित नृपति सहेता। मिटीकुमति उपजी चितचेता॥
सोइतिहास विदित जगमाहीं। तदपिकथबअनस्वारथनाहीं॥
सुगम पंथ यश नृपकरि देहीं। धनीदुखी सो मगगहि लेहीं॥

दो० तिमिश्री शुककृत दशम शुभता आशय के तूल।
बंदिचरण रुक्मिणि रमण बरणौं कथा अभूल॥

रुक्मिणि सतिभामा बसुरानी। बिनवौंसबहिंकृष्णप्रियजानी॥
निजसुत जानि द्रवौ सबमाता। तवयशसुभगकथौंसुखदाता॥
स्थावर जंगम दुबिधि जहाना। ध्यावतसकलसुलभकल्याना॥
अबहौं कहौं सुभग रुचिमनकी। जानतरीतिप्रीतिप्रभुजनकी॥
समय वृथा हौं जात निहारा। भैरुचि कथौं कृष्ण अवतारा॥
बुधि भरोसनहिं काछनि काछी। हैयकप्रबलआशहरि आछी॥
यथा मशक प्रणमेरु उठावन। अथवा पंगुपार गिरिधावन॥

तस यह अहै मनोरथ मोरे। पुरयहु कृष्ण कहौं करजोरे॥
दो० तराचहै सुरसरिहि जिमि लघुपपीलिका कोइ।
बिन तरणी सतसंग के पारलहै नहिं सोइ॥
हठकरि जो उतरै तेहि माहीं। निस्सन्देह पारलह नाहीं॥
उडुप दशम चढ़ि कीट बिचारा। जैहै कृष्ण कृपा तरिपारा॥
मास नभस्य सुभगसित पाषा। अदितिजातगुरुदिनकृतभाषा॥
संवत जीव नदी तट देखे। भक्ति ब्रह्म संयुक्त विशेखे॥
शाकः राग योग के अंगा। भूधर धरा लखे यक संगा॥
कीन्ह कथा तेहि समया रंभा। ममगति थोरि सोऊ सहदंभा॥
मन चंचलहि बहुत हौं रोंकत। तदपि दुष्टभव राग बिलोकत॥
जब यहि पौरुष रहै न रंचा। तबखल त्यागिहिबिषयप्रपंचा॥
दो० तजि प्रपंच ह्वै शुद्ध मन करै बुद्धि सतसंग।
अब निज मनको रोंकिकै वरणौं चरित अभंग॥
बंदि चरण शुकदेवके सुनि पुराण कृत तास।
भाषा करि वरणौं चरित कृष्ण सुनत अघनास॥
निज कर्त्तव न बिबुध चतुराई। श्रीशुकदेव कथा कथ भाई॥
कठिन ग्रंथ व्याकरण बखाना। समुझत पंडित चतुर महाना॥
भाषा माहिं कबिन बहुभांती। भन्यो कृष्णयशपातकघाती॥
पढ़िगुणि सुनि ते सुखदप्रबंधा। सहजस्वभाव कीन्हयहधंधा॥
देख्यों विषय बयारि कराला। कलि कुपंथ दम्भीचण्डाला॥
होत न सुरुचि कुरुचि मनकेरी। विषनतजतजिमिमलयबसेरी॥
यहि मिसहौं कहिहौं हरिनामा। दुखनलहौंजेहिकरियमधामा॥
भाषा लखि भाषा यह गाई। सोइ गुणनिधिपढ़िदेइबड़ाई॥
दो० विद्या गुण नहिं अधिकतन सुखदबिबुध सतसंग।
निज मति के अनुसार हौं गावत सुभग प्रसंग॥
सो० पढ़ि हँसिहैं बहुलोग लखि प्रबंध भाषा सरल।
भय न हँसे के योग प्रथम विचारौ हँसौ पुनि॥
बुधजन हँसैं होइ गिल्यानी। मूरुख हँसै तर्क अनजानी॥

जिमि किरात कोउ पारस पावै । सुठरदेखि तेहि निजकरलावै ॥
पाथर जानि डारि मग देहीं । दुखनलगै कछु पारस तेहीं ॥
जो पारख कर पारस पाई । बिन परखे तेहि त्यागै भाई ॥
तौ बड़ दुख पारस उर होई । असजेहिकथिनसकैबुधकोई ॥
कथा रसाल कृष्ण करतूती । पढ़तसुनतलहविमलविभूती॥
तेहिकरि मंजिमुकुर मन ज्ञानी । वरणतकथाविविधगुणखानी॥
भरा भक्तिरस कविता माहीं । गूढ़ाशय अनरसयुत नाहीं ॥
दो० चहु कोउ गुणौ प्रवीणजन चहु कोउ हँसै गँवार ।
दुहूं भांति भल कृष्णयश गावत होइ हमार ॥
सर्वोपरि कीरति विमल हरि की हृदय विचारि ।
तीनिकाल श्रुति शास्त्र भण है दायक फलचारि ॥
मुक्ति चारि विधि वेद बतावत । यहगावतते सुलभहिपावत ॥
नवधाभक्ति भजन नव जोहैं । हरियशगुणतमिलतिसबसोहैं॥
तीरथ ब्रत मख पूजा ठाने । जोफल सो हरि चरितबखाने ॥
सुरपादप जो भिक्षुक पावै । गृहप्रतिबहुरि जोमानगँवावै ॥
तौ बड़मूढ़ कुमति वश प्रानी । अभिमतदानितजोतटजानी ॥
इमि मतिमंद अहैं ते लोगा । हरियशत्यागिआनकृतयोगा॥
कंजसुवन मृडादि सब देवा । हरिपद परासि कृतामितसेवा ॥
अससुरपूज्य विष्णु यश धामा । धरिनिररूप कीन्ह जो सामा ॥
दो० श्रीशुकदेव सो सब कथा कही सहित विस्तार ।
समुद वरणि इतिहास सो कहौं तासु अनुसार ॥
छं०॥ इतिहाससोअतिसुखदपावन ज्ञाननिधि मुनिवर कही ।
सो समुझि सुनि गुणि बुद्धि निज समबरणि अब कहिहौंसही ।
कबि कुशलकोबिद चतुर सज्जन कृष्ण गुणगायक मही ।
ते जानि बल दायालहू जो शरण हौं साँची गही ।
सो० बरणत कथा रसाल सुनौ चतुर कोबिद कुशल ।
आनँदमय सबकाल कृष्णचरित पातकहरण ॥
जब कुरु पांडव समर सिराना । भये कृष्ण तबअन्तरध्याना ॥

पांडव क्लेश ग्रसित भे भारी। सुतजराज्यपद करिअधिकारी॥
हिमिगिरि प्राणतजनते गयऊ। गजपुरशोक मग्नसबभयऊ॥
प्रजापाल धार्मिक नृप कैसो। पुराभूप हरि बिधु भो जैसो॥
अमित महिपजित भूप बलिष्टा। सर्बकाल माधव पद इष्टा॥
गयेकाल यक दिन नरपाला। गयोअखेटबिपिनघनजाला॥
देखि धेनुयक वृषभ समेता। भागत तिनहिं नीच दुखदेता॥
मूशलकर पाछे ते मारत। कटुबचमुख निज शूद्र उचारत॥
निकट जानि तब भूप बोलाई। कह्यो क्रोधयुत बयन रिसाई॥
हे चांडालतुको अघ रूपा। हनत वृषभगो कह असभूपा॥
का जानसि मारग बिनधरनी। ताते अभय करत अघकरनी॥
पांडु बंश कब तू अस पावै। जेहि सन्मुख खल दीनसतावै॥

दो० असमणि भूप सक्रोधकरि गह्यो तीव्रकरबाल।
देखि शूद्र भयभीत ह्वै ठाढ़ भयो ततकाल॥
बहुरि नृपतिगो वृषभ कहँ निकटहंकारि सप्रेम।
पूछ्योको तुम कहो निज समाचार युत क्षेम॥

देव बिप्रको तुम केहि लागे। दुखितजात खल आगे भागे॥
निडर होहु जनि नीचहिडरहू। राज मोर निजहित चितधरहू॥
को समर्थ दुखदातुव भव मैं। रक्षक सायुधहौं जग सब मैं॥
सुखद बचननृप बृष सुनिबोला। शशिनवाय सुबचन अमोला॥
महाराज यह शूद्र कराला। भयदायक मूरति बिकराला॥
कज्जल नगवत लखौ स्वरूपा। सन्मुख ठाढ़ सोहै कलिभूपा॥
आगम जानिजात अब भागा। चतुष्पाद हौं धर्म्म सभागा॥
सततप अरुबिद्या पुनिदाना। मोर चरण श्रुति वेद बखाना॥
गोतन धरे धरा सुनु राजा। कलिडर भागीजानिअकाजा॥
कृतयुग विंश अंश ममराजे। त्रेता चतुर्भाग बिनछाजे॥
द्वापर अर्द्ध सुकलि चौथ्याई। यहि कारण हौं चल्यौं पराई॥
कलि कुपंथ नृपममन निबाहू। तिमिर हरण हौं यहुखलराहू॥

दो० दीनबचन बोलीधरा सुनिय धर्म्म अवतार।

कलिमहँ किहिबिधि रहौं अबसुनु नृप कलिव्यवहार ॥
नीच भूप ह्वै हैं कलिमाहीं। ते अधर्म करिहैं बहुताहीं ॥
तिनकर भारसहो नहिंजाई। हौंपलानि तेहिभय सुनुराई ॥
सुनिनरेश करिकोप महाना। कलियुगनिधनचित्तनिजठाना ॥
कह्यो आजुकरिहौं खलनासा। जेहिनबहुरिगोकुललहत्रासा॥
नरपति गिरासुनत कलिकाँपा। पराचरण उपजी तन तापा ॥
बोल्यो दीन बचन करजोरी। पृथ्वीनाथ शरण मैं तोरी ॥
निज किंकर बिचारि भुवराई। कहौठाम निबसौं जेहिठाई ॥
अजकृत तीनिकाल युगचारी। मिटिहिन सोनृप देखुबिचारी ॥
समुझि दैवकृतकालि परवेशा। धरिधीरज इमिकहा नरेशा ॥
बसहु द्यूतगृह झूँठ अवासा। मदिरा गणिकालयतवबासा॥
हिंसक भवन चोरके गेहा। हाटक महँ निबसो युतनेहा ॥
क्षोणिप वचनसुनत कलिआसू। नृप निदेश जहँतहँ कृतबासू॥
दो० धर्महिं उर धरि भूपतब निजगृह कीन्ह पयान।
मिलीधरा निज रूपमहँ मंगल हृदय जुड़ान ॥
पुनिनृप आइ राज्यमह धर्मा। लाग सुनीति करैनृप कर्मा ॥
इमि कछुकाल व्यतीते राजा। मृगयाकरसबसाजि समाजा ॥
अकसर भूप निबिड़बन गयऊ। तृषावंत व्याकुल तन भयऊ॥
अर्जुन मुकुट शीश भूपाला। कलियुगतहँनिबसतसबकाला ॥
औसर लहिकलि नृप बुधिनासी। भ्रमितभूपबनजिमिबनबासी॥
इमि महीश खोजत की लाला। पहुँचे ऋषिलोमशप्रणशाला॥
बैठमहामुनि निज अस्थाना। मूंदे चक्षु करत हरि ध्याना ॥
भूपागमन ऋषय कछुजाना। नृप निजमनकृत इमिअनुमाना॥
दो० तप मदवश मुनि अहै यह करयो न मम सन्मान।
समय कठिन कलिकृत कपट भयउभूप अज्ञान ॥
धिषणालय महीप सब काला। द्विज तोषक बड़ दीनदयाला॥
कठिन परंतु कमल भवअंका। मेटिसकै कोउभूप न रंका ॥
कुमति बिवशनृप रहो निहारा। मृतकनाग लखितेहिथलडारा॥

इषुधी करि उठाइ ऋषि ग्रीवा। मेलनराधि मुदित है जीवा॥
तदपिन जगा सद्दृढ़मुनिध्यानी। गयोभूप तबनिज रजधानी॥
शीशमुकुट धरधरा उतारी। उपजा ज्ञान शोच भो भारी॥
जातरूप ममसुकुट बिशाला। जहँनिबसतकलियुग सबकाला॥
बैर सम्हारि अधीय बनायो। तेहिखल अधमकर्म करवायो॥
दो० आसी बिष सबस्वकंरहैं मुनि गल मेलो जाय।
भयोदोष अस मितिनजेहि भूप हृदय अकुलाय॥
बरण धर्मत्रिय धन परिवारा। किमिन नश्यौयह आजुहमारा॥
धृकहौं जीवत ऋषि दुखदाई। का जानिय कबयह अघजाई॥
इतबसुधेश शोक दधिमाहीं। पैरतथाह लगत जनुनाहीं॥
उत बालक खेलत तेहि काला। मुनि तट जातभये मुनिबाला॥
ऋषिकंधरअहिमृतकबिलोकी। चकिताबिकजभेजिमिनिशिकोकी
सम्मत करै परस्पर सोई। तदापधीर नहिंतिन तनहोई॥
एक कहिसि कौशिकि सरितीरा। इनकर सुतखेलत सुनुबीरा॥
ताहिकहौ कोउ सुनियक धावा। मुनिसुतबृंदमध्य चलिआवा॥
दो० तहँ शृंगीऋषि समुदमन करत खेल जिमिबाल।
कहिसि जाय तेहि बालते यहचरित्र तेहिकाल॥
का खेलत अशोच तैं भ्राता। चलुमम साथदेखु निजताता॥
वाके कंठ सर्प मृतडारा। नृपकाहू हौं नैन निहारा॥
सुनत सकोप भयो ऋषि कैसे। बीरभद्र बिधिसुत मषजैसे॥
अरुण चक्षु भृकुटी भै बाँकी। यथात्रिपुरलखिभयोपिनाकी॥
उठे रोम थर हरेउ शरीरा। कही महामुनि गिरागँभीरा॥
अबकलि भूपभये अभिमानी। धनमद मते अंध अज्ञानी॥
देहौंशाप ताहिहौं आजू। जिहि बशकालकीन्ह यहकाजू॥
असकहि मुनि कौशिकि तटजाई। जलकर लै बोल्यो अकुलाई॥
दो० जेहिभूपति ममतात गल डारमृतकअहिलाइ।
दिवससातवेंताहिकहँ सर्प अवशिडसिखाइ॥
दैअसशाप जनक ढिग गयऊ। कंधरसर्प निकारत भयऊ॥

पुनिपितुप्रति सबिनयकहस्वामी। तनसुधिकीजियअंतरयामी॥
मैं तेहिखलहि शाप दैदीन्हा। जेहि तवगलअहिमेलप्रबीना॥
पुत्र गिरासुनि चेतमुनीशा। खोलि बिलोचनदशदिशिदीशा॥
बहुरि ध्यान धरि देखत भयऊ। यहकर्त्तब भूपति करिगयऊ॥
सुतसन कहा नीकनहिंकीन्हा। शापशोचिनहिंभूपहिदीन्हा॥
जाकेराज्य सुखी मुनि लोका। पशुविहंगनहिंदुखितविलोका॥
गो हरि एक संग दोउ रहईं। बैर न प्रीति परस्पर लहईं॥
पुनि ताके नृपता हम बासी। दुखनलग्यो कीन्हें नृपहासी॥
दोष भूपलघु शाप कराला। दियउपुत्रकरि क्रोधबिशाला॥
बर अरु शापदिये बिन जाने। अमित पापजनुदोषनसाने॥
सोसुत गुण तजि औगुणग्राही। शाप बिचारिन दीन्होताही॥

दो० शीलवान संतोषशुभ सहजस्वभाव अमान।
औगुण तजि गुणगहत जे तेहरिदास प्रमान॥

इमि बहुभांति सुतहि समुझाई। शिष्य चतुरऋषिएकबुलाई॥
कहिनिजाइ भूपहि सुधि दीजै। शृंगी शाप कठिन सोलीजै॥
यदपि अहै अनुचित सन्देशा। तदपिभूपसुनि सहित अँदेशा॥
करिहहि उपाय शापजेहि मोचै। चलाशिष्यमगकृतअतिशोचै॥
तहँ आवा जहँ बैठनरेशा। सकुशभयोतनाबिगलितकेशा॥
कहाभूप शृंगीऋषि शापा। दीन्हातुमहिं सहित परितापा॥
मुनिदिन गत तक्षकडसिखाई। तुमहिं रुचैसो करहु उपाई॥
जेहिकृत कर्मपाशते मोचन। होइ करियसोज्ञानबिलोचन॥

दो० जोरि बाहु मुख सुनत नृप उठा कहाशिरनाइ।
दोषशोक अर्णवतरत थकेयोथाहनहिं पाइ॥

सुनि गुणिशाप तरनिसमदीन्हा। बूड़तसिंधु पारजनुकीन्हा॥
गयो शिष्य मुनि पहँ पुनिराजा। आश्रम बीतराग मनसाजा॥
जन्मेजय सुततासु प्रबीना। निजपदवीतेहिछोणिपदीना॥
कहा सुनीति प्रजापति होहू। गोद्विजादि रक्षहु करिछोहू॥
सुखी प्रजारहै सोइ बौसाऊ। कह्योताव कहि गमनेउ राऊ॥

गै रनिवास सकुचि उठिनारी। शोकबियोग उदासितभारी॥
बंदिचरण तिनकीन्ह बिलापा। निरषिभूपदिशिदुखितअलापा॥
मंदबुद्धि औगुण गृहनारी। तुमबिन कागति होइ हमारी॥
अपर समस्त बिपति दुखजोई। पतिबियोगसमत्रियहिनसोई॥
किमि सहिजाय नाथ दुखभारी। तवसँग प्राणतजैं सबनारी॥
कृत उपदेश भूप सुनिबानी। त्रियाधर्म नृपव्याज बखानी॥
पतिब्रत धर्म नारि कृत जोई। तासम अबला अपरन कोई॥
दो० कुलवंतिनि जो सलज तिय चातुरअरुधीमान।
अंबरगामी बदनिसुनु सो जगनारि प्रमान॥
उचित नारि कहँ पति सेवकाई। करैसोजेहिनसुपतिपतिजाई॥
किमपि करत पति शासन भंगा। अधिकचढ़ैअघत्रियकेअंगा॥
शुभकारजन करै हठिबाधा। यहभाषत कबिबुद्धिअगाधा॥
कहिअस धनजन तजि परिवारा। निरमोही तप लागि सिधारा॥
बैठयोग साधन गंगातट। सुनत लगी पुर रोदनकीरट॥
जेहि यह सुन्यो हाय विनठाने। रहोनकोउनर बिनपछिताने॥
युवती युवा वृद्ध कुल नारी। रुदन करैं अति भई दुखारी॥
बृद्ध तरुण नर बालक जोई। करत विलाप सकुल सबसोई॥
दो० सुन्यो ऋषीशन हाल यह तजतभूपनिज प्रान।
सुरसरितट मुनिशाप बश जनु अथवत जगभान॥
तब श्रुति व्यास बशिष्ठ दयाला। भरद्वाज कांती तेहि काला॥
बिश्वामित्र पराशर नारद। बामदेव गुण ज्ञान बिशारद॥
यमजमदग्नि आदि मुनि जोई। आये सहस अठासी सोई॥
डासि निजासन भूप समीपा। पंक्तिपंक्ति राजे मुनिदीपा॥
शास्त्रधर्म ऋषि अखिल बिचारी। कहैंनृपतिसन द्विजगणभारी॥
सात्विक श्रद्धा सहित भुवाला। सुनतसप्रेमतजे भ्रमजाला॥
पुस्तककाँखि दिगम्बर बेखा। श्रीशुकदेवसो मुदितबिशेखा॥
तेहि अवसर आये तेहि ठाईं। उठे ऋषय सबहिय हुलसाईं॥
दो० अरुनरेश उठि जोरिकर सबिनय बाणी दीन॥

करि प्रणाम कह ऋषय सन अमितदया तुमकीन॥
ममसुधिलेउ समय यहि स्वामी ।दयाधीश तव चरणनमामी ॥
सुनि नृपविनय ऋषयतहँ वैसे ।कहा मुनिनसन भूपति ऐसे ॥
मुनि शुकदेव व्यासकेबालक । पौत्रपराशरके अघघालक ॥
तिन हिं देखि तुम सर्वमुनीशा ।ठाढ़ भयउ यहअचरजदीशा॥
अनुचित उचित भयोकेहिकारन । यह सँदेह ममकरियनिवारन॥
कहापराशर नृपहि बुझाई । वेबड़ हमहिंज्ञान लघुताई ॥
आदर मान दया यह कारण । येमुनि अहैं तरणअरुतारण॥
जन्म दिवस ते भये उदासी । श्रीशुकदेव विपिनके बासी ॥
दो० उदय भाग्य बड़ तोर नृप यहि अवसर भाजानु॥
अति उत्तम जो धर्मसो कहिहौं सुमुनि बखानु ॥
जोसुनि जरामृत्यु ते राजा । तूछूटिहि भलजुरा समाजा ॥
बहुरि नृपति मुनिपदजिमिदंडा। पर्यो कहाकाधर्म्म अखंडा ॥
कर्म पाश बंधन निरुवारा । जेहिकरिहोइकहियश्रुतिसार ॥
सप्तम दिन मुनिकाल हमारा । किमि जैहौं भवसागर पारा ॥
श्रीशुकदेव कहा सुनु भूपा । है अशौच सुनुधर्म्म अनूपा॥
पर्वत दिवस अवधि तू गावत । मुक्तिचतुरच्चणमाहिं बतावत॥
पूरब नृपति षडांगुल एका । नारद तेहि कह ज्ञानविवेका ॥
उभय दंड महँ मुक्तिहिपाई । सप्तदिवसबाड़ि अवधि बताई ॥
दो० यक चित समुझो आपुही ध्यान सहित नरपाल ।
काशरीर को बसत को कृतप्रकाश सबकाल ॥
यह सुनि भूपसहर्ष पुनि पूछ ऋषिहि शिरनाय ।
उत्तम धर्म्म बिचारि अबकहो मोहिं मुनिराय ॥
मुनि कह जिमिसब धर्मनमाहीं । धरम वैष्णव बड़ा सदाहीं ॥
जिमि पुराण सकलोपरि राजा । श्रीभागवत कथा सुखसाजा ॥
हरिजन जहँ यह कथासुनावैं। तीरथ धर्म्म तहाँ चलिआवैं ॥
यदपि पुराण सकल गुणखानी । यहिसमतानकराहिंसुनुज्ञानी ॥
रविस्कंधहौं महा पुराना । कहौंतोहिमोहिंव्यासबखाना ॥

सानँदश्रद्धा युत चितदीजै। महापुराण सुखदसुनिलीजै॥
समुदसुन्योनृप सुऋषि बखानी। नवस्कंध कहि कथासिरानी॥
कहाराउ सुनु दीनदयाला। कहौ कृष्णकर चरित रसाला॥
दो० मोरसहायक पूज्यकुल माधव अहैं ऋषीश।
सुनिमुनि कह मोहिंदयोसुख सुनौ प्रसंग महीश॥
यदुकुल मध्यनाम भजमाना। भयो भूपयक बिबुध महाना॥
तासुतनय भो पृथिक नृपाला। बिदुर तासुसुत रिपुगणकाला॥
शूरसेन तासुत भटभारी। नवौखंड पृथ्वी अधिकारी॥
प्रमदा तासु मरिष्या नामा। दशसुत तासुभये बुधिधामा॥
शरकन्या गुणरूप सुशीला। उपजीं तासुसुनौ नृपलीला॥
ज्येष्ठपुत्र बसुदेव कहावा। जादिन तासुमातु तेहिजावा॥
तादिन सुरपुर बजी बधाई। लहा अनंद अधिक सुरराई॥
अष्टम गर्भतासु त्रियकेही। प्रकटे कृष्ण साधु जननेही॥
दो० पंचसुता नरनाहकी बड़ीजो कुन्ती नाम।
सो व्याही नृप पांडुकहँ सकल गुणनकी धाम॥
जासुकथा भारत महँभाई। व्यासमहामुनिबरणि सुनाई॥
रोहिणि नृप रोहनकी जाता। सो बसुदेव व्याहि शुभगाता॥
तापाछे दशसप्त विवाहा। किय बसुदेव समुद नरनाहा॥
बहुरिभूप मथुरा पुर माहीं। कंसभगिनि देवकी बिवाहीं॥
त्रिय लैचलो जबहिं महिपाला। भई व्योमबाणी तेहिकाला॥
यहिकरसुत अष्टम रिपुतोरा। उपजिहि कंसबचन सुनुमोरा॥
सुनिबाणी खल बंधन कीन्हा। बन्दी भवन बासलै दीन्हा॥
कृष्णचन्द्र जन्मे तेहिठाई। सुनिबोल्यो नृपगिरा सोहाई॥
कंसजन्म बरदान कहानी। बरणि कहौनिजसेवकजानी॥
प्रभु अवतार भयो जिमि स्वामी। सो चरित्र कहु अंतरयामी॥
पुनि गोकुल किमिगयो कृपाला। भणौमहामुनिसकलहवाला॥
श्री शुकदेव महामुनि ज्ञानी। कहीकथा अधिकारी जानी॥
दो० मथुरानृप आहुक यक भयो प्रथम महिपाल।

तासुतनय देवक अपर उग्रसेन रिपुकाल ॥
उग्रसेन बीते कलुकाला । भयोतहां मेदिनि प्रतिपाला ॥
नाम पवनरेखा त्रिय तासू । शोभित अंग अंगसब जासू ॥
पतिव्रत धर्म निरत बसुयामा । नृपनिदेश लंघक नहिंबामा ॥
यकदिन भई रजोवति सोई । बिधिगतिबामजातनहिंजोई ॥
पति अनुशासन रथ चढ़िनारी । सखिनसंगकाननहिंसिधारी ॥
सघनबृक्ष किंशुक बहुभांती । त्रिबिध बयारितहां लहराती ॥
कोकिल कीर कपोत कलापी । द्विजगण बोलिरहे तनतापी ॥
अगजगतट यमुना सुखखानी । उठतबीचिलखिक्षोभतज्ञानी ॥
दो० देखिमनोहर सघनबन अरु तमारिजाकूल ।
उतरि रानिरथते धरा चलीससुखगतशूल ॥
कानन सघनगई भ्रमि रानी । बन बीथिनसो फिरै भुलानी ॥
यातुधान द्रुमलिक जेहिनामा । दैवयोग आवा तेहि ठामा ॥
यौवनवती रूपनिधि नारी । देखि दुष्ट तन दशा बिसारी ॥
निजमननिशिचरकृतअनुमाना।किहिबिधिभोगकरौंअकुलाना॥
अमित युक्तिकरि बासव माया । उग्रसेनवत रूप बनाया ॥
सन्मुख जाइ कही मृदुबानी । देरति सुनि उत्तर दिय रानी ॥
महाराज निशिकाम कलोला । करैकहा दिन रति खगकोला ॥
तियनर शील धर्म अरुकानी । अहरति रहत न बेद बखानी ॥
दो० तुम ज्ञानी सर्वज्ञ नृप निज मन करहु बिचार ।
सुनत बचन मन कामबश अधिकभयोतेहिबार ॥
गहिकर आकर्ष्योनिज ओरा । मनभावितकृतकरि खलछोरा ॥
यह प्रपंचकरि भोगेसि वाही । पुनि निजरूप दिखायो ताही ॥
बिकल नारि भइ बदन निहारी । सुखदकहा अस बचनप्रचारी ॥
सुनु पापी अधर्म चाण्डाला । यहुका कीन्हदीन्हदुखजाला ॥
धर्म पतिव्रत मोर निपाता । धृकखलतवअरुतवपितुमाता ॥
पुनिधृक तवगुरुजासु सिखावा । करिअघकृतममसत्य छुड़ावा ॥
बाँझ न भई जननि शठ तोरी । स्रव्यो न गर्भ अरे अघघोरी ॥

मानस देह जगत जे पाई। आन सत्य खल देत छुड़ाई॥
दो० जन्म जन्मते अधम नर बास अधोगति लेत।
जानि अघी सूरज सुवन तिन्हैं महादुख देत॥
द्रुमलिक कहा सुनौ महरानी। शापदेहुजनि बिधिकृतजानी॥
बाँझजानितोहिं मोहिं दुचिताई। अहै रानि मम मन महँ छाई॥
निजतप फलदीन्हा तेहिकारण। मन चिन्ताहौंकीन्ह निवारण॥
गत दशमास सुवन यक होई। मम सम बली जान सबकोई॥
नवौ खण्ड बसुधा बशताके। हैहै समर कृष्ण सँग जाके॥
अब बृतांत सुनु मोर सयानी। कहौं कथा निज तोहिंबखानी॥
पूरब कालनेमि मम नामा। हरिसँग अमित कियोंसंग्रामा॥
पुनर्जन्म अब द्रुमलिक भयऊँ। पुत्रदान तव हित लगिदयऊँ॥
दो० तजि चिंतमन सप्रेम त्रिय जाहु आपने धाम।
अस कहि द्रुमलिकअन्तरित भयउभूपगुणग्राम॥
छं० जब गयो सो बिबुधारि। तब धर्‌यो धीरज नारि॥
होनिहारि जसितसि बुद्धि। प्रगटी बिसरि सबसुद्धि॥
तेहि काल सजनी तासु। गइपहुँचि ता ढिग आसु॥
लखि रानि भंग शृँगार। बयसा कहा तेहिबार॥
कहँ बिलम या बिधिकीन्ह। केहितोहिंयहदुखदीन्ह॥
कह रानि बन घन जाल। अरुहौं सुअकसरबाल॥
सो० मिल्योबली मुखएक तेहि मोहिं दीन्हो विविधदुख।
किमिकरि कहौं बिवेक जेहि डर कंपत अजहुँ तन॥
रानिबचन सुनिसखि अकुलाई। रथचढ़ाइ रानिहिं गृह लाई॥
समय पाय सुनु भूप सुजाना। उपज्योतनयअमित बलवाना॥
प्रसवकाल अति चल्यो समीरा। डोलि धरा डगमग अहिबीरा॥
जगतमनिबिड़नकर निजसूझै। दिननिशिसममगचित्तअरुझै॥
उडुगण पत्यौ इलाघन गाजे। भादिग्दाह तड़ित गतिछाजे॥
माघ सितात त्रयोदशि जीवा। जन्म्योअसुरजोकस्मलसीवा॥
पुत्र जन्म जब भूपति सुनेऊ। चितप्रफुलितबड़आनँदगुनेऊ॥

अखिल मंगला सुखी नृपाला । जोतेहिनगरानिवसतेहिकाला ॥
दो० बोलि नृपति ताही समय मंगलचार कराय ।
बिप्र वृन्द बोले बहुरि निजचर चतुर पठाय ॥
आवतभूप लखा द्विज वृन्दा । उठ्योसभासदसहित अनन्दा ॥
भाव भक्ति करिबड़ि सिवकाई । शुक्लासन बैठारिसि आई ॥
करि बिनती सुत जन्म सुनावा । सुनि भूसुरन महा मुद पावा ॥
शोधी लग्न शुद्ध ज्योतिषबल । ग्रह बिपरीत परे थलहीथल ॥
धर्म रहित यह सुर रिपु क्रोधी । ह्वैहै असुर सुकर्म बिरोधी ॥
भूपहि कहा कंस यहि नामा । भयो सूनु तव बल करधामा ॥
यातुधान पति ह्वै है राजा । बुधहरिजनकर करिहि अकाजा ॥
जब अधर्म मिति आगेकरिहै । तबनिजकरहरियाहिसँहरिहै ॥
दो० सुनतभूपभ्रम बशभयो द्विजगे निजनिज धाम ।
आनकथा अब सुनहुनृप जो दायक मनकाम ॥
देवक उग्रसेन कर भाई । तासु चरितनृप सुनुमनलाई ॥
चारिपुत्र देवक के राजा । अरुषटकन्या सुमुखिसमाजा ॥
प्रीति समेत दीन्ह बसुदेवै । षटौ सुता बिधुबदनी तेवै ॥
सप्तम सुता देवकी जोई । देवकि गृह उपजी पुनिसोई ॥
जन्मत सुरपुर आनँद भयऊ । भे प्रसन्नबुध संकट गयऊ ॥
उग्रसेन के भये दश बालक । सब महँ कंस जेठ सुरशालक ॥
जादिन ते उपजो खल सोई । करै उपाय अधम कृत जोई ॥
प्रजा बाल लघु सो गहि लावै । अग जग गुफा मूंदि तेआवै ॥
दो० पुनि न बतावै काहुकहँ तजैं बाल तहँ जीव ।
बड़ बालक जो तासु जिय दाबि निकारै ग्रीव ॥
प्रजालोग ते भये दुखारी । जिनसुत हने कंस अघकारी ॥
सबकोउनिजनिजसुतनचोरावै । तेहि भय बालनबाहिर आवै ॥
यूथ यूथ जुरि नर अरु नारी । कहैं परस्पर बैन बिचारी ॥
उग्रसेन कर सुत यहु नाहीं । असुर शुक्र लच्छण तनमाहीं ॥
जन्म दिवसते प्रजा सताई । तजौदेश निबसौ जनिभाई ॥

सुन्यो राउ सुत कर्म कराला। कंसहि बोलि लियो तत्काला॥
राजनीति मत तत्त्व सिखावा। नृप उपदेश न तेहि मनआवा॥
तज्यो न अधम कर्म नृप हारा। मन गलानि दुखभयउअपारा॥
दो० उग्रसेन मन शोच प्रथु प्रजा दुखित लखितात।
असु सुतते बिन सुतन कस किय इंदीबरजात॥
गृह कपूत जन्मत जब आई। सुयश धर्म तब जात पराई॥
कंस बढिक्रम भई बसु बर्षा। दल बटोरि तब चल्यो सहर्षा॥
नगर राजगृह मगध प्रदेशा। अजित जरानिधि तहांनरेशा॥
मल्लयुद्ध तासन किय जाई। देखि कंस बल हिय हर्षाई॥
जरासन्ध हिय हारि महीपा। द्वै कन्या ताके गृह दीपा॥
करि उद्वाह सहित उत्साहा। कंस संग कीन्हीं नरनाहा॥
तिनहिं संगलै मथुरहि आयो। उग्रसेन सँग बैरं बढ़ायो॥
यक दिन पितहिकहासुनुताता। रामराम जपि तजु दुखदाता॥
भजुकामारि नाम सुख खानी। बोल्यो भूप दुखित मृदुबानी॥
मम कर्त्ता हर्त्ता दुख रामा। तिनतजि तरौंन सुनुसुतबामा॥
किमि परिहरौं राम अनुरागा। सुरतरुतज कोउ रंकअभागा॥
निजकर नैन सेराई खोंसै। पुनि जगकाहि देइ नरदोसै॥
दो० बिबुध नदी तजि तृषित नर मृगजल धावैमूढ़।
अस मूरुखको जगतमहँ घृत जल मथि जो ढूंढ़॥
बिनशै धर्म जो हरि नहिंध्याऊं। बूड़ौं भव दधि पार न पाऊं॥
सुनि सकोपि पितुबंधनकीन्हा। सकलराजनिजबशकरलीन्हा॥
नगर फेरि खल आपु दुहाई। गृहगृह प्रति यह खबरिजनाई॥
दान यज्ञ जपतप शुभ कामा। करौ न कोउनजपौहरिनामा॥
हठ करिकरिहि जो कोउनरनारी। ताहि दंड देहौं हौं भारी॥
मिट्यो धर्मकर सेतु अपारा। सकलबिवेक कटक जनुहारा॥
बढ्यो अधर्म धरा सुनुराजा। प्रगटीकुबुधिमिटा बुधिसाजा॥
गो द्विज साधु लहैं दुखभारी। मुदितअसुरखलचोरजुआरी॥
दो० जहँ तहँ निशिचर फिरहिंबहु करैं अमित उत्पात।

दबत मेदिनी भारसों किमि अनीति कहिजात ॥
चहुंदिशि कंस महीपति जीते। सजाकटकपुनिकछुदिनबीते॥
आखंडलपुर जीतन चाहा। मंत्री कहा सुनिय नरनाहा॥
तपबल प्राप्त होत इंद्रासन। बिनतपको जीतै मघवासन॥
बलमद आपु करै जनिस्वामी। सुनासीर हरिकर अनुगामी॥
अहंकार रावणहि नशावा। सचिवबचनसुनिकटकफिरावा॥
श्रीशुक कहा सुनो महिपाला। होइ महाअधमहितेहिकाला॥
दुखित कश्यपी भई महाना। धेनु रूप धरिरोदन ठाना॥
गई अमरपुर बज्री पासा। करिप्रहूनिज दुःखप्रकासा॥
दो० बासव सुनु संसारमहँ बढ़े असुर मिति नाहिं।
अति अधर्म ते करतहैं किमिमुख बरणे जाहिं॥
लोप्यो धर्म भानु जगमाहीं। तम अधर्म छायो बहुताहीं॥
जो सुरेश आज्ञा तव पाऊँ। तजि नरलोक रसातलजाऊँ॥
सुनि महि बचन चला अमरेशा। अजशिवादिमहिसंगनरेशा॥
पयनिधि गय मधुसूदन तीरा। सैन किये देखे रघुबीरा॥
सोवत जानि बिष्णु जनत्राता। त्रिदशवृंदनिजमनपछिताता॥
ब्रह्मा कहा शिवहि समुझाई। देवस्तुति अब करिय गोसाईं॥
अमरबिनयसुनिजागिहिकृपाला। वृंदारक समाज तेहि काला॥
शंकर सहित ठाढ़ ह्वै राजा। बिनवतहरिहिजानिमहिकाजा॥
दो० सकल दिवौकस जोरिकर कृत बिनती सुनु भूप।
जो सुनि जागे कृपानिधि असुर नाग हरिरूप॥
छं०जयंदेवदेवेशदेवारिहंता। जगज्जीवजयजयजगन्मातकंता॥
धरानागपातालत्रातापरेशं। त्वमेकंअनेकंस्वरूपंसुरेशं॥
नमस्कारचरणारबिंदंकृपालं। नतोहंरमानाथसंसारपालं॥
निरीहंनिराकारअद्वैतव्यापं। नमामीशमव्याहतंत्वंअपापं॥
अकामादिरूपानवद्यंअमानं। स्वभक्तामरादिंसदारक्षमानं॥
त्वमाद्यंतहीनंदयाधीशस्वामी। प्रसीदादिदेवंत्वपादंनमामी॥
छं० अतिअगममहिमानाथतेरि पारकिहिविधिकैलहैं।

तू देवदासन सदारच्छक अहै प्रभु आगम कहैं॥
धरिमत्स्यरूप उबार वेदन कच्छ ह्वै भूधर धस्यो।
पुनिकोलबनिबरदशनऊपर धराधरिजगदुखहस्यो॥
अरुकनककश्यपहत्योपुनि नरनागरिपुतनधारिकै।
प्रहलाददुखप्रभुदूरिकीन्हो दासनिजसुधिचारिकै॥
बलिछल्योबामनबपुष बनिकै इंद्रसंशयनाशियो।
भृगुनाथह्वैजगचत्रभंज्यो राज्यकश्यपकोदियो॥
अरु रामचंद्र बहोरिह्वै हनरावणै गतदुखमही।
जबजबनिशाचरबाढ़महिपर संतजननसतावही॥
तबतबकृपानिधिमनुजतनधरिसकलखलननशाइयो।
अबकंसदुष्टप्रसिद्धभो जेहिकर बिबुध दुखपाइयो॥
सो० विकल धरा सुनु ईश अब आई तोरे शरण।
करु रच्छा जगदीश धेनुरूप सन्मुख खड़ी॥
देव स्तुति सुनतै सुनु बीरा। गगनागिराभइ सुखद गँभीरा॥
तैं बिधि देह देव समुझाई। होनहार मम जन्म सुनाई॥
सारस जात सुरन सन कहेऊ। बाणीरुख जो निजहियलहेऊ॥
सुनो दिवौकस भई जो बानी। आज्ञा तुमहिं दई यह आनी॥
नरतनु धरि सब देव समाजा। मथुराबसहु सहितसुखसाजा॥
तेहि पश्चात् ईश भव त्राता। प्रकटिहि चारिरूप सुखदाता॥
यदुबंशी बसुदेव अगारा। देवकि जठर धरिहि अवतारा॥
नंद यशोदा के गृह जाई। बालचरित करि हैं सुरराई॥
दो० कंजजात समुझाव जब तब सुर मुनि गन्धर्व।
किन्नर यच्छ सबाम ब्रज जन्म लेत भे सर्व॥
ब्रजमण्डल यदुबंशि ते गोप कहाये भूप।
वेदऋचन विधिसों कहा सुनु नृपचरितअनूप॥
जो अज तव अनुशासन पावैं। गोपी तनधरिब्रजहि सिधावैं॥
बासुदेव सेवन हम करहीं। आपन धर्म नीक अनुसरहीं॥
सुनिकैवचनबिहँसिकमलासन। वेदऋचनदीन्हों अनुशासन॥

ते चलि ब्रजमण्डल कहँ आई । नरतन धरि गोपिका कहाई ॥
अखिल देव ब्रज उपजे राजा । किमिवरणौंकबिजन्मसमाजा ॥
यहिविधि लियो सुरनअवतारा । तबहरिनिजमनकीन्हविचारा ॥
अबसबसुरनजन्म भुव लीन्हा । मोर रजायसु पूरण कीन्हा ॥
जेहिध्यावत सबभ्रम मिटिजाई । सो चिंतवन करत भुवराई ॥
छं० चिंतवनकरि निज कृपानिधि लीन्ह यह सुविचारिकै ।
बलरामतन प्रथमहिंलषण अवतार लेइ सुधारिकै ॥
पुनि बासुदेव सुहोउँ हौं अरु भरत प्रद्युम्न होइ हैं ।
अनिरुद्ध है पुनि शत्रुहा हनि दुष्ट जग दुख खोइ हैं ॥
सो० सीता शक्ति अनादि सो रुक्मिणि तन धरै भव ।
मुनिजन सकल सुरादि लहै जन्म फल जगत तव ॥
दो० यह मत निज मन सदृढ़ किय श्रीजगदीशगुपाल ।
गावत मंगल कृष्ण यश मिटै कपट जंजाल ॥
इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदास विरचितायां पीढ़ाबन्ध कंसजन्म देवस्तुति
वर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥
दो० बन्दि चरण राधारमण निज गुरु चरण मनाइ ।
वरणौं सुखदचरित्र यह सुनि अघसकलनशाइ ॥
पुनिमुनिकहासुनियनरनायक । हरिचरित्रसबविधिसुखदायक ॥
कंसराज कृत सहित अनीती । जस पूरब गायो करि प्रीती ॥
उग्रसेन दुख युत दिन भरई । काहि कहै जेहि ते दुख टरई ॥
अपर कथा सुनु नृप मनलाई । देवक उग्रसेन कर भाई ॥
तनुजा तासु देवकी नामा । ब्याहन योग भई बुधि बामा ॥
देवक कहा कंस सन जाई । तनया काहि देउँ कहु राई ॥
कंस कहा बसुदेवै दीजौ । आनबिचारनचितकछुकीजौ ॥
सानँद देवक बिप्र बोलायो । काम्यलग्नलिखितिलकपठायो ॥
दो० सूरसेन नृप समुद तब रचि बरात अभिराम ।
देश देश के महिप सँग आये मथुरा धाम ॥

पितुपितुबंधुसहितसुनुज्ञानी ॥
कंस बरात नगर तट जानी । रम्यालय जनवास करायो ॥
अगवानी करि नगरहि लायो । दीन्ही सबहि कंस ज्योनारा ॥
षटरस व्यंजन बिबिध प्रकारा । शोभितभये अखिलनृपजाती ॥
मंडफतर पुनि सकल बराती । प्रथम द्विजनसोंबिधिकरवाई ॥
जस बिवाहकी बिधि श्रुति गाई । भामरिफेरि बहुरिसुखसाजा ॥
कन्यादान दियो पुनि राजा । कंस भूप आनँद सों छयऊ ॥
बिदा समय यौतुक बड़ दयऊ । करभसहसफलदियअभिरामा ॥
तिथि सहस्र कंबोज ससामा । दासी दास अनेक मनोहर ॥
अरु बसु दश सहस्र रथ मोहर । पट भूषण दीन्हे तेहि काला ॥
भरि कलधौत थार मणिजाला । पुनिबरातपहिरावनि कीन्हा ॥
अगणित बित्त अपर नृपदीन्हा । मिलतसबहिभरिआई छाती ॥
यहि बिधि तोषे सकल बराती ।

दो० सँग बरात के कंस तब पहुंचावन के हेत ।
चल्योमहीपतिमुदितमन दान अमितबिधिदेत ॥

अरे कंस मूरुख अज्ञानी ॥
ताही समय ब्योम भइ बानी । अष्टम पुत्र प्रगटिहै ताही ॥
जात ससुख पहुँचावन जाही । मोर वाक्य अन्यथा न होई ॥
ह्वैहै तोर काल सुत सोई । कंप्योतनुजनु रहेउ न प्राना ॥
यह सुनि कंस महा भयमाना । निजकरगहि आकर्षिनरेशा ॥
पुनि आमर्षि देवकी केशा । मंडलाग्र रदपीसि सम्हारा ॥
रथते दुष्ट तलातल डारा । मैंनिजमन यहकीन्हबिचारा ॥
कहिसि सुनहु सबबचन हमारा । पुनिकसताहि लगैंफलफूला ॥
जेहि पादपकर काटिय मूला ।

दो० हतौं देवकी को अबहिं मम सबशूल नशाइ ।
करौं अकंटकराज्य जग फिरि मोहिंकालनखाइ ॥

ममकरयहखल मरहिनमारा ॥
निजमन बसुदेव कीन्ह बिचारा । अबयाहिअधम दीन्हसंतापा ॥
जानत पुनि न सुकृत औपापा । तौ परिणाम होइहै रारी ॥
जो अब कोप करौं हौं भारी । क्षमा कियेबिनअबभलनाहीं ॥
बिगरिहि काज प्रबल रिपुआही ।

कहत चतुर रिपु सबलजो होई । करै क्षमा मेधालय सोई ॥
जो अरिप्रबल गहै करबाला । कृत मनुहारिसाधुतेहिकाला ॥
आपु नीच लज्जित सोहोवै । जिमिजलअग्निपरेतनखोवै ॥
शत्रु सबल संग कृत रौताई । हारिहोइ अरु होइ हँसाई ॥

दो० इमि बसुदेव अनेकबिधि करिअनुमान नृपाल ।
जोरि हाथ तबहीं कहा सुनिये कंस भुआल ॥

तुम सम बली न कोउ संसारा । सकलमहीतुम्हरोअधिकारा ॥
सब नर बसत तुम्हारी छाहा । त्रियबधअनुचितअतिनरनाहा ॥
तापरपुनि यह भगिनि तुम्हारी । निधनकियेअघअमितसुरारी ॥
अस दुःकृत सोई नर करई । अमरहोइ जो कबहुं न मरई ॥
यह संसार असार महीशा । कहत ज्ञाननिधि सर्वमुनीशा ॥
जेहितन धरा अवशि मरसोई । सुर अजादिभा अमरनकोई ॥
कोटि सुकृत अघकरि तनपालै । तदपि अंत यहु संगन चालै ॥
धनयौवन प्रभुत्व नृप ऐसो । जल बुलबुला होतहै जैसो ॥

दो० निजमन शोचिबिचारुनृप सुनिकहनी पुनिमोर ।
पराधीन त्रियजानितजु बढ़ैसुयश नृपतोर ॥

सुनि बसुदेव बचन महिपाला । झुक्यो कंसभयलोचनलाला ॥
लखिरुख पुनि बसुदेव बिचारा । यहखल बुधि आसुरीअगारा ॥
निजहठटेक तजिहिनहिं आजू । बड़अनरथ भा महाअकाजू ॥
अबचाहिय उपाय असकीन्हा । जेहिकरिबधनजायत्रियदीना ॥
अमित युक्ति भूपति मनठानी । तदपि न कोऊ युक्तिठहरानी ॥
ध्यावतहरिहि मनहिंअसआवा । पंथी भ्रमित मनो मगुपावा ॥
कहौं खलै उपजिहि सुत जोई । तुरत तोहिं देहौं मैं सोई ॥
यहिमिसिबचिहि देवकीकाला । फिरिदेखौंकाकरिहिगोपाला ॥

सो० सुताहोइ की बाल अथवा यहु जड़ जाय मरि ।
लिखेअंकबिधिभाल सो कौनिहुंकृतमिटिहिनहिं ॥

दो० मनबच क्रम यह समुझिनृप कंसै कहा बहोरि ।
यहि सुत करसों भूप सुनु मृत्यु होइ नहिं तोरि ॥

मैं निज मनयह कीन्हबिचारा। चित दै सो सुनु कंसभुवारा॥
एक आदि बसु लगि सुतजोई। यहि त्रिय गर्भ प्रगटि है सोई॥
देहौं तुमहिं प्रसवही काला। अबलाबध न करियमहिपाला॥
जो भवतब्य होत सुनु भूपा। उपजत बुद्धि तासु अनुरूपा॥
बाचाबंध सुनत सुख भयऊ। तजिदेवकियदुपातिदिगगयऊ॥
कहबसुदेव बड़े तुमज्ञानी। तुमसमचतुरनकोउजगप्रानी॥
भल बिचार कीन्हो तुमभाई। अमितपापते लयो बचाई॥
तिनहिंबिदाकरिनिजगृहगयऊ। चिन्तातदपि तासुउरछयऊ॥
गयबसुदेव आपने धामा। आठौयाम जपत हरिनामा॥
कंसशोचिपुनि चार बोलाये। सकलभेद कहिते समुझाये॥
गृह बसुदेव जाहुतुमभाई। करौसदा तिनकी रखवाई॥
सुतकन्या वाके जोहोई। दीजै सोध मोहिं पुनिसोई॥
दो० तेप्रतिहारे कंस के रहत आठहूयाम।
अपरकथा सुनुसुचितमन भूपतिधिषणाधाम॥
बहुत दिवस मथुराबसत गयेबीति बिधि एव।
भयोपुत्र यकतासुके तेहि लैचल बसुदेव॥
कंस सभा जहँ जुरा समाजा। रुदत सूनु धरिदिये तहँराजा॥
यह न तात अपराधी मोरा। निधन किये संताप अघोरा॥
निरखिकंसबिस्मित ह्वैरहयऊ। आनँदसों बसुदेवै कहयऊ॥
सतबादी तुमसम कोउ नाहीं। उपमा कासुदेउं भवमाहीं॥
कपटत्यागिअरु तजि सुतमोहा। दिहेउपुत्र मोहिं परिहरिकोहा॥
अब मैं अभय भयउँ नाहिंत्रासा। दयउपुत्रलै जाहु अवासा॥
अष्टम गर्भ शत्रु मम भाई। कही नाकबानी समुझाई॥
सुनि बसुदेव मुदित मनभयऊ। करिदण्डवत ससुतगृहगयऊ॥
तेहि अवसर नारद ऋषिआये। देखिकंस आतुर उठिधाये॥
अभिबंदन करि प्रेम सभीता। शुभ आसन बैठार सप्रीता॥
कथा समस्त देवऋषि पासा। कंसासुर नृप करासि प्रकासा॥
कृपासिंधु सर्बज्ञ ऋषीशा। अबजसकहोकरियधरिशीशा॥

दो॰ तब नारदमुनि कंससन कह्यो कहा यह कीन्ह ।
जो बालक बसुदेव कहँ फेरि भूप तुम दीन्ह ॥
तुमहिंनबिदितत्रिदशसबजाती । यदुबंशी भय कर्बुक घाती ॥
बासुदेव सेवा हित लागे । जन्मे ब्रज हरि रस सब पागे ॥
अष्टम गर्भ देवकी केरे । शिरी कृष्ण जन्महिं सुनु एरे ॥
सो कव्याद बंशकर नासा । करि हैं कंस कृष्ण अनयासा ॥
बसुधा भार उतारिहि सोई । यहिमहँ कुछ संदेह न होई ॥
पुनि नारद गजरेखा कीन्ही । यक यक बादि आठ गनि दीन्ही
जो कहि कंस सोई गनवाई । सबते आठ आठ भइ भाई ॥
सभय कंस तब दूत बोलवा । बसुदेवालय सपदि पठावा ॥
दो॰ बालक सहित उताहिलै लावो मेरे पास ।
इत नारद उपदेशदै गये ब्रह्म आवास ॥
चरलावा बसुदेव ससूना । आइनृपहि तिनकीन्ह प्रहूना ॥
सुतलै निजकरहतसि चँडारा । यदुप सदुख निज भवनसिधारा ॥
जब जब पुत्र जन्म गृह तासू । कंसहि देइ करै सो नासू ॥
इमि षट्सुत ताके तेहि मारे । दंपति यदुप लहे दुख भारे ॥
सप्तम गर्भ शेष भगवाना । निबस्यो आइ भूप बुधिवाना ॥
कीन्ह प्रश्न नृपइमि मुनिपाहीं । यह चरित्र कस बूझयो नाहीं ॥
परम भक्त हरिके ऋषि नारद । बैरागी बुधि ज्ञान बिशारद ॥
तिनसिख बालक बधलगिदयऊ । जाते अधिकपापतेहि भयऊ ॥
सो समुझाय कहौ पुनिकारण । ममबिस्मय प्रभुकरियनिवारण ॥
श्री शुक बिहँसि भूपसन कहेऊ । का नरेश यह भेद न लहेऊ ॥
नारद परम चतुर बिज्ञानी । तिन निजमन नृप यह अनुमानी ॥
जब यह अधमपाप बहुकरिहै । नरतन तब नारायण धरि है ॥
दो॰ ताते तासन भूपसुनु अमित करायो पाप ।
मंगल भूपतिको गयो सुनि बिस्मय संताप ॥
इतिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासबिरचितायांदेवकीबसुदेवत्रि
बाहनारदोपदेशबालकबधबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

सो० भवदधिकथाजहाज तेहिचढ़ि बुधजनसुजनसब।
खेवक सो ब्रजराज पारजात संशय नहीं॥
श्री शुकराजहि कहा बहोरी। सुनौ कथामृतरस जनुबोरी॥
जिमिहरि गर्भवासनृप लीन्हा।ब्रह्मादिकजिमिअस्तुतिकीन्हा॥
मायाजेहि बिधिलै बलरामैं। पहुंचायो सो नंदके धामैं॥
सो बृतान्त अब कहौं नरेशा। जोसुनि बिनशै कपटकलेशा॥
यकदिन कंस सभामहँ जाई। बैठि कहिसिसब दैत्यबोलाई॥
अखिल देव जन्मे महि भाई। अब पाछे रिपु जन्मेहि आई॥
मोहिं देवऋषि कहा बुझाई। मैं निज चित यह गुणाउपाई॥
मोर हितू सोई मम मीता। करै काज जो मम मनचीता॥
दो० जेहि बिधि यदुबंशीनशैं बचै न पावै कोइ।
सुनौ सभासद सकल मिलि करौ कर्म अब सोइ॥
आयसु पाय चले खल कैसे। मकरहि कूकुर धावत जैसे॥
जानत नहिं हरिचक्र आहीं। सो न भक्षि लेवै क्षण माहीं॥
करि दण्डवत चहूँ दिग धाये। जहाँ जहाँ यदुबंशी पाये॥
भोज्य रचत भक्षत कृत पाना। बैठ ठाढ़ निरबल बलवाना॥
चलत फिरत जागतअरु सोवत।यदुबंशिहिजहँकोउखलजोवत॥
तजत न ताहि तुरतगहि लेता। नाना बिधिन तिनाहिंदुखदेता॥
जात बेद काहुइ लै डारा। बोरिउदक पुनि काहुइ मारा॥
पटकि पटकि मोर बहु धरणी। भनौं भूप किमि दुष्टन करणी॥
लघु दीरघ खल भयकर बेखा। नगरगांव प्रति फिरतअलेखा॥
शोधि शोधि यदुबंशी मारत। रूप अनेक अधमते धारत॥
यदुबंशी भयभीत पराने। देश बिदेश गये दुखसाने॥
ताहि समय सुनु भूप सुजाना। दुखित भये बसुदेव महाना॥
दो० देवकि बिन निज सकल तिय गोकुलदई पठाय।
जहाँ पर्म पीतमबड़े बसतनंद सुनु राय॥
अति हित सहित नंदते रानी। आश भरोस देइ गृह आनी॥
जानि मित्रत्रिय अससन्माना। प्रीति धर्म यश वेद बखाना॥

सानँद तहा रहै ते नारी । आनचरितसुनु भव दुखभारी ॥
कंसदेव जब सकल सताये । अरु बहुदोष किये मन भाये ॥
तब हरि निज चषते यकबाला । प्रगटी सो माया बिकराला ॥
दोउ करजोरि ठाढ़भे आगे । तासन हरि इमि कहिबे लागे ॥
सपदि भूमि धरु जाय शरीरा । मथुरा पुरी सूरजा तीरा ॥
जहँ खल कंस राजकृत माया । मम दासन दुख देत अदाया ॥

दो० पुराकाल कश्यप अदिति तप कीन्हो मम हेत ।
देवकि अरु बसुदेव ते भये जाय ब्रज खेत ॥

सो० तिनहिं कंस दुख देत बन्दीगृह करि बंदसुनु ।
षटसुत तासु निकेत जन्मे ते कंसहि हने ॥

सप्तम गर्भ लषण अब सोहै । देवकि जठर बिराजत जोहै ॥
मोहनतन धरि ताहि निकारी । तैंगोकुल लगि आउ पनारी ॥
रोहिणि उदर यतन सों धरिये । काहू जीवहि सुद्धि न करिये ॥
अवशि दुष्टकोउ ताहि न जानै । तवयश जेहिते जगत बखानै ॥
इमि मायहि समुझाय कृपाला । बोले बाणी बहुरि रसाला ॥
जब सम्हारि हूँ जसि यहकामा । जन्मसि तुरत नन्दके धामा ॥
पुनि बसुदेव भवन तेहि पाछे । मैं जन्मिहौं बीर कछ काछे ॥
नंद निकेत आइहौं सांचू । फिरिसब खलन नचैहौं नाचू ॥

दो० सुनि माया सानंद तब मथुरा आई भूप ।
प्रविशी गृह बसुदेव के धरे मोहनी रूप ॥

सो० लखो न काहू मर्म हर्‍यो गर्भ तेहि भूपतब ।
आपु भई सो बर्म दयो रोहिणिहिजाइकर ॥

जानत सब पहिलो औधाना । रोहिणि उदरराज भगवाना ॥
श्रावण सितहर तिथि बुधबारा । नृप बलदेव लीन्ह अवतारा ॥
उत गोकुल भव बजत बधाई । इतमाया मथुरहि पुनि आई ॥
दयउ स्वप्न देवकि कहँ जाई । अरु बसुदेवहि कहा बुझाई ॥
मैं तव गर्भहरेउं सुनु राजा । दयउंरोहिणिहिंजानिजकाजा ॥
तुम चिंता आपनि परिहरहू । गई बिपतिचित आनँदधरहू ॥

दंपति स्वप्न देखि अस जागे। चर्चा करन परस्पर लागे॥
यहतौ नीक कीन्ह करतारा। फिरिपाछे यह कस्योबिचारा॥
दो० यहि अवसरही कंस को सुद्धि कराइय जाय।
नतु पाछे सो अधमनर दंड देइहै आय॥
सत्वर भूप शोचि अपने मन। असबसुदेव कहापहरुनसन॥
स्रवेउ गर्भ भाइहु यहि बारा। सुनियक क्षिप्र चलारखवारा॥
कंस भूप ढिग खबरि जनाई। महाराज सुनिये चितलाई॥
अबकी गर्भ अधूरा गयऊ। सबबिधिनाथजानिसोदयऊ॥
सुनत भूप विह्वल भागाता। तनकंप्यो जिमिकदलीबाता॥
पुनि धीरजधरि चरहि बुझावा। यह तोअधिकभयोपछितावा॥
अष्टम गर्भ केरि रखवारी। कस्योबुद्धिबल समयविचारी॥
मम रिपु सोइ जन्मि है आनी। सुनु चर चतुर कहा नभबानी॥
दो० बेगि जाहु चौकस रहौ वाही को भय मोहिं।
अपरचरित सुनुभूपअब समुद सुनाऊं तोहिं॥
संकर्षण जन्मे जेहि रीती। पूरब सो बरण्यो सह प्रीती॥
अब सुनु कृष्ण जन्म नृपज्ञानी। कहौं सहित विस्तार बखानी॥
देवकि उदर कृष्ण जब आये। अमरलोक तब बजे बधाये॥
यशुमति उदर बसी तब माया। यहवृतान्त काहुनलखिपाया॥
रहैं गर्भ युत दोनों नारि। परा पर्व यमुना कर भारि॥
गई देवकी तहां नहाना। उत यशुमतिहूं कीन्ह पयाना॥
बिधि संयोग मिलीदोउ आनी। निजदुखदेवकि कहाबखानी॥
सुनतयशोदहि अतिदुखभयऊ। सानँद ताहि बचनयहदयऊ॥
दो० निज सुत ताकहँ देइहौं तूनिज दीजे मोहिं।
सो तू दीजै कंसकहँ मैं प्रतिपलिहौं ओहिं॥
बचनबंध करिदोउ त्रियगईं सो निजनिजधाम।
आनचरित सुनु महिपजो सुनिमनलहु बिश्राम॥
अष्टम गर्भ कंस जब जाना। तउखलनिजमनकरिअनुमाना॥
बहुरजनीचर प्रबल हँकारे। यदुपसदन चहुँदिशि बैठारे॥

बहुरिलीन बसुदेव बोलाई । तिनहिं कहा इमि कंसबुझाई ॥
कपट त्यागि सुतमोकहं दीजै । अबकी बार सुयश बड़लीजै ॥
मोर शत्रु अष्टम यह बाला । दीजौबचन कर्यो प्रतिपाला ॥
कहि असदम्पति करपद माहीं । बेरीडारिदीन्ह खल ताहीं ॥
करिसि बन्द खल एक अगारा । तामहँ डारि दीन्ह दृढ़ तारा ॥
निज निकेत भयभीत सिधारा । सोइ रहा बिन बारि अहारा ॥

दो० जागि बिहान सकोप चलि गयो देवकी पास ।
कठिन वचन बोलतभयो लखिकै गर्भ प्रकास ॥
जठर न है यमगुफा यह बसत सो मोरा काल ।
अपयश डरते डरत नतु हनि मेटत दुख जाल ॥

नीतिशास्त्र अस कहत बिचारी । निजकर बीर बधै जो नारी ॥
ताहि दोष होवै मिति पारा । ताते मैं यह मंत्र बिचारा ॥
कोत्रियहनै अयश की खानी । उपजिहिबालसोबधिहौंआनी ॥
असकहि गजहरिश्वान मँगाये । चहुँदिशि निलयते सबबैठाये ॥
दनुजसबलजग जीतनलायक । रक्षक कंस कियेते पायक ॥
नितप्रति कंसजाय अरुआवै । क्षणकमात्र सोकल नहिंपावै ॥
दशदिशि जहँदेखै खल सोई । परतकाल बपुहरि तहँजोई ॥
आठौयाम ग्रसित भयरहई । अहिनिशिदुखितनींदनहिंलहई ॥

दो० इतहिकंस कीयहदशा उत बसुदेव महीश ।
देवकिसह चिंतागलित रहत मनावतईश ॥

कष्टित दंपति विथुर महाना । प्रसवकाल हरिकर नियराना ॥
दिय बसुदेवै स्वप्न कृपाला । दुखितनहोउ तजौ दुखजाला ॥
अबजन्मतहौं सपदि तलातल । सकल दुष्टहनिहौं अपने बल ॥
जनिपरिताप करौ निजजीवा । पीड़ामिटिहि आइ सुखसींवा ॥
जागेद्वौ असस्वप्न विलोकी । गतदुखमनौं लखादिन कोकी ॥
तेहि अवसरशतमन्यअयोनी । त्र्यंबकादि सुरसनुपतिक्षोनी ॥
सबनिजनिजबिमानचढ़िधाये । यदुपतिसदनतुरतचलिआये ॥
अलख देह वृंदारक धारी । वेदध्वनि अस्तुति अनुसारी ॥

नभमें सकल विमान सुहाये। मानहु उडुगण अति नियराये॥
दो॰ लखे न काहू देवते सबन सुनी ध्वनि सोइ।
प्रतिहारन अचरज लहा किमि कवि वरणै कोइ॥
छं॰ कविबरणिकिमिकरिकहैसोगतिचरितजोकाहुनलहो।
बसुदेवदेवकिमुदितमनध्वनिसुनतनिजमनयांकहो॥
अब स्वप्न साँचो भयो हमरो दुःख हरि बिनशाइहैं।
मंगल मनोहर कृष्ण कीरति सदा कबिजन गाइहैं॥
दो॰ निजनिज लोकन सुरगये करिविनती प्रभु केरि।
आनँदभे बसुदेवअरु देवकि यह गति हेरि॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषांधकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांसंकर्षणजन्मगर्भस्तुतिवर्णनो
नामतृतीयोऽध्यायः ३॥

दो॰ बालरूप धरि कृष्णके चरण कमल धरि ध्यान।
बरणौं जन्म चरित्र अब सुनौ सोसकल सुजान॥
जन्मकाल जब हरिकर भयऊ। जगतसकल आनँद सों छयऊ॥
अमरन सकल भयो सुखभारी। असुरसमूह डरे अघकारी॥
भवदुख तिमिर नशासब अंगा। जन्मत हरि जिमि बालपतंगा॥
बन उपबन कुसुमित नवपाता। जोलखिमुनिमनविहँगभुलाता॥
सरवर सरित भरे सब नारे। बहुत दिनन के सूखे डारे॥
द्विजगण बोलत बिबिधप्रकारा। नगरग्राम प्रति मंगलचारा॥
करत नारि नर विथुर बिसारे। जहँ तहँ विप्रन यज्ञ सम्हारे॥
दशौ ककुभ आशापति हरषे। सानँद सबन फलपिता वरषे॥
ब्रजमण्डल ऊपर घन छाये। चढ़िचढ़िनिजविमानसुरआये॥
दो॰ कुसुमावलि छोड़त बिबुध विद्याधर गन्धर्व।
गावत हरियश भांतिबहु अन्य जाति सुरसर्व॥
सो॰ ढोल दमामे भेरि ते बजाय प्रभु गुण भनत।
ब्रज के सर्व बसेरि सुनत अप्सरा गान ते॥
हरिजन सुनत बधिर खलनाहीं। हरिगतिअगमसोअहैसदाहीं॥

भाद्र असित अष्टमि बुधबारा । सुभग रोहिणी ऋक्षविचारा ॥
अर्द्ध रैनि जन्मे भगवाना । सो चरित्र नाहिंजात बखाना ॥
शशिमुख मेघ बरण तनशोभै । कमल नैन देखतमन लोभै ॥
शिरपर मुकुट बसन कटिपीता । जोलखि देवकि कर दुखबीता ॥
उरसोहत बैजन्ती माला । भुजप्रलंब अरुहृदयबिशाला ॥
अभरण रत्न जटित तन राजत । सुभग चतुर्भुज रूपबिराजत ॥
चारुजनेउ नासिका कीरा । निरखत नशै अखिलभवभीरा ॥

दो॰ शंखचक्र अरु गदाकर कंज मनोहर भूप ।
देवकि अरु बसुदेवके सन्मुख याहीरूप ॥
ठाढ़भयो गोविंदजू लखि अचरज तिनकीन्ह ।
ज्ञाननैन दंपति बहुरि जानिईश कहँलीन्ह ॥

छं॰ पहिचानिहरिजगपालदंपतिजोरिकरबिनतीकरी ।
जय देवदेव कृपालसज्जन दुष्टबनपावकहरी ॥
बड़भाग्यहमरोउदितभो अबनाथदर्शनपाइकै ।
छूट्योजराअरुमृत्युदुख किमिकहौंतवयशगाइकै ॥

दो॰ करि बिनती बसुदेव तब सकल सुनाव प्रसंग ।
जेहिबिधि दीन्हो कंस दुख कहो अंग प्रत्यंग ॥

कहा मुरारि सुनौ मम बानी । चिन्ता तजौ मोहिं सुत जानी ॥
केवल तुव दुखलागि तनधारा । अबयहिबिधि करिकरौ बिचारा ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुंचाई । यशुमति अहै कन्यका जाई ॥
पलटि लाइ कंसहि सो दीजै । निज कहनी परिपूरण कीजै ॥
कारण मोर जानकर एहा । यशुमति नन्द प्रथमही देहा ॥
उग्रकीन्ह तप मोहिं मनुलाई । रहौं कछुक दिन तहँ लरिकाई ॥
कंसमारि तुव सेवा करिहौं । धरौ धीर बिपदा सब हरिहौं ॥
कहि अस बालरूप बनि स्वामी । रोवन लगे नाग अरिगामी ॥

दो॰ श्री हरि माया मोह लिय बसुदेव देवकि ज्ञान ।
जानेउ सुत हमरे भयो यह निजमन अनुमान ॥

धेनु सहस दशमन बसुदेवा । संकल्पीं मनाइ सब देवा ॥

सुतउछंगि निज हृदयलगावा। निशिकरबदनदेखिसुखपावा॥
पुनि दोउ भरैं उसासन भारी। इमि आपस में कहत दुखारी॥
जेहि बिधि बचै बाल कृत सोई। कीजै जो सहाय बिधि होई॥
को अस जहां राखिये याही। बचै कंसते धाइय काही॥
पुनि बसुदेव कहा सुनु नारी। लिखे भालबिधि अंकबिचारी॥
सो होनिहार मिटैगे नाहीं। कहा देवकी सदुख तहांहीं॥
प्रीतम बड़े नन्द पति तोरे। बचैं पुत्र तिन गृह दृढ़ मोरे॥
दो० यशुमति हरिहि कलेश मम या महँ संशय नाहिं।
सुतहि तहां करिआउ पति जहां रोहिणी आहिं॥
सो० बिकल कहा बसुदेव किमि छूटै बन्धन कठिन।
करत बारता एव आपु छूटि गइ बंदि सब॥
सकल कपाट खुले चहुँ द्वारा। रक्षक सोइगये तेहि बारा॥
लखि यह यदुप कीन्ह प्रस्थाना। मेघ मंद ध्वनि नभघहराना॥
शूर्पधारि सुतधरिनिज शीशा। गोकुल गमन कीन्हअवनीशा॥
पाछे कंठीरव हुंकारा। सूझत कछु न निबिड़ अँधियारा॥
यमुना उमड़ानी लखि आगे। तटह्वै ठाढ़ विचारन लागे॥
पाछे पुंडरीक कृत शोरा। अग्र निम्नगा बाह प्रघोरा॥
गोकुल जाउँ दैव केहि रीती। धरि धीरज हरिपद करिप्रीती॥
मारतंड दुहिताहि धसि परेऊ। जीवनमरन शोच परिहरेऊ॥
दो० जिमि जिमि आगेजात सो तिमितिमि बढ़तप्रवाह।
अमृत नासिका लगि बढ़्यो भो व्याकुल नरनाह॥
सो० जानि बिकल गोपाल पद बढ़ाय हूँकतभयो।
परशत पगततकाल थाहभई सरिता अगम॥
गये पार तरि गोकुल ग्रामा। पहुँचे जाइ नन्दके धामा॥
खुले कपाट पाइ प्रविशे तहँ। सोवत सब अचेत मंदिर महँ॥
माया असि मोहनि नृप डारी। कहत बनतनहिं अचरजभारी॥
यशुमति सुताजन्म नहिंजाना। लै बसुदेव सो श्रीभगवाना॥
निकट यशोदा दीन्ह सोवाई। ताकर कन्या लीन्ह उठाई॥

झटित जिष्णु लीन्हो तेहिबारा । सरिता उतरि भवन पगुधारा ॥
देवकि तहँ शोचति जेहि भाँती । भूप दशासो नहिं कहिजाती॥
पति सुत शोच अमिततनतासू । पुनि बन्दीगृह शून्यअवासू ॥
दो० कन्या लै बसुदेव सो ताकहँ दीन्ही आइ ।
कुशल क्षेम फिरि नन्दकी ताहि कही समुझाइ ॥
मुख प्रसन्न बोली तब नारी । सुनो प्राणपति बात हमारी ॥
अब चहु कंस हनै नहिं शोचू । बच्यो पुत्र जगु कहै न पोचू ॥
कहा महामुनि सुनु महिपाला । कन्या लै आये जेहि काला ॥
बन्द कपाट भये तेहि बेला । हरिमाया कर अद्भुत खेला ॥
बहुरिसुता रोदन तेहि ठाना । ध्वनि सुनि जगे पहरुवानाना॥
निज निज आयुधसबनसम्हारे । लघु भुशुण्डि दागी चहुँद्वारे॥
शब्द अघात सुनत गजगाजे । पंचानन गूँजे मृग भाजे ॥
श्वानशब्दकृतनिशिअँधियारी । नभघन घटा छटा छबिकारी ॥
दो० हरषित चला अघोर गति ताहि समय रखवार ।
कहाजाइ नृप कंस सों जन्म्यो शत्रु तुम्हार ॥
सो० सुनत कंस बिन प्रान होत भयो पुनि गिरामहि ।
मंगल हरिपद ध्यान बैर भाव लागो करन ॥
इतिश्री मद्विविधकिल्विषांधकारादिनमणि श्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदास विरचितायां श्रीकृष्णचन्द्रजन्मवर्णनो
नाम चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥
दो० परिहरि रुक्मिणि रमण पद सेइय काको और ।
सुखदायक संतन सदा कृष्ण देव शिरमौर ॥
बालक जन्म सुनत घबरावा । असिकरगहिब्याकुलह्वै धावा॥
गिरत परत बिथुरे शिर केशा । चलत प्रस्वेद शरीर नरेशा ॥
उर धकधकी भयातुर भूपा । देवकि ढिग पहुँचो यमरूपा ॥
कन्या छीनि लई जड़ तासू । तब देवकि किय बचन प्रकासू॥
जोरि हाथ कह सुनु ममभाई । यह भानजी तोरि मैं जाई ॥
अवशि त्यागु यहत्यागन योगू । यहि प्रतिपालि मेटिहौं सोगू ॥

बिदित शास्त्र सुत तैं मम मारे। अति दुख तिनकर अहै हमारे ॥
करत अलेख पाप केहि अर्थू। तजु कन्या तू अहै समर्थू ॥
॥ दो० कंस भनो बिकलित तबहिं सुनु मतिमन्द महान।
जीवत दुहिता तजौं नहिं जब लगि घटमें प्रान ॥
जो यहि बैर हनै सो मोहीं। कहि असमपदि चलासुरद्रोही॥
बाहिर भवन शिला यकडारी। पद गहि फेरि सुता बिबुधारी ॥
पटका चहत बीचही छूटी। जीवन आस कंस की टूटी ॥
जाइ अकाश कही अस बानी। रे मतिमंद कंस अभिमानी ॥
आपन काल बचावै लागी। मोरहतनचह कुमतिहिपागी ॥
उपज्यो तोर शत्रु जगमाहीं। अब भा काल बचै करनाहीं ॥
बिस्मय सुनत कंस उर छावा। कृष्णमातुपितुढिगचलिआवा॥
बंधन छोरि कटाइसि बेरी। कृत करजोरि बिनय तिनकेरी॥
॥ दो० अधिक दुरित यह कीन्ह मैं हने तुम्हारे बाल।
लागकलंक अगासबड़ कब छूटौं केहि काल ॥
मृषा अनंत बाक भइ पाछे। देवअलिकजिन बरस्यो आछे॥
कहिनि देवकी अष्टम बाला। उपजिहिकंस तोर सो काला ॥
प्रगटो सो न सुता भइ आई। बधतसोउ घन बास सिधाई ॥
मोपर दया करौ युत नेहा। मोर दोष नहिं कारण एहा ॥
लोपहि कर्माक्षर जग कैसे। जीव स्थावर चर सब ऐसे ॥
यथा कीश बश नट के होई। जो चह नाच नचावतसोई ॥
जन्मे जग संयोग बियोगा। जीवन निधनलहतसबलोगा॥
यह न मिटत कौनौं विधिजगमें। पितुसुतअसपंथीजिमिमगमें॥
सो० ज्ञानवान जे लोग जीवन मरण ते समलखत।
अरिहितु दुख अरु भोग मान अमान समानहीं ॥
मायामद अहमित जग जोई। मित्रहि शत्रु लखत खलसोई॥
तुम बड़साधु अहौ सतिबादी। जस भे हरिश्चंद्र जनकादी॥
मेरी मीचु बचावै हेता। दयउपुत्र निज कोउनहिं देता॥
बार बार अस कहि करजोरे। बिबिध भांति के करतनिहोरे॥

कह बसुदेव सत्य नृप कह्यऊ। बिधिकर्त्तव्र अदोषतुमअहयऊ॥
बरण भाल मम लिख अजसोई। निस्संदेह अवशि नृपहोई॥
कंस प्रसन्न भयो सुनि बानी। प्रफुलितदोउजन निजगृहआनी॥
रस रस व्यंजन सरस जेंवाये। भूषण बसन सुभग पहिराये॥
सादरकरि सब बिधि सेवकाई। दीन्हें दोउजन सदन पठाई॥
निज मंत्री सन कहसि हँकारी। अरिजन्म्यो यहसुता पुकारी॥
यहि ते प्रथम देवबध कीजै। अमर लोक महँ रहै न दीजै॥
देव गिरा जिन मृषा सुनाई। ममभगिनी पुनिदुखितकराई॥

दो॰ अष्टम सुत बसुदेवको काल बतायो मोहिं।
सो उपज्यो नहिं तासु गृह कासमुझाऊं तोहिं॥

नृप रुख हेरि सचिव अस बोला। महाराज सुनु समर अडोला॥
त्रिदश हनब नहिंकठिन सुरारी। सुमनस सबदिनकेरभिखारी॥
जब कोपौ तुम नाथ रिसाई। अखिलविदौताचलिहिपराई॥
को समर्थ तुव संग्रम योगा। सुनौ बृतान्तकहतबुधलोगा॥
ब्रह्मा आठ याम हरि ध्याना। करत रहत सुनु नृप बलवाना॥
बिजया कनक भषत गंगाधर। जग प्रसिद्ध कौशिकनृपकादर॥
नारायण संग्राम न जानत। चपलासंग सदासुख मानत॥
बोल कंस सुनु सचिव सुभाषा। मम मन एक अहैअभिलाषा॥

दो॰ दानवारि मिलिजाय कहुं तासँग ठानौं रारि।
सुनु मंत्री संग्रामकरि मन को करौं सुखारि॥
जो कदाचि मिलिजाइकहुँ तौ किमि जीतौंताहि।
असउपायकोउशोचिभणु सकलशोचमिटिजाहि॥

सविनय सचिवकहा सुनुनाहा। सहज उपाय गुनो मनमाहा॥
जहँ जहँ करत निवास मुरारी। करौ उपाधि तहां तहँ भारी॥
ब्राह्मण विष्णुभक्त सुनि योगी। तपी जपी पुनि रागवियोगी॥
संन्यासी इत्यादि अनेका। जे बिवेक मग टेके टेका॥
इनसबकर अब करौ विनासा। बृद्धतरुण बालक दोउत्रासा॥
भक्तदुखितलखि प्रगटिहि सोई। सुनिनृपबोलिध्रजनिपातिजोई॥

जे जे सचिव कहे तिन घाता। जाय करौ आयसु मम ताता॥
यह सुनि दैत्य सकलअतुराने। जिमि सुधर्म मैं साधु सयाने॥
कोटिन खल मंत्री सह धाये। दुष्टन बहु बिधि रूप बनाये॥
दो० नगर ग्राम प्रति धेनु द्विज बालक औ हरिदास।
जेहि छलि पावत कपट तेहि बधतदुष्ट दै त्रास॥
मंगल इमि ते अधम नर कृत उपाधि बहुभाँति।
सोचरित्रनिन्दकअधिक किमिमोसनकहिजाति॥
इतिश्री मद्विबिधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया
यां मंगलदास बिरचितायां कन्याबध कंसोपद्रववर्णनो
नामपंचमोऽध्यायः ५॥
दो० गुरुपद रज अंजन चषन हौं लगाइ कबिराज।
राधाबल्लभको चरित भणत लवा अघ बाज॥
श्रीमुनिनृपहिकहत पुनि भयऊ। यशुमतिनन्दप्रथमतपकियऊ॥
सुनो सप्रेम सोइ इतिहासा। दम्पति तप कीन्होसुतआसा॥
उग्र तपस्या निरखि महीशा। आपुहिप्रकट भयउजगदीशा॥
वर दीन्हों तिनको यह भूपा। कछुदिन तुवगृहसुतअनुरूपा॥
रहिहौं आइ सत्य करि जानू। जाहुनिलय कीजोममध्यानू॥
तहां जात भय कारण ताहीं। भादूअसित बुधअष्टमि माहीं॥
अर्द्धनिशा जब जागियशोदा। देखा सौम्य सून निज गोदा॥
आनंदित सो भइ नृप कैसे। दीन अमरपत्री लहि जैसे॥
नंदहि बोलिलियो त्रिय आसू। सुतजन्म्योपति निरखुप्रकासू॥
नन्द सुनत सहसा उठिधाये। अनुपम आनँदसों तनछाये॥
तदपि बुद्धि सम उपमा गाई। पूरण भनत दुचितई पाई॥
जिमि दारिद्र उपास नितकरई। अन्न आश बहु संकट भरई॥
दो० दैवयोग ते ताहि कहुँ नृपता बड़ि मिलिजाय।
फिरि आनँद तेहिपुरुषकर कहै बिबुधकोगाय॥
ऐसेइ सुख्य नन्द नृप जान्यो। आपनजन्मसुफलअनुमान्यो॥
प्रात समय द्विज ज्योतिषज्ञाता। बोले नन्द सुरुचि सुनुभ्राता॥

ज्योतिष ग्रंथ काँख गहि भूसुर। नन्दालय आये भूमीश्वर॥
करि आदर सत्कार महाना। साष्टांग दण्डवत सुजाना॥
स्वौतासन द्विज बर बैठाये। बिहँसिनन्द असबचनसुनाये॥
उपज्यो पुत्र लग्न शोधौबर। कहिबिधिसबग्रह द्विजताकेपर॥
द्विजन बेदबिधिसम्बत मासा। तिथिदिनऋक्षयोगअनयासा॥
लिखिसबबिधिशुभलग्नबिचारी। समुझिमहिसुरनगिराउचारी॥

दो॰ शास्त्र रीति तब सूनुके ग्रह ऋक्षादिक जोइ।
सर्बो बिधि पंचांग शुभ सुनु अब लक्षण सोइ॥

निश्चर तूल सखी यह ताता। धरा भार हर जिमि तृण बाता॥
दैत्य मही के सब यहुहतिहै। याकर दूसर धाता गति है॥
गोपी नाथ कहैहै आगे। यहियशजग गाइहिअनुरागे॥
नन्द सुनत सुख लहा अपारा। उभय लक्ष गो नृपतेहिबारा॥
चामीकर रचि शृंग सोहाये। खुर नृप दुर्बनता मढ़ाये॥
ताम्र पृष्ठि वासांसि ओढ़ाई। मुदित नन्द संकल्प कराई॥
दान अनेक अपर तिनदीन्हें। दै दक्षिणाबिदा द्विजकीन्हें॥
आशिर्बाद पढ़त महिदेवा। गये सराहत गोपति सेवा॥

दो॰ बहुरि नन्द सानंदनृप मंगलबदनि बोलाइ।
सत्वर आईं सकल ते बाजन लगी बधाइ॥

बैजंत्री डफ ढोल बजावैं। नृत्यत नृत्यक गायक गावैं॥
बन्दीजन बिरदावलि साजत। जनु तिहुपुर मंगल तहँराजत॥
गोकुल ग्वाल बसत नृपजेते। नारिन सहित चले सबतेते॥
भांति भांति के बेष बनाये। नाचत गावत करत बधाये॥
दधिभाजन निजनिजशिरधारे। भेंट देनगये नन्ददुवारे॥
नन्दसदन भइ भीर नृपाला। जेहि अवसरआये सबग्वाला॥
लागतधका गिरत दधिभाजन। दधिकांदौकीन्हीं तिनराजन॥
गोकुलगृह बीथिका बजारा। दधि दधि दृष्टिपरत तेहिबारा॥

दो॰ खेलिचुके दधिकांदवहि जब सब ग्वाल नृपाल।
भोजन सबहि जिंमायऊ नन्दमहर तेहि काल॥

सबन सबन पहिरायपुनि तिलक शीश करिभूप।
बिदाकरे सब नन्दजू निज निज रुचि अनुरूप॥
यहिविधिबहुतदिवसलगिराजा। बाजिबधाइ सहितसुखसाजा॥
तेहि अवसर मांगा जेहि जोई। दीन्हा नन्द ताहिनृप सोई॥
जन्म कर्म श्रुति विधिवतकीन्हा। दान भूप माहिदेवन दीन्हा॥
ह्वै निश्चिन्त बधाई तेरे। बोले सकल ग्वाल निजनेरे॥
बांधव सुनौ सुना हम आहीं। बालक बधत कंस जगमाहीं॥
का जानिय प्रपंच करि कोई। दुष्टहिं कहै बाल बध होई॥
ताते उचित यहै सब मिलिकै। दैआवैं बरसौंड़ी चलिकै॥
नन्द बचन सुनि केहि भलधाये। घृतदधि पय मुद्रासबल्याये॥
दो० भरिभरि शकटन नन्दसँग गोकुल ते सबग्वाल।
तुरतगये मथुरा नगर भेंटन कंस नृपाल॥
जाय सभातिननृपहि जोहारा। सबहि यथोचित चर बैठारा॥
देइभेंट महि दंड चुकाई। पलटे सब ग्वाल भुवराई॥
पहुँचे सब हंसजा समीपा। समाचारलहि यदुकुलदीपा॥
नंदहि मिले जाइ तब आतुर। पूंछि कुशल बोले नृपचातुर॥
तुम सम मीत सगा जगमाहीं। हमरे कोउ अब दूसर नाहीं॥
कठिनविपतिबश जबहमभयऊ। तुवघर नारि पठइ तब दयऊ॥
गर्भवती रोहिणि मम नारी। तुमप्रतिपालिदियोसुखभारी॥
जन्मो ताके सुत तव गेहा। पाल्योतनयसो सहितसनेहा॥
कहँलगि सखा तोरि करतूती। वरणिकहौं मोरिमति सूती॥
पाछे अब आगे तिहुँ काला। भो न अहै न होइ हितुपाला॥
उपमा कासुदेउँ सुनु मीता। करै सदा हरि तुव मन चीता॥
कहि अस रामकृष्ण कुशलाई। रानि न सहित पूंछि भुवराई॥
दो० कहा नन्द बसुदेव सन तव दाया दिन राति।
भवन हमारे सकल बिधि सुख छावा सब भाँति॥
तनय तुम्हार मोर जिय मूला। है बल्देव कुशल गत शूला॥
जिनके जन्मतपुण्य तुम्हारे। भयउ प्रगट यक पुत्र हमारे॥

दुख लव लेश रहा नहिं मोरे । दुखित परन्तु अहौं दुख तोरे ॥
सुनत नन्द कहनी दुखसानी । यदुकुल कंजरस्मि कहबानी ॥
सुहृदसुनो विधि गति बिपरीता । होतन अहै अपन मनचीता ॥
कर्म रेख नाशत नहिं भाई । परारब्धि सन कछु न बसाई ॥
नरनागर बुधि सागर ज्ञानी । शोचत नहिंअसार भवजानी ॥
मात पिता सोदर सुत नाती । प्रमदा आदि सगे सबभांती ॥
दो० अंत समय सुनुबन्धु प्रिय होत न संगी कोइ ।
दुख सुख जग व्यवहार है बुध न बिचारतसोइ ॥
पैंठहाट जिमि जाइकोउ निजस्वारथ अनुमानि ।
मिलै बाटमहँ आन नर संगचलै मुदमानि ॥
छं० मुदमानि सँगते जात पैंठहिं पंथ महँ कोउ छूटहीं ।
सब ताकि निजनिज स्वारथहि पुनिपैंठमहँ सबफूटहीं ॥
कहुकासुदुखसुख मिलन बिछुरनबिबुधजनसो मानहीं ।
संसारइमि सुनजारसम सुनु मित्र हम सच जानहीं ॥
यहिभांतिकहिपुनिनन्दसों भए जाहु बेगि निजालये ।
चाण्डाल कंस नृपाल कोटिन बाल निजकर सों हये ॥
जहँलगिमहिमहँ चलत बश तहँलागिसुतन ढुँढ़ाइकै ।
मारत महीपति दीन के अस अधम सो मँगवाइकै ॥
तुम सकल जुरिमिलिइहांआये कंसको करभरिदियो ।
उत फिरत ढूँढ़त असुरबालक हाय तुमयहु काकियो ॥
कोजान कोउखल जाइ गोकुल सून लखिछलबलकरै ।
यह सुनत मिलिबसुदेवको तब नंद धावत भे घरै ॥
दो० ग्वाल सकल निज साथलै मथुराते अकुलाइ ।
चलत भये गोकुलहितब मंगल हरिपदध्याइ ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया
यांमंगलदासबिरचितायांकृष्णजन्मोत्सवनंदमथुरा
गमनबर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६ ॥
दो० शमन कलेश बिचारि मन राधारमण चरित्र ।

बरणतहौंबुधजनसुनौं यह किल्विषतमममित्र ॥
बोले पुनि मुनि गिरा सोहाई। सुनुकुजमातु कंत चितलाई ॥
सचिव कंसकर सँग रजनीशा। हनत फिरत चहुँओरमहीशा ॥
सो वृतांत प्रथमहिं हमगावा। अबसुनु अपरचरितमनभावा ॥
यक राक्षसी पूतना नामा। सो छल कर्म चतुरबुधिधामा ॥
नंदहि बिदा कंस जब कीन्हा। ताकहँअधम बोलितबलीन्हा ॥
कहिसि जहांलग हैं यदुबंशी। तिनकेसुततैं आउ विध्वंशी ॥
पाइ रजायसु बन्दन कीन्हेसि। चितप्रसन्नगोकुलमगलीन्हेसि॥
शोचिसिमन पुर सूना आहीं। बधौं सुतन यामहँ भ्रम नाहीं ॥
दो० उपजे तनय जे नन्दके ते गोपी तन धारि।
छलबलकरिबधिआइहौं इमिनिजमनहिंविचारि ॥
षोड़श रचि शृंगार सोहावन। रुच्याभरण सजे मनभावन॥
चली कुचामृत लाइ सयानी। रूप मोहनी माया ठानी ॥
जलज कुसुम कर सोहत वाके। अंग अंग प्रति सुन्दर ताके ॥
नखशिखकरितनसाज सहेली। बनीराक्षसिनित्रियअलबेली ॥
उपमा कहत बनत नहिं कोई। लक्ष्मी बदत दोष कछुहोई ॥
शिवा कहत अर्द्धांगिनि नारी। रंभा भणत मोरि मतिहारी ॥
सत्योपमा एक अनुमानी। सूपनखा रघुनाथ कहानी ॥
यकु परंतु भ्रम है याहि माहीं। आनसकल पूरणघटिनाहीं ॥
जबगोकुलगइ अली प्रपंचिनि। नंदभवनपैठी त्रियवंचिनि ॥
निरखि सकल सुंदरता तासू। मोहीं नारिभयउ बुधिनासू ॥
बैठि यशोदा तट सुख मानी। कुशलक्षेमपूंछी प्रियबानी ॥
पुनि दीन्हीं असीस मुदपाई। चिरजीवै तव कुंवर कन्हाई ॥
दो० कोटि वर्षलगि होइबै तव सुतकी सुनु रानि।
बारम्बार असीसअस कहि छलसहित बखानि ॥
प्रीति बढ़ाइ सप्रेम तेहि यशुदा करते बाल।
गोदलयो मुख कुचदयो सुनुभलचरितभुवाल ॥
देखौ माया मोह अपारा। अग्नि नशावन कीट बिचारा ॥

चक्षुस्रवी चह द्विजपतिमारा । तिमि यहि दृष्टिनि कर्मपसारा ॥
यथा शशी हरित्रिधमनठाना । तथा कस्यो जड़नी अज्ञाना ॥
द्वौकरकुचगहि कृपानिधाना । तासु प्राण सहकृत पय पाना ॥
तब ह्वै विकल पूतना टेरो । यशुमति यह कस बालक तेरो ॥
सुनु मनुजादन है यमदूता । रज्जु धोखे पकस्यों अहि पूता ॥
जीवत आजु बचौं यहिहाथा । हे शंकर शंकर भव नाथा ॥
ऐहौं यहि पुर नाहिं बहोरी । असकहि चपरि चलीमतिथोरी ॥
दो० गहे व्याल व्यालारिके चहु बचिजाय प्रवीन ।
दानवारिकर असुर परि उबरत संशय पीन ॥
बाहिर ग्राम गई भजि नारी । तदपि न तज्यो उरोज मुरारी ॥
क्षीरपानकरितेहिजियलीन्हा । आपन मन भायो प्रभुकीन्हा ॥
गिरी महीतल प्राण निपाता । शब्दभयउअसजस पविपाता ॥
दारुण शब्द सुनत त्रियधाईं । आतुर तासु निकट चलिआईं ॥
रोदत बदत रोहिणी रानी । जनु धन खुयउ दरिद्री प्रानी ॥
यशुदाअस अकुलानी मनमें । शव समभई जीव नाहिं तनमें ॥
ग्राम लोग सब पाछे धाये । नर नारी समूह चलिआये ॥
दीखपरा तन योजन आधे । पय हरि पियत उरजकर साधे ॥
दो० आशु यशोदा झपटि सुत कर उठाय हियलाय ।
चूमिबदनआनँदभई जिमिअहि मणिगतपाय ॥
आतुर सद्म गई लै श्यामैं । बोले गुणी बसत जे ग्रामैं ॥
तिनहिंपूछिधनकरिन्योछावरि । समुझितासुगतिहोतसुबावरि ॥
गोपी ग्वाल पूतना पासा । करत परस्पर बचन प्रकासा ॥
गिरी मही जेहि बेरियाँ भाई । घोर शब्द तब दयउ सुनाई ॥
अबलग धकधकात भयछाती । बालक बच्यो दैव केहि भाँती ॥
ताही समय नंद तहँ आये । देखतही मन संभ्रम छये ॥
परी मृतक रासची कराला । घेरेचहुंदिशि तेहित्रियग्वाला ॥
पूछिनि यह उपाधि कसभाई । कहिसिग्वालयकशीशनवाई ॥
दो० सुंदर तन धरि भवन तव गई प्रथम यह राज ।

मोहीं अबला देखिमुख भूला सकल समाज ॥
सो० यहिहरि लयउ उठाय पयप्यावन लागी तुरत।
पुनि जानान उपाय मरी कौनबिधि सुतबच्यो॥
बोलेनंद कुशल बड़ि भयऊ। पुत्रमोर यहि करबाचि गयऊ॥
अरुन गिरी पुर ऊपर भाई। नतजातो सब ग्राम नशाई॥
यहितल परत मरत शकनाहीं। कहि असनन्द गये गृहमाहीं॥
बिप्रबोलि दीन्हो बड़दाना। इतग्वालनलै आयुधनाना॥
काटि देहपल अग्नि जराई। अस्थि महीमहँ दीन्ह गड़ाई॥
जरत शरीर उठी शुभबासा। छाइरही जगसो दशआसा॥
सुनत महीप जोरियुग पानी। चकित चित्तकहि कोमलबानी॥
महाराज राक्षसिनि चँडारी। मनमलीन मदपल आहारी॥
दो० ताके तनते गंधिशुभ क्यों निकरी मुनिराय।
कहौमोहिं समुझाइ कै ममभ्रम सबबिनशाय॥
छं० बिनशाय भ्रमसो कथा सिगरी कहौ प्रभु बिस्तारिकै।
मुनि कहा सुनुमहिपाल हरि पयपान कियसुबिचारिकै॥
जगवन्दिते तेहिं मोचियो यहिते सुबासित तन भयो।
नरनाहको भ्रमसुनतहीं तेहि समय बुधजन सब गयो॥
दो० अधम निशाचरिमलिन मन पाप गलित तनजासु।
मुक्ति दई तेहि कृष्ण जेहि मंगल भजु पदतासु॥
इतिश्रीमद्विबिधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांपूतनाबधबर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥
दो० भवदधि अगम अपारहै नीर जान जसईस।
बुध तापर आरूढ़ ह्वै पारजात बिसवीस॥
कुरुकुल दीप सुनत मन काया। श्रीशुकमुनिबरणतकरिदाया॥
जन्म नक्षत्र कृष्ण कर आवा। मातु यशोमति कस्योबधावा॥
आयसु नंद चरहि असदयऊ। वैसरिक्ष दिन सुतकरभयऊ॥
बसुधा मर ममनगर बसेरी। सबहि निमंत्रबिनयकहिमेरी॥
ब्रजबासी जे जाति अजाती। निवतुसकलनरतियसुतनाती॥

चल्योद्रुत पावत अनुशासन । गयोप्रथम उर्वरा सुरासन ॥
नृप सँदेश भणि निवता दयऊ । आनसमस्तगृहन पुनिगयऊ ॥
दै निमंत्र घर घर फिरि आवा । आवतसबकहि नृपाहिसुनावा ॥

दो० आये तबहिं समाजजुरि बिप्रादिक सब लोग ।
करि आदर बैठारेऊ जो जेहि आसन योग ॥

दै बहुदानकुंभिनी देवा । बिदा किये करिकै बड़िसेवा ॥
आनजाति जो कोउजसआवा । करिसत्कार अनंद घुमावा ॥
ज्ञाति बन्धुजो तेहि दिन आये । उज्ज्वल बसनसबहिपहिराये ॥
छबिधि भोज्य रचि सब बैठाई । चतुर सुआर परोसतभाई ॥
तिनसँग मातु यशोदा रानी । लगी परोसन आनँदसानी ॥
रोहिणिकरत टहल गृह केरी । जेंवत सब प्रियबन्धु बसेरी ॥
तहँ गोपिका गीत बहुगावैं । आनँद सों डफ ढोलबजावैं ॥
यहि सुखमगन नारिनरभयऊ । बिसरिश्यामसुधिसबकहँगयऊ ॥

दो० शकटी पर्म विशालयक तेहितर पालन माहिं ।
सोवत परे अचेत हरि काहुइसो सुधि नाहिं ॥

लागिक्षुधाजागे खल भानन । पदअंगुष्ठदियो निज आनन ॥
रोवत दशदिशि हेरत स्वामी । मन बिहसत प्रभु अंतरयामी ॥
नभमारग खलयक तेहिबेला । जातलखा हरिबाल अकेला ॥
निजमन शोचत सुर आराती । सुतनिरखत बिहरत ममछाती ॥
महाबली उपजो यहुकोई । अबहीं हनौं जाइ दुखखोई ॥
प्रबल पूतना यहि सुतमारी । बैरलेउं असमनहिं बिचारी ॥
शकटरूप धरि शकट समाना । प्रभु अंतरयामी सबजाना ॥
शकटासुर तेहिते तेहिनामा । भो महिपाल सैमुखीधामा ॥

दो० चटक्यो शकटा भारतेहिं लखि श्रीहरि बिलखाइ ।
चरण प्रहास्यो शकट महँ गिस्यो दूरि भहराइ ॥

चक्रादिक शकटी करटूटे । गिरत दुग्ध भाजन बहुफूटे ॥
गोरसबहा भवन असभाई । जस पावस पयबहत तोराई ॥
शकटी भाजन टूटे फूटे । शब्द भयउ जसपवि हरि छूटे ॥

सुनत शब्द नरतिय गण धाये। सत्वर कृष्णचंद्र पहँ आये॥
यशुदा गोहरि बच्छ निहारी। सहसा लीन्ह उठाइ मुरारी॥
चूँबि मुखारबिंद हिय दीन्हों। क्षीर पियाइ सुखी सुत कीन्हों॥
यह आश्चर्य्य बिलोकत जोई। शोचत ठाढ़ठगोसो सोई॥
जो जेहिमन आवत अनुमाना। तेहि अनुसारसोकरतबखाना॥
दो० काहूलखोन काभयो शकटटूट किमिभूप।
चकितबिचारतलोगसब निज निज मति अनुरूप॥
कहत परस्पर बिधि भल करेऊ। बचासूनु शकटी खसिपरेऊ॥
टूटाशकट शोच नहिं भाई। दबत बचा यह बाल कन्हाई॥
ऐसइठाम नीचकृत बाधा। होइजहां सुन्दर मखश्राधा॥
इन्द्री मास भई बय हरिकै। कंसमहीपति चिन्ताकरिकै॥
तृणावर्त्त बोल्यो अकुलाई। गोकुल जाहु कहा समुझाई॥
पठई प्रथम पूतना नारी। तहां ताहि केहु बीर सँहारी॥
जो जीवत होती सुनुताता। आवति तौदिन भे यहिबाता॥
धरि बकरूपसो गोकुल आवा। उहाँ कृष्ण असकीन्ह बनावा॥
सोहत श्याम उछंग यशोदा। करिमाया भारी भे गोदा॥
निजबल समथाँभा नँदनारी। थँभेन तब महि दिय बैठारी॥
धराबौंडरा रूप निशाचर। बिकलहोतलखिताहि चराचर॥
अंधकार गोकुल खलछावा। तिमिरनिदान न मगकोउपावा॥
दो० दिननिशि समदीसन लगा भयउ घोर अँधियार।
प्रबल धनंजय बहत नृप गोकुलमहँ तेहिबार॥
पत्री गिरि पत्री भहराने। अंधकार महँ दुखित भुलाने॥
अस्मउड़ात यशोदा देखी। हरिहि उठावन लागि बिशेखी॥
उठेन करि पौरुष सोहारी। कर सरोज तब लीन्हसिटारी॥
तृणावर्त्त तेहि अवसर आयो। गहिहरि अधमनाककहँधायो॥
पुनिनिजमनअसकरतविचारा। हनौं सुतहि कोकरै उबारा॥
उतकृत अस बिचार बशकाला। इतयशुमति नलखा गोपाला॥
हाहाकृष्ण कृष्ण ममप्राना। कहि बिलखानी भूपमहाना॥

रुदन शब्द सुनि गोपीग्वाला । अविचट धाइ चले महिपाला ॥
दो० टोहत सब आवत मगहिं सूझत कछुन अँधेर ।
ठोकर लगिमहि गिरिपरत महा विपति तेहिबेर ॥
युवा बाल अरु जरठ गोपाला । ढूंढ़त हरिहि बिकलतेहिकाला ॥
कृष्ण मातु रोहिणी समेता । रुदिबादि महितलपरतअचेता ॥
नंद पुकार मेघ ध्वनि करहीं । खोजत हरिहिदृष्टि नहिंपरहीं ॥
सकलबिकलहरिमनअनुमानी । पटक्योखलहिशिलापरआनी ॥
मरतहि असुर थम्हापवमाना । सकलतिमिरकरभयउनिदाना ॥
भगे जे तमते पाइ प्रकाशू । निज निज गृहआयेसबआशू ॥
सो खल परा नन्द अँगनाई । खेलत उरपर बाल गोसाँई ॥
देखि यशोदा कण्ठ लगाये । दान हेत द्विज वृन्द बोलाये ॥
दो० दान बिबिधबिधि भूसुरन देइ बिदा करि दीन ।
मंगल दुखभ्रमजगतको दूरि कृष्ण सबकीन ॥

इति श्रीमद्विविध किल्विषान्धकारदिनमणि श्रीकृष्ण प्रियायांमंगलदासबिरचितायांशकटासुरतृणावर्त्त बध वर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

दो० जग पालक परमात्मा धर्‍यो स्वरुचि नर देह ।
ताहित्यागिकबिबिबुधजन काकर करियसनेह ॥
श्रीशुक कहा सुनिय बुधिबोधा । गर्गनाम यदुबंश परोधा ॥
बड़ज्ञानी मुनि ज्योतिष ज्ञाता । कहि बसुदेव बोलि असबाता ॥
दयासिन्धु गोकुललागिजाइय । नामकरण सुतकर करिआइय ॥
सगरभ रोहिणि गइ नँद धामा । ताके उपज्यो सुत गुणग्रामा ॥
तासुनाम बल बुद्धि पराक्रम । लग्नसाधिपुनि लिखियबहिक्रम ॥
अरुयक पुत्र नंदगृह भयऊ । सोऊ तुमहिं बोलि मुनिगयऊ ॥
चित प्रसन्न सुनि यदुपति बानी । गोकुलगमनकीन्हद्विजज्ञानी ॥
पुर तट जब पहुँचो महिदेवा । नंदहि काहू कह यह भेवा ॥
दो० आवत हैं यदुकुल गुरू नाम सुभग गर्गर्षि ।
सुनत सभासदउठिचल्यो नन्दभप सुनि हर्षि ॥

भेंटि भेंट दै बिनय बखानी। निज सुभाग्य सराहिमृदुबानी॥
डासि फाल्गुण भल पटबासन। कृत पूजा लाये निज आसन॥
पदपखारि लीन्हा पग पाथा। यशुमति नन्दजोरिदोउहाथा॥
सानुराग सविनय मृदुबाता। ऋषिसनकहीप्रफुल्लितगाता॥
मम बड़ भाग्य लखे पद तोरे। अब कलेश कोउरहा न मोरे॥
कियउ पवित्र हमार अगारा। चरण कृपा करि धरिदुखटारा॥
तव प्रताप द्वै सुत मम गेहा। प्रकटे सुनहु बिप्र युत नेहा॥
यदुबंशी यक रोहिणि जायो। एक यशोदा सूनु कहायो॥
नामकरण अब लगिभा नाहीं। भणौनाम गुणि ज्योतिषमाहीं॥
बोले गर्ग सुनो प्रिय भाखा। गुप्तनाम राखौ गुणि राखा॥
मधुर बाक्य सुनि द्विजबर केरे। बिस्मित नन्द कहा भ्रम मेरे॥
केहि कारण न प्रकटकृतनामा। सोवृतान्तभणु द्विजगुणग्रामा॥
दो० प्रगट सभा महँ नाम कृत होइ बिदित जग बीच।
कंस सुनै मम आगमन तौअस समुझै नीच॥
देवकि सुत बसुदेव चोराई। नन्द सदन दीन्हा पहुँचाई॥
सो सुधि लहि तहँ गर्ग पधारा। यहमनसमुझिकंस बिकरारा॥
बन्धन मोर करै सुत लागी। कटु बचकहै मूढ़ता पागी॥
तुमरो दैव जानका करई। बधै तुमहिं नहिंआपुहि मरई॥
यहि कारण एकान्त अगारा। कहौंनाम गुणि ज्योतिषसारा॥
बोले नन्द बिप्र भल शोचेउ। आगमन लखिहमारदुखमोचेउ॥
कहि असऋषिसहगे गृहबीचा। बैठे भवन अर्गजा सींचा॥
तबसुनिजन्मदिवसतिथिकाला। पूछिलग्न शोधी गुणपाला॥
दो० ज्योतिषमत मनयांचिकरि कही सुनो नँदराय।
रोहिणिसुतके नामअब कहौं तुमहिं समुझाय॥
संकर्षण रेवतिरमण बलदाऊ बलराम।
कालिंदीभेदन बहुरि शुभ बलबीर सुनाम॥
अरुजेहि आपन पुत्रबतावत। तासुनामअगणितश्रुतिगावत॥
तदपि उचितचाहिय कोउनामा। जन्म्यो कतहुं देवकी धामा॥

बासुदेव संज्ञा यहि कारण । जगप्रसिद्धकरि करौउच्चारण ॥
दोनों सुत ये नन्द तुम्हारे । चहुँयुग सँग उपजेगुणभारे ॥
नन्दकहा अबग्रहगुण भाखौ । निजजनजानिगुप्तजनिराखौ ॥
कहमुनि सुत दूसर करतारा । गुणइनकरअतिअगमअपारा ॥
तदपि भविष्य कहौं यकबाता । ये सुतकरिहैं कंस निपाता ॥
अरु महिभार उतारिहिं भाई । इमिकहिमुनि निजगृहगेराई ॥

दो० कहाजाय बसुदेव सन गोकुल चरित ऋषीश ।
प्रफुलितचित गद्गद भये सुनतवृतांतमहीश ॥

नामकरण अस भयउ भुत्राला । अपर अग्र सुनु कथारसाला ॥
रामकृष्ण दिनप्रति बाढ़तअस । शुक्लपक्ष निशिकरबाढ़तजस ॥
करत बाललीला दोउ भाई । लखिहरषत चितपितुअरुमाई ॥
नीलपीत झँगुली तन सोहै । निरखत महामुनिनमनमोहै ॥
उत्तमांग लघु लसत सिरोरुह । राजततनघनबिधुकरछबिमुँह ॥
यंत्रित कठुला उर बर राजै । रुचिर खिलौना करन बिराजै ॥
भृकुटि भंग भवभय बिनशावै । तेहिका कोउकियंत्र पहिरावै ॥
जेहि निज इच्छा पुरतिहुंकीन्हें । जननीताहि खिलौनादीन्हें ॥

दो० यहै मनोहर चरितलखि भूलिजातमतिहीन ।
चीन्हतनहिं परमात्महिं जहँतहँ फिरतमलीन ॥

आंगन रुचिर न बरणिसेराई । जहँ खेलत हरि दोनौं भाई ॥
बातैं करत तोतरी राजा । सुनिहरषत पितुमातुसमाजा ॥
जानुपाणि धावत गिरिपरहीं । यशुमतिरोहिणिसँगसँगफिरहीं ॥
जनि काहुइ डरिगिरहिंकन्हाई । यहि कारण लागीं सँगजाई ॥
गहि गोवत्स पुच्छ उठिगिरहीं । लेहिं मातु ऊपर गहिकरहीं ॥
हृदयलगाइ पियावत क्षीरा । इमिबहु करत चरितदोउबीरा ॥
जब बड़भये श्याम असुरारी । ग्वालबाल तब लिये पुकारी ॥
पयदधिमही चोरिबे काजन । संध्या प्रात फिरैं सुनुराजन ॥

दो० शून्यालय लखिदुग्ध दधि माखनखात लुटाइ ।
बचत न कौनैंबिधि चतुर चहुजस धरत चोराइ ॥

ऊंच अवास धरा दधि देखी । अस कौतुकहरिकैं विशेखी ॥
पीढ़ी पटा उलूखल धरिकै । तापर सखा ठाढ़ यककरिकै ॥
तासु कन्ध पुनि चढ़ैं मुरारी । सीके ते दधि लेहिं उतारी ॥
अल्प भखैं भाजन गहि फोरैं । पुनिदूसर गृह जाइ ढँढोरैं ॥
यहिप्रकार प्रति गृह प्रतिवासर । कृतचोरी दधिनाथ चराचर ॥
चोरी करत गहा त्रिय चाहैं । कौनौंबिधि नश्यामकहँलाहैं ॥
सम्मत नारिन तब असकीन्हा । हरिहि जाइ घरभीतरदीन्हा ॥
चहुँदिशि चितै शून्यगृह जानी । जातदेखि यकअली लुकानी ॥
दो० प्रविशि सद्ममाखनदही चहा चोरावन श्याम ।
तबहीं हरिकर करगहे झपटि ग्वालिनी बाम ॥
कहि नितप्रति दधिचोर सुत आवत संध्याप्रात ।
चलुतोहि सौंपौं यशुमतिहि कहि असमो मुसकात ॥
पुनिमोहन करकर निज करिकै । यशुदा पासचलीं सब जुरिकै ॥
तबमाया करि दीनदयाला । तेहिसुत तेहि गहाइ नरपाला ॥
दौरिसखन सँग मिले बिहारी । गइसाखि जहँराजत नँदनारी ॥
बन्दि चरण उरहन असदीन्हा । सुनौंमातुनिजसुतकृतकीन्हा ॥
दधिमाखन ये खात चोराई । अहनिशि यहउपाधिब्रजछाई ॥
धरिय गुप्त गृह बचत न सोई । लेतमनौं निजकर धरहोई ॥
पावत स्वल्प लुटावत रानी । यहिसुतकरअतिअकथकहानी ॥
भरा अस्पदधि निरखैं जबहीं । कहैं श्याम दधिखायो अबहीं ॥
उतरु देहितौ तोहिं खवायो । पलटि मोहिंतैं चोरु बतायो ॥
यहि निमित्त गहि लाइउँ आजू । पहिचानैं सुत सकल समाजू ॥
हँसिहरि मातुकहा सुनु आली । काकर सुतलाई बाचाली ॥
मोरसूनु नहिंसुनु मतिथोरी । श्यामहिं वृथालगावतचोरी ॥
दो० मेघ बचन कहि लगि बदत लाजन आवत तोहिं ।
प्रथम चीन्हु यहि बालकहि फिरि उरहनदे मोहिं ॥
लखो पाणिनिजबाल निज भई बिलज्जित सोइ ।
बोलियशोदा कृष्णसन कहा चंद मुख जोइ ॥

कृतचोरी किमर्थ परगेहा। निंदक कर्म बताइसि केहा॥
सबकुछ भवनभरा सुतखाहू। जनि काहूके मन्दिर जाहू॥
श्रीहरि विहसि मातुप्रति बानी। कहउजननितूंभलिपतियानी॥
मृषागोपिका सकल बखानैं। ममसंग अमित ठठोलीठानैं॥
कतहुँ बच्छ दोहनी थम्हावैं। कतहुँक सदन टहल करवावैं॥
द्वारकतहुँ मोहिंकरि रखवारा। जाहिंकाजलगिआनअगारा॥
रचिप्रपंच तवढिग ये आवैं। मृषाकर्म भणिमोर सुनावैं॥
सुनि गोपिकन कृष्ण मुखहेरा। निजनिज भवनगईं तेहिबेरा॥
दो० भुवनचारिदश जासुकर सृजतपलत नाशिजात।
सो परमात्मा भक्तिवश दधि चोराइ ब्रजखात॥
आन प्रमोदक चरित अवसुनिय सध्यानतृपाल।
यकदिन श्रीहरिरामजी करत ख्याल सँगबाल॥
भषैलाग मृतिका तहँ श्यामा। यशुदहि सखाकहा प्रभुकामा॥
क्षोभक्षुभित करसाँटी आहीं। बालवृंद जहँआइ तहाँहीं॥
क्रोधित जननी हरि अनुमानी। ह्वै रहे ठाढ़ससाध सज्ञानी॥
आनन पोंछोजन भयहारी। तेहिक्षण तहँआई महतारी॥
कहाकान्ह तैं माटीखाई। सभयसकंप कहा यदुराई॥
मिथ्या काहुतोहिं भटकायो। कह अंबातव सखा बतायो॥
सखिस सुहृद दिशिनैन तेरे। कबहीं भषी मृत्तिकाएरे॥
हरिरुख निरखि त्रास तनताहीं। कहत तातमैं जानत नाहीं॥
दो० सखासाथ बतरातहीं गहा यशोमति माय।
विहसिभन्यो श्रीकृष्णजू तू जनिमातु रिसाय॥
सो० मनुजन माटीखात कातोरी बुधि विधिहरी।
कहायशोमति मात सुनहुलालममबचनशुभ॥
ये अटपटि बातें नहिं जानौं। मुख दिखराउ सत्यकरिमानौं॥
तबहि श्याम आनन फैलावा। अलख चरित मातहिंदेखरावा॥
तीनौं लोक भुवन दश चारी। मुख भीतर हेरेउ महतारी॥
दीख अजीश फणीश गणेशा। त्र्यंबक पासनाथ अमरेशा॥

हंस छपाकर सरिता नाथा। त्रिदशअसुरयमयमचरसाथा॥
रंभा ब्रह्मायणी भवानी। दशौ महा विद्या गुण खानी॥
नरनराधि पशु खगवसुब्याला। भूत प्रेत बैताल कराला॥
तिहुपुर जो विभूति सुनुराजा। लखा मातुसोसकलसमाजा॥
दो० जोन सुना देखा न जो सो देखामुखमाहिं।
भयो ज्ञान जाना हरी रहानेक भ्रम नाहिं॥
अहह दैवमति मति कतनाशी। सुतकरिलखा पुरुषअविनाशी॥
जो हर मन मानसहि मराला। जेहिध्यावतअजादिसुरपाला॥
अरुजेहिलगिकृतजपमषलोगा। करिउपवासकठिनतजि भोगा॥
सो अवतरेउ मोर गृह आई। मैं मति बिनतेहिमारन धाई॥
यह चरित्र श्रीहरि सब जाना। प्रगटिमोह हरिलीन्हेउज्ञाना॥
पुत्र भाव पुनिह्वै अनुरागी। सानँद सुतहि सराहनलागी॥
कंठ लगाइ सप्यार भुवाला। गई गेह सँग मदनगोपाला॥
जानि चराचर पति अस स्वामी। भजतनताहि मंदमतिकामी॥
दो० जन्मजन्म श्रीकृष्ण जू जानिदास निज मोहिं।
भक्ति दीजिये कृपाकरि ध्याऊं स्वामी तोहिं॥
इतिश्रीमद्बिबिधकिल्विषान्धकार।दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांकृष्णबाललीलायशोदाविश्वदर्श
नवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९॥
दो० सारस अरुण अश्यामवत चरण श्याम के ध्याय।
जेहि रसममममतिसदृढ़ अलि हरियशकहै बनाय॥
एक समय दधिमथने काला। जगी यशोमति प्रातनृपाला॥
सकल सखी दधि मथने हारी। ते बोलीं यदुपति महतारी॥
आलिन मुदित गृह आइ बहारा। लीपि पोति घररुचिरसम्हारा॥
सानुराग पुनि मथनी भाजन। लैलै मथन लगीं तहँराजन॥
नूतन कलस भरा दधिरानी। शुभथल लै बैठी सुखसानी॥
चारिपदी लघु सुरुचि बिछाई। बैठि मथन रजु मथनिमँगाई॥
नवदधि भाजन पाछि सयानी। रामश्यामहित धरिनंदरानी॥

पुनि नृपदधिहिबिलोवनलागी । शोचत जगहिनहरिरिसपागी ॥
दो० शब्द भयो दधि मथन कर जनु गरजे घनघोर ।
जागिपरे ध्वनिबड़ि सुनत तबहीं नन्द किशोर ॥
रुदत पुकारत जननि कहि सुन्यो न मथरवघोर ।
उठिधाये तब आपुहीं जलभरि नैननकोर ॥
जननी निकट ठाढ़ ह्वै आगे । गहि बड़स्वासरुदनहरिलागे ॥
कहा बचन प्रभुपुनि तुतराई । बहुत बार तोहिं टेरयों माई ॥
तदपिन उठी काज प्रिय तोहीं । दारुण क्षुधा लागिसुनुमोहीं ॥
मचल मही असकहिभगवाना । करसरोज गहि रईसुजाना ॥
दधि भाजनते बाहिर डारी । फेंकत दधि द्धौकरन निकारी ॥
अंचल खैंचि चरणमहि मारे । तब रिसाइ यशुमति बैठारे ॥
कहा कहाँ मचलापन सीखी । अबलगिसुत तू पुरुषमनीखी ॥
चलो कलेवा तुम कहँ दीजै । पुनि पश्चात कार्य गृहकीजै ॥
दो० श्याम कहा अब लेउँ नहिं प्रथम न दीन्होमात ।
यहकहि ठुनुकत मातुढिग यशुदामन झुँझुलात ॥
फिरि परिणाम प्यारकरि पोटी । चूमिगोदलै दीन्हेसि रोटी ॥
मिसिरी माखन स्वकर मिलाई । कहाखाहु यह कुँवरकन्हाई ॥
लगेखान मुसकाइ कृपाला । चंचल चहुँदिशिचितैनृपाला ॥
अंचल ओट करेनँदरानी । लगै न दृष्टिचित्त अनुमानी ॥
नशैकाल लखि भृकुटी जाकी । जननी दीठि बचावत ताकी ॥
तेहिक्षण कहागोपिका आई । कानिशिचन्त बैठि तू माई ॥
पयउफनाइगयो चहुँ ओरा । झपटिचलीतजि हरितेहिंठोरा ॥
क्षीरउतारि मही धरि दयऊ । इतहरियहकौतुक नृपठयऊ ॥
तोरि मथानी भाजन फोरी । लीनी माखन भरी कमोरी ॥
बालसखा सँगलै यदुराई । बैठ उलूखल रीतो पाई ॥
चहुँदिशि सखा घेरि बैठाई । हँसिहँसि माखन दयउखवाई ॥
उतयशुदामहि धरिनृप क्षीरा । सहसा फिरि आई हरितीरा ॥
दो० घर बाहिरदधि बहत लखि तबकरिकोप अपार ।

गहिकर साँटी चलभई आतुर नृप तेहिबार॥

खोजत यदुकुल कैरवचन्दा। गईजहाँ शोभित सुखकन्दा॥
मंडलीक हरिबाल समाजा। खात खवावत माखन राजा॥
शनय शनय पगधरि हरिमाई। पाछे तेगहिलियो कन्हाई॥
अरु कहतैं दधि माखन नाशा। आजु तोहि देहौं बड़ित्राशा॥
हाहा करि कहरोइ मुरारी। गोरस मैं न जान महतारी॥
दीन बाक्यसुनि जो मुसकानी। रिसमुदमग्नपकारिगृहआनी॥
चहत उलूखल बाँधा ताहीं। प्रभुमाया करि दीन तहाँहीं॥
जेहि रजु बाँध छोट सो होई। काहूरजुनबँधा सुत सोई॥

दो० तब सरोष सहचरिन सन सब गृह रजुनमँगाइ।
बाँधेउ तदपि न हरिबँधे यशुदामन अकुलाइ॥

देखौ मोह प्रबलताभारी। जेहिनिजबलयशुदामतिहारी॥
भवबंधन दारुण जेहि नामा। छूटत मातु बाँधतेहि दामा॥
कहत आजु बाँधे बिनु तोहीं। तजौं नशपथतोरिसुतमोहीं॥
जानि बिकल बड़ि सौंहबिचारी। लघुदामरिबँधि गये खरारी॥
पुनि गोपिकन कहानँदनारी। करै मुक्त तेहि शपथ हमारी॥
कहि असगेह काजसो लागी। बँधेउलूखल जन अनुरागी॥
नरइव चरित सुनत पुनिजोई। भ्रमत चतुरनहिं मूरख कोई॥
दामबँधे दामोदर स्वामी। मन पछितातदेखिसँगगामी॥

दो० जाकरअस अद्भुतचरित जानिसकतनहिंकोइ।
बिनवत मंगल जोरिकर दया करौ प्रभुसोइ॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांश्रीकृष्णचंद्रदामबंधन
वर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

दो० विघ्न दोष दुख रुजलवा जगबन करत बिहार।
भागत सुनतहि दशौदिशि हरियश श्येनप्रचार॥
बिशदबाक्य बोले सुमुनिसुनु अवनिप चितलाइ।
सुधि आई श्रीकृष्णकी भूत समय की राइ॥

धनद सुतन नारद दियशापा । तिन उद्धार करिय हरितापा ॥
सुनि संदिग्ध भूप मुनिबानी । कीन्ही प्रश्न जोरि युगपानी ॥
सुत कुबेर के पुरुष प्रबीना । का अपराध ऋषयकर कीना ॥
जेहिलगिशापदीन्हमुनिनारद । सब प्रसंग बद्ध ज्ञान विशारद ॥
मुनिकह सुनहु भूप नयधामा । धनद पुत्र नल कूबरनामा ॥
गिरिकैलास बसत ते दोऊ । शिव सेवा बिधि जानत सोऊ ॥
लखि तत्परता सेवा शंकर । अप्रमाण धनदयउ कृपाकर ॥
रास बिलास करैं गिरिऊपर । उपमा कासु देउँ नृप भूपर ॥

दो० एक समय बामन सहित बन बिहारगय सोइ ।
धन मद तापर मद पिये मतवारे मति खोइ ॥
साबलान ह्वै नग्न ते ध्रुवनन्दा के बीच ।
सकल स्नातसप्रेमनृप जल दोउ करनउलीच ॥

कंधर बाहु डारि नर नारी । कृतकिलोलनिजमनअनुहारी ॥
अकस्मात तेहिसमय महीशा । तहँ आवत भे देव ऋषीशा ॥
तिनहिं बिलोकतनारिरिसानी । पहिरे बसन निकरितटआनी ॥
ते द्वौ गलित महा मतवारे । नग्नठाढ़ मुनि नैन निहारे ॥
यक्षप सुतन देव ऋषि देखी । निजमनकियचिंतवनबिशेखी ॥
श्री मद मद ये गर्वित भारी । यहिते निंदा करत हमारी ॥
काम क्रोध जानत सुखसीवा । इनते भले रंक जगजीवा ॥
अहमित होत कतहुं ते नाहीं । भजत ईश दुखवश मनमाहीं ॥
धर्माधर्म धनिहि नहिं सूझत । केवल चित्त कुकर्म अरूझत ॥
भणत पुराण बेद इतिहासा । सम्पतिकरत सुमतिकरनासा ॥
मूरुख करत देह अनुरागा । लहतअवशिदुख अंतअभागा ॥
जानत सर्व शरीर असारा । बुध न होत धन मद मतवारा ॥

दो० गृह कुटुम्ब लखि चतुर नर नहिं भूलतमतिधीर ।
समुझतसकलअसत्यही जिमि अंजुलिकरनीर ॥

सुखदुखसम्पति विपतिसमाना । जानत संत मान अपमाना ॥
इनके समजड़मति जग कोई । मनुज देह मम जानि न होई ॥

ममअपमानयदपि इनकीन्हा। पहिचाना अथवा नहिंचीन्हा॥
तदपि शापबिन त्यागौं आजू। तौ होवै परिणाम अकाजू॥
निंदिहिमुनिनआनखललोगा। यहिते अवशिशाप के योगा॥
असमन शोचि सुरर्षि पुकारी। कहा सुनौ द्वौ गिरा हमारी॥
कियोजड़त्वकर्म तुमजड़मति। याहिअघयक्ष लहोगे जड़गति॥
पादप तन उपजौ भव जाई। गोकुलग्राम शाप मम पाई॥

दो० मुक्ति लहोगे कृष्णकर सत्य सत्य मम बयन।
नारद शाप कराल दै जात भये बुध अयन॥
कारण भूपति शापकर तुम्हैं सुनाओ सर्ब।
विकल भये द्वौशाप सुनि यथापरे शशिपर्ब॥

यहि कारण धनपति सुतभूपा। वृक्ष भये यमलार्जुन रूपा॥
तिनहिं निरखिकृपालशकटारी। कठिनशापऋषिहृदय बिचारी॥
निजबल तब आकर्षिउलूखल। लै आये यमलार्जुन के तल॥
मूल मध्य विटपोभय केरे। आड़ि उलूखल खैंचि करेरे॥
टूट मही कुज परे समूला। भयो शब्द बड़ तरवर थूला॥
वृक्षन ते द्वौ पुरुष सोहावन। प्रगटे तरुण धरे तन पावन॥
जोरि हाथ है ठाढ़ अगारी। अस्तुति कृत द्वौ जीव सुखारी॥
दीनबन्धु तुम बिनको ऐसो। मोचत अघबड़ हमरो जैसो॥

दो० बहुत दिवस तरु देह महँ लहा कलेश कृपाल।
कमलचरण तव परसि अब दुखछूटो यहिकाल॥

बोले बिहसि बाक घनश्यामा। सुनो यक्षपति सुत गुणग्रामा॥
नारद बड़ि दाया करि शापा। गोकुल मुक्ति लहेउ गततापा॥
जन्म अनन्त करततपज्ञानी। अन्तसमयमाहिंलहत न प्रानी॥
सहजहितुमहिंमिल्योंमुनिदाया। परम पुरुषहौं आदि अमाया॥
अब प्रसन्नमोहिंसब बिधिजानी। याँचौबर निजमनअनुमानी॥
नीलोत्पल पद हरिके देखी। परे दण्डवत युगुल बिशेखी॥
नारद कृपा दरश तव पाये। दुरितसमस्त सहज बिनशाये॥
पूजी इच्छा सकल हमारी। परसि चरण तुव देव मुरारी॥

छं० पदपरसि तुम्हरे दयासागर पूजि सब मन कामना ।
अबलहा सुख्यअशेष स्वामिन भयउ थिरचंचलमना ॥
जनजानि तदपिदयाल केशवभक्ति अविचलदीजिये ।
तव भक्ति बर प्रभुदेइ तिनसन कहागृहमग लीजिये ॥
दो० प्रभु आयसु लहि बंदि पग गये यक्ष निज धाम ।
मंगल मन मम सीख सुनि भजिले मोहनश्याम ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदास बिरचितायां यमलार्जुनमोचबर्णनो
नामैकादशोऽध्यायः ११ ॥
दो० जासु रोम प्रति कोटिधा झूलत हैं ब्रह्मारड ।
सो बिराट तन मनुषबनि भयो कृष्ण बसुधारड ॥
तासुचरण कोमल कमल अमल बंदि मनमाहिं ।
बरणौं सुखद चरित्र यह जो सुनिपाप बिलाहिं ॥
गिरत बिटप मुनिपुनि कहराजा । घोर शब्द भोजनु घनगाजा ॥
चौंकितुरत यशुदा उठिधाई । आतुर कृष्णपास चलिआई ॥
जेहिठाँ हरिहि उलूखल बाँधा । मिले न तहँतब रोदन नाधा ॥
ते पश्चात आन त्रियगोपी । यशुदा निकट पहूँचीं सोपी ॥
ग्वाल युवा बूढ़े लघुकाली । आये तिहिठाँ सबनर आली ॥
लखि रोदति नँदनारि दुखारी । कहत कृष्ण हे कृष्ण पुकारी ॥
पीड़ित सकल रुदत बहुतेरे । तेहिक्षण सखिआईं गणनेरे ॥
कत निरर्थकृत गहन कराला । मैं हेरो बुधिसों नँदलाला ॥
दो० वृक्षपरे टूटे जहाँ तहँ स्वभावहीं श्याम ।
खेलन मिस प्रभुजानि मम चलेगये गुणग्राम ॥
नेककाल पीछे अबहिं भयो शब्द बिकराल ।
ढाहिगिरे द्रुम तिनाहिंकर असभाषा जबबाल ॥
तबसब झपटि चले सुनि आगे । निश्चय वृक्षपरे महिलागे ॥
बँधे उलूखल तिनके बीचा । सकुच बैठ हरिमूल नगीचा ॥
देखि यशोमति धाईकैसे । धेनुबच्छ कहँ धावत जैसे ॥

खोलि उलूखल हृदय लगाये। नरनारी समूह जुरिआये॥
कोउ करतालदेहिं बहिलावैं। कोउ मध्यमा अँगुष्ठ बजावैं॥
जानि सशंकित लोग लोगाई। चाहत हँसैपुत्र सुखदाई॥
जासु त्रास त्रासित यमकाला। सभयताहि जानत गोपाला॥
नंदुपनंद परस्पर कहईं। चिरकालीन वृक्ष ये अहईं॥

दो० सहज टूटि धर गिरि परें यह अचरजकी बात।
भेदकाहुबिधि मिलतनहिं तबबोल्योयकतात॥
आड़ि उलूखल कृष्णहीं तरुवर दिये गिराय।
जानिबाल सुनु चतुरनृप कोउनतेहिपतिआय॥

कोउकहै बालबंग यह बातुर। समुझिचित्तपुनिकोउकहैचातुर॥
हरिमाया गोपार अपारा। कोउन बुध बिधि जाननहारा॥
बाल कहत चहुँ ऐसयहोई। ईश्वर जान भणत असकोई॥
कहत अनेकानेक प्रकारा। निजनिजबुधिअनरूपबिचारा॥
हरि संयुक्त धाम सब आये। बिबिध भांतिके करत बधाये॥
अगणितदानद्विजनदियनन्दा। कीन्हबधायो सहितअनन्दा॥
यहि प्रकार कछुदिनचलिगयऊ। द्रुमवृतान्त जगछावतभयऊ॥
हरिकर जन्म दिवस पुनिआवा। सकलकुटुंबहि निवतपठावा॥

दो० मंगलचार करायकै सूत्र ग्रंथि तिन कीन्ह।
उतआगम रससरसशुभ भोज्यतियनरचिलीन्ह॥
जुरि मिलि सब बैठेभषन तबनृप नन्दअगार।
जेंवत हरिहि समेतसब किमि बरणौं ज्योंनार॥

कहा नन्द सब भाइहु सुनहू। मनबच क्रम गुणिउत्तरभनहू॥
नित नव बिपतिहोतियहिग्रामा। सूझतमोहिं कठिनपरिणामा॥
सुथल बिचारि भूमिभल जोई। यह पुर त्यागिबसाइय सोई॥
तब उपनन्द नन्द सन भाखा। सुंदरथल यक हमसुनिराखा॥
वृन्दाबन नृप कीजिय बासा। तहांतृणोदक सकलसुपासा॥
कहिभल नन्दसबहि अँचवावा। पानखवाय सभा बैठावा॥
ततक्षण एक ज्योतिषी आवा। सादर ताकहँ नन्द बोलावा॥

यात्राकेर मुहूर्त्त बताइय । वृन्दाबनै बसै कब जाइय ॥
दो० करि बिचार द्विजवरकहा प्रातकाल सुनुराव ।
वहिदिशिकी यात्रा सुभग निवसौ वृंदागाँव ॥
योगिनिबाम पृष्ठि दिगशूला । सन्मुख सिन्धुतनय सुखमूला ॥
निस्संदेह प्रात प्रस्थाना । करौराउ गुणि बिप्र बखाना ॥
सुनि सब गोपी ग्वाल सिधाये । सातुरसकल भवन चलिआये ॥
रजनियकरि सबबस्तु सम्हारा । भिनसारहि सबशकटिन डारा ॥
जुरिनर सहित तनुज अरुनारी । नन्दद्वार पहुँचे गण भारी ॥
खरभर रव न बात सुनिपरहीं । जहँ तहँ बोलिरहे खगवरहीं ॥
सजन कुटुम्ब सहित नृपनंदा । कहिजै सिधिदाता शिरचंदा ॥
चलि अवतीतरि संध्याकाला । वृंदाबन पहुँचे सँग ग्वाला ॥
दो० वृन्दा देवी के चरण सारस बन्दि सप्रेम ।
बसे नन्द उपनन्द तहँ रहे लगे युतक्षेम ॥
यहि सुख बीते दिन घने वृन्दाबन नँदग्राम ।
सुनु नरेश इतिहासबर है प्रमोददा धाम ॥
भै कृष्णायु शराब्द प्रमाना । तब हठ अस मातासनठाना ॥
मम मन रुचि यह बच्छ चराऊं । कहुबल बोलि संग मैं जाऊं ॥
तजहिनबिपिन अकेलाजानी । सुनिसुतबचनबोलिप्रियबानी ॥
बच्छ चरावन हार अनेका । दास तुम्हार तजौ सुतटेका ॥
तुम जनि होहु बिलोचन ओटा । बन बीथिन लागै कहुंचोटा ॥
जो न मातु कानन मैं जाऊं । तौ काहू बिधि अन्न न खाऊं ॥
जानि कठिन प्रणहठ बिकराला । बोले सकल ग्वाल सुतबाला ॥
जे नित बच्छ चरावत कानन । सौंपे तिनहिंमातुबलभानन ॥
दो० जो रक्षक तिहुँलोकको ध्यावत जाहि मुनीश ।
ग्वाल सुतन कहँ मातु तेहि सौंप्यो सुनोमहीश ॥
कहा दूरि घनबन जनि जायहु । दिनते संग घरहि लैआयहु ॥
अकसरगहनबिपिनजनित्यागेउ । रहेउसदृढ़इनकेसँगलागेउ ॥
असकहि मिसिरी माखनलाई । राम कृष्णहित सखहिबँधाई ॥

भोजन हरिहि करायहु पोसी। कहितिनकेसंगसुतहिकरोसी॥
कृष्णा तट सब कृष्ण समेता। बच्छ चरावन गये सहेता॥
जमी निकट तजिधेनु किशोरा। खेलत ग्वाल बालचहुंओरा॥
ताही काल दैत्य यक आवा। प्रबल जानि नृपकंसपठावा॥
करिमाया धरि बच्छ स्वरूपा। कपट खानि तेहि देखतभूपा॥
दो० सभय बच्छ चहुँ दिशिभजे रम्यकूदि अकुलाइ।
कृष्णकहा पहिचानिखल रामहिंसैन बुझाइ॥
हलधर यह कौतुकी निशाचर। बच्छ बपुषधरि आवायहिथर॥
बारबार हरि ओर बिलोका। कालरूपलखि हृदयसशोका॥
मरण ठानि निजघात बिचारी। प्रभु समीप आये बिबुधारी॥
पाछिल चरण गहे हरिधाई। महि मद्यों बहुबार भ्रमाई॥
मरतिबारनिजतनखललीनासि। कृष्णकृष्णकहितनतजिदीनासि॥
कंससुना बच्छासुर घाता। मन गद्दरअरु बिगलितगाता॥
बोलि बकासुर सुभट सप्रीती। कथाकही सब पूरबबीती॥
सुनि सकोपसो अधम कराला। बृंदाबन आयो बशकाला॥
दो० महिषध्वज अनुजा निकट खल बिचारिनिजघात।
बकतन भूभ्रत सम बिरचि बैठ असुर सुनुतात॥
देखि सभीत भयउ सुत ज़ूहा। कृष्णहि कहा सबनकरिहूहा॥
बन्धु दैत्य यह बकनहिं होई। यहिते आजुबचै नहिंकोई॥
इत इमि बालकहरिहिजनावत। सुराराति उत घातलगावत॥
निजमन बदतबिकट जड़सोई। बधौं कृष्ण भूपति भलहोई॥
तेहि समाजहरि तासुसमीपा। सहज गये कौरव कुलदीपा॥
प्रमुदितअसुरचोंचगहिश्यामैं। भषिमुख मूंदि बैठतेहि ठामैं॥
आतुरबिकलित बाल समाजा। सिन्धु दिशालखि रोवतराजा॥
हे हरि कहि टेरत बिललाता। निजकर उरमर्दत पछिताता॥
दो० कहत न यहि अनमिष यहां हलमूशल धरहाय।
यशुदहि उत्तर कासु हम कहब दैवघरजाय॥
गौरी रंगानन सबकेरा। अन्यवरण मिटि भो तेहिबेरा॥

आरत सखाजानि भयहारी । मायामुख महँ श्याम पसारी ॥
धस्यो धनंजय रूप कृपाला । तबसो असुर भयउ बेहाला ॥
दहतजानि निज बक्र सुरारी । उगिलिदयो खल तुरत मुरारी ॥
उठिकर चिबुक चरणकरसाधी । आकर्ष्यो सो सहज नराधी ॥
चीरि फाँकुडारी महिदोई । जिमितृण चीरिडार सुतकोई ॥
अघरूपीखल जड़बुधि कामी । कीन्ह कृतारथ ताकहँ स्वामी ॥
को असदीनबंधु सुनु राजा । अरिउद्धारक तजि ब्रजराजा ॥

दो० मिले सखन सँग आइहरि लखि हरषे सबबाल ।
घेरि बच्छ जुरि घरचले जान्यो सायंकाल ॥
बिहँसत खेलत पंथसब आये निज निजधाम ।
गृह गृह बालन कहा यह प्रभुकर अद्भुतकाम ॥
सुनिसचु मानो काहुनर मृषाकाहु मन माहिं ।
मंगल हरि नित प्रात उठि बच्छ चरावन जाहिं ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया यांमंगलदासविरचितायांगोकुलबासपरित्यागबच्छा- सुरबकासुरबधवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

दो० यथा सिंहको शब्द सुनि गजगण चलत पराय ।
तथा कृष्ण यश सुनतहीं भजत पाप अकुलाय ॥

सुनु कौरवकुल कमल दिनेशा । प्रातसमययकदिनहृषिकेशा ॥
धेनु जात चारण बन गयऊ । तिनकेसाथग्वाल सुतभयऊ ॥
दही मही घर घर ते ल्याये । चलिसमस्तकाननमहँआये ॥
बच्छ चरनहित बन तजिराजा । बैठे यकठां बालसमाजा ॥
गेरू खरीलाइ तन चीता । भल कौतुकतेहिअवसरबीता ॥
बनफल कुसुमाभूषण कीन्हे । कोन भूलसुत कर्त्तब चीन्हे ॥
भाषा पशुखग बोलत नीकी । पशुविहंग भाषा कृतफीकी ॥
ख्याल रचा पुनि विविध प्रकारा । मनफूले खेलत तेहिबारा ॥

दो० पठयो कंस अघासुरहि बीर प्रबल अनुमानि ।
आयो सो सुररिपुतहाँ काल आपुनहिं जानि ॥

उरग प्रथुलवत बिरंचि कलेवर। श्यामशृंग जनुगिरि गिरितेतर॥
बैठा अधम बिकट मतिहीना। तासुचरित सुनुराय प्रवीना॥
दैवयोग सँगबाल मुरारी। खेलत तेहितट गये बिहारी॥
देखा पन्नगतन परिनाहा। मुखपसारि बैठा मृतुचाहा॥
हरिमाया गतिनृप बिपरीती। प्रभुजो चहत करत मनचीती॥
ग्वाल सुतन तेहिदेखि बिचारा। बड़ भूधरासितो रग डारा॥
कोउसुत कहैं ऊँच गिरिकैसो। अबलागि हमन बिलोकोऐसो॥
दीरघ गुफा जासु हिमितूला। कहत चलौ देखिय नगथूला॥
दो॰ यहि बिधि करतसो बतकही काकोदर तट जाय।
गिरिकन्दर मुख देखितब कह सुतेक शिशुभाय॥
बांधव गुफा भयानक भारी। यहिप्रविशाहिंनहिंशक्तिहमारी॥
जाकहँ लखत सभय मनहोता। पैठि बनहिं मूरुख गुणपोता॥
तोषनाम यकसखा सुजाना। कहाघुसौ रक्षक भगवाना॥
संग हमारे जबलगि भाई। तबलगि भ्रखनारे भयखाई॥
जो कोउखल कृतशैल शरीरा। काल बिबशतौ जानिय बीरा॥
यथा बकासुर प्राण गँवावा। बैर भाव हरिकर फल पावा॥
तथा निशाचर जाइहि मारा। त्राता हमरो नन्द दुलारा॥
कछुकदूरि मुखते सबठाढ़े। करत बारता आँनद बाढ़े॥
दो॰ निकटजानि तेहिक्षण असुर श्वास प्रलंबाकर्षि।
बालबच्छ भचे सकल कपट नागउर हर्षि॥
ताती बिषयुत तन पव माना। लागतत्रासितदुखितभयनाना॥
रँभतबच्छ बाल कृतशोरा। त्राहित्राहि प्रभु नन्दकिशोरा॥
वेगिराखु रक्षक भगवाना। तनभय भस्म गये अबप्राना॥
दीनबन्धु सुनि दीन पुकारा। प्रथमन गये चले तेहिबारा॥
आतुर आनन महँ घुसिगयऊ। मुदितमूँदिमुखतब खललयऊ॥
मूंदत बक्र निबिड़ तम छावा। बच्छबालकन अतिदुखपावा॥
तब प्रभुनिज शरीर विस्तारा। अधिक मणी बपुतेतेहिबारा॥
बाढ़तकाय उदर तेहि फूटेउ। बालकबच्छ बन्दिते छूटेउ॥

दो० अघासुरहि यहिबिधि बधो लखिहरषे सुरसर्ब ।
छोड़त कुसुमावलिभली हरिपर सकल अखर्ब ॥
पुनिहरिजू धरि बालबपु ठाढ़भये तेहि ठाम ।
गरलमिलत श्वासा प्रथम खैंची अघअघधाम ॥

बालकबच्छ विषम बिषश्वासा ।लगिअधमरकोउप्राणननासा ॥
सुधावृष्टि तबकीन्हि दिवेशन । बालबच्छ विषहर रह लेशन ॥
आनँदयुत सब कहत कुमारा । जोनहोत सँगहरि रखवारा ॥
आजुमरण होतेउ शकनाहीं । बधेउ असुरहरि करिबलबाहीं ॥
मारणहार यदपि बलदाई । रक्षक तदपि बड़ाहै भाई ॥
श्यामहिंकहतमनुषतुमतातन । असगुणहोत मनुजके गातन ॥
महाबली यह असुर कराला । पन्नग छली शरीर बिशाला ॥
ताहिहतो तुम चणमहँ भाई । प्राण सबनके लियेबचाई ॥

सो० बाल बरूथ अपार विनय करत हरि की चतुर ।
निजनिज मतिअनुहार कहौंकहांलगि बरणिकै ॥

दो० शिशुतामें अस प्रबलखल जेहिमारो क्षणमाहिं ।
मंगलकी रक्षाकरौ सो प्रभुकृष्ण सदाहिं ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांअघासुरबधवर्णनो
नामत्रैदशमोऽध्यायः १३ ॥

दो० प्रसव कालते अंतलागि नहिंबूझत ममजानि ।
जेहिमायाते जीवजग तहियश कहौं बखानि ॥

मारि अघासुर हरि पुनिभूपा । घेरेबच्छ स्वरूप अनूपा ॥
बालसखा सँगचले मुरारी । कदमविटपतट पहुँचि बिचारी ॥
तरुतल ठाढ़होइ मुरलीकर । ताहि बजावतभे मुरलीधर ॥
बोलिसखानबिहँसि कहिबानी । थलभलयह भाइहु ममजानी ॥
आगे सुथल और को ऐसो । यमुनानिकट कदम तटजैसो ॥
सबजन द्रुमतल आइ विराजैं । माखन दधि भोजन इहँसाजैं ॥
सुनतबच्छताजि बनपुनिसिगरे । कदमतरे बैठे अनविगरे ॥

पातमदार पलास सरोजा। बहुपद तूलनीय करिखोजा॥
दो० लाइ बनाई पातरी करिउज्जल तररूख।
पंक्तिबाँधि शिशुसकलते बैठेव्यापीभूख॥
सो० सबके मध्य अघारि राजत कर भोजनलिये।
पारस करत बिचारि यथायोग्य तनबल निरखि॥
प्रभुहि परोसतलखि सुतग्वाला। आतुरपरसि चले महिपाला॥
आपन और आनकर आपू। भाग यथोचितलै तजिताप॥
ठाढ़होइ हरि जेंवन लागे। भक्षणलगे सखा अनुरागे॥
किमिवरणौं शोभा तेहिथरकी। बुधि अनुरागत होतअतरकी॥
शिरपर मुकुट मयूर बिराजत। बनमाला गल शोभा साजत॥
लकुट कमलकर रूप त्रिभंगी। मुखछबिलखिलाजतद्युतिअंगी॥
पीतपाट पटकाछनि बाँधे। तद्वरणी शोभित पट कांधे॥
कुंडल लोल श्रवण छबिदेता। लाजतलखिहरिजलचरकेता॥
दो० हँसनि चंद्र उडुगण दशन मुखनभरूप अनंत।
लजत हँसत लखि तापखल बिकसतकुमुदसुसंत॥
हँसि हँसिमोहन बांटत खाता। प्रफुलित गात तिहूंपुर त्राता॥
अपर बालकर भोजन खाई। षटरस तासनकहत बुझाई॥
कटुअरु अमिल मधुरअरुखारा। रस चरपरा कषैला सारा॥
बाल मंडली हरि भा मोहति। ऋक्षावली मनौबिधुसोहति॥
तौने काल अजा दिवराका। निजनिज यानारूढ़सुनाका॥
निरखत यह चरित्र चितदीन्हे। कोउकोउभोजनलालचकीन्हे॥
गोपसुतनसँग खात निहारी। कमलजात मनभ्रमभाभारी॥
हरिअवतार सुना अरु जाना। सो प्रभुत्वनहिंबिदितदेखाना॥
दो० ब्रह्म जोव्यापक अखिलयक तेहिलीन्होअवतार।
सोकिसुतनसँगखाइदधि बिधिबुधिभ्रमितअपार॥
बिना परीक्षा भ्रम नहिं जाई। परखिगयेपुनि मन न भ्रमाई॥
अस बिचारिहरि बच्छ बिधाता। भूधर गुफा राखिसुनु ताता॥
शिला द्वार दै बिधि सुख पाई। चलिवृन्दाबन आयउ राई॥

बेरजानि इत गोप कुमारा । कहत कृष्ण सन भै बड़िबारा ॥
हम तुम इहां अचिंत बिराजत । सानँदसबमिलिभोजनसाजत ॥
बच्छनकी सुधिकाहुइ नाहीं । काजानिय ते अबकहँआहीं ॥
कहा कृष्ण तुम जेंवहु नीके । बच्छ गये सब मध्यबनीके ॥
सो हौं अबहिं घेरिकरि लाऊं । उठ्यो न कोउ रह्यो यहिठाऊं ॥

दो० पुनि बिलम्ब मोहिंहोइजो तौन कस्यो औसेरि ।
असभणि प्रविशेबिपिनहरि दूरिगयेचितहेरि ॥

जब जाना बिधि हरिलैगयऊ । तब प्रभु तहां ठाढ़ है रह्यऊ ॥
इत बिरंचि हरिबालसमाजा । गयउ दूरि मन भ्रमहढ़राजा ॥
बच्छ बनाइ कृष्ण फिरि आये । कदम बिटपतल सखानपाये ॥
निज प्रपंच तब बाल बनाई । संध्या जानि चले घरराई ॥
बालक गोसुतनिजनिजभवना । पूरबवत कीन्हों नृप गवना ॥
युवति पुरुष काहू नहिं जाना । जो कछुचरितरचाभगवाना ॥
गो गोपिका सून निज जानी । नित नवप्रीतिकरैं सुखसानी ॥
ते बालक ताही गिरि खोहा । बन्दकियेबिधिमतिबशमोहा ॥

दो० निज मायाबल कंजसुत निद्रा शिशुन बढ़ाइ ।
जानिगेह सब बच्छ शिशु सोइ रहे हरषाइ ॥
ब्रह्मलोक कहँ बिधि गये गई भूलि सुधि ताहि ।
इत गोबिंद चरित्र नित करत नये दुख नाहिं ॥

संवत गये अजहि भा शोचा । कीन्हों कर्म स्वकर हौं पोचा ॥
यदपि मोरयक बिपल न बीता । तबपिनराब्दगयउबिधिभीता ॥
चलि देखौं ब्रजगोतियं जिनके । हरे सूनकस दुख भा तिनके ॥
अस बिचारिप्रथमहिं गिरिकंदर । देखेबाल बच्छ बिधि भूधर ॥
घोर सुषोप्ति दशा तिन हेरी । ब्रजकहँ चल्यो करत औसेरी ॥
वृन्दाबन अयोनि जब आये । चरत बच्छ खेलत सुतपाये ॥
अमिताचंभितमनकमलासन।चल्योसपदिपहुँच्योगिरिआसन ॥
गुफा उपल अजटारिनिहारा । सुत धेनुज बश नींदअपारा ॥

दो० सहसा घूमि स्वयंभु ब्रज देखे गोसुत बाल ।

विस्मय बश तहँ ठाढ़ ह्वै कृत बिचार महिपाल।
का मम बुधि भ्रम देखत आजू। दोउथल गोसुतबालसमाजू॥
कैवहनगन कि ब्रजनहिं अहई। पूछौं काहि कौनु यह कहई॥
जेहिठाँजेहिविधिसुतनसोवायों। गिरि कंदर तौनीबिधिपायों॥
स्वै सुरभीसुत सुत ये ठाढ़े। अथवा कृष्ण नये गढ़िकाढ़े॥
असमनशोचिबहुरिबिधिगयऊ। कूट खोह सुत निरखतभयऊ॥
पलटि ब्रजातुर जबलगिआयो। तबलगिप्रभुइतख्यालबनायो॥
धेनुज गोपति जाकरि माया। रूप चतुर्भुज सबहि बनाया॥
बालक बच्छजिते अजतेते। शंकर बासव त्रिदश समेते॥
दो० यकयक के सन्मुख खड़े कृत बिनती कर जोरि।
अजबिलोकि अद्भुतचरित भईतासुमति थोरि॥
सो० यथापूतरी चित्र तथा अवाकित सो भयउ।
मिटोज्ञान उरमित्र छायो भ्रमकेवलतिमिर॥
अस जिमि पाथर देवसुजाना। दुखित होत पूजाबिन नाना॥
जबबिधिचकितभयउमहिपाला। कंप्योतन उपजा भयजाला॥
अजाधैर्य्य बैठोमहि माहीं। थरथरात जियतनसुधिनाहीं॥
प्रभु सर्वज्ञ संत सुख दायक। धातागतिबिलोकियदुनायक॥
एकभये सकलांश बटोरी। असजिमिजलधरउठिचहुँओरी॥
बर्षत समय होत यकरूपा। तिमिप्रभुकरयहचरितअनूपा॥
बिधिन चंद्रधन नहिं अमरेशा। बालबच्छ कोउरहन नरेशा॥
हरिनिज माया सकल समेटी। यथा सूत्र सूत्रक कृत फेटी॥
दो० सुन्दर रूप अनूप हरि सकलाभरण शरीर।
शोभित विधि सन्मुख खड़े मंगल हर्त्तापीर॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांब्रह्माबच्छबालकहरणकृष्णमाया
वर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥
दो० सूरघामजल बीचिजिमि बाक्यअर्थतिमिएक।
जीव ईश द्वै कहन को कठिन परंतु विवेक॥

तातें अलखालख समुझि जीव ईश भ्रमटारि।
निजगुरुपद शिरनाइकै हरियश कहौंबिचारि॥
तत्पदवी त्वं पद बदत असिपद जानत जोइ।
श्रीशुक मुनि ज्ञानी परम कहत भूपसन सोइ॥

जबहरि निज माया हरि लीनी। अरुदाया बड़िअजपरकीनी॥
तब बिरंचि कहँ तन सुधि आई। चीन्हों हरिमनध्यान लगाई॥
चित पछितायजोरि दोउपाणी। प्रभुतट जाय बदारतबाणी॥
अमित दया करिदयानिधाना। हरानाथ मम भ्रम अज्ञाना॥
रंचक गर्बरहा अब नाहीं। जेहि बशभ्रमितफिराद्यौठाहीं॥
सूझा कुछुन ज्ञान दृग हेरा। धनि मायाजेहिवशमनमेरा॥
बर्त्तमान भावी अरु भूता। अहै होइ मोको बुधि पूता॥
जो चरित्र तव जानत जानै। जान्योतेहि नबुद्धिअनुमानै॥
मायातीत अगम्य अजाना। सो तुम बालरूप भगवाना॥
तव माया मोहत सब काहू। यक प्रभु तू माया करनाहू॥
मायाबिवश करयोंछल स्वामी। क्षमाकरोलखिनिजअनुगामी॥
तिहु पुर संभव लयकर पालक। अनुपम रूप धरे प्रभुबालक॥

दो० रोमरोम ब्रह्मांड बहु जगप्रति बिधि ममतूल।
तुव सन्मुख गणनाम ममक्षमाकरौ जनमूल॥

मम अपराध क्षमौ जनजानी। दयासिंधु दायक सुखखानी॥
विनयपितामहकीसुनिश्यामा। मुसुकाने तबनृप गुणग्रामा॥
बिहसतलखिरुखचला बिधाता। शैलगुफा पहुँचो पछिताता॥
बालक बच्छ तुरत लै आवा। लज्जित मन बृन्दाबन ठावा॥
मायाहरि गोसुत तजि कानन। तरुनर सुत करिलै अनुशासन॥
जोरिकर स्तुतिकरि गृह गयऊ। अग्रकथा सुनुनृप जसभयऊ॥
भोजन भाजत गोप कुमारा। जिमि पूरब बरनो बिस्तारा॥
बर्षदिवस बीतानहिं जाना। ग्वाल सुतन प्रथमै दिनमाना॥

दो० गईनींद सब सुतनतब हरिगो सुतसब घेरि।
लैआये तट कदम के कहतबाल हरिहेरि॥

कृष्ण बेगि गोसुत तुमलाये । दूरि न रहैं निकटहीं पाये ॥
हमभोजन करिभेन गोसांई । सुनितब बिहसि कहा यदुराई ॥
चिन्तामोहिं सखातव रहेऊ । लावा आशु निकटहीं लहेऊ ॥
अबसब मिलिनिकेत पगधारौ । प्रातहिके आये सो विचारौ ॥
सुनिकहि अब्छा बब्छा सबलाये । बिहसतसकलसदनचलिआये॥
मातपिता केहि जानन भेवा । गुप्त चरित कीन्हा हरिएवा ॥
हरिमाया दुस्तर संसारा । जाहि निरखि बिधिनिज हियहारा॥
बावरतरतेहि जीतन चाहत । सिंधुपिपील कतहुं अवगाहत ॥

दो० यथा दिवाकर एकबपु कृत प्रकाश तिहुलोक ।
तथा कृष्ण घटघट प्रगट हरत जननके शोक ॥

सो० कोजग अस सामर्थ जेहिन मोहमाया प्रबल ।
कतकौं बकिय निरर्थ मंगल जीतत हरिकृपा॥
होइ अपावन पूत कृष्ण कृपा माया तरत ।
चारि खानि भवभूत मुक्तिलहैं संशयनहीं ॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासविरचितायांब्रह्मामोहवर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः१५॥

दो० बीतराग सुबिवेकसम दम मुमुक्षुमिलिचारि ।
कर्त्तासब साधनन के ते मुनि कहत बिचारि ॥

जबहरि आयुबर्षबसु भयऊ । यकदिन तब मातासन कहेऊ ॥
यह लालसा जननि मनमेरे । धेनु चरावन जाउँ सबेरे ॥
तूपितु प्रतिकहु अवशिबुझाई । ग्वालन सँग मोहिं देइँ पठाई ॥
कहानन्द सन तिन करजोरी । कहिभल विप्रबोलि गुणधोरी ॥
शुभ मुहूर्त्त पूछा नँदवाहीं । पूजन खरिक कृष्णकब जाहीं ॥
कार्त्तिक सित अष्टमी बताई । तेहिदिन नँदसब ग्वाल बुलाई॥
राम कृष्णसन खरिक पुजावा । कुल लौकिक व्यवहारकरावा ॥
शिवबिरंचि जेहिपदमन लायो । तासन पिताखरिक पुजवायो ॥

दो० बचन मनोहर तबकहा ग्वालन सों नँदभूप ।
सौंपततुमकहँ तनुजद्वौ तुममससखा अनूप ॥

नितप्रति सुतन संगलै जायउ । कानन सघन धेनु चरवायउ ॥
बिपिनगहननहिं तज्योअकेले । रहियो सुत समान परहेले ॥
कहिइमिभोजनदीन्हनृपाला । पुनिदधितिलककरयोहरिभाला ॥
रामहु के माथे दधि लाई । गोपन सँग बनदीन्ह पठाई ॥
प्रभु सौ बन्धु मग्न मन चाले । धेनु चरावन दीन दयाले ॥
कानन जाइ बिपिन छबि देखी । हलधरप्रतिभणबचनबिशेखी ॥
दाऊ भली सोहावन ठाऊँ । जेहि निरखतमनउपजतचाऊ ॥
पादप नयनय महि नियराने । नवपल्लव नाहिं जातबखाने ॥
दो० तिनपर नभगामी सुघर बाणी बदत रसील ।
कृतकिकोलनानाबिधिन कहिअसलखिय कटील ॥
तापर हरि पाटाम्बर डासी । क्षणक बैठबिहँसतअबिनासी ॥
पुनि उठि प्रभु पीताम्बर फेरी । दया दृष्टि चतुराशा हेरी ॥
कारी गोरी पीरी कारी । धौरी धूमरि पीत पुकारी ॥
नीली इत्यादिक लै नामा । मधुर बाणि टेरेउ गुणग्रामा ॥
सुनत धेनु सब आतुर धाईं । चहुँ दिशिनिकटश्यामकेआईं ॥
कोउ रंभत कोउ कृत हुंकारा । मध्य कृष्णअस लसतेहिबारा ॥
जनु घनघटा चहूंदिग सोहति । तेहिके मध्य सूर हरि मोहत ॥
चरैलागि गोहांकि बहोरी । कहदाऊसन प्रीति न थोरी ॥
दो० भोजन करिय सप्रेम अब कहा राम भलतात ।
सानँद दोनों बन्धुमिलि बिहँसिबिहँसि दधिखात ॥
करिभोजन गय तलतरुगंधा । दिव्यबिलोकि हर्षिदाउबन्धा ॥
तहँबैठे तब प्रभु अलसाई । शिरधरि सखाजंघ सुखपाई ॥
शयनकीन्ह हरि उर सुखपागी । रामहिं कहाबहुरि असजागी ॥
ममनखेल करौ यह आजू । दुठाजोरिदल सखा समाजू ॥
करियसमर भणिइमि यदुनाथा । बाँटेसखा दुठा निजहाथा ॥
पुनि फल फूलायुधन बनाई । दोउ बांधव कृत बिबिधलराई ॥
गोमुख भेरि ढोल सहनाई । डफ दमाम मिरदंग तोराई ॥
सकल शब्द रसनाग्र बजावत । शाब्दिक पूरब लाजलजावत ॥

दो० मारु मारु धरु धरु बदत मुदित ग्वाल दुहुओर।
खेलरहा यह बार लगि करतजगत चितचोर॥
गो रक्षक गोभाग सम वृंदबिरचि तजिख्याल।
ईषधाग्र चलि वृष जमनि चारतभे जगपाल॥

तेहि क्षण सखा आइकहरामै। अल्पकु दूरि तालबन नामै॥
दिव्य स्थल मोहन मनलोभी। अहैं तात बनफल बिषक्षोभी॥
तहां परंतु एक भय भारी। असुर खरा कृति कृत रखवारी॥
सुनि संकर्षण सहित उछाहा। तेहि बन जात भये नरनाहा॥
संग सखा बालक गो त्राता। अभय प्रबिशिबनकृतउत्पाता॥
मृति कोपल लकुटी तरुघातैं। अल्प भखै फल वृक्षनिपातैं॥
ध्वनिसुनि धेनुक राक्षस धावा। गर्द्धभरूपी प्रथम बतावा॥
जागतनिज सुरबल तट आई। घूमि दुपादी हृदय लगाई॥
पदगहि फेरि धरा धरिमारा। मरानखल उठि सम्हरि प्रचारा॥
मर्दिरसा श्रुति अधकरिधावा। हटहट बदत बहुरि तटआवा॥
घुमरि घुमरि पदघात चलावै। जिमिपिपील भूधर डरपावै॥
हँसि हँसि राम खेलावत ताको। मनौं सहत वृकमेष धकाको॥

दो० बिपुलबार लगि समरइमि धेनुक कियबल साथ।
तब हलधरउर क्रोधसिखि ज्वलित भयउ कुरुनाथ॥

पाछिल चरण दुकर गहि फेरी। पादपैक आयत बल हेरी॥
डारा ताहि तासुके ऊपर। तरवर सहित गिराखलभूपर॥
परत प्राण बिन भो खल सोई। अचरज लहासखन यहजोई॥
जौन समय तरुखल महिपरेऊ। शब्द अघातकठिनबनभरेऊ॥
बिटप निकर हाले सुनि शोरा। बोलेकृष्णनिरखि तिनओरा॥
ग्वालवेश कासु सुनि जाहीं। साखी डुलिखगनिकरउड़ाहीं॥
तेहि क्षण नीलाम्बर चर आई। बिहँसिहरिहियहरखबररिजनाई॥
कृपा सिंधु राक्षस यक मारा। बल तेहिकारण तुमहिंपुकारा॥

दो० चले कृष्ण सुनि मग्न मन पहुँचे हलधर पास।
सुहृद बन्धु सेवक असुर जुरि आये चहुँ आस॥

सो० अस्त्र शस्त्र गहिहाथ युद्ध काज मनमरण गनि ।
ते घाले यदुनाथ क्षण महँ बिनहिं प्रयास नृप ॥
जब दुर्नाद रहित बन भयऊ । तब ग्वालनके संशय गयऊ ॥
फल अक्षोभ खाये तिन तोरी । मन मानती भरी पुनि झोरी ॥
सुरभी सकल घेरि ते ल्याये । हरिकह चलौ बारके आये ॥
असकहि युगुल बन्धु मुदपाई । बिहँसत भवन चले सुरराई ॥
संग गोप सुरभी गण झारी । गये सदन सानंद मुरारी ॥
लाये तोरि मधुर फल जोई । घर घर प्रति बँटवाये सोई ॥
रैनि शयन करि प्रात नृपाला । करि भोजन टेरेगणग्वाला ॥
कहि जय जीव धेनु तिनहांकी । सुंदर रथ्या लै बन धांकी ॥
दो० राम कृष्णहू संग तिन गये चरावन गाय ।
चारत चारत भूप सुनु कालीदह पै जाय ॥
सो० लखि मध्याह्न सप्रेम गोपसुरभि जल पियतभे ।
सुनु नृप तू सह नेम पान करतही बिष चढ़्यो ॥
दो० महि लोटत सब शव मनौं बदत पाहिहरि पाहि ।
सुधादृष्टि देखत भये सबहि कृष्ण तेहि ठाहि ॥
विष समस्त सबकर हर्‍यो आनँद भे गोग्वाल ।
मंगलअसप्रभुत्यागकरिकेहिध्याइयकलिकाल॥
इतिश्रीमिद्विबिधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंग
लदासबिरचितायांधेनुकबधवर्णनोनामषोडशोऽध्यायः १६॥
दो० ऊसरपर बर्षत घनो पावस अन मिष माहिं ।
तृण संपन्न न होत अरु होत शरद मिटिजाहिं ॥
तिमि मूरुखके चित्त में उपजत सदृढ़ न ज्ञान ।
बिधि सम गुरुके प्राप्त भे सुने समस्त पुरान ॥
मूरुख सो जा उर बसत तमरूपी अज्ञान ।
तेहिते अज्ञानी नरन डरत चतुर बुधिवान ॥
अज्ञानिहिं ज्ञानी करत हरि जन ज्ञान प्रबीन ।
काठक काठ सुपूतरी नट नागर आधीन ॥

हरि चरित्र उत्तम गुण दायक। बर्णतसुमुनिसुनतनरनायक॥
सुनु नरेंद्र हरि विष करुणाकर। कंदुक खेल रचो करताकर॥
काली जेहि दह बसत नरेशा। करिन सकत तहँ जीवप्रवेशा॥
योजन एक प्रयंत गजाशा। ज्वलितविषाहिप्राणमृतुपाशा॥
जलचर थलचर नभचर योनी। अँचवतजलभूलिहुपतिच्छोनी॥
तजत प्राण अवलंब बिहीना। सरिगिरिपरत लिंगतनपीना॥
भँवर कूल साखी लघु थूला। कदमरहित लखिपरत न भूला॥
सो द्रुम अक्षय समय चिर केरा। वेद चक्षु विष सहत घनेरा॥
दो० जासु गरल भवभूत सब बिकल तजैं निज जीव।
केहिकारण द्रुम अक्षय सो कहौ कथा गुण सीव॥
एककाल खगपति भुवराई। त्रिदशभोग निजचोंचदबाई॥
तेहि तरुपर बैठा नृप आई। बिधिबश बिन्दु परा द्रुम जाई॥
अमर भयउ सुर भोग प्रसादा। तेहिते सदा कुशल मरयादा॥
काली कारण श्याम बिचारी। चढ़े बृक्ष सहजाहि बनवारी॥
अधते सखा गेंद ताकि धरेऊ। प्रभु बचिगयउ गेंद दह परेऊ॥
गिरत देखि कूदे दह आपू। आहट सुन नाग उर तापू॥
बमतहलाहल सिखि समश्वासा। फुंकृतमन चिंतत अनत्रासा॥
अब लागि जीवतको यह धाता। विषलगिकिधौंद्रुमामरपाता॥
वा कोउ पशु पक्षी बलखानी। आयउमृतुबशमगअनजानी॥
असमनसमुफ्तदशशतआनन। उगिलतगरलभूपहरिभानन॥
पैरत दहमधि नभगप गामी। प्रभु कृतज्ञ उर अंतरयामी॥
रोदत सखा पसारि भुजानी। रंभहि सुरभिजीवअकुलानी॥
दो० कहत ग्वाल हे कृष्ण अब निकरि आउजलपार।
एक गेंदकी बीसहम रचि देहैं यहि बार॥
तुम बिन कहब कहा गृह ताता। पूछिहि आइ यशोदामाता॥
इतदुख मग्न गोप भूपाला। उत गृह सुद्धिदई यकबाला॥
कालीदह कूदेउ हरि आजू। सुनिबिलखानेउसकलसमाजू॥
रोहिण यशुदा नन्द सिधाये। गोपी ग्वाल रुदत सब आये॥

उरकर मर्दत गिरत अचेता। कालीदह गये सकल समेता॥
तहँन कृष्ण देखा नँदरानी। गिरनचलीदहजियअकुलानी॥
गोपिनधाइ ताहि गहिलीन्हा। जीवदानुजनु यशुदहिदीन्हा॥
कोउ करगहे नन्द कर ठाढ़े। हरि बियोग उर आरत बाढ़े॥

दो॰ कहत महाबन त्यागिके बसे आइ यहि ठाम।
तदपि सतायो खलनबहु कुशलभई परिणाम॥

अबदह गिरेउ कृष्ण करतारा। निकरबकठिन महाबिष धारा॥
नंदव्यवस्थाअकथमहाना। जिमिफणिमणिबिनतनबिनप्राना॥
दीप रहित गृह सरिबिन बारी। पच्छ बिहीन किधौं नभचारी॥
यशुदा दशा निरखि तेहिकाला। थकतभारती बुद्धि बिशाला॥
उपमा कहत तदपि उतरीसी। भई अबाक चित्र पुतरीसी॥
तजनचहततन तेहिच्छणरामा। आये तहां अखिल गुण धामा॥
सबहि बुझाइ जननि तट जाई। कहा होत बावरि कसमाई॥
अबिनाशी श्रीकृष्ण बिचारी। परिहरि शोक धीर धरु भारी॥

दो॰ काल काल भ्रूबंक जेहि को काली बिषमात।
आवत हैं श्रीश्याम जी तू काहे पछितात॥

सो॰ आजुन आयउँ संग मोबिनहरि दहप्रविशियो।
तजौ सकलदुखअंग जानि स्वतंत्रस्वछंदहरि॥

तोषत इतहि तालध्वज सबहीं। उतहरिगये फणी ढिगजबहीं॥
तब उठि सरुष उरगतनश्यामा। वेदाशा लिपटो मति बामा॥
प्रभुनिजतनहिं बिपुलबिस्तारा। तजिहरि तब चक्री हुंकारा॥
जिमिजिमिसरुषकालिफनमारततिमितिमिप्रभुबचितातिप्रचारत
पुरुषारथ बिषगर्ब बिलासी। चीन्हानाहिंपुरुष अबिनासी॥
लवाश्येन जिमि शशपंचानन। झपटत तथानृगानिलभानन॥
मूढ़ कुमति बश जानि मुरारी। अरुब्रजबासी दुखित बिचारी॥
सहजउचकिशिरअहिचढ़िगयऊ। शिरशिरप्रतिहरिनृत्यतभयऊ॥

दो॰ तनबिराटभारी अतुल धस्यो श्याममहिपाल।
नृत्यत काली शीशपर नट नागर नँदलाल॥

अधपगोर्द्ध बाजत करताली। बोझित भारबिकलभोकाली॥
मर्दि मही फण रसना काढ़ी। क्षतजधार तिनते अतिबाढ़ी॥
विष पौरुष वैभव नशिगयऊ। तब गूढ़पा जानि हरिलयऊ॥
आदि पुरुष धरि बाल शरीरा। मम मदभंज्यो सहिविषभीरा॥
नत समर्थ को आन जहाना। विषमगरलममतजतनप्राना॥
जीवनआशतजीयहजानी। शिथिलभयउनृपअहिअभिमानी॥
काकोदर कलत्र कर जोरी। नाइशीशकृतबिनय न थोरी॥
कृपासिंधु भल कीन्ह बिचारा। जो ममपतिकर गर्ब प्रहारा॥
दो० बड़भागी यहिते अधिक अपरनदूसर कोइ।
तव दर्शन पायेहरी गये सकल अघ खोइ॥
सुर अजादि सनकादिकनारद। भवभय हरणसुबुद्धिबिशारद॥
जप तप यज्ञादिक करिध्याना। जेपद ध्यावत कृपानिधाना॥
स्वै सरोज पगबिमल तुम्हारे। काली शिरराजत अरुणारे॥
यहि समधन्य आनको आजू। सुधरिगयउ सबबिगराकाजू॥
अब दयाल ह्वै प्रभुपरिहरहू। नतपति संगमोरबध करहू॥
नीतिभणत पतिबिनात्रियऐसी। खगपति बिनायामिनी जैसी॥
प्रमदा पतिबिन तजै कलेवर। पतिव्रता अबलासो भूवर॥
प्रभु बिचारि देखिय मनमाहीं। रंचकदोष स्वामि ममनाहीं॥
दो० ज्ञाति दोष यह नाथ है बिष बिवर्द्ध पयपान।
सुनिसनीति बाणीबिमल उतरिपरेभगवान॥
करि प्रणाम काली कह बाता। मम अपराध क्षमौ अज्ञाता॥
संगर करि फण तुमहिं चलाये। नाग अधमहमजगतकहाये॥
ज्ञान रहित किमि तुमकहँ जानै। बड़े हृदय लघु दोषन आनै॥
जो भवतव्य लिखाबिधिकाली। भयउसोअबतुममबचपाली॥
रमणक द्वीप कुटुम्ब समेता। बसौ जाय परिहरि ब्रजखेता॥
सभय कंपि कह सुनो गोसाईं। उहांजात खगपति मोहिंखाईं॥
जासुत्रास भजि यहिथलआयउँ। सौभरिशापकवच जनुपायउँ॥
निरभय तात जाहु वहि देशा। अबन गरुड़करकरौ अंदेशा॥

दो० चरण चिह्न मम शीश तव को समर्थ दुखदाय।
असकहिकालीमद हरण लीन्होद्विजपबोलाय॥
प्रभु काली उरगारि मिलावा। अरु सब पाछिलबैर मिटावा॥
तब फणीश बिधिवत हरि पूजा। यकचिततजा मनोरथ दूजा॥
बिपुल भेंटराखी पुनि आगे। बिनती कीन्ह भक्तिरसपागे॥
लै निदेश काली जब चलेऊ। तबकहप्रभुमम सबदुखदलेऊ॥
बेद दण्ड मम उत्तम अंगा। बिरचेउ नाथ नृत्य रस रंगा॥
निज किंकरलघु जानिकृपाला। राखेउ प्रीतिमोरि नँदलाला॥
पुनिपुनिकरिअहि दण्डप्रणामा। गो कुटुम्बसह रमण कठामा॥
इत श्रीकृष्ण पठइ व्यालारी। दह बाहर आये बनवारी॥
दो० तरणि श्याम प्राचीभँवर प्रगट नशातम शोक।
मंगल ब्रजवासी कमल फूले बिहँसे कोक॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणि श्रीकृष्णप्रि
यायां मंगलदास बिरचितायां कालीमर्दनोनाम
सप्तदशमोऽध्यायः १७॥

दो० यथावेद गावत चतुर तथा लखा कलिकाल।
छलपितुसुत हितमीतसन अरु पाखण्डबिशाल॥
जे साँचे राचे जगत तिनकर झूँठ बिचारि।
मन बिस्मित हर्षित कछुक सकल पुरुषअरुनारि॥
बनि न परत करणी कठिन सहज नामसोउ नाहिं।
हरियश गावत मुदितहौं तजे सबै छल छाहिं॥
भूपति प्रश्न कीन्ह मुनि पासा। ऋषिरमणकथलसबसुपासा॥
सो काली तज कारण काही। बूझतिहौं यह बूझा नाही॥
रमणक द्वीप भूपहरि जाना। बसत सदासुमिरत भगवाना॥
अति बलवन्त महारणकारी। लगितासन सब अहिगयहारी॥
नित प्रतिव्यालदेइ यककीना। कखोसबनमिलिबिनय अधीना॥
ठाम नियत किय तरुयकताहीं। जात एकअहि चूकत नाहीं॥
वैनतेय नित्यहि भषि जाहीं। निजस्थानप्रमुदितमनमाहीं॥

एक दिवसकी रुचिर कहानी। कद्रू सुत काली अभिमानी॥

दो० निजपियबलअहमितअमित सुनुनरेशचितलाय।
खगपति भय भक्षण गयउ उर आनंद बढ़ाय॥
तस्मिन् काल खगेश तहँ आवत भयउ महीश।
भिरेयुगुल भट समबली जनु द्वै रूप गिरीश॥

सो० करी बिबिध बिधि रारि बहुत काल बीते लरत।
तबकाली हिय हारि निज मनकृतचिंतमन अस॥

रिपुकर बचत लखत कठिनाई। बचौं कहां भजिजाय लुकाई॥
वृन्दाबन पतंगजा तीरा। जाउँ तहां शोचेउ अहि बीरा॥
उहां गरुड़ नहिं जाइ सकाई। समर पलाय रहा तेहि ठाई॥
यहि कारण काली नरनाहा। बसा आइ यमुना दह माहा॥
नागाराति नाथ भय कासू। तेहिथलजात न करियप्रकासू॥
एकसमय सौभरि ऋषि भूपा। करत रहैं तप तहां अनूपा॥
हरिबाहन ऋषि तटगहि मीना। भक्षत भयउ नरेश प्रबीना॥
सो बिलोकि दीन्हो मुनिशापा। सुनुखगेशमम बचनप्रतापा॥

दो० बहुरि आइ है ठाम यहि तौ ह्वै है तुवनाश।
क्षम्यों आजुअपराध यह जाहुभवन अनयाश॥

ऋषि भय तहां न जात खगेशा। सब वृतान्त मैं भणेउँनरेशा॥
काली जबते करयो निवासू। भयउ नाम कालीदह तासू॥
अबसुनु आनकथा मनभावनि। दोषशोकरुजसकलनशावनि॥
कृष्ण चन्द्र आवत लखि गोपी। सबकोकी बिहँसीं दुखलोपी॥
जीवन मूरि देखि नँदरानी। प्रथमशोकआनँदअकुलानी॥
तोष सहित दीन्हे बहु दाना। जब आवत हेरे भगवाना॥
मुखभा बिधुमा शरद निहारी। बिकस बक्षसर मन सुतबारी॥
रोम पंक्ति तन गदगद भयऊ। हरि अनुराग प्रगट उरछयऊ॥

दो० ब्रजबासी नर नारि नृप जुरे कूल सरि जोइ।
मृतक सुधा छबि पान करि आनंदे सबसोइ॥

करत मुखाम्र अमृत सब पाना। नैन रंध्र छबि पान बखाना॥

रजनी मुखभा बासर बीता । कहत परस्पर बचन बिनीता ॥
दिवस भरे के क्षुधित पियासे । कहां जाइँ कहिअसतहँवांसे ॥
रैनि ब्यतीतत होत बिहाना । बृन्दाबन चालिब मतठाना ॥
अर्द्ध निशा असभा नृपयोगा । सोइगये जब सब ब्रजलोगा ॥
अंधकार यकआव बिशाला । लागदवाचहुंदिशिशिखिमाला ॥
काननतरु बनचर अकुलाने । जरत बचत नहिं कतहुंपराने ॥
गोपी ग्वाल चौंकि सबजागे । दावानल लखिआरत पागे ॥
भुज पसारिकृत त्राहि मुरारी । रचहु दास जानि सुखकारी ॥
नातरु भस्म होत नहिं फेरा । जलज प्रबाह खानिगो घेरा ॥
त्रासितजननिजनकअनुमानी । उठे भक्त मन रंजन ज्ञानी ॥
आमिष मध्य सहज यदुराई । पान दवाग्नि कस्योसुखपाई ॥

दो॰ गति नाशी पवमानकी मिट्यो अनल चहुंओर ।
सुख सोये पुनि रैनितहँ चले सकल उठि भोर ॥
मंगल आनँद सहित सब गृह गृह पहुंचे जाय ।
भयउ बधायो नगर बहु गयउ क्लेशबिनशाय ॥

इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायां दावाग्निमोचनोनामा
ष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

दो॰ क्षुधित पुरुष जिमिहीनमति क्षुधा चिंतमन माहिं ।
निशिदिन कल पावतनहीं तिमि गृहधर्मसदाहिं ॥
लोभवस्त्र भूषण कपट मोहपाग शिर सोह ।
काम कामप्रिय क्रोधजन गृहीबिवश दुखद्रोह ॥
ये पांचौ पचकूट सम यकमत होत न जानि ।
वरणयों मैं यदुपति चरित सुखदायक अनुमानि ॥

ऋतु बर्णन अब सुनौ नरेशा । मुनिवर कहत दिगम्बर भेशा ॥
जोक्रीड़ानितप्रति घनश्यामा । कीन्हकहत सो नृपबरकामा ॥
ग्रीषम प्रथम दुखद ऋतु आई । आइ भूमि नभ दयउ तपाई ॥
हारक सुखदायक पुरतीनी । पाथसूनुजनु देह नवीनी ॥

तदपि न वृन्दाबन तप ब्यापी। सूरस्थल तमसकतकिझांपी॥
शुभ ऋतुराज त्रिबायुबहई। लगत शरीर सकलतपदहई॥
राजत जहां अग्नि मुखआपू। तापतहां कोउ करतकितापू॥
कुंजै घन द्रुम बेलि सोहाई। तिनपर सुखदनभजलहराई॥
नानाबरण कुसुम बन फूले। तिन गुंजरत शिलीमुख भूले॥
साख रसाल कूक कल कंठा। बरही नृत्य जगत उतकंठा॥
समनभगनिकानन लखिमोहैं। शुभथलबरणि कहैकबिकोहैं॥
बिलसत जहां त्रिलोकबिलोचन। अजहूंसोथलशोकबिमोचन॥
दो० सुरभिनसँग प्रातहि प्रभू गये तहां दिन एक।
बनगोतजि हलधरसखा करत ख्याल अनटेक॥
सो० तत्समये खल एक नाम प्रलंब प्रपंचकरि।
आयउ सखाअनेक ग्वालजानि आदरकरत॥
तेहि बिलोकिप्रभु रामहिं भाषा। ग्वालरूप यह असुर समाषा॥
कंस पठाव प्रबल अनुमानी। आवा हमहिं बधै अभिमानी॥
जिम्ह कलेवर सखा न भाई। निधन उपाय रचौं चितलाई॥
मित्र बपुष घालत अघभूरी। बिहँसे हरि बाणी कहि रूरी॥
निज बपु जब धारै यह नीचा। तबतुमयाहिमारयो चणबीचा॥
भेद समस्त बंधु प्रति गाई। हँसि प्रलंब तट गये यदुराई॥
सहज गहा कर निजकर तासू। मधुर बचन कह रमाबिलासू॥
सकलोपर उत्तम तव बेखा। तैं मम मीत कपट अनरेखा॥
दो० भणिअस संग लिवाय तेहि चले श्यामनरनाह।
गोप सखा अधिकाइ रच ख्यालसहित उत्साह॥
एक ओर मूशली प्रधाना। दिशिद्वितीयस्वामीभगवाना॥
द्वै सुत पठइ नाम फल पाता। पूछि बतावत सज्जन दाता॥
ठान्यो यहै खेल यदुनाथा। गये हारिहरषो बल साथा॥
तब मूशली संग के ग्वाला। काँध हरि सखन चढ़नृपाला॥
निजनिजयोग जोरिअनुमानी। चले चढ़ाइ बदत मृदुबानी॥
असुर काँध हलधर असवारा। कंस काज मन नीच बिचारा॥

भूरिदूरि अगमन बढ़ि गयऊ । निज शरीर बिस्तारत भयऊ ॥
कज्जल नगाकार तन जासू । विपिन सघनबल काँधे तासू ॥
दो॰ जनु दधिसुत भासत रुचिर जलद घटो पर भूप ।
दीपत कुंडल तड़ित सम स्वेद बिन्द अनरूप ॥
पाइ यकान्त असुर बलदाऊ । चाहत हतन बनत वैसाऊ ॥
जिमि लेलिहबध अहिर बिचारा । किधौं श्येनचह लवासँहारा ॥
अथवा जिमि बातप हरिघाता । चहततथाखलमनअकुलाता ॥
जानि प्रपंच रोहिणी पूता । खल मल राशि कंसकरदूता ॥
प्रथम श्याम कहि भेद बतावा । सो सुधिहोत रोष उर छावा ॥
कोपि मुष्टिकन मारि गिरावा । बिबुधसमाजनिरखिसुखपावा ॥
जानितीव्र असि निजगलमारै । किमिन चतुरयमसदनसिधारै ॥
धोखेउ पियै हलाहल कोऊ । अवशि मृत्यु पावै नर सोऊ ॥
दो॰ मंगल तिमि खल जानिहरि भिरतआइबरिआइ ।
बनिन परत पौरुष कछू चलत शरीर गँवाइ ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रिया
यांमंगलदासविरचितायांप्रलम्बासुरबधवर्णनोनामै
कोनाविंशोऽध्यायः १९ ॥
दो॰ जिमि आरत नर उर बसत द्रव्यचाह दिन राति ।
तिमि संतन के हृदयमहँ हरिपद प्रीति दृढ़ाति ॥
असी लक्ष भ्रमि योनि मन मनुज देह शुभपाइ ।
परमात्मा पद प्रीति बिन वृथा गमावत भाइ ॥
महिधर तर छिति छोरलौं काल बचैगो नाहिं ।
हरिभजुतजि छल अमरपद पावैमिलिहरिमाहिं ॥
परम बिवेकी मुनि शुकदेवा । समरथ आदि पुरुषकर भेवा ॥
भूपहि कहा प्रलंब निपाती । घूमे हलधर सुख अधिकाती ॥
सखन सहित संमुख ते श्यामा । मिले तबहि कौतुक कहरामा ॥
ग्वाल अपर बन चारत धेना । असुर मरण सुनिचलेसुखेना ॥
देखिनि सबन जाय खल सोई । शृंगासित गिरितनु जनुहोई ॥

चकित ग्वाल घूमे उत्ताला। गहरजानिसँग रामगोपाला॥
दर्भ कास तजि तवलगिगाई। चरत मूंज बन पहुंचीं जाई॥
त्रिविभ्राता त्राता गो साथा। आये काँस दर्भ कुरुनाथा॥
दो० तहाँ एक सुरभी नहीं जोहत चहुँ दिशिग्वाल।
गोबियोग बिछुरे सखा फिरत मूंज बन ताल॥
छं० चढ़ेवृक्षतट रैंचहुँओरबाल।सखानाम लैफेरिवासांसिजाला॥
कहामीतकाहूतवैजे।रिपानी।किगोमूंजआरण्यहैंजूभुलानी॥
दो० ग्वाल बाल भूले फिरत ढूँढ़त कानन गाय।
सुनि यहप्रभुचढ़ि कदमपरवंशीदई बजाय॥
ऊँचे सुर मुरली सुनि राजा। धेनु गोपकर सकल समाजा॥
मगकुघाट आये चहुँ ओरा। दधिहिमिलतजिमिनभसरिजोरा॥
घेरयो हरिहि सबन तजिशंका। जस दुर्भिक्ष उदारहि रंका॥
तदनंतर देखन का भूपा। प्रजरत अग्नि भयंकर रूपा॥
चतुराशा द्रुम जूह जरावत।पशुखगभषतप्रलयजनुआवत॥
गह्वर बाल सखा हरि केरे। आरत बचन बदत असटेरे॥
पाहि पाहि नँदलाल दयाला। शुक्र करालकाल यहिकाला॥
भस्मी भूत करिहि जनत्राता। रक्षा करहु जगत पितुमाता॥
दो० हरिबिलोकि दावाग्नि बढ़ि कहा सखन समुझाइ।
मेटहुत्रासहि मूंदिदृग सुनिलिय सबन छपाइ॥
मूंदत नैन सिखीहरि नाशी। आन रुचिरमायापरकाशी॥
गोधन ग्वालन युत यदुराई। बन भांडीर दीन्ह पहुंचाई॥
तब सब सन कह नैन उघारौ। विनशादुखचहुँ ओरनिहारौ॥
निरखत अक्ष खोलिसबग्वाला। कहतकहाँहरिवहासिखिमाला॥
अरुयहि बिपिनकौनुलै आवा। अत्याश्चर्यन परत लखावा॥
सुनि यदुनाथ मन्दमुसुकाई। सबहि साथलै घरगये राई॥
प्रति आगार सबन बनलीला। कहा नरेश सप्रेम सुशीला॥
बधप्रलम्ब दावाग्नि कहानी। बिधि पूर्वक भणीजसिजानी॥
छं०जस जानितस सब गोप बालन कथा घरघर नृपकही।

सुनि नन्द पुर बासीसुकानन चरितदेखन गयसही ॥
माया बिकट यदुनाथकी कछु भेद काहुन पाइयो ।
तबघूमि निजनिज सद्म आये कृष्ण पद मनलाइयो ॥
दो० मंगल बपुरे गोपको हरि अनंत कृत भूरि ।
तजिप्रपंचभजुहरिचरणबिधिपितुजीवनमूरि ॥

इतिश्री मद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रि
यायांमंगलदासविरचितायांदावाग्निहरणोनाम
विंशोऽध्यायः २० ॥

दो० बाल तरुण बृद्धत्वबश अज्ञकाम इरषाहिं ।
जात बिचारत सुमति शुभकुमति अबुधतेनाहिं ॥
बिन सेये नीरजचरण राधापति के तात ।
जन्म सूतनवमन मनौ अरुझा किमि सुरझात ॥
सो० कुहू निशा बुधतात दृष्टि परै संशय नहीं ।
बिनध्याये जगत्रातकठिन मुक्तिपदवी चतुर ॥
ग्रीषम ऋतु नृप प्रथम बखानी । अनय महीपति करणीठानी ॥
पावस भूप प्रचंड कराला । खग पशुजीवजंतु तपशाला ॥
लखि दयाल ह्वैचहुँ दिशिराई । जलद चमूरसबीर बोलाई ॥
बिजय लागि ग्रीषम सहरोसा । छाइसुबर्त्त मही मन पोसा ॥
घन गाजत बाजत रण मारू । पावस भूप जगत सुख सारू ॥
नाना बरण बलाहक ऐसे । भट प्रघोर रावत रण जैसे ॥
कामकमन्ध चंचला भासा । अस्त्र शस्त्र जनु समरप्रकासा ॥
बक अवली राजत ध्वज श्वेता । भूप मनोहर सो छबि देता ॥
दो० दादुर बरही गण बदत जनु बिरदावलि बंदि ।
शुचि पावस भूपतिसुरुचि यशगावत आनंदि ॥
इन्द्र कमठ पावस धनु सोहैं । जेहिबिलोकि ग्रीषमरिपुछोहैं ॥
वृष्टि बुन्द दीरघ झरिभारी । भट जीमूत हनत शरधारी ॥
अरि वैभव दारुण अनुमानी । ग्रीषम तजि रणभूमि परानी ॥

मेघनाद महि तिय सुख दयऊ। तपफलसार प्रगट जनुलयऊ॥
पति वियोग धर अबलाभूरी। पलसुंडाल कीन्ह तपरूरी॥
तेहि फल कुच भूधर शितलाने। तपबियोगदुख मिलतनशाने॥
पतिहि प्रसंगति गर्भहि धारा। उपजे पुत्र दुगुण निधिभारा॥
तेलै भेंट फूल फल पाता। करतप्रणामपितहिजनुताता॥
दो० तेहि अवसर बृन्दा बिपिन भूमि सोहावन तात।
जिमि शृंगारित कामिनी किमिबरणी छबिजात॥
स्रवती सर नीरे जल पूरे। सोहत राजहंस खग धूरे॥
धवल बिटप शाखा शुभ झूमैं। सघनउदार लसत जिमिभूमैं॥
चातृक पिक कपोत अरुकीरा। करत कुतूहल सुखद गंभीरा॥
अपरनभग गण नाना जाती। बोलत कामकला सरसाती॥
जहँ तहँ नर युवती नृप जूहा। पहिरे बसन कुसुंभित सूहा॥
झूलत गावत राग मलारा। प्रगटतसुनिमनोजअधिकारा॥
तिनके निकट जाय हरि रामा। करत बाललीला सुखधामा॥
प्रमुदित सो लखि नरअरुनारी। बीती इमि बरषा दुख हारी॥
दो० जग जीवन नँदलाल तब कहा सखन समुझाय।
पावस गत आई सहज सुख दशरद ऋतुभाय॥
सब तपहरणिकरणि सुखसोहर। शरद किधौंममभक्तिमनोहर॥
स्वादगंधि जग मोदक भयऊ। जलप्रवाहजहँतहँ घटिगयऊ॥
रजनी ऋक्ष नाक उजियारा। मनो प्रकाश अगुणकरतारा॥
पन्थी भिक्षुक बणिक समाजा। बर्षा बिगत चले निजकाजा॥
मंद मंद गति शीत सोहावा। धीर दंभि जनु पन्थ चलावा॥
निरमल उदित चपाकर कैसो। परउपकार सुयश जग जैसो॥
शरदतापअति असहकराला। जिमिअनीतिशासनमहिपाला॥
जानिसुगमऋतुकरिदलसाजा। चले आन नृप जीतनराजा॥
दो० सकल शरद ऋतुधर्म हरि सखन कहा बहुभाँति।
सुनिआनन्दितभे अखिल किमिकरिबरणौ जाति॥
पुर कानन नित श्याम जू लीला करत अपार।

भजु मंगल श्रीकृष्ण पद तजि के कपट विचार ॥
इतिश्रीमद्विविधाकल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांवर्षाशरद्वर्णनो
नामैकविंशोऽध्यायः २१ ॥

दो० ज्ञानदिवाकर व्योमउर जब लगि उदितनहोत ।
तबलहुतम अज्ञानवश उगत नशत दुख पोत ॥
क्रीयमान गुण दोष जे ग्रसत न ज्ञानिहि सोइ ।
परारब्धि आधीन है संचित हूं गय खोइ ॥
पूरण ज्ञान प्रताप हिय प्रगटै हरि की भक्ति ।
अभयफिरै भव बीथिका बँधै न माया शक्ति ॥

सुठि सोहर सुनु चरित महीपा । कहौं बुझाइ तोहिं कुरुदीपा ॥
इमि प्रबोधि सब हरिनरनायक । करैलागशिशुकौतुकभायक ॥
जबलहु हरि बन धेनु चरावैं । तबलगि गोपी हरियशगावैं ॥
कथाअलौकिकयक दिनभयऊ । कानन श्याम बेणुरव ठयऊ ॥
बंशी शब्द सुनत ब्रज नारी । सकलबिरहबश काजबिसारी ॥
तरस ग्राम बाहिर यक ठांई । सुश्रोणी बिच जोरि अथाई ॥
बैठीं हरि दर्शन अभिलाषा । तब यक सखी परस्पर भाषा ॥
लोचन सफल होइँ हरि दरशी । कर पवित्र होवैं पग परशी ॥

दो० अबहि कान्ह बन नृत्य करि गावत धेनु चराय ।
गृह प्रदोष आवत दरश मिलिहैं जनिअकुलाय ॥

जल्पत कत निरर्थ अलिबोली । ध्वनिसुनुबंशीबजतअमोली ॥
बेणु बंश पावन करि दयऊ । केहिगुणश्यामनेइअतिठयऊ ॥
अरुणोदय ते निशिमुख लागी । हरि मुख लगीरहतअनुरागी ॥
करत सदा अधरामृत पाना । कोसखियहिसमधन्यजहाना ॥
आनँदवृष्टि पयद ध्वनिबाजत । कलरवसुनत कलाधरलाजत ॥
अति हमते प्रिय हरि कह बेनू । निशिदिन ढिगकरचारतधेनू ॥
मम सन्मुखनिर्मित बित नासी । प्रीतम प्रियाबनी मुख बासी ॥
अजहूं बय मानत जग जंगम । जड़मति निंदिबड़ीहरिसंगम ॥

दो० पोंछि पीतपट याहि जब श्याम बजावत हर्षि ।
सुर किन्नर गंधर्ब मुनि लेत सबाम अकर्षि ॥
तअम्बर प्रफुलित मुदित निजनिज यानारूढ़ ।
श्रुति सध्यानदै श्रवणकृत बदत वाक्यमृदुगूढ़ ॥
सुनत बिमोहत चित्र लिखेसे । सबाथित होत अमोल बिकेसे ॥
को महान तप किय बिकराला । यहि आधीन तीनितिहुंकाला ॥
प्रत्युत्तर सखि आन बखाना । दारुण तपकष्टित यहि ठाना ॥
बेणु वंश उद्भव भा आदी । भजेउ हरिहिदिनकीननबादी ॥
हिमि बतासआतपअघशीशा । सह कराल जससहत तपीशा ॥
दुख अनीक खंडन सह थूला । छिद्र कायकर क्लेश अतूला ॥
धूमपान करि भई प्रसिद्धा । तपन कीनकहनारिनिषिद्धा ॥
तपसा यह न आपको आली । पूत जानि ग्राही खलशाली ॥
दो० कसन बेणु मुरलीहमहिं बिरच्यो पितुवरआदि ।
रैनिदिवस हरिसँग रहत कहतआन सुखबादि ॥
सुनि क्षितीश धरमात्मा जबलगिहरि तेहिं ओर ।
आवत नहिं बन बेणुते सकल जगत चित चोर ॥
सो० गोपी तब लगिराय बिबिधभांति हरि यशगुणैं ।
दरशन करि सुखपाय जाइ गेह आनंद सों ॥
इतिश्री मद्धिविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायांमंगलदासबिरचितायांबंशीआख्यानब
र्णनोनामद्वाबिंशोऽध्यायः २२ ॥
दो० जिमिचकोर पावकभषत तजत न को सुख जानि ।
बिकलहोत दारुण चतुर निजकुलप्रण अनुमानि ॥
तिमि प्रवीण हरिगुण भणत तजत न पाइकलेश ।
हरिकी कृपा कटाक्षसों रहत न दुखकरलेश ॥
कहत अलख लख अगुण गुण सो भ्रमहों निरुवारि ।
बरणौं यदुबर चरितबर लखि दायक फलचारि ॥
सुनुनरेश गतशरद बिचारी । आई हिमि तुषार बढ़वारी ॥

नागलता बिकलित भैकैसे। लखत गवास पयस्वानि जैसे॥
ब्रज युवतिन सम्मत असकीना। न्हाइयमार्गशिरसखीप्रवीना॥
जन्म अनेक कलुष नशन्हाता। जिमिहरि चंडउड़त तरुपाता॥
पूजतमन लालसा सहेली। बर्षापाय मुदित जसबेली॥
नरकालीन बदतयह सजनी। मारगभरि न्हाइय गत रजनी॥
जो निरबिघ्नहोय प्रणपूरा। मिलैं कृष्णबरमम बचपूरा॥
सुनिसबके मनदृढ़ मतआवा। मुदइच्छित फलफुर उरछावा॥
दो० उठिप्रभात बस्त्राभरण पहिरि अनंदित नारि।
जुरिसप्रेम यमुनहिं चलीं मारग न्हान बिचारि॥
करि अस्नान उदक रबिदेई। मृतिका चिक्कन बाहिर लेई॥
उमा स्वरूप बिरचि रुचिमानी। आवाहन अस्थापन ठानी॥
पाद्यासन शुभअर्घ सुदीना। अचमनन्हानसबिधिसुठिकीना॥
मलयज कुसुम चढ़ाय सप्रीती। धूप दीप नैवेद्य सरीती॥
आरति ताम्बूल युतपूजी। करिप्रदक्षिणातजिरुचिदूजी॥
नौमि जोरिकर बिनय बखानी। इमिषोडश बिधिपूजिभवानी॥
बरयाचहिं अस आरतबानी। तवमहिमागिरिजाजग जानी॥
कर्म पोच हम जड़मति नारी। बरहरि बरचाहहिं बरभारी॥
दो० ह्वैदयालु लखि चेरिनिज हे त्रिपुरारि पियारि।
बरयांचा सो दीजिये कीरति विमल तुम्हारि॥
यहि प्रकारनित न्हाइ भुलावा। करैंदिवस निरजल ब्रतबाला॥
दधि ओदन संध्या कहँपावैं। भूमिशयन करिहरि गुणगावैं॥
मिलैशीघ्र फलव्रत यहि हेतू। मारगन्हाइ सधर्म सुचेतू॥
रुचिर बारता यकदिन केरी। सुनु भूमीश सदृढ़ मतितेरी॥
ब्रज बनिता जुरिन्हान सनेमा। आनघाट गईं सुरुचि सप्रेमा॥
पट भूषणउतारि सरिकूला। नग्नन्हाइ मनहरि रसभूला॥
गुण अनुबाद श्याम बरवादैं। क्रीड़ाहिंसकलसमुदअबिषादैं॥
तस्मिनकाल बंशिबट छांहा। राजतराम रहित जगनाहा॥
दो० दैवयोग ते गानसुर पर्यो श्याम श्रुति आइ।

गुप्तरूप करुणानिधे जातभये तहँराइ ॥
अलखठाढ़ देखत जलक्रीड़ा। सत्यसिन्धुहरिमनहिंअव्रीड़ा ॥
कौतुकीय मनकौतुक आयउ। बसनाभूषण सबै चोरायउ ॥
गाठरिबांधि प्रियक आरूढ़ा। भयउश्याम सुनि मोहतमूढ़ा ॥
निजप्रिय वेदऋचा अनुमानी। ठगी भूपबश कामनजानी ॥
नैककाल गत आपते बाला। निकरिदीख नहिंचीरनृपाला ॥
श्रुतिकन्या हेरैं उठिगोपी। विकलमहामतिथिरता लोपी ॥
वादैं चकित परस्पर सोई। अबलागि तटसरि आवनकोई ॥
हारक जो मम चीर बिधाता। प्रगटहु सोकृतज्ञ गुणत्राता ॥
दो० नतकेहि मिसतन नग्नगृह जाइब हे करतार।
कदम शाख घन पात सखि लखतभई तेहिबार ॥
मोरमुकुट शिरफल पितुगाथे। सुरबल्लभा तिलक भलमाथे ॥
करसरोज लकुटी भादाई। उरबन स्रक उर्बशी सोहाई ॥
पीत बसन बासित हरिचीरा। बैठेमौन साधि यदुबीरा ॥
निरखतहीं तेहि सखि कियशोरा। अलिहमलखाचीरचितचोरा ॥
करि प्रपंच सब बस्त्र अगोटी। राजत हरितरु परलै पोटी ॥
तासुबचन सुनि सकल निहारी। द्रुमघन सखा बैठ बनवारी ॥
हरिबिलोकित्रियलाज लजानी। आतुर प्रविशि गईं नृपपानी ॥
जोरि भुजा ग्रनवाइनि शीशा। आरत बिनयकीन्ह धरणीशा ॥
दो० रुजपातक घातक वृजिन दीनबन्धु यदुनाथ।
सत्य सेव किनि लखिदरश दैकरकरयो सनाथ ॥
सो० अब दयालु ह्वै श्याम बस्त्रदान दीजिय सुरुचि।
सुनिबोले गुणग्राम इमिन देहुँपितु शपथशुचि ॥
सबरस बाहर सकल उघारी। आवहु चीर लेहु दुखहारी ॥
सरुढ़ पोषि तनकहँ कुटिलाई। पढ्यो नीकगुण बड़ि चतुराई ॥
बिहँसि बदतघन रसबरु त्यागौ। नग्न आइपटममढिग माँगौ ॥
जनक सहोदर हमरे जानैं। गहैं तुमहिं कहिचौर बखानैं ॥
तबपितु अंत्रहि देहिं गिलानी। भूलिजाय लालन मुसुकानी ॥

हमकृति कानिमानि यकनाता । तुममेटत प्रिय पूरब बाता ॥
अब कौनौ बिधि चीर न देहूँ । निजजन बोलु चोरुबनि लेहूँ ॥
सभयनारि कह दीनदयाला । ममसुधि लेनहार गुणकाला ॥
दो० तुमते बड़तिहुं पुरसगा अन्यन आपन कोइ ।
करैं दुहाई जासुसन लखिन परत हरिसोइ ॥
जनपति रक्षक आपु मुरारी । जिमिपोषक नीरज बनवारी ॥
मारग मासन्हात तव हेता । केवल चरण राग श्रुतिसेता ॥
जोपै फुर दोहद पद मोरे । कृतस्नान मारग छल छोरे ॥
सत्य मित्रसन तौ कस लाजा । तुमसखिकरहुभणतब्रजराजा ॥
परिहरि छद्मभाव निजचीरा । लीजिय मिटैसकल भवभीरा ॥
सम्मत कीन्ह सुनत प्रियबानी । बस्त्रलेहु सखि तजहु गलानी ॥
हरिकृतज्ञ तन मन बच केरे । बनायोग शुचि पायहु नेरे ॥
असमत ठानिसुनौ भुवराई । गुह्यस्थल कुचकरण छपाई ॥
दो० सकुचि नारिजल बाहिरेजब आईनर नाह ।
बिहँसि कहाहरिठाढ़ि अबहोहु जोरि मुखबाह ॥
पटभूषण तबदेइँ तुम्हारे । हैं निरर्थकहि काज हमारे ॥
सरल प्रकृतिहम त्रियमति भोरी । कहत बात तुम छलरस बोरी ॥
तव माया दुस्तर संसारा । जेहिबश होतशंभु करतारा ॥
कुमति बिवश त्रियनाथ सदाहीं । ठगेउश्याम कछुबड़ कृतनाहीं ॥
जोठग बिबुध चतुरठागि आवै । मूरख ठगतन बड़ पदपावै ॥
व्यापक अखिलबिश्वतुमएका । अरुअनंत हमकीन्ह बिवेका ॥
मनभावित कृतकरौ कृपाला । हम परिहरीलाज यहिकाला ॥
इमि कहिकर सरोज तिनजोरे । करहिंनवानि बड़िही तृणतोरे ॥
दो० सत्य प्रेम लखि बस्त्रतब दिये समस्त मुरारि ।
निकट आइ मायापते कह इमिबचन बिचारि ॥
हास्यन करेहु बिलगु जनिगुनहू । दयउँ सीखमो कारण सुनहू ॥
नीराध्यक्ष बरुण दिशि नाथा । तीनहुँ काल बसत सो पाथा ॥
मज्जन नग्न अमृत मनुजादा । खोवत मनहुँ धर्म्म मर्य्यादा ॥

बरुण त्रास जल जानि प्रबीना। नग्नन्हातनहिंबद बुत्रपीना॥
चीर हरण कीन्हा यहि भेदा। पुनिनन्हाउपय नग्नअखेदा॥
अबगृहजाउ मुदित तजिशोचा। पाप तुम्हार आजुहौं मोचा॥
रास मास दामोदर माहीं। करिहौं तव सँग संशय नाहीं॥
सुनि निबन्ध रासावधि नारीं। प्रमुदितनिजनिजगेहसिधारीं॥

दो० श्याम जाइ बंशीबटहि सखा धेनु लै संग।
कानन घनकहँचलतभे छबिलखिलजतअनंग॥
फल प्रसून सम्पन्न द्रुम रहे भूमि निय राय।
निरखितिनहिंश्रीश्यामजू कहतसखानबुझाय॥
यथा वृक्ष ये तथा जग हैं उदार नर धीर।
आपुसहैं दुख आन हित करैं हरहिं सब पीर॥

सो० इमिहिं बुझावत श्याम जातभये यमुना निकट।
मंगलतजि भवकाम भजु हरिछूटै अघ विकट॥

इतिश्री मद्विविध किल्विषान्धकार दिनमणि श्रीकृष्ण
प्रियायां मंगलदास बिरचितायां चीरहरणबर्णनो
नाम त्रैविंशोऽध्यायः २३॥

दो० उपजतजलतेलौन जिमि बहुरिमिलत पयमाहिं।
तिमि सब देहीं ब्रह्मते उपजै नाशि मिलिजाहिं॥
यथा विरोचन स्वबलहीं देत पसारि मयूष।
कर्षि लेत निज कौतुकै समुझत चतुर अदूष॥
तथास्वतंत्रित ब्रह्म बुध निज कृत ते क्षेत्रज्ञ।
अमित रचत अरु हरत है जानत अज्ञ न तज्ञ॥
सो अनादि अज अंत बिन पारब्रह्म परमीश।
स्ववश धर्‍योमानव वपुष नौमि तासुपद शीश॥
विशद यथा हिमकर तथा दूषण बिनगुण तासु।
बरणतहौं बुधजन सुनौ दायकफल श्रुतिआसु॥

कुरुकुल भूषणसों ऋषिराई। कही बहुरिइमि कथा बुझाई॥
जबकृतांत अनुजा अविदूरी। पहुँचे नृपजगती बनमूरी॥

कुज अभिराम छांह मे ठाढ़े। तब गोपाल बदारत बाढ़े॥
नाथ क्षुधा व्यापी बिन सीमा। होत अधीर जबै कलजीमा॥
निज निकेतते जो कुछ लाये। क्षुधा न मिटी तासु के खाये॥
धूमसमूह परत जो देखी। कंसत्रास संक्षिप्त बिशेखी॥
मथुरा भूमि देव मखसाधत। भक्तिसहितहरिपद अनुराधत॥
तिनढिग जाहुनाम ममलीजो। जोरिहाथ अभिबंदन कीजो॥
दो० जिमि भिक्षुक साधीन ह्वै याँचत तिमि तुमतात।
माँगेहु भोजन मानतजि सुनि इमिहरि मुखबात॥
ग्वालमुदितमनगय तिनपासा। प्रबलक्षुधाव्यापित भ्रमभासा॥
दूरिहिते गज अंग प्रणामा। करयोसभय भूपतिगुणधामा॥
जोरि हाथ आरत मय भाषा। कठिनक्षुधाअहार अभिलाषा॥
विदित जगत यह चतुर बतावैं। भूखबुद्धि बल तेज नशावैं॥
कृपानिधान बिप्र मखकारी। तुमहिं प्रणामकहा असुरारी॥
अरुयह सानँद कहा सँदेशा। हमहिं क्षुदा लागी धरमेशा॥
अल्पाहार दयाकरि दीजिय। सुयशमहानसमययहिलीजिय॥
सुनिसरोषद्विजभण बुधिनासी। बड़मूरख तुम गोप कुबासी॥
दो० मख पूरण बिन रंच भष देइँ न हम गोपाल।
मीत सगा सोदर चतुर बरु माँगै यहिकाल॥
परिपूरण करि यज्ञपुनि शेषभाग रहिजाय।
बाँटेंगे सो लीजियो कृष्णहि कहौ बुझाय॥
मृदुभाषा आरत रससानी। गोपन बहुरि महीश बखानी॥
अतिथितोष समधर्म न आना। कहत बिबुध कबिवेद पुराना॥
अतुल पुण्यलीजियक्षितिदेवा। ईषद भष दीजियक्षण देवा॥
सुमन यज्ञ कृत द्विजबर सोई। बकिथाके पुनि बोलनकोई॥
महिसुर भूप परस्पर कहईं। पशुपालकजड़ पशुसमअहईं॥
यज्ञमध्य यांचत मख भाषा। कुमतिक्षुधाबशगुणइनकागा॥
ग्राम बाक्य सुनिपलटे ग्वाला। आये जहँ शोभितनँदलाला॥
दीन बचन कह सुनौं गोसांई। मान महत निजदीन्हगवांई॥

दो० भिक्षाटन निंदक करम कीन्ह तुम्हार निदेश।
　　परुषाक्षर स्योव्यंग्यता कहे न भय दियलेश॥

अबका करिय दया जलराशी। दारुण क्षुधा शिथामनभाशी॥
द्विज प्रमदा करुणालय सोई। अति धर्मज्ञ भक्ति रस भोई॥
पांचौ तिन ढिग जाइ अहारा। देहैं तरस करौ जनि बारा॥
हरिआयसु शिर धरि सब धाये। आतुर द्विजबनितनतटआये॥
भोजन रचहिं मुदित मननारी। गोप बिलोकत भये सुखारी॥
नौमि जोरिकर प्रभु सन्देशा। दीन गिरामय कहा नरेशा॥
सुनौ मातु यहि क्षण हरि देहीं। उपजी क्षुधा बिपुलहिततेहीं॥
तुम पै भोजन मांगि पठावा। दीजिय दर अहार मनभावा॥

दो० सुनि भूसुर प्रमदा मुदित भईं भूप अधिकाइ।
　　भोज्य तर्क रसपात्र हरि भरिधाईं अकुलाइ॥
　　निजबलसम रोक्यो द्विजन तदपिरुकी नहिंकोइ।
　　एक नारिके कंतने बरजि राख त्रिय सोइ॥

परिहरिकाय ध्याइ शकटारी। प्रथममिली हरिकहँ बर नारी॥
जिमि जल तुंग तरंगहि फारी। मिलतनीर तिमि बालमुरारी॥
तेहि पश्चात नारि निकरंबा। हरितट गईं सग्वाल कदंबा॥
सखा सिरोधी कर हरि धारे। रुचिर त्रिभंगी रूप सम्हारे॥
कर सारस अंभोज प्रसूना। लसतचारु अनुपम तेहिजूना॥
भोजन पात्र त्तमा धरि नारी। मुख अनूप लखिभवभयहारी॥
सानुरागसेन्द्रियनतिकीन्हा। सकलसखिनतबनिजप्रभुचीन्हा॥
यककहदेखआलिछबिलोनी। बरणिसकतनहिं शेष अयोनी॥

दो० नयन दशन नासाकरण अकथ सखा चहुँओर।
　　ऋक्ष व्यूह मध्येन्दु बिन तर्क सो नन्दकिशोर॥

कीरति बिमल चंद्रिका जासू। बिकसकुमुद जनखलतमनासू॥
श्रवत भक्ति रस अमी अपारा। दुरितानन्त तापहर धारा॥
जाकर ध्यान करत मुनिज्ञानी। मनगोतीत बदत श्रुतिबानी॥
सो सच्चिदानन्द गोपाला। निज इच्छा तनरचाकृपाला॥

प्रथमगुणिनमुखसुनाजोआली। नटवर बेष सुभग रिपुशाली॥
नित उर दरश लालसा जाकी। भयेसुफलचषछबिलखिताकी॥
नर शरीर फल पायउ आजू। अबन आनजगतीसनकाजू॥
इमि बतराय जोरि द्वौ पानी। अतिआरतमय बिनयबखानी॥
शरणागत बत्सल भगवाना। विभव प्रताप अजानपुमाना॥
विधि महेश लम्बोदर सूरा। उडर महीधर कतहुँकि पूरा॥
गाय सकृत कौ असुर अराती। दया देखि उर दया जुड़ाती॥
प्रणतारत त्रिभंज श्रुति सेतू। जनपालक बड़िकृपासमेतू॥
दो॰ जावत कृपा न कृपानिधि होत दास पर भूरि।
तबलहु दरशन रावरे वेद बदत हैं दूरि॥
हमरे तुल्य धन्य नहिं आना। संचितअघपददरशिनशाना॥
बिप्र कृपण मूरुख अज्ञानी। मोहलोभवशअतिअभिमानी॥
आगम निगम पुराण बखाना। तव मायावश तदपि नजाना॥
पुरुषोत्तम अनादि तुम एका। पहिचानै जेहि देहु विवेका॥
बेधा बामादिक बश माया। को महिदेव धरे नर काया॥
तपव्रत मख साधिय जेहिलागी। तेहिभोजननदयउमतिखागी॥
दाया उदन्वान है सोई। नर तन पाइ भक्ति तव होई॥
धन ब्रीड़ा जन धन्य जहाना। तुम्हरे काज लगे भगवाना॥
दो॰ मैथुन क्षुत्तृष्णा तृषा सम सबही के होत।
विद्यावतजन हृदय खल करत अविद्य उदोत॥
ज्ञान बिराग तपस जप सोई। तवयश भजन जासुमहँ होई॥
सुनि हरिबिनय पूछिकुशलाता। पुनिहँसिश्यामकहीमृदुबाता॥
जनिप्रणाम मोहिं करौ सयानी। नंद सूनु निजमन अनुमानी॥
तुम जग पूज्य बिप्र त्रिय अहहू। अनुचितवचन देविकसकहहू॥
जेनर द्विज कर आपु पुजावैं। ते भव कुछ न बड़प्पन पावैं॥
हमहिं उचित तुम्हारि सेवकाई। क्षुधितजानि भोजन लैआई॥
पर काजी भूतल नर थोरे। भाषत सत्य चतुर दृढ़ मोरे॥
दया शीलनिधि जे जग प्रानी। अंतवास दिवि लहत सयानी॥

दो॰ कहा करिय आदर इहां हम तुम्हार गुणखानि।
दूरिभवन बनि परत नहिं आवत मनहिंगलानि॥
यहि बेरिया घर होते आजू। करते शिष्टाचार समाजू॥
मम हित बिथुर सहा तुमभारी। दैभोजन पुनि कीन्हसुखारी॥
हमसों बनिन परी पहुनाई। नहिं पछितावजन्मभरिजाई॥
इमि प्रबोधि हरि नारि समूहा। कहत भये फिरि असशत्रूहा॥
बड़ बिलम्बभा तुम कहँ आये। अबग्रह जाहु मोहिं उरलाये॥
तव बर्त्तम पति हेरत ह्वै हैं। पन्थ बिलोकनकारण द्वै हैं॥
प्रमदा बिन मख फलित न होई। कारण प्रथम परत यह जोई॥
द्वितियेनारिहीनपतिकानन। अवशिजाहुयहममअनुशासन॥
सो॰ त्यागि ज्ञाति कुलकानि नेह कुटुंब बिरागमन।
सुख पूरण अनुमानि लंघिसेतु जग यज्ञकर॥
दो॰ परिहरि लज्जा गुरुनकी पति अनुशासनटारि।
पदकौशीश स्नेह बश आई हम असुरारि॥
बाम बाम पतिशासन टारै। श्रुति बिपरीतकर्म्म अनुसारै॥
कन्त रजायसु अगमत नारी। बासव नगर लहत सुखभारी॥
आज्ञा भंजि भर्त्त हम आई। उहाँतजाइ सकहिं यदुराई॥
हठकरिगये व्यंग द्विज बैना। कहि बिहँसैं सुनुकुमुदिनिनैना॥
जो कोपहिं तौ देहिं निकारी। फिरिहम कहाँजाहिं बनवारी॥
तव शरणागत कारण एही। रहैं सुखेन अनादर तेही॥
अरु यक नारि हमारे संगा। धाई तव पद प्रीति अभंगा॥
तासु कंत राखा हठि ताहीं। तनअकुलाइ तजाक्षणमाहीं॥
दो॰ बिहँसि देखाई श्याम तब सबकहँ सो सुकुमारि।
बचन भक्तिसाने मधुर पुनि बोले सुखकारि॥
जेहरि रस पागे छल हीना। कबहुं होत तिन नाश सखीना॥
अद्भुतचरित लखतद्विजबाला। चकिभा दारु पुतरि समहाला॥
पुनि धरिधीरहरिहिशिरनावा। सुखद मनोहर प्रभु यशगावा॥
अति बिकरालनाथतवमाया। जेहिवश तिहुँपुरजीवनिकाया॥

तबसबालकरिभोजन श्यामा। नारिन कहा जाहु निज धामा॥
तबते अब आदर अधिकाई। करि हैं तुव पति हृदय लजाई॥
करिप्रहून युवतिन कर जोरी। निजथल चली भूपगुण धोरी॥
उतमहिदेव करत पछितावा। हरि अवतार प्रसंग चलावा॥
दो० श्रुतिइतिहास पुराणमहँ सुनीप्रथम यहबात।
भूत समय स्योबाम नँदतप कियसहि दुखगात॥
देखि उग्रतप सुर शिर मौरा। पुरुष अनादि प्रकट तेहि ठौरा॥
करिप्रबोध यहबर शुभदीन्हा। नरतन यदुकुल धारि प्रबीना॥
बाल चरित तुम्हरे गृह करिहौं। बिपदा द्विजगोजनकीहरिहौं॥
बूझिपरत असलोइ भगवाना। जन्मागुत बचन परमाना॥
बाल बिनोद करतहै सोई। भोजन काज पठाये लोई॥
अहहदैव हमरी बुधि नाशी। माँगास्वमुखपुरुषअविनाशी॥
अरुन दीन्ह हम अल्प अहारा। हम समको अज्ञान अपारा॥
जेहिलगिमखनाना बिधिकीन्हे। तासुदरशचलिआजुनलीन्हे॥
दो० अकल अनीह अमान अज आदि पुरुष भगवान।
मानस करि जानत भये बिधि हर ज्ञान सुजान॥
ग्वाल थकित भय बिनयसुनाई। तदपि न हृदयदयादृढ़आई॥
शठकुभाग्यअहमितहमपापी।धृकअसकुमतिसुमतिजेहिझाँपी॥
दोषिक यज्ञकर्म यह भयऊ।सुकृतअतिथितोषननशिगयऊ॥
हरिपहिचानि दरशनहिंकीन्हा। रंकपरमनिधिजनुतजिदीन्हा॥
हमते भल सब बिधिते बाला। बिन तप मख देखा जनपाला॥
निजकरभोजनश्यामहिंदीन्हा। पूरब सुकृत लाभ यह लीन्हा॥
इमि पछिताइ बिप्र बर राजा। आईं तेहिक्षणनारिसमाजा॥
देखि द्विजन उठि जोरे हाथा। कहा धन्य तव अक्षर माथा॥
दो० करि दर्शन जगदीशके जन्म सुफल करिलीन्ह।
असकहि आदर सह सबन बैठहु आसनदीन्ह॥
जानिदास जापर सहज दयाकरैं गोपाल।

मंगलताहिन छलिसकै ठगरूपी कलिकाल ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांद्विजपत्नीदर्शनोनाम
चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

दो० व्योमानिल जल मित्रमहि पंचभूत गुणथूल।
शब्द परस रस रूपयुत गन्धितत्त्व गुणमूल ॥
करणत्वचा रसनानयन सहित नासिकापांच।
ज्ञानेन्द्रिय शरतत्त्वकी बदतवेद बुधसांच ॥
ये सिगरे मिटि मिलत हैं अहंकार में जाय।
महाप्रकृति महँ मिलतहैं अहंकार बिनशाय ॥
परमात्मा अव्यक्त में महाप्रकृति मिलिजात।
सांख्यधर्म बुधजनबदत यह प्रसंग विख्यात ॥
जो न नशात काहू समय पारब्रह्म अज्ञात।
भक्ति हेत सो नर भयउ कृष्णरूप साक्षात ॥

कीरति तासु अमोघ सप्रेमा। मुनि सूरहि बरणी युतनेमा ॥
नृपसुनु जिमि गिरिवरनखधारा। बृन्दारक नायक मद हारा ॥
सो प्रसंग बिस्तार समेता। बरणतहौं अबकुरुकुल केता ॥
ब्रज बसेरि सम्बत गत एका। हरतिथिअसित ऊर्जसबिबेका ॥
न्हाइ प्रात सुर प्रिय श्रीखण्डा। रुचिरलाइरचिचौक सुभण्डा ॥
बिबिध प्रकार स्वाद मिष्टाना। रचि पुनीत सुन्दर पकवाना ॥
धूपदीप करि इन्द्रहि पूजें। आनँदसहितअशनपुनिभूजें ॥
ब्रज मंडल यह रीति सनातन। आवत चली भूपभ्रमवातन ॥

दो० जानि जलद पति वासवै अर्चत ग्वाल सनेह।
सुनुक्षोणिप एकाग्र चित कथा रम्य है एह ॥

सोई दिवस पर्यो जब आई। ग्वाल नारिनर करहिं बधाई ॥
सामा अशन नन्द बहु कीन्हीं। प्रतिगृह सोइदशाहरिचीन्हीं ॥
प्रभु अंतर्यामी क्षितिपाला। नरइव चरित करतनँदलाला ॥
पूछेउ जननि कहा है आजू। जेहिहितप्रतिगृहअशनसमाजू ॥

सुनुसुकुमारन मोहिंअवकाशा । सकलकथाजो करौं प्रकाशा ॥
जनकहि पूंछु जाउँ बलिहारी । गये सभा हुलसत बनवारी ॥
जहाँनन्द उपनन्द समाजा । बोले मधुर गिरा ब्रजराजा ॥
ममउर पिता पर्म्म सन्देहा । अधिकासनाबिरचन गुणकेहा ॥
दो० कौन देवकी आजु पितु पूजन है सो मोहिं ।
कहौ बुझाइ सप्रेम जेहि पराचि जाउंहौं ओहि ॥
भक्ति मुक्तिदाता प्रकट को असदेव प्रमान ।
नामग्राम गुणकहौ मोहिं पूछतमनो अजान ॥
बोले नन्द मन्द मुसुकाई । अब लगि तैं बूझा न कन्हाई ॥
मुदिरनाथ जो शाला राती । जेहि अनुकम्पा क्षमा जुड़ाती ॥
अणिमादिक पावत संसारा । जल तृण अन्नहोतअधिकारा ॥
फलत पल्लवत बन उद्याना । चहुँविधि जीवलहतकल्याना ॥
पूजन करत समोद सदाहीं । ताकर लखिस्वारथ मनमाहीं ॥
प्रति पुरिषान मेघ पति अर्चा । आवतचली नवीन न चर्चा ॥
बचन सुनत श्रीपति मुसुकाने । बोले बचन भद्रस साने ॥
बश अयानता पितु कालीना । पूज्यो सुनासीर सुधि हीना ॥
दो० अब तुम तात सुजान है गहत कुबाट अलीन ।
कुबुधी बरणाधम पुरुष पूजत बासव हीन ॥
पूजत शचीनाथ निःकाजा । भक्ति मुक्ति दानहिं सुरराजा ॥
अणिमादिक वर्चादिक कासू । मघवा दीन्ह कीन्हदुखनासू ॥
अरु जग केहि उत्तम बरदाना । दिविपतिदयउसुकरौबखाना ॥
तम मख मध्य दिवौकस ताता । मानतक्षाँचु निजाधिपनाता ॥
इन्द्रासन कमनीय महाना । तहां बसत सुरभूप समाना ॥
तेहिते भा ईश्वर नहिं सोई । समुझौ तात बदत श्रुतिजोई ॥
इन्द्रहि निशिचर बारम्बारा । जीतहिं संग्रम ठानि अपारा ॥
कादर समसो समर पराई । गिरि कंदरमहँ जाइ लुकाई ॥
दो० तासु भजन पूजन पिता करत न कोउ जगमाहि ।
जानि धर्म निज शुचि सुकुल तजौ इन्द्र अर्चाहि ॥

को बापुरो क्रूर पुरहूता। आपुहि रचि सकतन कपूता॥
अंकानीक लिखे अज जोई। तात मृषा नहिं होवत सोई॥
सम्पति सुखकदेन सुननाती। प्रमदा सुता आदि सबभाँती॥
मिलत समस्त कर्म्म आधीना। केहिरिपुपाकदीन्हकेहिलीना॥
सोखत नीर सूर बसुमासा। वर्षत वर्षाऋतु अनयासा॥
तेहिकरि बसुधातृण अरुनाजू। उपजत है न कर्म सुराजू॥
चारिबरणशुचि रचे बिधाता। द्विज चत्री वै शूद्रकहाता॥
पृथक पृथक शुभकर्म्म बताये। तेहिमग बिचरत चतुरसोहाये॥

दो० पढ़ैं बेद बिद्या सुरुचि अरुतप करैं महान।
रुचिर धर्म्म यह बिप्रकर भाषत निगमपुरान॥

अस्त्र शस्त्र गहि रचहि देशा। जेहिकरलहै न प्रजा कलेशा॥
दान देइ यज्ञादिक करई। क्षत्री धर्म पुरुष जो धरई॥
कृषी कर्म बाणिज्य अनेका। करै वैश्य करि धर्म विवेका॥
सेवा धर्म शूद्र अधिकारा। रच्योशोचि प्रथमहिंकरतारा॥
पितु तुम वैश्यबरण हौ आछे। सुना वेद बक्कन मुख पाछे॥
सुरभी वृद्धि भई गण नाना। यहिहितगोकुल नामबखाना॥
ज्ञाति बन्धु सब गोप कहाये। सस्य बणिज द्वै कर्म्मसोहाये॥
गो द्विजादि सेवन सहभीती। कीजिय तात बखानत नीती॥

दो० श्रुतिशासन है धर्मनिज करिय न कतहूँ त्याग।
माया बश मूढ़त्व मय आन धर्म्म जो लाग॥

सोअतिकुटिलकुगति आधीना। जिमिकुलबधूआनरतिकीना॥
यहिकारण सुनि बिनय हमारी। बासव पूजन देहु बिसारी॥
गिरिकानन तटनी शुचि पूजौ। पितु परिहरौ अपरसुर दूजौ॥
तृण आरण्य ठाम नग दाता। सलिलद्वीपवतिपाणअघाता॥
जिनके राज्य सकल सुखपाइय। तिनतजि हरिबपुरेपदध्याइय॥
है अनुचित पितु कर्म अलीका। अगमनयाहिकृतअपयशटीका॥
लै अन्नेक्षु सार पकवाना। पूजियगिरिवरममनभाना॥
सुनत श्याममुख वचनविनीता। उठे नन्द उपनन्द अभीता॥

दो० जेठर वहिक्रम ग्वाल जहँ बैठे हैं मुद पानि।
जातभये सत्वर तहां यदुनाथहि उर आनि॥
जेहिप्रकार प्रभु कहि समुझावा। सो प्रसंग नृपनन्द सुनावा॥
बोले गोप वृद्ध सुनि बानी। तात बात हरि सत्यबखानी॥
वय शिशुता बूझौ जनि वाकी। भ्रमवशबात न मेट्योताकी॥
तुम सज्ञान बिचारौ हीमें। अचेत शक्रहि कौनु महीमें॥
नहिं कर्त्ता पालक लयकारी। आपु दुखित सब दिनवृत्तारी॥
जो त्राता सबकर निरबाधा। तज्यो मोह भय तासु अराधा॥
दिविनायकसों को निजकामा। सरि बन नग पूजौ लै सामा॥
अन्य गोप बोले हरषाई। भलमत कीन्हा बालकन्हाई॥
दो० भूधर गोबर्द्धन बड़ो पूजिय सब मिलि ताहि।
अपर देव इन्द्रादि सों कहा काज निजआहि॥
जब सबकर सम्मत नँद पावा। तब प्रसन्न मन चार बोलावा॥
पुर प्रति सदन सुद्धि करुजाई। प्रात सर्व मम आयसु पाई॥
चलि गोबर्द्धन पूजो भाई। लै सामग्री अशन मिठाई॥
पाइ रजायसु होत बिहाना। शौचक्रिया करिन्हाइसध्याना॥
व्यंजन छरस पात्र भरि नाना। गिरि पूजनगमने गुणवाना॥
सोपनन्द नँद सुजन समेता। गोपन सँग नृप चले सहेता॥
बाजत ढोल तूर्य सहनाई। सभव शैलतट पहुंचे जाई॥
भूभ्रत निकट चारिहू ओरा। स्वच्छ पवित्रकीन्ह जलछोरा॥
बहुप्रकार मिष्टानके भाजन। धरे भूमि प्रमुदित सुनुराजन॥
भोजन अमित जाति तहँधारे। बरणि सिराय न भाँति अपारे॥
कुसुममालअवली भाजनप्रति। पहिराई निरखत मोहत मति॥
पाटबस्त्र शुचितानि बिताना। गाइ सकतनहिंकबिबुधिवाना॥
दो० क्रांतिदरी भ्रत ता समय बरणी जात न भूप।
बस्त्राभूषणभूषि जनु नखशिख नारि अनूप॥
तब नँद निजकुल पूज्यभुदेवा। बोलत भये समुद युत सेवा॥
ज्ञाति बन्धु अन जाति समेता। निशा चूनु तंडुल कुरु केता॥

प्रथम चढ़ाय धूप दै दीपा । अर्चत भये नैवेद्य समीपा ॥
घोटा अहि बल्लरी बहोरी । सहित दक्षिणा धरिकर जोरी ॥
श्रुतिवत महिसुर आयसु पाई । शिखिरीबर ध्यावत चितलाई ॥
द्विजबर कहा तजौ दुबिधाई । जेहिते दरश देहिं गिरिराई ॥
सुनि मोहन बिबिबन्धुस ग्वाला । दम्पति नन्द वृद्ध लघु बाला ॥
मूँदि नैन दोउकर सब जोरी । शीश नवाइ रहे मति धोरी ॥
दो० कौतुकही भगवान उत बिरचि दूसरी काय ।
असबिशालजनु द्वितियगिरिकरपदथूलबनाय ॥
नीरज नैन मैन मद खण्डा । इन्द्रानन शिरमुकुट शिखण्डा ॥
गल बनमाल पीतपट सोहै । रत्न जटित भूषण तन सोहै ॥
मुख पसारि हरिगति पथगामी । चले गूंग सम अन्तर यामी ॥
इत आपुहि प्रभु कहत पुकारी । गिरिवर दरश करौ नरनारी ॥
पूजा सबिधि तुम्हारि बिलोकी । प्रगटदरश दै कीन्ह अशोकी ॥
कहि असप्रथमदण्डवत कीन्हा । अभिवन्दहुपुनि आयसु दीन्हा ॥
युवती नरन कर्यो परनामा । अति अनंदमय लै लै नामा ॥
कहत परस्पर लोग सयाने । इन्द्रहि हम पूजा बिन जाने ॥
दो० दरश प्रसिद्ध न कतहुँ तेहि दीन्हो आइ सुरेश ।
समुझि पितामहका सगुण पूज्यो ताहिगवेश ॥
इमि प्रत्यक्ष सुर गिरिवर त्यागी । यह चरित्र भ्रामिक अनुरागी ॥
होत बतकही अस तेहि काला । सबहि पुकारिकहा नँदलाला ॥
जो भोजन भूधर हित भूरी । लाये सकल प्रेम तन पूरी ॥
सो गिरिदेवहि मुदित जिमावौ । जेहिते मनबांछित फलपावौ ॥
सुनि सानन्द गोपि अरु ग्वाला । षटरस भोजन लै महिपाला ॥
लागे देइ सकल निज हाथा । जेमन लगे गोबर्द्धन नाथा ॥
जो सामग्री तहँ सब आई । बचीन नेक सकल हरिखाई ॥
पुनि सो मूरति अद्रि समानी । सबन सत्य पूजा अनुमानी ॥
दो० अद्भुत लीला श्याम करि सबकहँ संग लगाय ।
परिक्रमा गिरिकी समुद करत भये नरराय ॥

सो० प्रफुलित मन पुनिधाम सकल संग आवतभये ।
बर्णतगिरिगुणग्राम अकथसौख्य मयनारिनर ॥
दो० ग्वालगाय बच्छानके रँगरँग किंकिणि ग्रीव ।
पहिराई कौतुकहि युत वृन्दाबन सुख सीव ॥
प्रगट शैलतन जेहि रच्यो खायो सुरपतिभाग ।
मंगलतूतजिमानमद करु तेहिपद अनुराग ॥
इति श्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायां गोवर्द्धनपूजनवर्णनोनाम
पंचबिंशोऽध्यायः २५ ॥

दो० मुक्तिसरूप्य सलोक्यशुचि अरुसायोज्यसमीप ।
चारों पावत चतुरजन धरे ज्ञान उर दीप ॥
ध्यावत राधारमणको राग द्वेष बिसराय ।
सो जनु चारिप्रधान मय बनो भूप सुखपाय ॥
सुनौ नृपाल रुचिर हरि लीला । तुमश्रोतानृपसुमतिसुशीला ॥
तजिदिवीश गिरिपूजा कीन्ही । यह सुधि देवनइन्द्रहिदीन्ही ॥
सुनि सकोपि सब बिबुधहँकारे । सादर निकर निकटबैठारे ॥
भ्रातहु पाव मर्म्म यह काऊ । जानत होउन कस्यो दुराऊ ॥
ब्रजग्वालन पूज्यो कहिकाली । त्यागेउमोहिंगोपालकुचाली ॥
ऋषि कौतुकी समय तेहिआये । देखत तुरतखान हरषाये ॥
करि प्रणाम आसन बैठारा । कौतुकही मुनिबचन उचारा ॥
कहिय कहा रिपुपाक कहानी । तव महिमाप्रसिद्धजगजानी ॥
दो० देवराज मान्यता तव करत सगौरव सर्व ।
ब्रजबासिन अबपरिहस्यो पूजागिरिकरि गर्व ॥
नन्दसूनु जोइ आयसु देता । करत गोप सोइ प्रेम समेता ॥
तेहि सुत तुव पूजन मिटवावा । प्रेरि सबहि भूधर पुजवावा ॥
सुनि उर दह्यो पुरंदर कैसे । सिंधु अगस्त्य बातसुनिजैसे ॥
भृकुटी वक्र अरुण चषभयऊ । हरिमायावशबुधिभ्रमिगयऊ ॥
कह धनवान भये ब्रजबासी । तामद मम पूजा तिननासी ॥

मख ब्रत जप तपममनभुलायो । मूढ़न अवशिदरिद्रबोलायो ॥
जानत परमात्मा नर श्यामा । करत तदज्ञावत जगकामा ॥
शिशुता बिवश अज्ञ सुत सोई । मूरुख अभिमानी जिमि लोई ॥
दो० मदबाढ़ो विधि रचनि सम आजु त्रिभ जौं सोइ ।
गोधन श्री नाशौं सकल तब निज मारगहोइ ॥
इमि बहु जल्पि इन्द्र मतिहीना । घनपतिबोलि रजायसुदीना ॥
तात सर्ब निज चमू कराला । संगलाय गमनौ यहिकाला ॥
प्रलयकाल बर्षाझरि लावो । गोबर्द्धन नग घोरि बहावो ॥
अरु ब्रजमंडल देहु नशाई । पुनि न चिह्नकहुं परै लखाई ॥
पशु मनुजादिक रहै न कोई । तब ममहृदय प्रफुल्लित होई ॥
नीरदनाथ रजायसु पाई । करि प्रणाम गमनो भुवराई ॥
निज निकेत मुखिया जीमूता । बोले निकर कही गतिभूता ॥
त्रिदश राज शासन है आजू । बोरो ब्रज पशु सरन समाजू ॥
दो० सुनि सानँद मेघाधिपन निज निजजोरि सहाय ।
सानुराग बलकत चले संग मेघपति पाय ॥
क्षणमहँ ब्रजमंडल घन छायो । गिरिघनपति तर्जनहिबतायो ॥
दिवस क्षपासम निकरनिहारा । लखिनपरत निजहाथपसारा ॥
गर्जत घोर मनो पविपाता । मूशलधार बुन्द सरसाता ॥
महाप्रलय घनघटा कराला । अभ्रअखण्ड देखिसबग्वाला ॥
वृष्टि अपार असन जस देखी । व्याकुलनन्द सबाम विशेखी ॥
गोप नारि नर नगर निवासी । भीत देखि वरषा मृतु पासी ॥
सभय कम्पतन जनु बिनुप्राना । कहतत्राहि यदुपति भगवाना ॥
प्रभुपहँ जाय पुकारत भयऊ । रक्षहुनाथ नतरु जिय गयऊ ॥
दो० महाप्रलय की वृष्टि यह सूझत कोउ न उपाय ।
करिय कृपा आरतहरण भई मृत्यु यहि ठाय ॥
कोउकहत तुमनगहि पुजायो । हरि पूजा कालीन मिटायो ॥
अब पर्व्वतहि पुकारौ ताता । रक्षा करै जीव नतु जाता ॥
निमिषमात्रमहँ ब्रज लय होई । थावर जंगम बचिहि न कोई ॥

नन्द सहित नृप गोप सयाने । सोपि गये भ्रमि बुद्धिनशाने ॥
वयप्राचीनकर्म्म तजि दीन्हा । व्यर्थ महीधर पूजन कीन्हा ॥
सखिकाकहिय सुमति बौरानी । बालक कहे तजा पति पानी ॥
इमि नरनारि बकहिं बुधितूला । सकल भयातुर गोपिनशूला ॥
जानि व्यथित सबकह यदुराई । धीरज धरौ तजौ कदराई ॥
दो० गिरिवर अबहीं आयकर रक्षा करिहि तुम्हारि ।
उत गोबर्द्धन अग्निसम तस कस्यो असुरारि ॥
शोकानन्द रहित करुणाकर । गिरिहिउठायो यदुकुलभाकर ॥
बामे कर कनिष्ठिका धारा । बिनु श्रमजनु छत्रकमहिपारा ॥
छायालखि त्रियग्वाल निकाई । तेहि तर बैठ ठाढ़ सुरराई ॥
पशु अम्बरगामीचर जीवा । भे थित नगतल सुखकी सीवा ॥
अबला मनुज परस्पर कहई । आदिपुरुषहरि नरनहिंअहई ॥
देव देव शिरमौर कृपाला । मोहन मानव नहिंजलपाला ॥
सुनु सखि करअंगुलिगिरिधारी । को अस नरशरीर बलभारी ॥
उत सकोपि बर्षत जलराशी । मूशलधार पयद मतिनाशी ॥
दो० बड़वानल इव ज्वलितगिरि इत जल तापरराय ।
होवतभस्म अशेष सो हरिगति अकथ सदाय ॥
यह सुधि पाइ आपु अमरेशा । आयो ब्रजमण्डलहि नरेशा ॥
कथित बृष्टि भूधर दिन ठानी । दिविपति बुधिहरिमायाभानी ॥
प्रभु प्रताप सर्वदा प्रचण्डा । अभिमानीमदकृतशतखण्डा ॥
पाथ रहित सब भे क्षीरोदा । बुन्द न ब्रजपर भयउनओदा ॥
हारि पयदपति सहित सहाई । द्वौ कर जोरि कहा सुरराई ॥
दयाधीश जल प्रलय सिराना । तदपिनब्रजबूड़्यो भ्रममाना ॥
को उपाय कीजिय यहि बेरा । देवराज यह करिय निबेरा ॥
जलदवचनसुनि अमरप्रधाना । तनसकम्पमन बहुअकुलाना ॥
दो० धरिधीरज बिबुधेश पुनि मनमहँ कीन्ह विचार ।
हरणभारमहि मनुज तन आदिपुरुष अवतार ॥
को समर्थ नत अस महि भाई । महाप्रलय पय देइ नशाई ॥

अरु नग छत्रक सम कर धारै। कोटिहु मानव गिरिहिनटारै॥
भै बड़ि चूक अगास अपारा। कृपा कृष्ण बिन लहौंनपारा॥
इमि पछिताय जलद युतसोई। निजपुरगमनेउ जलमदखोई॥
उये प्रभाकर तिमिर नशाना। अकथसौख्यग्वालनतबमाना॥
युवती मनुज आइ हरिपासा। वचन प्रसन्नित सबन प्रकासा॥
गिरि महिधरिय दयाजलराशी। भाप्रकाशनभ घनगयनाशी॥
बिहँसे प्रभुसुनि गोपति बानी। भूधर भूधास्यो सुखमानी॥

दो॰ नाशो मद सुरराजको व्रजजन लिये बचाइ।
मंगलको अस दूसरो उपमा जेहि हरिभाइ॥
निष्प्रपंच मनकायबच तू भजु नन्दकिशोर।
सबप्रकार सुख जगलहै अंत मुक्तिपदतोर॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांइन्द्रमानभंगवर्णोनाम षड्बिंशोऽध्यायः २६॥

दो॰ काम क्रोध को त्यागिके लोभ मोह बहिराय।
मानभंजिअपमानताजि निजमनबुधिबशलाय॥
जो ध्यावत निज आतमा योग पंथ नर नारि।
मुक्ति लहत सायोज्य सो जरा मरण दुखटारि॥
प्राणायाम विशेषि कृत सुषमन मारग पाय।
पूरक कुंभक सबिधि बुध रेचक करत सदाय॥
करत आतमाशुद्ध निज विषय भोगको त्यागि।
पावतगति जो मुनिलहत रहतअमीरस पागि॥
सोगतिसहजहि कलिचतुर हरियश गावतलेत।
यामें संशय रंच नहिं सत्य साखि श्रुति देत॥

मुनिवर महाप्रमोद कहानी। कुरुनायकप्रति बहुरिबखानी॥
जब उबँरा कूट प्रभु थापा। बासव मान नशो तनतापा॥
ग्वाल चतुर धिषणालय जोई। करत परस्पर चर्चा सोई॥
अद्भुत चरित बिलोका आजू। हरि समको नर देव समाजू॥

जेहिनिजशक्तिकरजगिरिधारा। इन्द्रमान मथि सबहि उबारा॥
ताहिकहिय किमि नन्ददुलारा। आदिपुरुषनिजबशतनधारा॥
उग्र तपस दंपति नँद साधा। प्रथमहिं पारब्रह्म आराधा॥
सुनहु तात प्रभु कारण तेही। नन्द सूनुभा स्वजन सनेही॥
दो० बड़भागी हम पुण्यजन नित्य दरश कृततात।
परमात्मा करि आजुते मानब ताजि नरनात॥
गोप सखा सानँद नृप आई। पूछहिं श्यामहिं कंठ लगाई॥
कोमल कमल सरस कर तोरा। बिदित शैल बड़तात कठोरा॥
वै सुकुमार छत्र नर जैसे। साधत तिमि साधा गिरिकैसे॥
कहौ तात यह अकह कहानी। गद्य पद्य गूढ़ाशय बानी॥
निज कौशल वैभव यदुराई। दास जानि प्रभु कहौबुझाई॥
सखाबचन सुनि श्रीभगवाना। नरइव बयन सनीति बखाना॥
सब पर आदि अंत बिन जोहै। कर्ता हर्ता पालक सोहै॥
तत्प्रातिकूल करत कृत जोई। लहत गलानि मसीमुख सोई॥
दो० मघवा बुधि माया हरी आपुहि ईश्वर जानि।
ब्रजनाशौं मनचिंतमिति तब रक्षौ गिरिआनि॥
यशुमति नन्द हरिहि उरलावा। निजकरप्रभुकर पाणिदबावा॥
पाणिजलजनगधर दिनसाता। होइहि कोमल हाथ पिराता॥
गोपिन नृप यशुदा ढिगजाई। कथाभूत कहिकहि समुझाई॥
मातु तोर सुत पुरुष अनादी। बदत निकर परमारथ बादी॥
चिरुजीवो ब्रजपालक स्वामी। जनरक्षक पद सरजनमामी॥
बिपदा बहुप्रकार भै पाछे। टारयोहरिनिजजनलखिआछे॥
खल भंजक पालक श्रुति सेतू। सुत तुम्हारनर नहिं सुरकेतू॥
यथा गर्ग ऋषि कहा सयानी। भई बातसो परी न हानी॥
दो० इमि बतरायसप्रेम सब निज निज कारज लाग।
मंगल परिहरि मोह भ्रम करुहरिपद अनुराग॥
इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंग
लदासविरचितायांपरस्परवार्तावर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः२७॥

दो० जिमि कुधात पारस परसिहोत कार्तस्वर रूप।
तिमि मूरुख सतसंग में पावत ज्ञान अनूप॥
याते उत्तम सबनते सत संगति भव बीच।
सो न मिलत बिनभाग्य भल यद्यपि होतनगीच॥
जड़ चुंबक लखि लोहको चेष्टित होत प्रवीन।
तिमि साधूजन जगत महँ हरियश सुनतअधीन॥
अरुजस दर्पण बमत शिखिलखि कर दिनमणिदेव।
मूढ़ कृतघ्नी अपयशी हरियश सुनि तेहि भेव॥
पातक हर दायक सदा भक्ति मुक्ति अनुमानि।
श्री राधावर चरित हौं बरणत सुखकी खानि॥
सुनमहीश पुनि रुचिर कहानी। रुज अघतूल शिखीबरबानी॥
सुरभी ग्वाल सखा लै प्राता। हलधरसहित चलेजनत्राता॥
वेणु मन्दध्वनि सुरुचि बजावत। मधुर मनोहर सुरहरिगावत॥
बृन्दाबनहि जाहिं सुनु भूपा। धेनु चरावत नर अनुरूपा॥
उहाँ सुराधिप मन पछिताई। निज सँग लायदेव समुदाई॥
गो कामदा अग्र निज कीन्हे। विह्वलहरिपद हृदमनदीन्हे॥
ऐरावत आरूढ़ दिवेशा। बृन्दाबन आयो बिबुधेशा॥
मध्य बाट ठाढ़ा सो राजा। सँग लीन्हे सब देवसमाजा॥
दो० आवत लखि जन पालको तजिगज महितल आय।
नग्न पाद कर जोरि करि चला कम्पतन छाय॥
सो० पर्यो चरण तर जाय त्राहित्राहि कहि त्राहि पुनि।
बिनय करत सुरराय विकलितमन गदगद गिरा॥
छं०भु० नमोदेवदेवेशदेवाधिकर्ता। नमोचंडदेवारिकेप्राणहर्ता॥
नमोमत्सआकाररूपाधिकारी। नमोकच्छकायाकृतंभूमिधारी॥
नमोकोलवद्रूपस्वच्छंदस्वामी। नमोभक्तपालंनृसिंहेति नामी॥
नमस्कार मद्राज्य रत्नंस्वरूपं। नमो भूसुरेन्द्रं हतंभूमि भूपं॥
नमो जानकीवल्लभंदेवनाथं। नमोकृष्ण गोपीहितुंशुभ्रगाथं॥
नमो बौद्धकल्कीदयाकैवनौगे। स्वदासानहेतंकुकर्मीहनौगे॥

महामोहमैंनाथहौं बुद्धि हीनो । क्षमौदासआगासदुर्कर्मकीनो ॥
भ्रमावैसबैनाथ मायातुम्हारी । चतुर्पंचवक्रादि को छोहभारी ॥
नजानातुम्हैंतुच्छहै बुद्धिमेरी । कृपासिन्धु देवाधिहौं शर्णतेरी ॥
तुकर्तार तू भंग कारी मुरारी । सदारक्षमानं त्वमेकं खरारी ॥
त्वभूनीर अग्निर्सदाचारनाकं । स्वयं कारणंलिंगथूलंस्त्रवाकं ॥
त्वतत्वं असीरूपमेकं प्रकासं । त्वमोंकारसोहं महामंत्र भासं ॥
त्वमाद्यंत मध्यं विनाकालकालं । सदैवामरादिंदयाधीशपालं ॥
नयावत्त्वभक्तिं उरंमे निवासं । दुखौघंरमानाथ तावद्विलासं ॥
दयाकैक्षमाकीजियेदोषशोकं । नतूकोपकारक्षकंतीनि लोकं ॥
लहादर्शनं पाप पुंजै नशायो । प्रसीदंकृपासिन्धुत्वंशर्णआयो ॥

दो० अहंकार वश तामसी हौं जगदीश कृपाल ।
दोष चूककर जानिजन क्षमाकरौ यहिकाल ॥

मम उर धन अभिमान अपारा । जाना रंचन भेद तुम्हारा ॥
परमात्मा अनादि अज एका । सकल अनीह नागखलभेका ॥
भव सरोज सुत आदिक देवा । तव दीन्हो पावत पद सेवा ॥
जग पितु मातु एक असुरारी । हौ अनूप उपमा न तुम्हारी ॥
लक्ष्मी सर्व काल तव दासी । आदिपुरुषप्रभुतुमअविनासी ॥
दासन हेत रच्यो नर काया । तिहुँपुर रचत तवाज्ञामाया ॥
सकल काल रक्षक भगवाना । जनअपराधक्षमो अनजाना ॥
मघवा विनय सुनत यदुराई । ह्वै दयाल बोले मुसुकाई ॥

दो० कामधेनु के संग अब तू आवा सुर भूप ।
क्षमाकियो अपराधबड़सुनि तव विनयअनूप ॥
सो० गर्व न कीजौ भूल होवत मदते ज्ञान हुत ।
कुमति बढ़ावत थूल देत कुमति अपमानदुख ॥

उठ्यो अमरपति सुनि प्रभुबानी । कीन्ह पदाची वेद बखानी ॥
चरणोदक समोद तब लीनसि । सह प्रमोद परिक्रमा दीनसि ॥
तेहि बेला नभ बजे दमामा । गावहिं गंधर्व पूरण कामा ॥
निजनिज यानारूढ़ दिवौकस । बरषिकुसुमबरणतसबहरियस ॥

अस आनंद भयो तेहि काला। जनुफिरिजन्मलीन्हगोपाला॥
करि अर्चन रिपुपाक सनेमा। हरि प्रसन्न लखि पाइसि क्षेमा॥
सविनय भूप जोरि दोउ पाणी। कह्यो शची पति आरतवाणी॥
अब प्रताप वैभव तव जाना। प्रणतारतहर श्री भगवाना॥
दो० हे अनादि पूरुष परम का आज्ञा अब मोहिं।
बिहँसिश्यामतब असभन्यो दयोइंद्र शिषतोहिं॥
अब गृह जाहु करहु मम सेवा। जानेहुआदि पुरुष मोहिंदेवा॥
करिदंडवत पाइ अनुशासन। बासव गयो भूप अमरासन॥
इहां श्याम रजनी सुख पाई। गये भवन सँग ग्वाल अथाई॥
गोपन नृप गृहगृह प्रति जाई। बिपिन अवस्थासकलसुनाई॥
श्रीमुनि कहा सुनौ नरपाला। जो चरित्र गावा यहि काला॥
यहि प्रसंग कर वक्ता श्रोता। अधिकारी चहुँ गतिकर होता॥
चारिपदारथ बिनु श्रम पावत। जोसमोद रुचिसों यहिगावत॥
हरियश समन आन कछुताता। यह संक्षिप्त कही तोहि बाता॥
दो० मदभ्रम नाश्यो इन्द्रकर जेहि बिनु श्रमयकबार।
मंगल भूलत क्यों जगत तेहि भजु बारम्बार॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांइन्द्रस्तुतिवर्णनोनाम
अष्टविंशतितमोऽध्यायः २८॥

दो० जैसे हरिकर परसतहि तिमिर झटित लहनाश।
हरिगुणबरणत तिमिबिबुध पावत पाप विनाश॥
अथवा गंगा दरशते जिमि बिनशत अघ थूल।
गावत हरियश तिमि चतुर होत पाप अनमूल॥
मूरुख सो संसार में जो न भजै यदुराइ।
महा अपयशी पातकी होइ मुक्त यशगाइ॥
जेभूले कामादि में तेनर सदा अचेत।
भवदधि में माया तिन्हैं पाप हिलोरैं देत॥
वाहित सम श्रीकृष्णयश सहजकरतजनपार।

बरणतहाँ आनंदमय श्यामचरितसुखसार ॥
ऋषिकह सुनु रसाधि सुचिताई। ब्रत एकादशिकिय नँदराई ॥
न्हान ध्यान जप पाठ अपारा। कीन्हादिन व्यतीत साचारा ॥
पाइ प्रदोष जागरण ठाना। गत शर्वरी बिहान तुलाना ॥
दर्शन दंड तमाशिवनि जानी। तिथि द्वादशी भूपनियरानी ॥
उठि करि प्रात कर्म नँदराजा। यमुना न्हानचले सुखसाजा ॥
अपर अनेक ग्वाल सँग धाये। सूरसुता तट भूपति आये ॥
करि प्रह्लन तिन बसन उतारे। प्रविशे आय आपुसुख भारे ॥
बरुण चारु जल रक्षक रहई। निशिनकोउअस्नानहिंलहई ॥
दो० जाइकहा निज नायसन न्हात यमुन जलकोय।
महाराज हम करहिं सो जो आज्ञा तव होय ॥
सुनि आज्ञा लंघन जलपाला। बोल्यो धाइ धरौ यहि काला ॥
चले दूतद्रुत यमुना आये। गहि नँदराय बरुणपुरलाये ॥
नागपाश बन्धन दृढ़कीन्हा। शुभथल तिनहिं बासलैदीन्हा ॥
सुरभीपाल आन नृप साथा। तिन सबकहा कृष्णसोंगाथा ॥
करुणानिधिभइ अनुचितबाता। समुझतहमहिं होतदुखगाता ॥
पाथ नाथ चरगहि नँदलाला। लैगे वेगि लोक जन पाला ॥
सुनत गोप बाणी घनश्यामा। है क्रोधित अचिंत्य गुणग्रामा ॥
क्षण महँ बरुण धाम गये भूपा। अग जग नाथ धरे नररूपा ॥
दो० हरिबिलोकि करजोरिदोउ जलपति उठा महीश।
करिबिनती बोलत भयउ जयजय श्रीजगदीश ॥
पाइ दरश तव श्री असुरारी। पूजी मन कामना हमारी ॥
जन्म समस्त सफल भा आजू। नश्योनिकरअघजनितसमाजू ॥
बंधन पिता नन्द कर ठाना। सो यह कारण श्रीभगवाना ॥
राम लोक तुम तात गोसाईं। तुम्हरे पिता भये दुचिताई ॥
जानत मोर धर्म्म यदुनायक। रजनी रक्षक पय मम पायक ॥
ते अबूझ निशि न्हात बिचारी। मम शासन लाये असुरारी ॥
यहि मिस भयउँकृतारथ स्वामी। होहु प्रसन्न जानि अनुगामी ॥

इमिकहि दीनबयन बहुभांती। धरी भेंट मणिगण बहुजाती॥
दो॰ करि प्रबोध घनजातपति पिता सहित यदुराय।
आये गोकुल मोद मय सुनु प्रवीन कुरुराय॥
निरखि नन्दपुर लोक सुखारी। भये इलापति आनँद भारी॥
वृद्ध वहिक्रम गोप सयाने। मिलिसप्रेम नन्दहि हरषाने॥
पूछिनि सकल ब्यवस्था आई। बरणि पूर्ववत नन्द सुनाई॥
सुनिवैभव प्रताप हरि केरे। मुदित परस्पर सुरुचि घनेरे॥
जादिन गोवर्द्धन कर धारा। हम वाही दिनचित्त बिचारा॥
नन्द तनय नर तन जन नाहीं। आदि पुरुष प्रगट्योजगमाहीं॥
सकल गोप सम्मत करि राजा। आये जहँ जनपालकभ्राजा॥
आरत गिरा कीन्ह परणामा। कहिजयजयअघमोचनश्यामा॥
दो॰ अमित भ्रमायो हमहिं प्रभु निज मायामहँ नाथ।
जान्यो अतुल प्रभाव अब जय जय उत्तमगाथ॥
तुमको शीशजात ह्वैदेवा। विरचत भुवन वेद दिशिएवा॥
पुनि तुमहीं वृषभध्वज होई। नाशतअखिल विश्वयहजोई॥
नारायण तुम आपु मुरारी। तीनिलोक रच्छक बनवारी॥
किंकर जानि सुपद अधिकारी। एक लालसा सुखद हमारी॥
सो पुरवहु वैकुंठ लखाई। हरि च्छणमहँ निज लोकबनाई॥
दरशायो दुखपुंज नशावन। कीरति जासुनिकरजगपावन॥
निरखत अनुभव भयउप्रकाशा। सकल मोहवाहनी विनाशा॥
च्छमाशीशधरिविनयसुनावत। प्रफुलितमुदितश्यामयशगावत॥
धन्य कृष्ण प्रतिपालक हर्त्ता। बामाजादि दिवौकसकर्त्ता॥
तव महिमा अपार गोपाला। अल्पबुद्धि हम मन्दविशाला॥
मायापति मायागति चीन्हे। मायारहित मनीषा कीन्हे॥
पारब्रह्म तुम अलख अपारा। नरबपुरच्यो हरण महिभारा॥
दो॰ नाशिदुष्ट भव सकल प्रभु करहु धर्म्म परचार।
ज्ञानभयउ पूरण हृदय समुझिपरयो कर्त्तार॥
भूप गोपसब विगत विमोहा। कामक्रोध बरजित मदकोहा॥

करत निरूपण पूरण ज्ञाना । सोप्रभाव यदुपति सबजाना ॥
सत्त्वर निजमाया बल ठानी । हरिकिय निकर गोप अज्ञानी ॥
हस्यो सतोगुण निजपुरसोई । अलख अगोचर जाननकोई ॥
स्वप्न समान सबन अनुमाना । प्रगट चरित्र सुप्रगटन जाना ॥
नन्दराय सैमुखी निकेता । हरि मायाबशरहान चेता ॥
कीन्ह सनेह ब्रह्मसुत जानी । प्रभुइच्छा अपार सुनुज्ञानी ॥
अति अपार दुस्तर हरिमाया । जेहिबहु अजभव पारन पाया ॥

दो० सोमायापति कृष्णप्रभु दायक सब मनकाम ।
मंगलतू तजिमोह भ्रमभजुतेहि आठोयाम ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांबरुणलोकबैकुण्ठचरित्रवरणनो नामऊनत्रिंशतितमोऽध्यायः २९ ॥

दो० कारण लिंगहु थूलहू जबन रहै कोउतत्त्व ।
पंच प्राणमन बुद्धिनहिं पूरण पुरुषप्रभुत्त्व ॥
व्यापिरहा ब्रह्मांड महँ परिपूरण आकास ।
पारब्रह्म परमात्मा तामें करत विलास ॥
ताइच्छा ते प्रगटभा नारायण जग पाल ।
वाके नाभीकमल ते जन्म्यो विधिततकाल ॥
तत्त्वादिक पुनि सबरचे जीवसमस्तबनाय ।
पंच तत्त्वके मेलते दीन्हे सबै दृढ़ाय ॥
महाप्रलय में पुनिसकल मिलिहैं जामें जाय ।
सोइ निरंजन अगुणप्रभु कृष्णभयो भवआय ॥

रास विलास कीन्ह जसस्वामी । गोपिनसाथ परम गुणग्रामी ॥
सो पंचध्यायी सुख सागर । निजमतिसरसभनौंनृपनागर ॥
चीरहरण जबकीन्हा रहई । रासवचन गोपिन दियअहई ॥
दामोदर जब लागिहि मासा । तबहौंकरिहौं रास बिलासा ॥
गोपीतबते आश लगाये । दामोदर हेरहिं चितलाये ॥
सुखद शरद आई महिपाला । मुदितगोपिकाविरहविशाला ॥

पावस ग्रीषम शीत समाना। निर्मल जल भयसरवर नाना॥
विकसे नलिन विचित्र अपारा। कुमुद चकोर निशा मुखसारा॥
दो॰ उदय छपाकर अमल लखि कोकसरज उरदाह।
यथा निरखिपरविभव खल पावतकष्ट अथाह॥
नाक अमल सोहत सुखदानी। जिमिहरिपायमुदित विज्ञानी॥
तारागण निकरंव प्रकासा। सन्तसद्दढ़करजिमितपभासा॥
तटिनी सरवर निरमल बाहा। परउपकार सुयश यशलाहा॥
पाय बाट पन्थी जन चाले। कामजीतिजिमिजनप्रणपाले॥
तिथिराका दामोदर माहीं। कौतुक श्याम चले बनघाहीं॥
दीख सोहावन पावन नाका। हरभूषण पूरण द्युतिराका॥
स्रवतसोम करसोम समाना। बहत रामगनि शुभ पवमाना॥
सघनविपिनलखिउत्तम शोभा। राससुद्धि आई चितछोभा॥
दो॰ पूरब गोपिन सों कियो हौं निबन्ध हित रास।
सो अब पूरण कीजिये होत शरद करनास॥
यह विचारि बंशीध्वनि कीनी। मनौगोपिकनकहँ सुधिदीनी॥
मुरली सरस विरह परचारा। आतुर सकल चलीं तेहिबारा॥
परिहरि कान पिता पतिकेरी। अबलनरास अवधि हियहेरी॥
तजिकुललाजकाजगृहत्यागी। केवल श्यामदरश लवलागी॥
शिरभूषण भुज गल कर डारी। गईंनिकर जहँ जनसुखकारी॥
सीमंतिन यक तजिनिजनाहा। धाइचली तेहिपति गहिबाँहा॥
बरबस ताहि सुलाय निकेता। बिनवत नारिसो जानन देता॥
करिहरि ध्यान कलेवर त्यागी। मिलीप्रथम सोप्रभुहि सभागी॥
दो॰ देखिप्रीति साँची सद्दढ़ श्री गोपाल दयाल।
मुक्तिभई तेहि सहजहीमुनि दुर्लभ तिहुँकाल॥
सुनि मुनि वाक्य भूपउरशंका। पूछा मुनिहिबंदि पद पंका॥
दयाराशि गोपी उर माहीं। हरिपद प्रीतिब्रह्म रतिनाहीं॥
विषय बासना दृढ़ अनुरागा। दरश वियोग कलेवर त्यागा॥
कारण कौन मुक्तभइ सोई। कहौ बुझाइ दूरि भ्रम होई॥

हरिमहिमा नृपजान अजाना । गावत भक्ति मुक्ति कल्याना ॥
जिमि अयानकृतपान पियूषा । निजगुणप्रगटतअभय अदूषा ॥
बूझत सकल पदारथ जैसा । होवैकरहि पर्म्म गुण तैसा ॥
हरि सनेह सब बिधि अनवाधा । दाता मोक्ष नराधम साधा ॥
छं० लहैमुक्तिनर उत्तम अधम हरिचरण रतिदृढ़ लायकै ।
बहुपतित उधरे अगम भवते सहज हरिगुण गायकै ॥
भीलिनि जटायू नीच दोऊ ध्याव हरिशुभ भायकै ।
भेमुक्त मंगल मानि मुद गोविंद भजुसुख पायकै ॥
दो० तिलक मान छापा दिये जपतप किये महान ।
मुक्ति पदारथ कठिन है बिन ध्याये भगवान ॥
आन अनेकन भावसो मोक्षभये जेहि भाँति ।
सो प्रसंग मोदक प्रथुलसुनु महीपगुण पाँति ॥
यशुदा नंदसुनू अनुमाना । जिनप्रताप श्रुतिसत्य बखाना ॥
प्रीतम निकर गोपिकन बूझा । कंसशत्रु सम चित्त अरूझा ॥
मित्र समान गोपगणजानी । लही मुक्ति जो याचत ज्ञानी ॥
पांडुजात सबजानि सनेही । पद निरवाण लहातजि देही ॥
प्रबल अरातिबूझि शिशुपाला । जरामरण नाश्योमख शाला ॥
यदुकुल सकल बिचारि सुज्ञाती । सहज समस्त बैठ सुरपाती ॥
योगी जन मुनिवर संन्यासी । ध्यायउजानिपुरुषअविनासी ॥
चारि मुक्तिमहँ जो जेहिलायक । अन्त ताहिसोदेइ यदुनायक ॥
दो० गोपी हरिपद रसमतीं तरीं ध्याय असुरारि ।
नहिंआश्चर्य्यमहीशसुनु कहासोतोहिबिचारि ॥
नृप कह अबन रहा भ्रम ताता । रास बिलासभनौ सुखदाता ॥
त्रिय समूह आतुर हरि पासा । यहि प्रकार गमनी हितरासा ॥
जस सैवलिनी पल नभ माहीं । सातुरसप्रपतिअर्णवहिजाहीं ॥
तत क्षण जससोहत गुणखानी । सो परमानहिं परत बखानी ॥
निकराभूषण भ्राजित श्यामा । बिथकहिंभाबिलोकिबहुकामा ॥
नटवर बेष मोहिनी साजी । सुन्दरत्व सुन्दरता भ्राजी ॥

देखि मनोहर रूप बिहारी। ब्रजयोषितनसुबुधि गतिहारी॥
स्वागत सबहि पूछ जन पाला। उदासीन पुनि कहगोपाला॥
दो० गौर्य्यार्द्धर कारण कवन भूत प्रेत बैताल।
फिरत विपिन आयहुसखी वरणिकहौउत्ताल॥
इमिसाहसकृत त्रियहि अभावा। निगमपुराण धर्म असगावा॥
नारिधर्म नहिं निशिपतित्यागै। आनपुरुषपहँ निजमतिखागै॥
यदपि होइ पति कायर कूरा। कुमति विवशकपटी अघपूरा॥
रूप रहित कोढ़ी चख हीना। करपदबिनाकाण अतिदीना॥
अथवा आनदोष युत होई। पतिव्रता तिय तजै न सोई॥
उचित कन्त सेवन श्रुतिभाखा। अपरकर्म बरजित श्रुतिराखा॥
सोइ कल्याणरूपिणी बाला। ताजिछल पतिसेवै सबकाला॥
यहि संसार उच्च पद पावै। सपति अन्तममलोक सिधावै॥
दो० करि बंचण भर्तार त्रिय अन्य मनुज ढिगजाय।
कोटि जन्म लगि निरयपद पाय नारिपछिताय॥
कानन सघन चपा उजियारी। निरखि तीर पुत्रिकातमारी॥
पायहु दरश जाहु निज गेहा। उचित अहै तुमकहँअबएहा॥
पूजी आश दरश मम पायो। पुनिनमताअसउर फुलायो॥
मन बच क्रम पति सेवहु जाई। दहौ लहौ त्रैताप बड़ाई॥
प्रभुमुख बचनसुनत सुधिनाशी। शव समभैंजनुमृगिहरिगाँसी॥
तत्पश्चात सुद्धि तन आई। महामलिननहिं बरणिसिराई॥
इला नखाग्र लेखि अधहेरैं। शीतल श्वास भरैं उर फेरैं॥
नीरज नयन सीप भय राजा। स्रवत बुन्दमुक्ताहल साजा॥
दो० क्लेशमगनह्वै सकल त्रिय करहिं रुदनमहिपाल।
जोरिपाणिकह श्याम सों हौ ठगरूप कृपाल॥
प्रथम बजाई बंशिका सुनत नश्यो गुण ज्ञान।
अब भाषत करकसवचन कहौ तजैं हम प्रान॥
बंश विभूति कन्त कुल लाजा। तबलगिसकलतजीव्रजराजा॥
हैं अनाथ शरणागत स्वामी। राखुशरण हरि अन्तरयामी॥

जो जन तवपद कमल सनेही । तन धन राजन भावत तेही ॥
नहिं ऐश्वर्य्य चहैं प्रभुताई । दुखगत सौख्य भक्तिरसपाई ॥
नाना जन्म कर्म्म के कन्ता । प्राणरूप प्रभु श्री भगवन्ता ॥
गवहि किमर्थ अगारहि नाथा । जीवन तवपद नीरज साथा ॥
कहहरि अबनदोष मोहिंआहीं । रुचिरुपदेश कहा तवपाहीं ॥
सो न सुना तुम तज्यो गलानी । गतिमतिसबतनमनकीजानी ॥
दो० यदपिअकर्तब कर्म्महै रुचि तुम्हारि अनुमानि ।
करि बसमोदित रासअब संगतुम्हारा ठानि ॥
करौं रास जुरि मिलिसकल अति आनंदबढ़ाइ ।
सुनत सुधा साने बचन फूले तनन समाइ ॥
यश उत्कर्ष सुनत अकुलानी । तसप्रफुलितभै सुनिमृदुबानी ॥
सबसब सम भइ प्रथम भुवाला । अभ्यायस लहि जीवनपाला ॥
घेरिगवो दधि गोप किशोरी । लखहिं मुखेन्दु प्रभाहिचकोरी ॥
राजत मध्य कृष्ण कृतलीला । पुरटंबलिचहुँदिशिगिरिनीला ॥
मायहि दीन्हबहुरि अनुशासन । रासकरब बिरचहुश्रुतिआसन ॥
रहौ उपस्थित रास समाजा । जोजो चहै देउ सोइ साजा ॥
प्रभु रुख पाय सूरजा तीरा । अगमभूमि बिरची जड़िहीरा ॥
भल रमणीय सोहावन ठामा । जोलखिबुधिभूलहिअजबामा ॥
दो० बिधि मख कन्या सदृढ़ थल रंभस्तंभन साजि ।
पूरण कुसुमावलिरची तिहुँपुर निरखतलाजि ॥
बिरचि भाव्यथल प्रभुपहँआई । दोउकरजोरिकहिसिशिरनाई ॥
क्षमा पयोधि काम्यरच ठामा । सुनत प्रसन्न चलेघनश्यामा ॥
जाय रासगृह श्यामबिलोका । थलकमनीयबिलजतिहुँलोका ॥
लहैं गलानि सोमभा हेरी । बरणिकहौंकिमिलघुमतिमेरी ॥
चमकत चहुँदिग सोहर बालू । मनोचंद्रिका बिकस बिशालू ॥
बहतअनिल बिनुअनलप्रसंगा । तीनिप्रकार ताप तिहुँ भंगा ॥
घन आरण्य लसत द्रुम पाता । छबिगृहमनौ सुछबिसरसाता ॥
जो माया निरमित सबठाऊं । हरिइच्छा किमि पूरणगाऊं ॥

दो० देखि समाज मनोज मद उमहित गोपी सर्ब।
मान सरोवर नाम सर तेहि तट गईं अखर्ब॥
शुचि ह्वै रुचिर वस्त्र तिनधारे। पुनिषोड़श श्रृंगार सम्हारे॥
नख शिख लगिसुन्दरताखानी। कृष्णप्रियाकिमिकहौं बखानी॥
बीन पखावज ताल मृदंगा। सर्व मिलाये तान तरंगा॥
हरिढिग आइ प्रेम मदमाती। गदगदतननाहिंकाय समाती॥
तजिसंकोच शोच हरिसाथा। तेहिथलभई सकलकुरुनाथा॥
गीतनृत्य अद्भुत गति करहीं। जो बिलोकिबिधिहरमनहरहीं॥
सबै राग रागिनी नृपाला। तनधरिधरि आये तेहिकाला॥
रासमंडली महँ ब्रजराजा। द्विजसमाजजनुअत्रिज भ्राजा॥
दो० जानि सुवस गोविंदकह ज्ञान बिबेक बिहाय।
गोपिन जान्यो विषय पतिश्यामहिं सुनुभुवराय॥
प्रभु सर्वज्ञ बिश्व करतारा। जानिकुमतिमतिकीन्हबिचारा॥
सत्यकहतकबि कोबिद लोगा। सुबुधिनारिसाहिसकनवियोगा॥
निजबशहमहिंसबनपहिचाना। विषयबासनिकपति अनुमाना॥
मिट्यो विवेक समाज अपारा। अतन प्रतापताप अधिकारा॥
अंक भरहिं मोहिं लाज दुराई। सत्य प्रेम दीन्हा बिसराई॥
होहुँतिरोहित क्षणयकलागी। पुनिनिरखौंकसकरिहिसभागी॥
गुप्तभयउ प्रभु अस जियठानी। श्रीराधाअधि प्रियसँगआनी॥
सार्गस्थिति लयकारक जोई। विषयभाव सो कसरत होई॥
दो० मंगल मतिके हीनजे ते समुझत कछु आन।
तूतजि राधा श्याम पद आनतत्त्व जानिजान॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्ण अंतर्द्धानवर्णनोनाम
त्रिंशतिमोऽध्यायः ३०॥
दो० अंतसमय हरिजात पुर अधिकपाप ठहराय।
तौं पावत है निरयपद और अधोगति भाय॥
जो पै सुकृतबहुहोइतौ सुरपुरलहै निवास।

पाप पुण्य दोउ समभये नरहोवै सुखबास ॥
नरकभोग पुनि जन्मको पावैगो भवमाहिं ।
क्षीण सुकृत भे पुनर्जग जन्म लहै भ्रम नाहिं ॥
ये दोनों दैसकत नहिं मुक्ति पदारथ कोय ।
जो ध्यावै श्रीकृष्ण पद आशु जाय दुख खोय ॥
जरामरण बंधन कटै सुनु मंगल मन मीत ।
याते तू यदुनाथ भजु क्यों भरमत विपरीत ॥
बहुरिमुनीश कहा सुनु भूपा । गुप्त भये जब अकल अनूपा ॥
सब गोपिकन चक्षु अँधियारा । हरि बिनु छायगयो विकरारा ॥
महागहन बन गह्वन कराला । असब्याकुलगोपिकानृपाला ॥
जस मणिगतआकुल अहिहोई । अथवा यथा रंक निधि खोई ॥
अरुजिमिदुखितमीन बिनुपाथा । विरहाकुल त्रियगणनरनाथा ॥
रोदहिं बदहिं परस्पर कहईं । कितभे गुप्त कासुसुधि लहईं ॥
पलन वितीत सिरोधी बाहीं । मोरे डारिहृदय लपिटाहीं ॥
क्रीड़ा रास करत हे संगा । बहु प्रकार राचे रसरंगा ॥
दो० जातन देखाकाहु सखि बिधिदुख लिखा लिलार ।
हायकृष्ण हाकृष्ण कहि विकल सकल तेहिबार ॥
अहह श्याम प्रणतारतमोचन । अज अद्वैत अगोचर शोचन ॥
प्रेरितकाल भयो संसर्गा । किमघ वियोगवृक्ष त्रिनुवर्गा ॥
पूछहिं काहि आलि कहँजाई । जगसमरथ न योग मनुसाई ॥
पाद चिह्ननहिं मारगहोरौं । जेहिकृत मिलैं सुकरौं सबेरौं ॥
इमि बतराय क्लेश विरहागी । कानन कुंजन खोजनलागी ॥
हायश्याम केहिदोष बिसारी । जन्म जन्म हमदासि तुम्हारी ॥
तुमसरवज्ञ अनीह कृपाला । अकला नन्तरूप तिहुँकाला ॥
सुकुल बधू हम लाज विहाई । सर्वसु त्यागि शरण तवआई ॥
दो० वियकीं खोजत काननहि मिले न माधवराय ।
महाबिकल जियकलनहीं कहै त्रिया यहिभाय ॥
यककह सकल खोजहमकानन । मिलेन कौनौ कृतखलभानन ॥

संत मनोरंजन खल गंजन। बूझहिं कौन मिलै दुख भंजन॥
कोउ कह सुनौ सत्य हमभाखैं। जेहि बिधिनाथ दरशरसचाखैं॥
पशु अनंत गामी द्रुम जेते। यहि थल बसहिं मुनीश्वरतेते॥
प्रभु लीला लगि जड़चरभयऊ। लखि रसरासचषनसुखदयऊ॥
इनजाने जितगये मुरारी। प्राणनाथ प्रणतारतहारी॥
सन्तनसबहिं पूछि किनलेहू। आयबताय देहिं दृढ़ एहू॥
तासु बचन सुनि हरिरस भीनी। थावरचरहिं प्रश्नअसकीनी॥

दो० हेबहुपद अहि अशनप्रभु पाकरि पिक हितकारि।
महा सुकृत बश उच्चतन पाया परहितकारि॥

दुख आतप पावस अरु शीता। परहितहिततुमसहो अभीता॥
डार प्रसून फूल त्वक पाता। देत परार्थ परम पद दाता॥
तन मन धन हरि हरे मुरारी। देखे हमहिं कहौ सुखकारी॥
हे कदंब तुम विटप अनादी। देहु बताइ श्यामअविषादी॥
हे अशोक हरिपुष्प गोसांई। जात बिलोके तुम यदुराई॥
हे तुलसी आनंद विलासिनि। हरिसेवकउरभक्तिप्रकाशिनि॥
हरिवल्लभा आजु हरि देखे। प्रमुदित भई समोद विशेखे॥
निज किंकरिनि जानि तू माई। नन्दकिशोरहि देहु बताई॥

दो० अपर वृक्ष जे जगतमें पूछैं सबहि अधीर।
मृग पक्षी सबसन दुखित कहैंहरौ घनपीर॥

यहि बिधि पूछत खग मृगबेली। विरहाकुल बनफिरहिंअकेली॥
जबन मिले घनश्यामकृपाला। गहवर बन अशोचसबबाला॥
लागि प्रशंसन प्रभु प्रभुताई। शिशु ताते जो कीन कन्हाई॥
उमगत उर अनुराग अपारा। दूरि गई तजिथल रस वारा॥
चरण चिह्न देखे तब भागी। जनु सोपान भक्तिपुर लागी॥
अंबुज जव ध्वज अंकुश सोहैं। जो बिलोकि गिरजापतिमोहैं॥
जेहि वालू ऊपर पद चीन्हा। सबयुवतिनप्रणामतेहिकीन्हा॥
जोरज सुरमुनि खोजतअहईं। स्वपनौ कोटि यतननहिंलहईं॥

दो० सोरज माथे लाय तिय चलीं अगमने भूप।

कछुक अग्र चलि चारिपद देखे त्रिय नररूप ॥
तब बिस्मित भईं नारि महाना। को दूसर हरिसँग भगवाना ॥
अल्प दूरि देखी सयनीया। मनो बिराजत दुख हरनीया ॥
कोमल कुसुम बिछे सुखदाई। तापर जड़ित दर्पणी पाई ॥
बिकलबियोग बिबश ह्वै नारी। पूछहिं तामन कुंजबिहारी ॥
उतर देत जो होत समाना। मुकुर अजीवन उतरबखाना ॥
पूछतसखिहि आलि सुखपागी। रैनि मुकुरलीन्हाकेहिलागी ॥
सुनु जब प्रीतम चोटि सँवारी। तबन बदन प्रियदेखिमुरारी ॥
पाणि सरोज आरसी लाई। लखि प्रतिबिंबमोद उरछाई ॥
दो० सत्य मानि सम्मत करैं नारि परस्पर राज।
अतिभागिनिसतिभक्तिनी जेहिसंगृहसुखसाज ॥
महातपस्विनि सोत्रिय आली। जेहियकांत विहरतबनमाली ॥
इत अबला मद बिरह दुखारी। विपिनपुण्यखोजहिंभ्रमहारी ॥
उतराधिका श्याम संग भूपा। विचरतिअति आनंदअनूपा ॥
निज बशजानि कृष्णमदछावा। जेहिंकृतजगनकाहुसुखपावा ॥
सकलत्रियनते अधिकबिचारा। श्रीराधिका हृदय अहंकारा ॥
प्रभुसों कहाचला नहिंजाता। बिथकिउपगममअधिकपिराता ॥
जोपै कंध धरि लेहु गोसांई। तौ तुव संग चलौं यदुराई ॥
हरि अंतरयामी नर नाहा। जनमद हरिकृत सहितउछाहा ॥
दो० आइचढ़ौ ममकांध तुम महाप्रियाहौ मोर।
हाथ उठाये चढ़ैलगि उरसुख उदधिहिलोर ॥
प्रभु अंतरित भये ततकाला। परम कौतुकी मदहरिख्याला ॥
जौन भांति कर सरज पसारे। तिहि बिधि रही अहंपदहारे ॥
जिमिदामिनिकरिमानअपारा। पयद बिहाय दुखित बिकरारा ॥
अथवा तजिचंद्रिका खगेशा। बिकलहोय तजि रहै न लेशा ॥
ज्ञानरहित यशभक्ति नृपाला। तसराधिका बिना जनपाला ॥
गौरवर्ण जनज्योति प्रकासी। अंगारक जननी छबिभासी ॥
जात रूप अचलापर रूपा। जगत मातु भ्राजितभवभूपा ॥

विथुर महान प्राणबिनुजैसे। चित्र रचित दारज भैतैसे॥
दो० श्रवतनयन अंबुज नृपति वपु सुबासुको पाय।
बदन शिलीमुख ग्रसतहैं सो नहिं सकतउड़ाय॥
अल्प काल बीते सुधि आई। अहहकृष्णकहिचहुँदिगधाई॥
श्याम वियोग रुदतबड़ित्रासा। ध्वनिसुनिजड़जंगमदुखग्रासा॥
विलपत खगपशु गणद्रुमबेली। गहवरबन राधिकाअकेली॥
हाहा परमनेह दधिसेतू। हागुणखानि अगुण खगकेतू॥
हास्वच्छंद अखिलखलगंजन। हात्रिपुरारि संत उर रंजन॥
शरणागत पालक सब काला। किमघ परिहस्यो दीनदयाला॥
लीजिय सुधि अनुगामिनि जानी। धरमधुरंधर पूरणज्ञानी॥
इमकृत शोर सनेह विलापा। हेरत विपिन कुंजतन तापा॥
दो० तेहि अवसरही सकलसखि पहुँचीं ताढिग आइ।
लाइकंठ भेंटी सबन जानि दुखित कुरुराइ॥
जानिसश्रुकवृषभानदुलारी। अखिल सखिनतनदशाबिसारी॥
संगलाय प्रविशींघन कानन। बसत जहाँ खग मृगपंचानन॥
अवलोकी चंद्रिका जहाँलौं। ढूंढाविपिन अलीन तहांलौं॥
तिमिर निदान गहनबनमाहीं। मारगकतहुं मिलतजबनाहीं॥
हृदय हरि प्रभुध्यान लगाई। लौटीं सकल विरहतनछाई॥
हरिहरि जपत धीरयुतराजा। आय यमुन तट रास समाजा॥
बैठिरहीं मन महागलानी। कृष्णकृष्णकहिशारँगपानी॥
श्रीगोविन्द दास हितकारी। राखत मदन कतहुं बनवारी॥
दो० ऐसी प्रिय गोपी तजी मान जानि यदुराय।
मंगलतू भजु श्याम पद मान मनोज बहाय॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांगोपीविरहवर्णनोनामे
कत्रिंशतिमोऽध्यायः ३१॥
दो० परमातम अव्यक्त जो चतुरानन ह्वै सोइ।
जड़चैतनमयविश्वयहरचतभनतबुधिलोइ॥

चतुर्व्यूहह्वै आपुही पारब्रह्म भगवान।
पहुँचावत है जीविका सबको यथा प्रमान॥
पंचबदन परिणामह्वै संहारत बनिकाल।
बिधिहरि हर यहिते चतुरहै एकै जनपाल॥
सोस्वतंत्र भगवान जो स्ववसविरचिनरदेह।
अद्भुतगति लीलाकरी नँद यदुपति के गेह॥
चारि अर्थदाता समुझि कीरति पर्म्मसुढारि।
बन्दिचरण निजइष्टके सो वरणौं निरधारि॥
ऋषिकहसुनुनरकुमुदिनिचंदा। कौतुक सुनि छूटै भवफंदा॥
युवती विरह विवश सरितीरा। प्रभुकृत गानकरैं कुरुबीरा॥
कहैंकिहे प्रीतम गुणपालक। जनमन रंजक खलगण घालक॥
जादिनते ब्रज आइ प्रकासा। तादिनते सुखसिन्धुनिवासा॥
रमारमण गिरिधरण कृपाला। अकलअनीहविदिततिहुँकाला॥
दासी हम तुम्हारि गुणराशी। सत्वर सुधि लीजिय उरबाशी॥
पावस जलद रूप शुभ लोना। जो अवलोकिभूल भवकोना॥
मदमदहरण निरखि छबि सोई। अब न नाथ धीरज उर होई॥
दो॰ बिना मोल मुरलीधरण चेरिभई हम सर्ब्ब।
नैन शिलीमुखउरचुभे व्याकुलविरहअखर्ब्ब॥
तुम्हरे तट कौतुक घनश्यामा। फँसीं सकल हम बिरहादामा॥
अबनआश कोउ श्यामहमारी। चाहहिंप्राणतजन गिरिधारी॥
नतरु अवश्य नाथ सुधिलेहू। चितकठोर जानि परिहरि देहू॥
पायदरश परित्यागि बियोगू। अरुनव्यंगजगकहकोउ लोगू॥
यहै मनोरथ त्यागहिं देहा। भक्षत शिखिराखा कृत केहा॥
महामेघ बरषाते राखी। देव अदेव तिहूंपुर साखी॥
नन्दसूनु तुम नहिं करतारा। शिवस्वयंभु तवपद आधारा॥
त्रिदशाविनयकरितुमहिंकृपाला। प्रकटायोकहिनिजदुखशाला॥
दो॰ यहै एक अचरजबड़ा अति अनुचित यदुराय।
निधनदास निजकर करौंफिरि रक्षौ कहँधाय॥

घटघट व्यापक बिरुज अनामा। हरिअंतरयामी तन श्यामा॥
निज किंकरिनिबिचारिअघारी। दुखहर किन सुधिलेहुहमारी॥
पूरण करौ लालसा सांई। तुमसम को दासन सुखदाई॥
ललना जानि शूरता धरहू। अनुचितउचितशोचिप्रभु हरहू॥
सुधि आवत मुसुकानि तुम्हारी। जोबिलोकि लज्जितखेचारी॥
सानुराग चितवन प्रभु तोरी। समुझतहोतसुमतिमतिभोरी॥
नैन कटाक्ष बंकता तन्द्री। बूझत तिहुंपुर प्रभुता निन्द्री॥
कंठ नवनि चटकीली बातैं। ललिसुनिअतनभूजनिजघातैं॥
दो० सो सुधि आई जगतपति उपजत कठिन कलेश।
कुमुदिनि हम तुम ऋक्षपति दर्शत सुख लवलेश॥
जब सुरभी चारन बन जाहू। मग घेरैं हम दरशन लाहू॥
अरुणोदय ते सायंकाला। पलटत हे तुम मदनगोपाला॥
पाय दरश उर आनँद आवैं। देव याम युग सिन्धु सिरावैं॥
सन्मुख रूप त्रिभंगी हेरी। दोषहि बुधिनलिनी सुतकेरी॥
अक्ष पलक बिरचे जेहिकोरा। इकटकनतनिरखत मुखओरा॥
जो छबि बिबुधन स्वपने हेरत। चहुफलदानि त्रितापनिबेरत॥
इभि भूपाल युवति गुण गावैं। हरि बियोगउर धीर न लावैं॥
श्रीमाधव चरित्र सुखरासी। श्रवण करत जेकटभवफाँसी॥
दो० गोपी सोइ बियोग में गावहिं भांति अपार।
आरतमय सुनि त्रियवचन कोनबिकलतेहिबार॥
छं० नहिं बिकल को तेहिबार तेहिठा दुधाजावनमें भयो।
अतिकठिन कानमुरारि निजउरतदपि दर्शन नहिंदियो॥
तव मिलन आश सुराखि नारी जीव लालच नाशिगयो।
अनचेतनागिरि कश्यपी कहिश्याम यहकृत काभयो॥
दो० प्रथम दृढ़ावत दास कहँ सदा श्यामकी रीति।
मंगलदेवतदरश पुनि जानि कमलपद प्रीति॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासविरचितायांगोपीबिरहकथनंनामद्वित्रिंशतिमोऽध्यायः३२॥

दो॰ मरकट जिमि नटवर विवश नृत्यत नृत्य अनेक ।
तिमि मायावश आतमा भूल्यो ईश विवेक ॥
छूटिजाय रज मोह ते जो पलगाधिप जीव ।
जाइ मिले निज यूथ महँ तौ पावै सुख सीव ॥
सो उपाय नहिं करत हैं महाअधम भवआय ।
नहिं सहायता चाहिये आपुहि सकत छुड़ाय ॥
योग पन्थ अजपा जपे धरे प्रणवके ध्यान ।
यहौ कठिन जो नाबनै तौ करि उत्तम ध्यान ॥
आराधै रुक्मिणिरमण भ्रम समस्त बहिराय ।
मंगल सानँद अंत सो पूरण पद को जाय ॥

श्रीमुनि बहुरि कथन कृतलागे । भूधरकुरु अधिपति के आगे ॥
अंतरगति अवलोकि मुरारी । देखा सबबिधि हृदय बिचारी ॥
जोन दरश गोपिन कहँ देहूं । तन परिहरैं अयश जगलेहूं ॥
यदपि बहुरिहौं सकत जिवाई । तदपि उचित भेंटौं सबजाई ॥
प्रगटे तिनमहँजगपालक अस । दृष्टि बंधि दुरिनटप्रगटतजस ॥
प्रभु मुखछबि सुरभोग बिलोकी । सकल भई चैतन्य अशोकी ॥
बिनु देखे आकुल तन ऐसे । मंनुबिषधरडसिगयोतनजैसे ॥
गारुड़िरूप श्याम जनु आई । अमृतमंत्र छुतिसीखिजियाई ॥

दो॰ गौरी में सरवर तनय यथा बिकल तिमिबाल ।
छठ्यारक कुंडलनिरखि बिकसे अच्छ बिशाल ॥

नरपति हरि आनंद बिलासी । परिपूरण निरगुण गुणरासी ॥
तिनहि देखि युवतीगण राजा । समुदसकलगतबिरहसमाजा ॥
इमिप्रसन्न प्रफुलित भइँ नारी । थककोउ यथा तरतनिधिबारी ॥
पाइ थाह आनन्दहि पावत । को कबि उपमा तासुबतावत ॥
वेदसुता घेरयो घनश्यामैं । सबै उपस्थित भे तेहि ठामैं ॥
तब प्रभु सकल संग थलरासा । भ्राजितभे अघतूल बतासा ॥
इक गोपिका उतारि खचीरा । डारयो तहँ बैठ यदुबीरा ॥
क्षोभित ह्वै चारिक व्रजबाला । बोलीं रिसबश सुनौ नृपाला ॥

तुम हरि अतिकपटी मनहारी। बौरावत जग सबहि विहारी॥
दो० देइ प्राण कोउ हेत तुव मानौ गुण नहिं नेक।
तुमसे तुमहीं जम्हकर आन को करै विवेक॥
इमि भणि कहनपरस्पर लागीं। हम सब जासुनेह अनुरागीं॥
सो कठोर हिय अधिक सयानी। अबसमस्तगति इनकीजानी॥
गुण परित्यागि अवगुणैं गहई। सदा प्रपंच रूपये अहई॥
निजमन आनै करै बिचारा। कावशतासोंचलिहि तुम्हारा॥
आन बालकहँ तू मति भोरी। निज मुखकहै बुद्धिकी थोरी॥
तोर कहा हरि मुखहि कहाऊं। तौ सखि मोरचतुर मतिनाऊं॥
अस बतराइ कृष्ण ढिग आई। करि कटाक्ष बोली मुसुकाई॥
कृपा पयोधि प्रश्न इकमोरी। न्यायकरौप्रभु गुणमतिधोरी॥
दो० एक किये बिन गुण गनै दूजै गुणफल देइ।
तृतिये गुण औगुणलखै चौथे गुणनगनेइ॥
चारिप्रकृति के नर ये स्वामी। कोउत्तम कहु अन्तरयामी॥
मध्यम अधम निषिद्ध बखानौ। प्रभु सर्वज्ञ ज्ञान नयजानौ॥
हरिकह सुनौ भिन्न करिकहऊं। भ्रम तृणतोर अग्निनयदहऊं॥
उत्तम जन गुण बिनगुण मानै। पिता पुत्र प्रेमहिंजिमि ठानै॥
मध्यम परकृत पलटा देहीं। पूरण पुण्यनजग कुछलेहीं॥
यथाधेनु भोजन हित लागी। स्रवतक्षीरनिजस्वारथपागी॥
अधम आन गुणऔगुणलेखैं। शत्रु भाव मित्रहि जोदेखैं॥
महानीचगुण मानन आना। अघीकृतघ्नी कहत सुजाना॥
दो० सुनि हरि मुख ये बचन नृपएकद्वितिय मुखहेरि।
हँसीं सकल गोपालजा बचन कहैंवच फेरि॥
तबश्रीकृष्ण चन्द्र अकुलाने। अटपट बचन ब्यंग अनुमाने॥
कहा न मैं इनचारों माहीं। जो तुमहंसौ अबूझ सदाहीं॥
हौं पुराण पूरुष गुणरासी। जड़चर जीवनके उरबासी॥
ो बाँछा राखौ कोउ मोसन। देउँताहि तजि सर्व सकोचन॥
जोपैकहौ तुम हमहिं गोसाई। गह्वर बिपिन अदोष बहाई॥

यहिकर कारण सुनौ सयानी । करयौं परीक्षा प्रीति पुरानी ॥
गुणहुनबिलगहास्यरस जानो । मोरकहाअतिहित निजमानो ॥
अजसब भाँति प्रीतिदृढ़ देखी । हौमम प्रिया सप्रेम बिशेखी ॥
दो० कीन्ही मोसँग प्रीतिशुचि लीन्हा पूरण ज्ञान ।
मनौरंक निधिकर गही मेटचोक्लेश महान ॥
बीतराग यश गृहधन त्यागी । दुखसुख परिहरिहैं अनुरागी ॥
सेवत कुबलय पाद हमारे । अंत मोरबपु लहत सुखारे ॥
तथा तुम्हारि बिलोकि दृढ़ाई । रसना ममकरि सकन बड़ाई ॥
नेहअखंड अलौकिक ठाना । श्रुति मारगजस कहा प्रमाना ॥
बिधि आयुर्बल समतन राखौं । प्रीति प्रशंसा तुम्हरी भाखौं ॥
अन्नृण न होउ सत्य ममबानी । सुनौ निकर तुमबुद्धि सयानी ॥
सोजन मूढ़ज्ञान बिनुसोई । जाहिन मोर प्रेमदृढ़ होई ॥
नरनागर गुण सागर जोहैं । मोर भजन तत्पर जगसोहैं ॥
दो० समाधान सबकर कस्यो इमिश्री मुख असुरारि ।
मंगल तूतजिअपर श्रम भजिले श्याम सुधारि ॥
इतिश्री मद्धिविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रि
यायांमंगलदासविरचितायांगोपीश्यामसंबाद वर्णनो
नामत्रैत्रिंशतिमोऽध्यायः ३३ ॥
दो० कुछ मूरुख संयोग करि चलेपन्थ मुदमानि ।
मारगमें सरिता तरतश्रम उपज्योउर आनि ॥
बूड़िगयो सरि एकजन यह बिचार सतिभाय ।
गनै जौनु नहिंनिज गुनै एकहीन पछिताय ॥
अल्पकाल दुख प्राप्तभे कोउपंथी गुणखानि ।
न्यारे न्यारे सकल ते समुझाये जब आनि ॥
तबपायो आनंदतिन तिमिबिनुहरिगुणगान ।
बूड़िगयो बिषया बिबश कौन करै सज्ञान ॥
तू मंगल सुनि सीखमम त्यागुमोह भ्रमभूल ।
भजिले राधा बल्लभै मिटै सबनकी शूल ॥

श्रीमुनि पुनर्बाक्य इमि कहेऊ। जोकरिश्रवण भूपसुख लहेऊ॥
जबश्री श्याम सरसबच गायो। शिरपरि हरिगोपिनमुदपायो॥
उठिप्रभु साथ कुतूहल करहीं। अमित भाँतिआँनँद उरभरहीं॥
माया योगरूप तब ठानी। अगनित रूपअंश अनुमानी॥
चाहत सबहि दीन सुख सागर। लीला पर्म्म सनेह उजागर॥
प्रति गोपिका बपुष निरमाना। कृपाउदधि प्रभु पर्म सुजाना॥
सकल संगपुनि मंडल रासा। पुनरारंभ बिलास प्रकासा॥
बिबियुग नारि जोरि युगपानी। नृत्यतमध्य आपु सुरध्यानी॥
दो० बूझै सब निजनिज तटहि लखैन मायारूप।
करहि प्रबिष्टे अंगुली फिरैं नारि कुरुभूप॥
इक गोपिका तदन्तरश्यामा। इदमंतर गोपिका ललामा॥
नीरद घटा तड़ित जनु राजै। बा हरि संग नीलमणि भ्राजै॥
यहिप्रकार अबला प्रभुसंगा। करैंभूप बहुबिधि रस रंगा॥
यंत्रनिकर बाजहिं रुचिनीकी। गंध्रबताल सुनत तेहिंफीकी॥
खरज ऋषभ गंधार सोहाई। मध्यम पंचम धैवट गाई॥
और निषाद सप्तसुर जोई। गावतराग देह धरिसोई॥
भैरव मेघ मलार अनूपा। दीपक श्रीहिंडोल स्वरूपा॥
मालकोश युत ये षटरागा। राज रहस्य धाम अनुरागा॥
दो० कोटिऊन पंचास जे तान कहीते सर्ब।
एक दोय युत मूर्छना सोहैं तहाँ अखर्ब॥
ह्रस्व दीर्घ अरु लुप्तसह राजैं तीनों ग्राम।
नभरसलोक समेतनृप तालबजैंसुखधाम॥
नृत्यहिंश्याम सकल बिधिगाई। परिपूरण बरणैं को भाई॥
त्रैपुर कर्ता त्राता हारी। तेहि रहस्यबदकिमितनधारी॥
मंगल आनँद अमित अपारा। निजतनमन सब काहूहारा॥
अंचल रहित होत कोउ गोपी। मग्न रहस्य जाननहिं सोपी॥
कतहूं मुकुट श्याम खसिजाई। बूझिन परत रासमति छाई॥
नारिनिकीशशिमोतिनमाला। टूटगई नहिं जान भुवाला॥

प्रभु बनमाल गई अरुझाई । महा अनंद कहौं किमिगाई ॥
स्वेदबिन्दु शुभ सोहललाटा । मनौ गुलिक कर सोहतठाटा ॥
दो० कुमुदबंधु मुख त्रियनपर कच अलकावलि भूर ।
सुधालोभ जनु पवन् अरि शशि लपिटान अनूप ॥
कतहूं प्रभुमुरली समनारी । गावतासु सुर सम दै तारी ॥
कोउकोउनिजसुरतालसमाना । करतअलापबिलगसुखजाना ॥
बंशी ध्वनि समपूरण जबहीं । कहततान गोपी हरि तबहीं ॥
ठगिसे रहत आपु असुगरी । जिमिबालक आरसी निहारी ॥
गानतान इमिनृत्य अलोकी । जिन निरख्योतेभये अशोकी ॥
अजहूं जाहि सुनत मुदबाढ़ा । ममसन मनौ भयउ तहं ठाढ़ा ॥
करहिं कटाच्छहाउ पुनिभाऊ । अकथअलखहीरगोपिनचाऊ ॥
भेटहिं भले लाइउर उरहीं । जोसुनिमुनिमनदृढ़भ्रमपरहीं ॥
दो० धाता शिव इन्द्रादिसुर पुनि गंधर्व सनारि ।
चढ़े विमान अकाश सब देखहिं राससुखारि ॥
छं० देखहिं सुखारी नृत्य गानहिं कुसुम अवली छोरहीं ।
सुरबाम हँसि हँसि परस्पर आनँद निकर तृण तोरहीं ॥
पुनिकहैं हे करतार हमकहँ कसि कसनहिं गोपिका ।
करिरास प्रभुसंग सुयश लहतीं भई सुरत्रिय सोपिका ॥
दो० राग रागिनी तालसुर सकल सजे यहि भाँति ।
यमुनाजीकी गतिथकी पवनौ मंद बहाति ॥
उडुगण संयुत द्विजपति थाके । छुटे प्रवाह सोककरभा के ॥
बरख्योसुर अहार दिशिचारी । गयो सोइ जगभयउ सुखारी ॥
भइ षट मास केरि निशि सोई । तदपि न जान चराचर कोई ॥
ब्रह्म रैनि ताकर भा नामा । यहि कारण भूपति सुखधामा ॥
प्रभु उर दधिकृत रास भुवाला । उठी तरंग समोद बिशाला ॥
सबहि संग लै भानुज तीरा । जाइ करत भे क्रीड़ा नीरा ॥
कछुक काल कीन्ही यह लीला । प्रभु समर्थ सर्बज्ञ सुशीला ॥
श्रम मिटाइ बाहर असुरारी । कहा सबन प्रतिबचन पुकारी ॥

दो० भयो मनोरथ सकल तब रही न कौनिउ आश।
कीन्हा रास अनेक विधि दुखगा तिनहिं प्रयाश॥
निज निज भवन जाहु मुद मानी। जाइय किमि तजि पद सुत गानी।
जिमि योगी राखत मम ध्याना। कीजौ तथा ज्ञान परमाना॥
तुम जेहि ठाम रहौ तहँ रहऊँ। जानौ सत्य मृषा नहिं कहऊँ॥
युत संतोष पाइ अनुशासन। गईं समस्त भूप निज आसन॥
जननी जनक तनय भरतारा। काहु न जान भेद तेहि बारा॥
यह बिचित्र लीला सुनि राजा। मुनिहि पूछ अद्भुत गति साजा॥
सुनिय नाथ करुणा कूपारा। मम सन्देह करिय निरुवारा॥
प्रभु अवतरेउ हरण महि भारा। बेद धर्म जग करण प्रचारा॥
दो० तिन पर नारिन संग प्रभु कीन्ह रहस्य बिलास।
यह नर लम्पट कर करम बदत चतुर अनयास॥
भेद न यह जाना नरनायक। नर समान जाना यदुनायक॥
सुमिरत जाहि नशै अघरासी। पुरुष पुराण सकल उरबासी॥
दोष निकर बरजित तउ जासू। जो कछु करै सोह सब तासू॥
जलज यथा भषि लीन्ह अलीना। आपु समान करत सुकुलीना॥
नीर सकल शुभ अशुभ महीशा। सुरसरि संग चढ़त शिवशीशा॥
सामर्थी जो कृत जगमाहीं। दोषिक करत तिनहिं सो नाहीं॥
कारण करत अशुभकृत जोई। पूत सुयश प्रगटत है सोई॥
अन्धकारि पायो रस मारा। भूषण कण्ठ कीन्ह श्रुति सारा॥
दो० शत्रु धनंजय हार उर कीन्ह बिदित शुभ सोइ।
निज हित करयो उपाय नहिं अरु जग कर हित होइ॥
हरिगति सबौं भांति अपारा। निकरा लिप्त लिप्त निरधारा॥
जीव चराचर जेतिहुँ लोका। बसत सबन के उरहि अशोका॥
न्यारा बूझि परत अस भूपा। जल अरविंदी दल अनुरूपा॥
गोपिन की उत्पत्ति जो राई। सो प्रथमहि हौं बरणि सुनाई॥
बेद ऋचा अरु शक्ति सोहाई। नारि शरीर बिरचि ब्रज आई॥
हरिदर्शन परसन हित लागी। भई सकल तेहरि अनुरागी॥

यहि विधि श्रीवृषभान किशोरी । मुदते हरि पद प्रीति न थोरी ॥
लीन रहै सेवा महँ सोई । कहेउ प्रसिद्ध कथा यहगोई ॥
छं० कीन्हा प्रसिद्ध पुराण यह जे चतुर सज्जन गाइ हैं ।
कल्याण कीरति विजय तेनर सर्ब बिधिमुदपाइ हैं ॥
हरिकर्म्म उरनहिं लाइकै सानन्द शुभयश ध्याइहैं ।
निरवाणपद सायोज्य मुक्तिहि चतुर नर सोपाइहैं ॥
दो० कथा रुचिर अघशाशहरि प्रभु रहस्य शरध्याय ।
निज बुधिके अनुसार सो कहा भूप समझाय ॥
दो० तेमूरुखजे भ्रमित जग त्यागि श्याम असुरारि ।
तू मंगल तजि मोह मद भजिले प्रभु दैत्यारि ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांपंचाध्यायीरहस्यलीला
कथनंनामचतुस्त्रिंशतिमोऽध्यायः ३४ ॥
दो० अहंकार निज हृदय धरि लौन पूतरी एक ।
अवगाहन निधि नीरको गई सो अतिअविवेक ॥
आपुनशानी जल मिली थाह बतावै कौन ।
इमिरुक्मिणिपतिचरितदधिजगमतिपूतरिलौन ॥
करे कृपा जो कृपायतन तौ कछु बरणौ सोइ ।
नातरु कोटिहु जन्म लगि पारलहै नहिं कोइ ॥
मैं निज उर धरि श्याम पद श्यामा पादपनाय ।
बरणौं उज्वल सुखद भल हरि चरित्र मुदपाय ॥
श्रोता जिज्ञानी चतुर बक्ता ज्ञान निधान ।
श्रुतिदै श्रुति मत श्रुतकरौ लहौ सकल कल्यान ॥
मुनिगुणखानि बहुरिइमिकहेऊ । जोमुनिभूपअमितसुखलहेऊ ॥
जिमि प्रभु विद्याधरहि उधारा । अरु जस शंख चूड़कहँमारा ॥
सो प्रसंग अति रुचिर सोहावा । कल्पारत जो शमन कहावा ॥
गोपन नन्द कहा दिन एका । श्रवण करौ सममम कृतटेका ॥
जब श्रीकृष्ण जन्मभा माई । तबहौं जगदंबिका मनाई ॥

प्रण कीन्हा करिहौं तव पूजा। भानु वर्ष सुत भये अरूजा॥
सोत्साह सम परिजन बासी। मुदमंगल मय आनँद रासी॥
सो दिन जगजननीकी दाया। आवातात अधिक सुखछाया॥
दो० चलौ सकल मिलिचलैं अब करैं तासु अरचाहि।
सुख दाता दुख हारिणी जगत मात सो आहि॥
सो० सुनत नन्द के बैन उठे निकर गोपाल जा।
आयेनिजनिजऐनअशनपाकबहुबिधिकिये॥
सामग्री लै सकल पदारथ। नंद द्वार आये अरचारथ॥
श्री नँदराय पाय सुख भारी। दधि माखन बहुअन्नसवारी॥
भार भराय शकट रुचि मानी। गवनेकुटुंब सहित नृपज्ञानी॥
देवि स्थान पहूंचे जाई। सरस्वती सरिसकल नहाई॥
कुलगुरु बोलि वेद विधि जैसी। पूजा कीन्ह महीपति तैसी॥
अखिलपदारथ बिबिधबिधाना। धरे भूप देवी अस्थाना॥
परिक्रमा करि दोउ कर जोरी। कह्यो नंद पुनि बचन बहोरी॥
तुम्हरी कृपा मातु मम सूना। भयो वर्ष द्वादश मुद दूना॥
दो० इमि बदि करि दंडवत नृप बाह्यालय पुनि आय।
सहस बिप्र निवते तुरत भोजन दीन कराय॥
पूजत बिनवत कृत ज्योनारा। भई महीपति अधिकअबारा॥
रैनि बास कीन्हो तेहि ठाईं। ब्रजबासिन समेत नँदराई॥
नंद तल्प तट यक अहि आई। चरणानन गहि लागचबाई॥
हरि विलोकि व्याकुलभे नंदा। लखिस्वर्भानुबिकलजिमिचंदा॥
विह्वल कहत कृष्ण हे श्यामा। त्राहित्राहितिहुपुरअभिरामा॥
लहुरव सुधि लीजियजनजाता। नतुयह खलभक्षतममगाता॥
नंद पुकार सुनत सब जागे। करि प्रकाश देखन नृप लागे॥
अति कराल अजगरतन थूला। नरनारी बशभय अनतूला॥
दो० यहि अवसर श्रीकृष्णजू नागबिलोक्यो जाय।
हरि ताहि शिर पगदयो सुनौ भूप मुदपाय॥
हरिपद परसत तजि निजकाया। रूप रुचिर काकोदरपाया॥

करत प्रश्न जोरि दौ पानी । जयजय श्याम बदारत्तबानी ॥
पूज्यो ताहि आपु असुरारी । कोसिकरभतन रहसिदुखारी ॥
किमघ बपुष भूधर करपावा । ममपद परसि दुखौघनशावा ॥
तब शिरनाय जोरि मुखबाहा । करि विज्ञप्ति कहेउ नरनाहा ॥
क्षमाराशि सुनु अंतरयामी । गुण कालज्ञ नभगबरगामी ॥
प्रभु जानत उत्पति अवसाना । तदपि प्रश्नवत करौंबखाना ॥
सुर बिद्याधर नाम सुदर्शन । अमरलोकनिवसौंआनँदसन ॥

दो० अहंकार निजरूपकर नाहिं ममहृदय समाय ।
तब मायावश ज्ञानहत सुनुकृपाल सुरराय ॥

यानारूढ़ दिवस यक स्वामी । चल्योंभ्रमनजग अंतरयामी ॥
जहँ अंगिरा ऋषय तपसाधत । सानँदनिज आतमआराधत ॥
तिनके शिरपर ह्वै शतबारा । आयउँ गयउँनकीन्हबिचारा ॥
एककाल मुनि लखि परछाई । निरख्यो स्वामिन नैनउठाई ॥
मोहिं बिलोकि क्रोधउर छावा । ऋषिसकोपियहवचनसुनावा ॥
होहुजाय अजगरअभिमानी। पुनिनचलसिइमिमगअनजानी ॥
चक्षुस्रवातन तत्क्षण पाई । पर्योंभूमि सुनुजगसुखदाई ॥
ममगतिलखिमुनिज्ञाननिधाना । कह्यो दयायुत मुक्तिप्रमाना ॥

दो० कृष्ण चरण रज परसिकै तू पैहसि निजरूप ।
यहिकारण पद नन्दकर गहेउँ तिहूंपुरभूप ॥

ह्वै दयाल मोच्यो मोहिंआपू । मिट्यो नाथ सँचितप्रथुपापू ॥
असकहि बन्दिचरण करजोरी । परिक्रमा करि बिनयबहोरी ॥
करि दंडवत मांगिअनुशासन । विद्याधर गमनेउ सुरआसन ॥
सुर बिमान बैठेउ मुदपाई । आनकथासुनु नृपतिसोहाई ॥
वृजबासी यहगति अवलोकी । चकितचित्तजिमिरजनीकोकी ॥
प्रातबन्दि जग जननी पादा । गमने वृंदाबन अबिषादा ॥
प्रभुप्रताप उरकृत अनुमाना । कोउकोउमतिसमकरतबखाना ॥
यदपि रहत नित प्रभुसँगराजा । तदपिनजानतप्रभुकरकाजा ॥

दो० निज निज आलय सबगये मंगलआनँदपाय ।

अपर चरित मोदकमहा श्रवणकरौ कुरुराय ॥
एक दिवस हलधर हरिसाथा। निशादेखिविकमितखगनाथा॥
गोपी निकर संग निजलीने। गावत भये राग सुखभीने॥
तदाकाल सेवक यक्षेशा। शंखचूड़ अस नाम नरेशा॥
सुरमणि शीश अमितबलवाना। सो आवत भे तिहिअस्थाना॥
देखेसि यह कौतूहल तेही। हरि वैभव कछुबिदितनजेहीं॥
सुताएक गोपिका ललामा। द्वितियो रहि गावतहरिरामा॥
हृदयमग्न उन्मत्त मुरारी। निज दासन सुखदेतबिचारी॥
सो मनमूढ़ अबुध भुवराई। अहमित निजबलमोहबड़ाई॥

दो० अखिलनारि गहिलै चला बिलखानी सबबाम।
आहिआहि श्रीश्यामजी कोउकह हेबलराम॥

दीनबन्धु सुनि दीन पुकारा। सत्वरचले सबन्धु भुवारा॥
सिंहध्वनि करि तरुन उखारी। पहुँचे तिन ढिग राम मुरारी॥
अभयहोहु भयकर भय नाहीं। प्रणतारतहर अहौं सदाहीं॥
काल कलेवर निरखि कृपाला। शंखचूड़ भाग्यो ततकाला॥
प्राणआश खंडित भै तासू। जानसि यक्षभयउमम नासू॥
मूशलगह युवतिन तट रहेऊ। प्रभुसकोपिताढिगचलिगयऊ॥
कचकरजीव तथा गहिलीन्हा। पकरिकेश माहि मर्दनकीन्हा॥
मंगल मूरति शिर हरि तासू। मणिग्राही मणिधारी पासू॥

दो० दीन्ही रामहिं आनि सो कृपासिन्धु भगवान।
किमि वरणौं प्रभुकरचरित सुरदुर्लभजगजान॥
बहुरि आय निजधामप्रभु करि कौतूहलसाज।
मंगलमन सुनिसीखमम ध्याउचरण ब्रजराज॥

इतिश्री ऋद्धि विधाकलिविषांवकारादिनमार्गे श्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांविद्यावरमुक्तिशंखचूड़वध
कथनंनामपंचत्रिंशतितमोऽध्यायः ३५॥

दो० विषइनको चिंतन करत होत संग उतपन्न।
संग प्रजातक कामुहै जानत बुद्धि अखिन्न॥

कामहि के संयोगते उपजत क्रोध महान ।
क्रोधहि सम्भव मोहहै यह वरणत बुधिवान ॥
मोह स्मृतिनाशक प्रबल ताते बिनशै बुद्धि ।
बुद्धि नशे यहिजीवकी नाशिजातहै सुद्धि ॥
यहिकारण बुध परिहरै विषय चिंतवनसर्व ।
कामक्रोधआदिक अखिल छूटिजायखलगर्व ॥
जब मनआवै बुद्धिबश तब तजिज्ञानउपाय ।
गावै राधानाथ यश रहै मुक्ति को पाथ ॥

मेदिनिपति सुनुसुरुचिरहानी । कहौं तूल पातक सुतपानी ॥
हरिसुरभी कानन नितचारहिं । जबलगिपुनरपिगेहसिधारहिं ॥
ब्रजबनिता तबलगि नँदगेहा । जुरि समस्त बैठें हरि नेहा ॥
नँदरानिहिप्रभुसुयशसुनावहिं । प्रभुकृतविपिनस्वगेहबतावहिं ॥
बाजत बंशी सुखद सुजानी । मोदत व्योम थलापा प्रानी ॥
वृंदारक सबाम खग भूले । वेद रंध्र ध्वनि सुनि उर फूले ॥
कर भूषण बासन धर धाये । मनगतिथकि विह्वलतनछाये ॥
रागसकाय बेणु सुरबासी । तजतध्यानश्रुतिसुनतउदासी ॥

दो॰ गावतजन वल्लभ समुद नारि पुरुष अस जोय ।
सो भूले अचरज न कछु जड़हु प्रेमवशहोय ॥

प्राचीजा जाता गति फेरी । विथकी धेनु लई तिन घेरी ॥
दाता चीर भ्रमण परिहरेऊ । हरिशिरसुखदछांहतिनकरेऊ ॥
पवनपरम त्रै निजनिज औसर । बहे इलापति प्रभु तनऊपर ॥
जो कौतुककृतसजनी श्यामा । ते जानत निरखत वहिठामा ॥
सघनकुंज चलिगये मुरारी । कृत कौतुक पूरब बर नारी ॥
पुनि बंशीबट आइ बिराजे । लखिविनोदसुरतियगणराजे ॥
बिहरे पुनि गाइन के पाछे । घेरियमुनजल प्यावहिं आछे ॥
संध्या भवन गवन प्रभु करेऊ । स्मतसुरभि बेणुध्वनि भरेऊ ॥

दो॰ यहिप्रकार गोपाल त्रिय नितप्रति गावहिं गाथ ।
सुनौ महीपति ज्ञाननिधि पावन यश ब्रजनाथ ॥

अह निशि इमि गोपी नरराई। प्रभु प्रताप बरणहिं मुदपाई ॥
बीचहिं मिलहिं श्याम कहँजाई। प्रति बासरनिशिआननपाई ॥
आनंद कंद कुमुद भव चंदा। सन्मानहिं सबकहं सानन्दा ॥
गृह गृह जाय रैनिहरि ध्यावहिं। प्रातभूतजस पुनरपिगावहिं ॥
यशुदारज मंडित प्रभु आनन। अंचलपोंछि भेटिखलभानन ॥
कंठ लगाय अकथ सुख छावैं। उपमा कवित राज नहिंपावैं ॥
यह चरित्र हरि भानु प्रकाशू। किल्विषतिमिरहरतदशआशू॥
मेटत कुमति ज्योति तारागन। कृत भ्रमअंध उलूकसनातन ॥

दो० जगत भूत बुधि भूल बश सोवत देत जगाइ।
लागत कारज नेहहरि गुण गावत मुदपाइ ॥
मंगलते मतिहीन हैं परे बिषयके जाल।
ते भूले तोसों कहा तू भजु मदन गोपाल ॥

सो० समरथ आनन कोय राधानाथ बिहाय जग।
देहहि तो कहँसोय जो इच्छा करिहौ चतुर ॥

इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायांमंगलदासविरचितायांगोपीबिनोदकथनंना
मषड्त्रिंशतितमोऽध्यायः ३६ ॥

दो० जिमि प्रसून महँ गंधिबस घ्राणेन्द्रिय बिनतात।
लखिन परतकौनो यतन यह प्रसंग बिख्यात ॥
अथवा जिमि मेहँदी दलन बसत अरुणताठीक।
बिनु संघटन न जानिये प्रगटै नीक न फीक ॥
तैसेही यह आतमा जानि परतहै नाहिं।
निबसत काया गेह महँ ज्ञानी यदपि कहाहिं ॥
गुरु दयाल सांचो मिलै मारग देइ लखाइ।
परखि परै तो सत्य यह सब भ्रमणा बहिजाय ॥
जो न बनै यह बात तौ ध्यावै राधा नाथ।
अंत मुक्ति पावै सही बदत वेद बुध गाथ ॥

पुनिमुनि कहेउ सुनौमहिपाला। एक दिवस हरिरामगोपाला ॥

सायंकाल धेनु सँग लाये । आयत ओर चले सुखपाये ॥
तस्मिनकाल असुरबलखानी । वृषभकलेवर धर अभिमानी ॥
सुरभी व्यूह मध्य मिलि आई । कठिन बज्रवत देह बनाई ॥
दिवि लगिकाय भयानक राजा । शृंग प्रलंब तीव्र द्वौ भ्राजा ॥
क्षतज बिलोचन पूंछ उठाये । गर्जत महि मर्दत मुद पाये ॥
खनत मेदिनी खुर अकुलाई । सुमनस अम्बर चलेपराई ॥
दिशापाल कम्पे भयमानी । सबकोउबिकलनपरतबखानी ॥
दो॰ थरहरात महि शेष शिर स्रवत गर्भ सुरभीन ।
प्राविट घन गर्जत दनुज बरणत बनन प्रवीन ॥
बिचली धेनु नीरनिधि आसा । सिमिटग्वालआये प्रभुपासा ॥
करि प्रणाम कह सुनौ कृपाला । आगेवृषभ रूप रचिकाला ॥
क्षीरद बृंद सकल बिचलाये । हमभयभीत भागि प्रभुआये ॥
प्रभु सर्वज्ञ जानि सब भेवा । कहेउ असुर है बृषभनएवा ॥
होहु अशंक काल है याको । आशुभनतहौं सब बलताको ॥
अस बदि अग्र गये बनवारी । क्रुधितबचन कहवृषभप्रचारी ॥
कपट शरीर बिरचि कत आयो । ममप्रतापखलसुनिउनपायो ॥
किमि कृत वृथा प्रजल्प अपारा । देत किमर्थ आन दुख सारा ॥
दो॰ आवत कसनहिं निकट मम ओकपटी मलखानि ।
काल काल श्रीकृष्ण मैं तो सम खल कृत हानि ॥
असकहि ताल बजाइ प्रचारा । करु सँग्रम मम साथ अपारा ॥
प्रभु बाणी सुनि धावा कैसे । मघवा अस्त्र प्रबल गतिजैसे ॥
जस जस हरि तेहिपाछे टारत । तसतस खलगर्जतललकारत ॥
तब प्रभु गहि मर्देउ महिताहीं । पुण्डरीकअहिजिमिभ्रमनाहीं ॥
मखोन असुर उठेउ बलसाजी । तर्पेउ महा प्रलय गतिगाजी ॥
उभय शृंग बिचदाबि मुरारी । ग्वाल अमर लखिभयेदुखारी ॥
खलाराति कौतुक पद तासू । दाबिनिजान्हिशृंगगहिआसू ॥
दोबर कीन्हो दुष्ट मरोरी । करतरजकज सबसननिचोरी ॥
दो॰ तजितन सुरपुर सो गयो प्रभु पर बरषि प्रसून ।

जैजै ध्वनि भै गगन महँ करत दिवेश प्रहून ॥
बूझि मेष वृक सँभ्रम करई। कुशल न बहुरिभवनपगधरई॥
लेलिह जानि भिरै मंडूका। तजै प्राण उपजै उर हूका॥
नाम जासु असुरारि कहावत। भूलि दुष्ट पुनिताढिगआवत॥
गोप मुदित हरि यशहिबखानैं। तुम बिनुकौनुअसुरअसभानैं॥
वृषभासुर बध कस्यो कृपाला। सुनि वृषभान सुतातेहिकाला॥
आइ श्याम प्रति बिनयसुनाई। कस अनीति कृतत्रिभुवनराई॥
वृषभनिपात यदपि खल सोई। मारग वेद लोप जग होई॥
यहि कारण तीरथ करि आवौ। तब शरीर काहुइ पर सावौ॥
दो० श्रीराधाके बचन सुनि बोले बिहँसि मुरारि।
जग तीरथ ब्रज बोलिहौं न्हाउसप्रेमसुखारि॥
गोबर्द्धन तट जाइ कृपाला। युगल सरोवर बिरचिबिशाला॥
प्रभु इच्छा बिलोकि अघहारी। संतन सकल तीर्थ मुदकारी॥
कहिकहिनिजनिजनामसुहावा। नव कुंडल जल मेलनलावा॥
गये निकर तीरथ करि सेवा। पुनि कुंडल न्हाये जगदेवा॥
तीरथ बाह्य दीन्ह गोदाना। अखिलवेदविधिसुरुचिप्रमाना॥
ब्रह्मयज्ञ करि पावन भयऊ। धेनु महत्व अधिक भवछयऊ॥
राधा कृष्ण कुण्ड वै दोई। पाइ नाम भे पावन सोई॥
अजहूं जे नर कृत स्नाना। मेटत किल्बिष संचित नाना॥
दो० अपर प्रसंग प्रमोददा सुनु महिपाल सचेत।
एक दिवस मुनि कौतुकी गेनृपकंसनिकेत॥
करि सत्कार सुआसन दयऊ। तब मुनीश यहबरणतभयऊ॥
जौनीबिधि माया ब्रज आई। दाऊ गर्भ यथा हरि लाई॥
हरि अवतार भयउ जेहि रीती। गोकुल गवन कहाकरिप्रीती॥
नारद बचन सुनत जड़राई। बोल्या बचन जीव अकुलाई॥
सत्य ऋषीश कहउ यह गाथा। अति कपटीयादवकुलनाथा॥
प्रथमपुत्रमोहिंहितकरिदीनेसि।प्रीतिप्रतीतिअधिकखलकीनेसि॥
मम रिपुजानिन दीनेसि मोहीं। ठगवतठगासिप्रष्टमति ओहीं॥

असकहि बसुदेवहि बुलवावा। दृढ़ बन्धन खल तुरत बँधावा॥
दो० सरुष कृपाण स्वपाणि गहि कह सुनुकपटी कूर।
साधु जानि तोकहँ तज्यों तू छलकारक पूर॥
नन्द भवन सुत शत्रु पठावा। माया सुता यहां लै आवा॥
अंतःकरण आन मुखआना। आजुनिधनकरिहौं प्रणठाना॥
सुनुशठयेनकपट संह सोहत। जानिभेद कीजै निजकरहत॥
मंत्री भूप मित्र हितकारी। सेवक सनसंगी प्रियनारी॥
जोकर संगहानि बड़ होई। महा कृतघ्नी नरकी सोई॥
आनन मधुर बदै मन दूजी। तिनते आशकासु जगपूजी॥
स्वारथरत परद्रोह सयाने। सजन अधमते प्रीति बखाने॥
यहि प्रकार बहु जल्पिअभागा। पुनिमुनिप्रतिअसपूछनलागा॥
दो० कृपासिंधुवसुदेव के मनकर लहा नभेव।
निफलगर्भ बलदेव भा कन्या शत्रु अमेव॥
असकहिपाणिनिधनचितआना। तबनारदमुनिबचनबखाना॥
जो बसुदेव बधै नरनाहा। अयशप्रचार होइ भवमाहा॥
यहि कारण बंधन करि राखौ। ममशिक्षानिज उरअभिलाखौ॥
जेहि बिधि रामकृष्णबध होई। करौ उपाय महीपति सोई॥
ताहि बुझाइऋषय गुणराशी। अमरलोक गमने बुधि नाशी॥
यदुपति बन्दी गेह पठाई। केशी बोलकंस अकुलाई॥
तूममहितू सत्य संग बासी। मोसम बली एकजग त्रासी॥
जो अरि रामहनै हितु मानी। तुव गुण मानौंमिटैगलानी॥
दो० पाइ रजायसुभूप कर बंदन करि सुखपाय।
केशी वृंदाबन चल्यो सुनुद्योणिप चितलाय॥
पुनि कंसा सुर दुखित महाना। निज मंत्री बोले गुणवाना॥
भौमारिष्ट असुर चाणूरा। शालादिक जे अवर प्रशूरा॥
सभा जोरि कह सबन बुझाई। बैरी मोर प्रगट भव आई॥
मंत्र विनोदक चतुर विचारौ। शत्रु शाल सबौ मिलि टारा॥
भयबश सचिव मंत्र अस दयऊ। तुव बैभव समस्त जगछयऊ॥

रामपुरी समरथ नृप नाहीं। विजय करैं प्रभु जो रणमाहीं॥
राम कृष्ण बध कठिनन राजा। बुद्धि देहिं हम पूजैं काजा॥
मथुरा जब आवैं दोउ भ्राता। निधन उपाय मरण नृप ताता॥
दो० सरिता तट द्रुमनारि जो होइ स्वैरिणी तात।
सभयसचिवमहिपालकर नाशत वेगिहिगात॥
जेहि छल बल मथुरा द्वौ भाई। आवैं मत सो देहि बनाई॥
विरच्यौ प्रथम रंगमहि राजा। उत्तम सुफलसाजि सबमाजा॥
जो सुनि नगर ग्राम नरनारी। प्रमुदितसब आवैं बिबुधारी॥
हर मखता पश्चात कराइय। महिषमेष हितहवन मँगाइय॥
यहसुधि पाइ अखिल ब्रजबासी। आइहि हित उपहार सदासी॥
राम श्याम आवैं तिन साथा। तब कोउमल्लबधै सुनुनाथा॥
अथवा आन बीर धरि मारै। यहि बिधिबध बांधवन बिचारै॥
यह सुनि कंस मोद मनभयऊ। मंत्रसुनत अति सुखउरछयऊ॥
छं० छायो महासुख मन्त्र सुनि आनन्द सो ऐसे कहा।
धनि मंत्रदा हितकारि मोरे बुद्धि तुवबरणौं कहा॥
असभाषिमल्लबो लाइ दै तम्बोल अतिआदरकियो।
अपराधनिशिचरप्रबल तिनकहँबोलिअसआयसुदियो॥
दो० मम अनुजाजा राम अरि जब आवैं यहि धाम।
बांधि बांधियो तिनहिं तब तुम सबकरिसंग्राम॥
सो० चिन्ता बिनशै मोरि खग ऋषि जोबर्णन कियो॥
लहौ न दुःख बहोरि विभव अकंटक होइ तब।
तिनहिंबुझाइ बोलिअहिपाला। बध्योमोदमय वयबश काला॥
तव बश कलभमत्तबलरासी। राखौ द्वार राम हरि ग्रासी॥
बरबस जब प्रविशिहिनृपद्वारा। अर्जुन अरितब करिहिप्रहारा॥
जो पलाय तौ जाइ न पावै। मल्लहनैं जो इत चलिआवै॥
जो मम शत्रु पछारै कोई। प्रतिफल भल पावैगो सोई॥
इमि समुझाइ मीत हितकारी। मखलागि लग्न बदी असुरारी॥
कार्तिककृष्ण शंभुतिथि सोहर। यज्ञमहेश करौ सुमनोहर॥

सायंकाल बोलि अक्रूरा। करि सत्कार भलीबिधि पूरा॥
दो॰ पुण्डरीक आसन तिन्हैं करि आसीन भुवार।
करकरगहि बोलतभयो कालबिवशअविचार॥
यदुकुल मध्य महागुण रासी। धर्मात्मा धीर सुख बासी॥
मानततुमहिं निकर कुललोगा। लहिदर्शन जानतसुखयोगा॥
जस बासव हित बामन स्वामी। बलिछलिराजदयोअधिनामी॥
तेहिप्रकार तुम मम हितकरहू। आन उपायन चितकछुधरहू॥
वृन्दाबनहिं प्रतिष्ठा देहू। सुयश दुहूँपुर यह प्रभुलेहू॥
देवकि तनय उभय अरि मेरे। आइहिं कहे इहांलगि तेरे॥
नीति भणत उत्तम भवजोई। परहित सहत क्लेश नर सोई॥
तापर तुम ममभित्र अक्षोभी। नहिंकामी क्रोधी नहिंलोभी॥
दो॰ जेहिबिधि दोनों बन्धुअरि आवैं लाइय मीत।
निधनसहज यहिठामकरि भोगोंमहीअभीत॥
प्रबल चणूर कुबलिया दोऊ। द्वैमहँ कोऊ हनैंगे सोऊ॥
अथवा मैं निजकर बध करिहौं। पापपुण्य कछु उरनहिंधरिहौं॥
तापाछे निज पितहि पछारौं। कपटमूल प्रतिकूल विचारौं॥
सुतसम नेह न अरिसम मोहीं। लक्षति अक्ष सदा ममसोहीं॥
पुनि देवकहि पंथ धरि जारौं। सब रस मेलि दंड दै मारौं॥
निधन करौं बसुदेव बहोरी। निज भगिनी परिहरौंनभोरी॥
हरिभक्तन कर मूल मिटाऊं। निष्कंटक वैभव तब पाऊं॥
जुरा पयोधि हितू सुचि मेरो। भुवन जासु भयमान घनेरो॥
दो॰ नरकासुर बाणादि भट जासु सुहृद छल हीन।
निजभय कम्पत खंड नव पौरुषराशि अछीन॥
सो॰ तिनसोंमिलिकरिनेह मुदिरनाथपुरलगिबिभव।
करिहौं याही देह यामहँ संशय नाहिं कछु॥
जो मोसम राखत सतिनेहा। लाइय शत्रु करिय कृत येहा॥
जाइ नन्दपुर कहियो ताता। भूपतिहर मष कृत सुखदाता॥
रंग अवनि इषुवी यक सोहै। भंजै ताहि सुभट भव कोहै॥

अपर कुतूहल होत अपारा । बरणत बनत न मुददातारा ॥
यह सुनि नंदुपनंद सग्वाला । मेष महिष उपहार बिशाला ॥
लाइहि हमहिं देइ सुनुभाई । आवैं संग शत्रु दौ भाई ॥
सुलभ उपाय बतायो ताता । करियसुहृदसोअवशिप्रभाता ॥
तुम सज्ञान सकल गुण पूरे । उक्ति युक्ति ज्ञाता सुचि रूरे ॥

दो० बनै कह्यो सो जाय तुम जेहि भलि होइ हमारि ।
नीति कहत दूतत्त्वकर धरम प्रत्यच्छ पुकारि ॥

सो० दूतहोइ गुण राश परकाजी निज हेतगत ।
देइसकल अरिनाश बुधि प्रपंच बल आपने ॥

सुनि अक्रूर जीव दुख लागा । दशदिशिसुखसुवासजनुभागा ॥
अपनेमनहिंगुणतयहिरीती । केहिविधिहरिहिसकिहियहजीती ॥
लवान सकत सचान संहारी । द्विजपतिसकतनहरिअरिमारी ॥
खंजन पुंडरीक बधनाहीं । मेष अजारिपु हतिन सकाहीं ॥
सिंधुथाह किमि पाव पपीला । जानाचहै मसक नभलीला ॥
बाल मराल मेरु शिरधरहीं । किमिहरिभक्तिबिनाभवतरहीं ॥
असविचारिमुनिमनअनुमाना । जोकहिखलहिंसिखावौं ज्ञाना ॥
तौनकाल बशमानिहिं मोरी । औगुण थूलफूल अघ घोरी ॥

दो० मीचुहकारत आपमुख कहौ कहा समुझाय ।
सभासोहाती भाषियै भणत सकल कविराय ॥

जहांनीति पथ लंघन होई । तहांसुनीति कहै सुचिकोई ॥
शोभानाहिं मिलै अपमानू । पर्मचतुर भाषत यहज्ञानू ॥
शीसनाइकर जोरि सप्रीती । कंसहि कहा यदुप यहिरीती ॥
कृपासिंधु भलमंत्र विचारा । यहि उपाय जाइहि अरिमारा ॥
संभव होत असंभव नाहीं । अमिटजलजभवबरण सदाहीं ॥
मनुज मनोरथ करत अपारा । होतकर्मवशजो होनिहारा ॥
मनचीती होवतन नृपाला । यहआगम शोच्यो तत्काला ॥
कोपरिणाम जान कसहोई । कर्माधीन दुःखसुख दोई ॥

दो० मानि रजायसु शीशनृप जाब अवश्य बिहान ।

संकर्षण यदुनाथ कहँ लाउब बचन प्रमान ॥
असकहि निज आलय गये बुधि सागर अक्रूर ।
मंगल भजिले श्याम पदक्यों भटकत मनकूर ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसनारदादिसम्बाद
वर्णनोनामसप्तत्रिंशतिमोऽध्यायः ३७ ॥

दो० पारसको गुणजान किमि कोलभील बनवास ।
उपलजानि पाये तजत लहतन पारसत्रास ॥
तिमि मूरख लहि चतुरनर गुणनिधि कृतअपमान ।
जानेविनु नहिंदोषकछु जानत विबुध महान ॥
सुनि पछितावत अंतपुनि जानिगुणाकर रूप ।
याते अधम अबुद्धजग परे विषयके कूप ॥
राधावल्लभ सुयश शुचि जानि परिहरत सोइ ।
यमपुर में पछितात फिरि कहा कहौं तबहोइ ॥
तू मंगल सानन्द यशगाउ श्याम करमीत ।
पावै सकल सुकामना छायरहै शुभगीत ॥

जिमि केशी व्योमासुर मारा । नारदजिमिअस्तुतिअनुसारा ॥
सो चरित्र सुखदानि महाना । चितदै सुनौ समाद सुजाना ॥
तुरंग स्वरूप असुर ब्रजआयो । महाभयंकर जगदुखपायो ॥
कोपवलित दृगअरुणबिशाला । कृत फुंकारमनौ अहिपाला ॥
कर्ण पुच्छ ऊरध गति कीन्हे । निजसुरमहिमर्दतअनचीन्हे ॥
इला चरण पटकत पविपाता । बोलत नीरद शब्दअवाता ॥
ताहि बिलोकि गोपगण भागे । आये सकल श्यामके आगे ॥
अश्व एक प्रभु रूप भयानक । आइगयोयहिठाम अचानक ॥

दो० लक्षतहीं भयउर छयो भयो ज्ञान को नाश ।
सुनतश्याम आये तुरत खलतटनृप अनयाश ॥

पाटवास कटि बांधि मुरारी । ठोक्यो ताल सगर्ज गजारी ॥
कंस सुहृद दोहदशुभताको । वपु वाहन आयो मृतु हाको ॥

आननकहा प्रचारत नीचा। ममअविदूरि आउतजिबीचा॥
देखौं तव पौरुषबल आजू। कबलगि दीप पतंगा काजू॥
मदरज मृत्यु पासगलतेर। परी अधम आयो ममनेरे॥
सुनि दुर्नाद क्रोध उर बाढ़ा। करतमनोरथ निजमनगाढ़ा॥
आजुत्रिलोकौं हरि बलपूरा। रच्छहुं कुल अब भंजिगरूरा॥
मित्रकाज करि जाउं अगारा। चहतपपील अमृतनिधिपारा॥

दो० मुख पसारि धावत भयो करिजड़कोप अपार।
जनु जग भक्षक तन धर्‌यौ गहनचहत संसार॥
सो० लील यैव तेहि घात प्रथम श्याम टारत भये।
प्रभु सुखपूरणगात दैत्य देखि जलनिधि घटत॥

वार द्वितीय असुर पुनिधावा। गरजत घोरश्याम तटआवा॥
तासु बदन निज भुजअसुरारी। कुलिशकठोरकीन्हपुनिडारी॥
पेल्यौ करिबल सहज कृपाला। दिगद्वारा मूंद्यौ महि पाला॥
विह्वलह्वै कृत मन अनुमाना। भयोनिधनजाइहिममप्राना॥
यह कसिभई काल मुख चापा। बल अपारनाश्यो परितापा॥
गति भइमोरि मीन बनसीसी। निजलयमेलजीवबिनसीसी॥
तस मैं आपु कालकर भच्छा। तटनबंधु हितु करै जो रच्छा॥
शोचि अनेक भांति बलठाना। नृप उपायकीन्हे खलनाना॥

दो० कामन आव उपाय कोउ रुक्यौ स्वासरबकेर।
जठर फूटि छूट्यो रुधिर सरि धारातेहि बेर॥
सो० ग्वाल सखा सब आय यह अचरज देखनभये।
प्रभु आगे चलि जाय गंधाविट्प तल शोभिये॥

यहि अनमिषऋषि कौतुकरूपा। कर बीणा आये तहँ भूपा॥
अभि बन्दन सनीति करिराजे। तिहुसमाज गुण हरिकेसाजे॥
अनुकम्पा कूपार अपारा। तव प्रतापको जानन हारा॥
करण नेति कह पावन भेवा। चरितअकथकोकहिसकदेवा॥
कवि बुध चतुर आन संसारा। निज मतिसरिसकरतसुबिचारा॥
परिपूरण कथि सकत न कोई। जापर कृपा जाननर सोई॥

गुण रत्नाकर तुम्हरी दाया । एक परन्तु भेद हौं पाया ॥
रचि स्वतंत्र मानसवपु स्वामी । भक्त सुखद उर अंतरयामी ॥
दो० इलाभार तारन निधन खल अपयशी विचारि ।
सन्तरंज आपुहि भये ब्रज नरतन असुरारि ॥
सदादास रंजन गुण सागर । करतसुयशतिहुलोकउजागर ॥
कल्प कल्प धरिबहु अवतारा । कर सरोज धरभार उतारा ॥
अबजस उचित होइ तसकरहू । दासन के कलेश प्रभुहरहू ॥
बिहसितिनहिं आयसुहरिदीना । नतिसति करिसुरमारगलीना ॥
गोपालक जे सखा सुजाना । तिनहिंबोलि बटतटभगवाना ॥
राज सभा करिखेल सचारा । मंत्री मित्र प्रधान पूचारा ॥
चमूपाल गोपाल बनाये । विभुवैभवप्रति आपु कहाये ॥
न्याय शास्त्रते अधिक नियावा । गोपी नाथ समोद चुकावा ॥
दो० चोरमहीचनि खेलिपुनि बिरचिश्यामदैतारि ।
आन चरित अब भूपसुनु भूपतिकंससुरारि ॥
केशी निधन करयो नँदसूना । ब्योमासुरहि कहतरुः दूना ॥
तू अजीत भव कलित प्रतापा । ममहित अरिहिदेहकिनतापा ॥
जसहरिकाज केशरी जाता । तसतूमोहिं अखिलसुखदाता ॥
शत्रु घात करु आजु प्रबीना । मोरेकाज लाज धरु हीना ॥
जोरि बाहु आनन मुखबानी । सबिनयनृपहिकहतअभिमानी ॥
निज बश सरिस करौंहिततोरा । पर्म धर्म सेवक यह मोरा ॥
यह शरीर जड़ अंतहुअंता । मीतभूपलगि तज बुधवंता ॥
प्रिय जीवन स्वामी हितजीवा । लाज्जित दैनसकतअवसीवा ॥
दो० सेवक बनिता धर्म यह पतिहित तजै शरीर ।
चल्योप्रतिज्ञाकरि तुरत असबदिखलरणधीर ॥
वृन्दावन तट रूप गोपाला । हरिमायाबश रचि महिपाला ॥
गयउ जहां प्रभु खेलत राजा । पूरुब खेल बाललै आजा ॥
करि प्रणाम हरिसों कह बानी । मम मन तुवसँगखेलहुंआनी ॥
निकट बोलिकहखलमदभानन । समुदयथामृग लखिपंचानन ॥

अन्तरगति बिचारि तेहिकेरी। कुछ न कानि मानै तू मेरी ॥
निधड़क कौतुकरच्यो सुजाना। जो करतव्य कर्म्मअनुमाना ॥
अकर करत करता अपलोका। प्राप्तिकहोतअमितअपशोका॥
हरषिलवा जिमि जूह सचाना। किधौं कुरंगव्यूह अहिभाना ॥
दो० किधौं कलभ द्विज राजपै बृकराजी जनुमेष।
जातभयो अंतक बिवश करिउर गर्ब विशेष ॥
कौतुक करहु मेष बृक केरा। कह्योश्यामप्रतिखलतेहिबेरा॥
हँसिकह हरि बृक बनुतू भाई। मेषरूप मम सखा सहाई ॥
बिपुल पुलकयक दुहिताभयऊ। कौतुकनिधिदूसरदिशिलयऊ॥
यक यक गहिलै जाय उठाई। कन्दरादि नृप राखहि जाई ॥
उपल द्वार दै बहुरौ सोई। लै मूंदे रह सखा न कोई ॥
अकसर हरिहि पाइ मदछावा। बचनसमर्पित प्रभुहिसुनावा॥
आजु कंसकर कारज करहूं। यदुकुल हनौं भूप भयहरहूं॥
परिहरि ग्वाल रूप त्रिबुधारी। सत्य अजा रिपु काय सम्हारी॥
दो० झपट्योकोपितश्यामकहँ कण्ठगह्योतबश्याम।
हनि मूकन भूतन धस्यो मष पशुसम तेहिठाम ॥
सो० अन्तर गति भवरूप सखा गुफा ते मुक्ति किय।
मंगल तिहुँपुर भूप करतचरित आहि जम नियं ॥
इतिश्रीमद्विविध किल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायां मंगलदास बिरचितायां केशीव्योमासुर
बधबर्णनोनामअष्टत्रिंशतमोऽध्यायः ३८॥
दो० सुनत मूढ़जब चित्त दै गुणिजनको उपदेश।
चतुर होत संसर्ग बश रहतन दुर्बुधि लेश ॥
जिमि कुधात पारस परसि तजत बरण अनयास।
सुंदर काय हिरण्यलहि करत भूप शिरवास ॥
द्विजसुजानसँगपढ़त ज्यों हरियशसहितसनेह।
ताप्रमाण मूरुख स्वजन होतसंगबश तेह ॥
जेभरमत भवदधिकुमति तेनलहत मतसत्य।

तजिके रुक्मिणि रमण पद पावत अंत अपत्य।
तूमन मेरी सीखसुनि परिहरु आनविचार॥
अभय ध्याउ असुरारिपद नशैसकल अघभार।
नरकुमुदिनिशशिभूपतिसुन्हू। बिशदचरितहरिकर यहगुनहू॥
पूषण तिथि केशी नभ मारा। प्रात त्रयोदशि कंस जुहारा॥
आज्ञा पाय चला अक्रूरा। वृन्दाबनहिं सुमति गुणपूरा॥
रथारूढ़ सानन्द सिधाये। कृतविचारमग अमितसोहाये॥
को जपतप मख तीरथ दाना। आजुफलितभो ममभगवाना॥
जासु प्रसाद तामरस पादा। लखौंअक्ष समुद अविषादा॥
जन्म सुफल ह्वैहै श्रम हीना। अद्भुत चरितआजुविधिकीना॥
कंस संग सब दिवस गँवायों। हरिकरनाममुखहि नहिंलायों॥
दो० भजनभेदनिधिजाननहिं यह संचितफलआहिं।
ता प्रसाद प्रेरित हृदय नृप पठयो हरि पाहिं॥
इमिसुखमग्न बिसरिसुधिगयऊ। आपु जीव उपदेशत भयऊ॥
निज चख हरि सारसगतिवंता। आजु विलोकौं आरतहंता॥
जीवनफल बिनुतपमख लेहौं। पूरण सुख जड़ इंद्रिन देहौं॥
जोरि पच्छ पाणी पद परसों। चरणरेणु धरिहौं शिर करसों॥
मली दलन पद्मिनि पगजोई। धिषणभर्गु ध्यावत भ्रमखोई॥
कालीभयहर जग दुखनाशन। नभगामी स्वामी शिरबासन॥
रासधाम नृत्ये अमि बरसे। जो पग ग्वालनहितकरिपरसे॥
सबरस दानिन के अनुगामी। त्रिपुरबंदनिय नवतन बामी॥
दो० सुरसरिपितुपदविदितजग रजलहि शिल भै नारि।
लोक लोक मापक सुखद हरिहित हृदय विचारि॥
ते सुर दुर्लभ चरण निहारौं। संचितकलुष सहज निरुवारौं॥
होत सगुण सुंदर सुखदाई। मृगराजिका सुदच्छिण धाई॥
बहुरि जीवभ्रम मो वश मोहा। कंसदूत समुझत चित छोहा॥
पुनिमुनिकहत पोचमतिशोचै। कसनविथुर तू ममसन मोचै॥
अंतरयामी विदित बिहारी। अरि हितु पहिचानतबनवारी॥

मोहिं प्रणामकरत लखि धावैं। निजजनजानिस्वकण्ठलगावैं॥
जलज हस्त धरिहैं शिर मोरे। मुखमृगांक निरखौं निमिक्षोरे॥
चष चकोर सुख लहैं अपारा। धन्य जन्म ममभा संसारा॥

दो० इमि कल्पत बहु कल्पना बृन्दाबनगो भूप।
बनते मोहन राम उत आये मोहन रूप॥

बाहिर ग्राम भेट शुभ भयऊ। लखि अक्रूर यान तजिदयऊ॥
जासन सत्य प्रेम जो करई। सो तेहि लहै न संशयपरई॥
गद्गद कण्ठ मग्न पद नेहा। धावत बिसरिगई सुधि देहा॥
दंड समान चरणतल गिरेऊ। पूरण प्रीति नैनजल भरेऊ॥
विह्वल आनन आवन बानी। सत्यभई अक्रूर कहानी॥
प्रभुकर कमलधर्‍यो हँसिशीशा। अतिहितयुतउठायअवनीशा॥
निज निकेत लै गये मुरारी। देखिनन्द अति भये सुखारी॥
कंठ लगाय मिले उठिबासन। करिसत्कार दीन्हशुक्लासन॥

दो० उबटन लै सेवक चतुर उबट्यौ सकल शरीर।
चंदनगंधि प्रकारबहु चरच्यो पुनि कुरुबीर॥

षटरस भोजन बहुरि जिमायो। अचवायो शुचिपान खवायो॥
राजे सभा पूछि कुशलाई। कहत परस्पर सकल सुनाई॥
यदुबंशिन महँ तुम गुणसागर। सतिबादी सनेह मतिआकर॥
कंस संग कस रहत गोसांई। तासु सभा गति कहौ बुझाई॥
सुनौ तात का कहिय प्रसंगा। दुख अर्णव बूड़त खल संगा॥
कंस दोष दुख प्रजहि अपारा। यदुबंशी कर किमपि उबारा॥
पशु रिपुजसगवास निरदाया। कंसप्रजहितस बिधिनिरमाया॥
तुम जानत समस्त ब्यवहारा। वृथा बकत तुम सों यहिबारा॥

दो० बिबिध बारता करत नँद हितू पाय अक्रूर।
बिहसत बैठे ग्वाल बहु हरि प्रसाद सुखमूर॥

सो० तू मंगल सुनि सीख आन ओर हेरै न अब।

करुरज पाप करीख मेलिकृष्णरस अर्जुनहिं ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांअक्रूरवृन्दाबनगमनोनामैकोन
चत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

दो० पूरक कुंभक करत बुध रेचक पवन प्रभान ।
प्राणायाम सनेम नित साधत समुदमहान ॥
प्रणवजपत अजपागुणततत्त्वबिलोकतनित्य।
योगपन्थसांख्यहुकरत लहतगूढ़मतसत्य ॥
स्वबश जीवराखतसदा तजत देहचितचाहि ।
मुक्ति लहत सायोज्यते यामहँ संशयनाहि ॥
जे यह मगपावत नहीं कठिन कर्म अनुमानि ।
तिनहिंउचितपरिहरिभ्रमहिंभजैंश्यामसुखमानि॥
बिनुश्रम पावै मोक्षपद सत्य बदत यह कान ।
तासु अंगहू कहतयह कीजिय बिबुधप्रमान ॥

करि बारता नन्द चुप साधी । सैनहिं यदु हरि बोलिनराधी ॥
सादर मथुरा चरित सोहावा । पूछतहीं अक्रूर सुनावा ॥
दंपति तात कहौ कस भाई । जिनहिं कंस दुख देत सदाई ॥
कस्मल खानि भूपमति हीना । जेहियदुकुलहिअमितदुखदीना ॥
कोउ कलंक रुज यदुकुल घेरा । स्वबश बिथित कीन्हे चहुँफेरा ॥
जींव अदृष्टबश्य तिहुँकाला । नटबशजिमिद्रुमचरकृतख्याला ॥
तदपि सत्य अक्रूर प्रबीना । सह बसुदेव दुःख अति पीना ॥
सोमम हित यामहँ भ्रम नाहीं । कंसहि देत प्रथम गहिबाहीं ॥

दो० हमहिं गुप्तह्यां करि गये कंस जानि दुख दीन ।
चलत कहा तुमसों कछू पिता कहौ सु प्रबीन ॥

संकट बिबश सुरति कृत मोरी । अथवा कछु न कहततपधोरी ॥
त्रिपुर ज्ञान गति जानतआपू । मनुपुर उज्ज्वल प्रगट प्रतापू ॥
नृपति अनीति अभण पुरवंदा । उग्रसेनि बसुदेव निकंदा ॥
कस्यो चहत धाता गति हारा । प्रारब्धी कृत सब संसारा ॥

जादिनते ऋषि गुण पुर गामी । तुव अवतार भेद बद स्वामी ॥
तबसे दिहिसि बन्दि बसुदेवै । कर पद कारागार करेवै ॥
अति ब्याकुलदम्पतिमनमाहीं । बदत कृष्ण हे कृष्ण सदाहीं ॥
अपर चरित जानत पै सुनहू । उचित होयतसप्रभुचितगुनहू ॥
प्रात बाम मख बाम सम्हारा । शर धर धर्योमध्य बिकरारा ॥
अरि बल्लभ सुजान अनज्ञाती । देश देश नृप नाना जाती ॥
कौतुक लागि भूप गृह आये । मधुपुर मुक्ति सुतासब छाये ॥
हमहिं इहाँ पठवा तुव हेता । कहा कि लाइय नन्दसमेता ॥

दो० अपर ग्वाल सब आवहीं देहिं आनि उपहार ।
बिहँसि बंधुद्धौ नन्द सन कहासकल व्योहार ॥

पिता तात अक्रूर सुजाना । कहत कंसबोल्यो मख ठाना ॥
गोरस अजामेष पितु लीजै । भेंट नराधि यज्ञ महँ दीजै ॥
गोप निकर लै चलिये ताता । नृप निदेश मेटत अज्ञाता ॥
अखिल प्रकार बुझाय बखाना । समुझिनन्दकहभलिसज्ञाना ॥
बोलि चतुर चर सम्मत भाखा । मत समग्र बद गुप्तन राखा ॥
आयसु समसेवक गण धाये । गृहप्रतिमबहिसहजसमुझाये ॥
रसानाथ मख प्रात करैहैं । नाना देश प्रजानृप ऐहैं ॥
हमहिं लेन आये अक्रूरा । चलौ समस्त लखैं मखरूरा ॥

दो० भेंट हेत प्रति भौनते गोरस मेष अजान ।
पाय शासना नन्दकी सब लाये गुणवान ॥

जल माखन अज मेष अपारा । महिषादिक आये नँदद्वारा ॥
शकट भार केतिक नँदराई । चले संगलै ग्वाल अथाई ॥
हरिनीलाम्बर सुहृद समाजा । यानारूढ़ भये सुनु राजा ॥
भये नन्द उपनन्द अगारी । अनुगामी सबके शकटारी ॥
युवतिन सुन्योश्याम बलरामा । मथुराहिजातनृपतिमखधामा ॥
बिकलभईंजसमणिबिनुव्याला । किधौंतिमिंगिलबिनुकीलाला ॥
अथवा प्राणहीन तन भयऊ । बिरह शोक सबके उरछयऊ ॥
प्राबिट धन जस हरिबश धावैं । तिमिपारिहरिगृहहरिपहँआवैं ॥

दो॰ झटित झपित त्रिय राधिका दिग्दश हरितटआय।
घेरयोरथ हरिचंद्र जनु गण चकोर उठि धाय॥
करहिं बिनय जोरे द्वौ पाणी। कलितकलेशबलित दुखबाणी॥
त्यागत हमहिंकासुहित स्वामी। प्रीति उदधि प्रभुअंतरयामी॥
सरवस तज्यो लाज कुलकेरी। केवल प्रीति कमल पद तेरी॥
साध सुजान सनेह कृपाला। अक्षयसदाजिमिशरिकीलाला॥
हस्तरेख जस रहत सदाहीं। तसकुलीन हितुगुणमनमाहीं॥
मूरुख प्रीति नाशतिन लहई। अंजलि नीर नहीं थिररहई॥
कोटि यतनकोउ करै सुजाना। मूढ़ सनेह कहा परमाना॥
स्वारथ मीत जौन भव माहीं। जानत कहा नेह धर माहीं॥
दो॰ पावसमें दृढ़रहत नहिं जेहि प्रकार मरुभीति।
तथा कृपानिधि बिदित जग नीच मूढ़की प्रीति॥
को अगास हमसौंभा नाथा। पृष्ठि देत जेहिअघंयदुनाथा॥
पुनि अक्रूर ओर लखि नारी। कहत समर्षिबचन दुखभारी॥
को ज्योतिषी बुद्धि गुण हीनो। जेहिअक्रूर नामतोहिं दीनो॥
हमरी जानि क्रूर बड़ तूहै। तोते अधम आनको भूहै॥
जासु दरश बिनुप्राण अनाथा। निजसँगलियेजातब्रजनाथा॥
व्याज मूलभा हम कहँ आई। किमि अक्रूरकहौ यहि माई॥
धूमकेतु त्रिय परहित भयऊ। कोरथ मूढ़अलख दुखदयऊ॥
इमि कटुबचन बदैंतजि बासा। गहयोकृष्णरथदिग्पतिआसा॥
दो॰ अबला मथुराअति सुमुखिसुनसखितिनहिं बिलोकि।
बहुरि श्याम किमि आइहैं असकहि रहीं सशोकि॥
तब न सुरति करि हैं ब्रजकेरी। परी बिपति यहआलिघनेरी॥
बड़भागिनि मथुराकी नारी। निरखहिं नैनन शमबिहारी॥
जपतप भजन भावकोउ चूका। परयो प्रसिद्ध उठतजेहि हूका॥
बिछुरत त्राता प्राण बिधाता। त्रियराजी बिलपत कुरुताता॥
प्रभुप्रति सविनयबहुरि बखाना। गोपीनाथ नाम जगजाना॥
फिरिकेहि कारण तजतगोसांई। लेतसंगकस हमहिं न लाईं॥

बिनु देखे मुख बिधु सुखराशी। कोकजीव जाइहि मुदनाशी ॥
प्रथम प्रीति जोस्यो का लागी। अबकाअघहिप्रीतिपरित्यागी॥
दो॰ यहिबिधि युवतिबिछोहबश अतिअधीरबतराइ।
दुखसागर महँ बूड़हीं हरिमुख दृष्टि लगाइ॥
यकटकनिरखैंश्यामदिशि जिमिचकोरशशिओर ॥
दृगजलजनुझरनाझरत उतब्रजभायह शोर॥
नरनारी समस्त अनसाथी। ब्याकुलचलेयथा शारिपाथी॥
यशुदाकरिसनेह निरब्याजा। कंठलाय भेंटत ब्रजराजा॥
रोदत कहत पुत्र प्रिय प्राना। आयहु बेगि तात अस्थाना॥
जेतिक दिवस लगैं बदि दीजै। भोजन सुरस संग धरिलीजै॥
दोहद ह्वां न कस्यो काहूसन। ममसनेह राख्यो अपनेमन॥
तबहीं जान त्यागि रसराई। जननीआदि सकलसमुदाई॥
करि प्रणाम मातहि चढ़ियाना। मथुरहि चले राम भगवाना॥
तेहि अवसर रोदहिं तिय ठाढ़ी। प्रभु बियोग अनुरागहिबाढ़ी॥
दो॰ भुज पसारिराधा हितू कहा सबन समुझाय।
दिवसदीपके अंतरहि हौं ऐहौं यहि ठांय॥
ऐसे रुदत बदत द्वौ ओरा। गयो दूरिरथ नन्दकिशोरा॥
जानकेतु भा अलख महीशा। गिरींअचेतयुवतिधुनिशीशा॥
हाहा कृष्ण प्राण धन स्वामी। तेरहसुरपति चरण नमामी॥
गौरी बिनुपय धाम कहौं हौं। किधौं दीप बिनु गेह लहौंहौं॥
गुणबिनु द्विज मंडली बताऊं। जल बिनु मीनहिं उपमापाऊं॥
रहितस्मृति अबला धरपरहीं। चेति उठहिं पुनिपुनिथरहरहीं॥
अवधि आश चीन्हींगृह आई। रहीं सत्य पद प्रीति दृढ़ाई॥
बिश्वपाल पशुपाल नृपाला। यमभगिनी तटगे तेहिकाला॥
दो॰ कीन्हो राम बिरामरथ बटतट सुनु नरराय।
हरि आयसु अक्रूर तब यमुना गयो नहाय॥
जनकहि नाथ कहा तुम चलहू। पाछे हौं आवत सँगबलहू॥
न्हाय लेइ पितु तात सुजाना। सुनत नन्दकियअग्रपयाना॥

बसन उतारि धोइकरपादा । करिआचमन बेद मरयादा ॥
डुबकी मारि ठाढ़ ह्वै पूजा । तरपणजप कीन्हों छलदूजा ॥
पुनि जलमध्य खोलिदृग हेरा । सरथश्याम देखे तेहि बेरा ॥
शिर उठाय द्रुम दिशा बिलोका । लखेतहां हरिबिधु जगकोका ॥
अधिकाश्चर्यित मन तेहिकेरा । रथपर दूरि श्याम बल हेरा ॥
पय बिचपुनि लक्षत यह कैसी । केहिहरिकहौंकिबुद्धिअनैसी ॥

दो० मनशोचत अक्रूरबहु हरि रचि श्रुति भुजरूप ।
दयो दरश तेहि कृपा दधि प्रभुगतिभूपअनूप ॥
गदापद्म अरु कंबुयुत चक्र सुआयुध चारि ।
सुर किन्नर गंधर्बमुनि सकल संत हितकारि ॥
दरशायो अक्रूर कहँ अद्भुत चरित कृपाल ।
जोबिलोकि भ्रमबश अधिक भयेयदुकुलततकाल ॥
मंगल करि दाया अधिक दास जानि सुखदाय ।
दयोदरश भजुताहि तू दुस्सह बिपति नशाय ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांअक्रूरबिष्णुरूपदर्शनो
नामचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

दो० चेष्टितचुम्बक होतजिमि लोह देखि बिनुप्राण ।
अरुबिलोकिअत्रिजबढ़त राकादधिअप्रमाण ॥
कामीजनलखिकामना लेत मुदित मनमानि ।
आनबस्तुनिरखतनहीं तजत जानिदुखदानि ॥
पूषण लखि कुबलय यथा बात आतपी देह ।
सुख पावत तिमि जीवतू करिले श्यामसनेह ॥
स्वारथ बिनकरि दोहदै ध्याउ सूनु बसुदेव ।
जीवत सुख संपति लहै अंत समय पुरदेव ॥
बातनसों मुनिसम बने दंभगलित भवलोग ।
तजि पाखंड बिबाद भजु हरियहतोकों योग ॥

शुकाचार्य राजहिपुनिकहयऊ । यदुनायकसबरस भ्रमिरहयऊ ॥

मेधा चकित बिचक्षण ज्ञाना। हरिमायावश भयो सुजाना॥
सर्वोंबिधि बिचारि हिय हारा। दुधा लक्ष यदुनाथ कुमारा॥
निपटाकुल हरिपद तेहि ध्याये। मतिसममनमहँहरिगुणगाये॥
हरि कर रीति बिदित यहवेदा। दासहि देखि सकतनसखेदा॥
मध्य स्मृत सुज्ञान उरछावा। प्रेरित श्यामकुमतिबहिरावा॥
पहिचान्यो गजारि गामीको। परिपूरण तिहुँपुर स्वामीको॥
पानी पाणी बाँधि बखाना। प्रणतिसहितअष्टांगप्रमाना॥

दो० सुत इंदीवर आपु प्रभु निरमानत भव सर्ब।
कलभ शत्रुध्वज बहुरिह्वै पालतजीवअखर्ब॥

धूरजटी शरीर बनि नाशत। सबगुणबलितआपुपरकाशत॥
सतरजतम कछु बनत न गाये। नेतिकरणबदि पदशिरनाये॥
सेवक बंधु दास दुख जानी। बिरचितबपुभवनिजबशआनी॥
खल घालक पालक जनसाधा। ध्यावन तवपद सदाअबाधा॥
देव तीनि कन्या देबारी। लोकपाल सुरपाल खगारी॥
द्विज द्विज राज राज अरुरंका। बिप्रनीच कादर भट बंका॥
मुनि ज्ञानी ध्यानी बिज्ञानी। दाताकृपणसुमतिमतिप्रानी॥
गज पंचानन गजगजराजा। जड़चरचरततीनिपुरभ्राजा॥

दो० तत्त्वादिक जो लखिपरत सब बिभूति त्रैधाम।
उपजे तुम्हरे अंशते जे समग्र नरबाम॥
सो० अंत मिलत तुव रूप शूरकरावलि हंसजिमि।
बिषतजि अमृतभूप मिलत बलाहकतनबरषि॥

अथवा गगन पक्षसुत जैसे। चीन्हत ज्ञाति आपु जगतैसे॥
महिमा नाथ अनूप अपारा। कबिकोबिदकोउलहतनपारा॥
रूप बिराट प्रगट पुरतीनी। लखतनबिषयकबुद्धिमलीनी॥
शिरनभपवन श्वाससुखआगी। सुधाबीज पद क्षमासभागी॥
सरिपति उदर नाभि गंभीरा। बीस लक्ष रोमावलि तीरा॥
करण दिशाचषशशि अरुभानू। मुदिरनाथभुजअजबुधिज्ञानू॥
अहंकार शंकर सुख कारी। बचनोचार मेघ ध्वनि भारी॥

दिवस रैनि खैचलनि निमेखी । अपर बिभूति अंगबशलेखी ॥
दो० जो बिभूति तिहुँ लोक सो बसत आपु तन माहिं ।
लिंगरूप धारे रहत परिपूरण भ्रम नाहिं ॥
को पहिचानै तुमहिं प्रभु अलख अरूप अनूप ।
ब्यापक चौदह लोक तुम जल थल एकै रूप ॥
छं० एकै स्वरूप बिराज तिहुं पुर काज दासनके करौ ।
सर बाग पूरण ज्योति माया करतजोईचितधरौ ॥
निजदासजानिकृपाल मोहनशरणअपनेकीजिये ।
शुभभक्तिअनुपायनदयानिधि जानिकिंकरदीजिये ॥
दो० यहि बिधि अस्तुति करत बहु नृप अक्रूर प्रबीन ।
मंगल तू तजि श्याम किमि होत आनतट दीन ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांअक्रूरस्तुतिबर्णनोनामैक
चत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥
दो० धूमकेतु दाहत नहीं अर्जुन सकत न भोरि ।
शस्त्रा बाधित ब्रह्म लव सबरस सकत न बोरि ॥
द्विज क्षत्री नहिं बैश्ययह शूद्रनअंत्यजआहि ।
भयो न है अरु है नहीं आगेहु होने नाहि ॥
अर्थबसतजिमिवाक्यमहँ समुझतकरतप्रकास ।
सुरसरि सूर सुता बिषे यथा शारदा बास ॥
अबिनाशी पूरण कला ब्रह्म अंश यह जीव ।
मायाबशभूल्योनिजहि आप आपु सुखसीव ॥
तूमनमंगल सीख सुनि पहिचानै किनआप ।
ध्याउ सदा रुक्मिणि रमण नाशलहै त्रैताप ॥
महाराज नटवर नट माया । करि जलमें निजरूप दिखाया ॥
अमित बिभूति दिखाय समेटी । कौतुक दधि जेहि मायाचेटी ॥
तब अक्रूर तीर सरि आई । कृत प्रणाम अति नेह बढ़ाई ॥
श्री हरि पूछ तात बड़ि बारा । कियो न्हात बरनिय मतसारा ॥

शीतल छीर धीर कस धारी। कहौ प्रसंग समस्त बिचारी॥
पितु गय दूरि संग परिवारा। प्रबिशि नीरको ज्ञान पसारा॥
काआश्चर्य्य बिलोक्यो ताता। हमहिं बदौ गुण पूरणगाता॥
यह चिंतमन अमित मन मोरे। निरबारहि बरणे सो तोरे॥
दो० जोरि पाणि यादव कहत तुम सर्वग सर्बज्ञ।
नीक दरशपयमधिदयो लखतज्ञाननिधिअज्ञ॥
बरणि सकत नहिंदीखजो तुव चरित्रजनपाल।
दृढ़ भरोस छायो उरहि मथुरहिचलियकृपाल॥
अब न बिलम्ब करिय सुरपाला। चलिय शीघ्रकारजमहिपाला॥
सुनत बिहँसि हांक्योप्रभुयाना। सहज सनेह बिबश भगवाना॥
नन्दादिक सब गोप सुभासा। बाहर नगर कस्यो सुखबासा॥
निरखत भीम बन्धु हरिकेरा। चिन्तत नंदादिक तेहि बेरा॥
कृत स्नान लाग्यो बहु काला। आये अबलग नहिं गोपाला॥
तस्मिन समय सकल सुखमूला। आवत भये लखे गत शूला॥
सविनयनीतिमिलितमृदुबाणी। कह अक्रूर जोरियुग पाणी॥
ममनिकेत पावन प्रभु करहू। चरण कृपाकरिगृह लगुधरहू॥
दो० निज दासन दीजिय दरश होय मूलआनन्द।
सुनि सनेह सानेबचन बोले श्री नँद नन्द॥
प्रथम भूपकह सुद्धि करावौ। तापश्चात स्वगेह दिखावौ॥
बिनय समग्रसबन की कहहू॥निजप्रणप्रतिफलनृपसन लहहू॥
तुरत चले यदु सुनिअनुशासन। सत्त्वर गये कंस नृप आसन॥
आवतलखि हरिआसनत्यागी। मिल्योयद्धहिगतसुखदुखपागी॥
सादर कर कर गहि सिंहासन। बैठास्यो पूछयो इमि तासन॥
समुद तात आयउअरु गयऊ। समाचार कहुब्रजजस भयऊ॥
सुनु रसाधि ब्रजमहिमा भारी। किमि बरणौं लघु बुद्धिहमारी॥
महासाधु नृपनन्द सुजाना। तूनिदेश मान्यो परमाना॥
दो० राम कृष्ण संयुत निकरभूप गोप सँग भीर।
भेट सहित आवत भये उतरे सरिता तीर॥

यह सुनि कंस मुदित मनकैसे । कीटपतंग दीप द्युति जैसे ॥
कीन्ह काज तुम अकथ महाना । याहिप्रतिफलनबुद्धिअनुमाना ॥
ममद्रोही लाये भल करेऊ । तवकीरति प्रणगुणजगभरेऊ ॥
अब गृह जाइ करिय बिश्रामा । सुनत गये यदुपतिनिजधामा ॥
कंसासुर मन अमित बिचारा । अंतक बिवश ज्ञान बलहारा ॥
इत हरि राम पितासन भाषा । देखिय नगर हृदयअभिलाषा ॥
सुनत प्रथम मिष्टान खवाई । पुनि कहजाहु अग्रुकद्वौभाई ॥
आयहु बेगि बिराम न होई । बनै बात कीजिय सुतसोई ॥
दो० पाय रजायसु तातकर ग्वाल सखा सँगलाय ।
चले नगर देखन प्रभू उर आनन्द बढ़ाय ॥
फलककुभा सबनगर बिलोका । बनउद्यान निरखि हरशोका ॥
नाना बरण सुमन फल राजी । सोहत वृक्ष सुकृत परकाजी ॥
सर जल अमल मलीहर सोहैं । कंजावलिससून मन मोहैं ॥
चंचरीक रस राग भुलाने । गूँजहिंअधिकन परत बखाने ॥
सर तट सारस बिबिधबिराजैं । मंजुरूप किलकहिं कलगाजैं ॥
सदाचार डोलत गुण रूपा । शीतल गंध मंद युत भूपा ॥
उपबन मध्य सुरंग प्रसूना । नाना जाति लसत षट जूना ॥
इमि शोभा बिलोकि बन बागा । उपज्योहृदय अधिकअनुरागा ॥
दो० अखिल सखा सँग लाय प्रभुचले नगर कहँ भूप ।
ताम्रकोट दिशि चारिहू खाई सरि अनरूप ॥
रतन जटित सस्फटिक सोहाये । चारिद्वाररचि गुणिन बनाये ॥
अष्ट धातु मय लाग कपाटा । चमू चमूप सोह चहुँ बाटा ॥
नील पीत धौरे अरुणारे । धवल धाम रचि सुघर सवाँरे ॥
निरखत ग्रीव पृष्ठि कहँ धावै । मेघ घटा सम उपमा पावै ॥
गृहप्रति स्वर्ण कलशअससोहैं । बिद्युत छबिकहँ निंदतजोहैं ॥
श्वेत ध्वजा बग पांति बखानी । बरषत मनौं सुगंधि उड़ानी ॥
द्वार द्वार युत फल रम्भातर । धरेकलशशुचिलालितसबनतर ॥
बंदनवार बांधि प्रति धामा । बाजत कलरव बाजन तामा ॥

दो० भूप भवन शोभा अकथ लखिद्युति अंग लजात ।
गोप सखन श्री मुख प्रभू सकल बुझावत जात ॥
सो० नगर कुलाहलभूरि हरिआगम सुनि चारिदिशि ।
शीत धूप दुखचूरि धाये नर नारी निकर ॥

छन्द भुजंगप्रयात ॥

कहैं बामबामानसोंयोंसुनाई । सखीश्यामऔरामलीनेअथाई ॥
पुरीमें चहूंओर शोभाबिलोकैं । चलोदेखिये चन्दभूनैनकोकैं ॥
तजेभोज्यकोऊचलीधाइनारी । कोऊन्हातऔखातहीतेसिधारी ॥
भतीप्रेमकोऊ तजी शीशबेनी । गुहीसोगुही वैसही बाटलीनी ॥
निराभूषणै भूषणै जो सम्हारैं । उदैचन्द जैसे चकोरैं निहारैं ॥
जहांसोतहांसेचलींभावहीसों।दशाक्योंबखानौंसुजानौंनहींसों ॥
मनौं प्राविटी निम्नगापूरपूरी । चली चन्द वापै महामोदरूरी ॥
रईप्रेम श्यामैं तजे कानिभारी । अटापै कोऊद्वार हे रैंबिहारी ॥
कोऊ बीथिकासंगहीसंग डोलैं । लखैंरूपशोभा बिकैंतेअमोलैं ॥
बतावैं सुपंथै भुजाको उठाये । इतैबाट है जू नहीं भूलिआये ॥
कहैं एक सों एक ऐसे बुझाई । धरेपीतबासांसिसोहैं कन्हाई ॥
जोनीलाम्बरंगेंधरेचित्तमोहैं । बलीबिक्रमी मूशलीआलिसोहैं ॥
यही भूपके भानजे भू बखानैं । इन्हैंभूपलोकेश के ईशमानैं ॥
महाबीर संसार में और कोहै । करै युद्ध जो शुद्ध चित्तैबिमोहै ॥
बिभोजासुकोहोसुनोकालबीते । लख्योरूपसोआजुहौंनैनहीते ॥
महापुण्य पीछे करी सो सहाई । लहोदर्श गोपापपुंजैनशाई ॥

दो० इहिप्रकार नर बामसब कहत बुद्धिसमबात ।
मग्नहोतसुखभानिरखि जिमिअर्णवनिजजात ॥

जेहि रथ्या श्रीश्यामसरामा । निकसत सुनहुंभूपगुणधामा ॥
चंदन अगर अवनि मधिनारी । छोड़त धामन त पिचकारी ॥
कु मावलि अनेकतियतजहीं । हरिछबिलखिअनंगबहुलजहीं ॥
इत हरिकहत सखन समुझाई । रहो संग भूल्यो जनिभाई ॥
जो कोउ भ्रम्योजाउ बिश्रामा । यहिप्रकारपुर निरखतश्यामा ॥

बाहर नगर रजक गण देख्यो । कंसबसन तादिगप्रभुलेख्यो ॥
गावत कंस सुयश मदमाते । जड़ता बिबशन अंगसमाते ॥
दाऊ बसन लेहुसब याते । पहिराइय गोपनसुखजाते ॥
दो० आपु देह कछुधारिये । शेष लुटावहु आजु ।
वृथा न घूमिय नगरते यह करिलीजै काजु ॥
रजक अधिपतिहिसों हरिभाषा । पहिरियभूप बस्त्रअभिलाषा ॥
कंसहि मिलि आवैं पुनिलीजै । पहिसवनिआपनिकहिदीजै ॥
जो कछु भूप देइ उपहारा । लवसम लीजियजगव्योहारा ॥
हँस्यो रजक तबसुनिप्रभुबानी । घरी बनाय लेइ सज्ञानी ॥
पलटिबसन लीजिय बिनदीन्हें । शशाभाग हरिलालचकीन्हें ॥
कानन सुरभी बत्स चरावो । रोमपाट ओढ़ौ सुख पावो ॥
नटवत रूप धारि ह्यां आये । भूपति बस्त्र चहत तनलाये ॥
आये नृपहि मिलन धरिमोहा । भेंटलेन करहै चित छोहा ॥
दो० जीवन आश गवांइहौ भूप द्वारको जाय ।
गेह जाउ निजप्राणलै मम शिक्षा उरलाय ॥
हँसि कह श्याम सूध हमभागैं । तेरे बचन कठिन उरखागैं ॥
बस्त्र देत कछु हानि न तोरे । कीरति कलितरजकहितमोरे ॥
क्रोधित भयो रजक मृतुचाहा । कह्योरिसाय बयननरनाहा ॥
निजमुखलखहुप्रथम गोपाला । पाछे पहिरहु बसन नृपाला ॥
जो तुम चहत आपुकुशलाईं । मम सन्मुखते जाहु पराईं ॥
बचन कठोर तासु सुनिराजा । मास्योताहि स्वकर ब्रजराजा ॥
हितू तासु अनुगामी भागे । जाइ पुकार कीन्हनृप आगे ॥
नाथ श्याम सब बस्त्र लुटाये । हन्योस्वामिहमप्रभुभगिआये ॥
दो० प्रभुसबबसन मँगाइ करि पहिरे आपु बनाय ।
बन्धु मित्र सबसन कह्यो लेहु बस्त्र सुख पाय ॥
पहिरन लगे ग्वाल मुद मानी । बसन भेद पावतनहिं जानी ॥
अंग बस्त्र पद पहिरत सोईं । पागकसत कटि गोपजकोईं ॥
सूथनि करमेलत बनबासी । देखत प्रभु बिहँसे सुखरासी ॥

चलत अश्व सूजी यक आयो। बिबिधप्रकारबसनसो ल्यायो॥
कहिसिसनीति बचन करजोरी। इच्छा एक नाथ बड़ि मोरी॥
दास तुम्हार बिदित तिहुंकाला। पायो कृतफल आजुदयाला॥
पहिराऊं बागे गुण राशी। लहौंभक्ति सुखदादुखनाशी॥
जानिदास कह किन पहिरावैं। पावन सत्य मनोरथ पावैं॥

दो० पहिराये सानन्द तेहिं सब कहँ बसननृपाल।
भक्ति देइ सँग लैचले ताकहँ मदनगोपाल॥
बहुरि मिल्यो मारग चतुर माली नामसुदाम।
कुसुमावलि पहिराइयो बजी बधाई धाम॥
मंगल यहिबिधि कृत चरित दास सुखद भगवान।
क्यों न भजै ताके चरण दायक सुख गुणज्ञान॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांश्रीकृष्णचंद्रमथुराप्रवेशबर्णनो
नामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

दो० कपट कलेवर जे पुरुष बरही सम संसार।
मधुर बचन अहिअशन कृत स्वाभाविक व्योहार॥
छली जानि संगति तजै बली जानि संग्राम।
लोभ जानि दानहिं तजै भोगजानि निःकाम॥
छेम जानि क्रोधहि तजै प्रीति जानि छल भाव।
दंभ जानि सत गुण तजै अरु विवेक रस ठाव॥
मदत्यागै यह सकलगुणि पदलहि कुलकीकानि।
त्योंलहि पूरण ज्ञान बुधि करै कलुषकी हानि॥
मूल तिहूँपुर ज्ञानको राधा रमण सनेह।
तीनिउ फल जीवतलहै सुरपुर त्यागे देह॥

देखि प्रीति माली कर राजा। दियोभक्तिताकहँ सुखसाजा॥
आगे जाइ लख्यो मन मोहन। कुब्जाखड़ी बीथिका सोहन॥
घिसिश्रीखंड मेलि सुरप्यारी। धरे मध्य ठाढ़ी वह नारी॥
लखि तेहिश्याम पूछतूकोहसि। कहांलिये गवनीचंदनघिसि॥

दीनानाथ कंसकी चेरी। संज्ञा भत्र कुब्जा प्रभु मेरी ॥
कंस काय लेपौं नित चंदन। रुचिरवृत्तिआपनिजगबंदन ॥
मनसा बाचा कर्म समेता। तव गुणगावतसुरुचिसुचेता ॥
सत्य प्रीति महिमा जग छाई। ताबश मिल्यो आपु यदुराई ॥
दो० जन्म जगत स्वार्थिक भयो चष सुखलह्यो अपार।
पाद परसि कर मुदलहैं रच्यो शोचिकरतार ॥
सो० अनुशासन जो होय तौ बिलेप मर्दौं तनहिं।
जाइ पन्थ श्रम खोय होहु प्रफुल्लित प्रभुमनाहिं ॥
देखि अव्रीड सनेह मुरारी। कह बिलेपु ममतन श्रमहारी ॥
सुनि कुबिजा प्रसन्न भै कैसे। इष्टदेव पाये नर जैसे ॥
अतिबिनोद सहमनक्रम बानी। कस्योबिलेप बिलेपन आनी ॥
मगश्रम हस्यो शमहरिकेरा। भये प्रसन्न अमी दृग हेरा ॥
देखिनेह पूरण प्रभु तासू। पद पदचापिचिबुककरआसू ॥
खैंचि कस्यो सुंदर तनवाको। रतिशतकोटिलजैंलखिजाको ॥
हरिकर परसत भई सुपूता। संचित पाप नश्यो तननूता ॥
तब करपल्लव जोरि बखाना। आरतहरणसुनियभगवाना ॥
दो० जेहिबिधि बपुरूरो अमल कियोमोर जगदीश।
तेहिप्रकार चलिगेहमम करियपूत बिसबीश ॥
करिबिश्राम मोहिं सुखदीजिय। पुनिआपनिदासीप्रभुकीजिय ॥
हँसिकरगहि कह श्रीगोपाला। तैंसुखअमित दयोमोहिंबाला ॥
चन्दन चरच्यो ममतन नीको। रूपसुफललखिरतिबपुफीको ॥
दोहद मोर तोर अनुरागा। मिलितभयोमनकोदुखभागा ॥
कंसहि मारि आइ गृह तोरे। बिरमौं भाव तजौं नहिं भोरे ॥
इमिबुझाइ कुबिजहि असुरारी। चले सप्रेम सबंधु अगारी ॥
कुबरी निज निकेत नृपजाई। रच्यो मलयज चौक पुराई ॥
प्रभु मिलाप उरदृढ़ अनुरागा। करत मंगलाचार सरागा ॥
दो० पुर अबला आईं तहां कहैं अचंभितसोइ।
धनितुवकुबरीभागिनी जाकरहरिहितुहोइ ॥

कोतप अमित करालविशाला। साध्यो सखीभूत हीं काला॥
दुर्लभदरशहमहिं सखि भयऊ। तोकहँ अंगलाय प्रभुलयऊ॥
यहिबिधि सखीकहैंकुबिजासन। देखत नगर फिरैं गरुड़ासन॥
इमिहिं बिलोकत नगर निकाई। धनुष धरा तहँगे दोउ भाई॥
सिंधुर शत्रुठवनि चलि आये। लखि धाये रिसाइ रख वाये॥
कहत कहां आवत हौ भूली। पन्थ इहां न धरा धनु शूली॥
कामतिभंग भई बश काला। जानत हौं नहिं द्वार नृपाला॥
कर्‍यो न कान बाणितनश्यामा। आतुर प्रविशिगये धुनधामा॥

दो० राम तार लम्बा जहां धर्‍यो कार सुकराय।
निरखिकौतुकहिंजगतपति लीन्होंताहिउठाय॥

आकर्ष्यो भंज्यो सुर साईं। बिनु श्रम अहि मरालकीनाईं॥
रक्षक अखिल देखि धनुभंगा। जिमिखगेशलखिविपुलभुजंगा॥
सहजाहिकौतुकनिधिसुखखानी। मर्‍यो सबहि क्रोध उरआनी॥
पुरबासी यह चरित बिलोकी। ठगिसे रहे यथा निशिकोकी॥
धरि धीरजहिं परस्पर कहहीं। अब न असुरजगजीवतरहहीं॥
दुबिधा त्यागि भजौ भयभंजन। दाससुखदप्रभुखलमदगंजन॥
कंस महीपति मृत्यु बोलाई। हमरी जान न नृप कुशलाई॥
येदोउ बन्धु महाबल सागर। कीरतिबिशदबिदितगुणआगर॥

दो० देवन हने निशान निज कुसुमावलि बरषाय।
कंस शब्द धनुभंग सुनि पूछत दूत बोलाय॥
तेहि अवसर भग्गुल अगण रक्षहुकहत पुकारि।
राम श्याम इत आइप्रभु अधिकमचाई रारि॥

इष्वामन बिभंजि चर मारे। ठाढ़े शर धर मन्दिर द्वारे॥
सुनिसकोपि बहु खग्ग बोलाई। बांधौ राम श्याम कहँ जाई॥
पौरुष छल बल कीजियसोई। जेहि विधि मृत्युलहैं वै दोई॥
अस्त्रशस्त्र लै खलगण धाये। जिमिहरिनगराजीघिरिआये॥
कटुबच बदत निकर खलराजा। प्रभुसमीपगयसाहितसमाजा॥
आयुध बिबुध तजे तिनधाई। लीलयैव मेले यदुराई॥

ब्याकुल सखा बिलोकि मुरारी । निमिषमध्य सब हतेसुरारी ॥
जबन कंसचर रह तेहिठामा । तब रामहिंकह श्रीमुखश्यामा ॥
दो० बार भई दाऊ चलिय ह्वै हैं तात उदास ।
असभणिसखालगायसँग चले तुरतअनयास ॥
छं० अनयास गये विश्राम धामहिं मिले नंदहि जाइकै ।
कह देखि आये नगरशोभा तात हम सुख पाइकै ॥
लखि त्रास नृप तबनंद बोले प्रकृति तुम्हरी नहिंगई ।
कीन्हों उपद्रव कंस पुर ब्रज नाहिं यह कैसी भई ॥
दो० यहाँ उपद्रव मति करौ नन्द ग्राम ब्रज नाहि ।
पूत सीख सतिउर गुनौं उचित करौचित चाहि ॥
क्षुधापिताब्यापी भषदीजिय । रुचिरुपदेशगुणयोसुनिलीजिय ॥
सुनिदियअशन रसनकहिपरई । जोबिलोकिबिधिहरमनहरई ॥
बन्धु सुहृद भोजन हरिकरेऊ । खरभर उतहि नगर यहपरेऊ ॥
भंज्यो शंकर चाप कन्हाई । अब न नराधिपकीकुशलाई ॥
सुनि बारता कंस उर शंका । उठि बैठत पुनि परत प्रयंका ॥
ब्याकुलतनमन बड़ पछितावा । अतिकलेशकाहुइनसुनावा ॥
अंतर दारुकीट जिमि रेखैं । जानत सोइ आननहिं देखैं ॥
तिमि चिन्ता उपजे तनछीजै । बुधिबलपौरुष नाशलखीजै ॥
दो० अति चिन्ताबश तल्प निज सोयोजाइ नृपाल ।
निद्रा भयबश आवनहिं देख्यो स्वप्न कराल ॥
रामयाम यामिनि जब गयऊ । तबस्वपनायहनिरखतभयऊ ॥
शिर बिनुतन निजदीखसुरारी । नृत्यत रेतमध्य धर भारी ॥
खर आरूढ़ कलेवर नांगे । प्रेत सहाय संग तेहिलागे ॥
अरुणकुसुमश्रकसोहतग्रीवा । शिखिपङ्ग्वजितनिरखिअघणेवा ॥
स्वप्न बिलोकि चौंकिदुखपाई । चल्यो सभाकहँ उरभ्रम छाई ॥
नीति निकेत मंत्रिहितु बोली । कहिसिबुझाइबोलिचरटोली ॥
रंगभूमि करि शुद्ध सँवारौ । नन्दादिक ब्रजलोगहँकारौ ॥
यदुबंशी बसुदेव समेता । बैठारौ बोलाय करि चेता ॥

दो० नाना देश नराधि जे आये हैं यहि ठाम।
सादर तिनहिं बोलाइकरि बैठारौ मखधाम॥

पाछे मैं आवत हौं भाई। चले सकल नृप पाइ रजाई॥
रंग कुंभिनी सचिव समाजा। आइ शुद्ध कीन्ही सुनु राजा॥
अगर सुगंधि छोरि पट्टडासी। तोरण ध्वजपताक परकासी॥
भाँति भाँति शुभ बजे निशाना। बहु नृत्तकी करैं कल गाना॥
सकल बोलाय शउहितु लोगा। आसन दिये सबहिपदयोगा॥
मंचावली बिशद गजरदकी। उपमालखखगगनपतिपदकी॥
साभिमान आयउ नृप कंसा। करत जासु बहुभूप प्रशंसा॥
निज आसन राज्यौ मदछायो। जिमिसुरपतिसुरमंडलिभायो॥

दो० वृंदारक दिशि तीनि बुध यानारूढ़ सुनाक।
कौतुक देखहिंतेहिसमय दुबिधाबश रिपुपाक॥
मंगल देखौ मोह की यह महिमा संसार।
कंस यथा बैठ्यो समद तू भजु नन्दकुमार॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसस्वप्नदर्शनोनाम
त्रैचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥

दो० बिशदपक्ष अत्रिज यथा होत समृद्ध मयूष।
सुजनप्रीतितिमिबिधिबढ़त नितप्रतिकलितअदूष॥
अपर पच्छ छीजितउड़प क्रमहि कलावलिहोत।
नीच नेह तैसे सदा अथिर भणत गुण पोत॥
कुटिलभाव परिहारि चतुरभजिले मोहनश्याम।
सत्य प्रीति निजहृदय धरि जोदायकमनकाम॥
जबलगि दुबिधा नाहिंनशै तबलगिहोयन ज्ञान।
ज्ञान बिना ध्यानौ नहीं नेह मूल अनुमान॥
यहि कारण दुबिधा तजै लहै भक्तिको भाव।
सदारहै सुख सों जगत श्रीहरि भजन प्रभाव॥

जबनन्दादिक भूप सुजाना। गयेरंगमहि सजिसजियाना॥

तत्रप्रभु नीलाम्बर प्रतिभाषा। देखियरंगअवनि अभिलाषा॥
गोपसखा सबगये गोसाँई। शेष संगलै गवनिय भाई॥
सभा समाज बिलोकिय चलहूं। जो रोकै ताकहँ कर मलहूं॥
सुनि हलपाणि मुदित भेआहूं। गजगणसुनिहरियशमुदबाढ़े॥
कहा ग्वाल मीतन समुझाई। चलौ रंग महि लखैं निकाई॥
पाय रजाय गोप गण चाले। जे प्रभु हितू कालत्रै बाले॥
हलधर जस बरकरि नटवरतन। लखतनगर मारगनरतियगन॥
दो० रंग भवन के द्वार पर गये सबन्धु सखान।
जहांकुवलियानागदश सहसप्रबलजगजान॥
बल मद मत्त नाग अभिमानी। जासु भरोस कंस अज्ञानी॥
देखि ताहिबल कहगजपालहि। टारु द्वारते अहिबशकालहि॥
नृपति सहोदर हमहिं बोलावत। तू किमर्थ द्वारहि अटकावत॥
जानदेहु सुनि सीख हमारी। नतहरि जाइहि गजहिसँहारी॥
खोरिन मोरि कहत हौं टेरे। हरि स्वामी तीनहुँ पुर केरे॥
दुष्टदलन हित नर तन धारा। हरि हैं निजकर मेदिनभारा॥
सुनि बलसम बचन अहिपाला। रोष सहित बोल्यो तेहिकाला॥
गाइ चरावत जन्म सिरान्यो। त्रिभुवन पतिनीकेहमजान्यो॥
दो० तेहि मद हम सनरारि कृतइषुधी लखौ न तात।
दशसहस्र अहि बलबलित यहमंतगाबिख्यात॥
जबलगियहिसन समरन ठानो। प्रबिशबकठिनभवनअनुमानो॥
अमित सुभट मरघो निजपानी। आजु परैगो पौरुष जानी॥
ममगजते जो तुम बचिजाहू। तौ जानो त्रिलोक पतिआहू॥
कोपकराल बलित बलरामा। कह्यो ताहि सुनुरे अघधामा॥
पञ्जी पञ्जी समहि मरोरों। तृणवत मूढ तोर शिर तोरों॥
बारन जानु कुमति बशतू हैं। हरि प्रताप पूरित नभभू हैं॥
निधन यूथपति ह्वै है आजू। सुधरिहिअधम तोरको काजू॥
ममशिख मानि सकुंभि पलाहू। लैनिजजीवत्यागिमगजाहू॥
दो० चोभक्षुभित खल तुरत द्विप प्रेरयो प्रभुकी ओर।

चल्यो द्विरदबल रामपै हाथी ज्यों लखि मोर ॥
मुष्टिक एक ताहि बलमारा। भाग्यो बारणकरि चिकारा॥
अतिबलबलबिलोकिनृपपायक।भयेबिकलचपुलखिखलघायक॥
कहत समर मंडिहि को इनसों। सिंधुर प्रबर पलावत जिनसों॥
कोबपुरे हम बलन हमारे। अस बिचारिमबनि जाहियहारे॥
करीपाल व्याकुल मन शोचै। लेइ उसास नैन जल मोचै॥
जोन आजु मारौं द्वौ बालक। तौ बन्न मोर करै नरपालक॥
अरु ये महाबीर बलखानी। दुहूँ ओर दुख मृत्यु तुलानी॥
अंकुश मारि गयंद चलावा। बहुरो राम श्याम तटलावा॥
दो० कुंजर धायो रोष युत दाब्यो द्विज द्विजकेतु।
लखिसुरमुनि परिजनसखा भ्रमवशइतउतचेतु॥
करिकर गहि कृत बूत अपारा। सूक्षम रूप तुरत प्रभु धारा॥
रदन मध्य राजत सुखदाई। काँपत सुर नर नारि अथाई॥
पुनि उठिकेसरि सुरहि प्रचारा। सुनत करी निज पौरुषहारा॥
प्रभुहि बिलोकि बिबुधबहुहरषे। हनि निशानकुसुमावलिबरषे॥
ह्वै सचेत पुनि धाव मतंगा। आयो सरुष होनचह भंगा॥
दबके उदर तरे असुरारी। जानाजग भागिगये बिहारी॥
तब पाछे हरि ताहि प्रचार्यो। नीलाम्बर आगे ललकार्यो॥
दंतिहि खेल खिलावन लागे। पाछे आपु सोह बल आगे॥
दो० कौतुक द्रष्टा तासमय भये अचंभित सर्ब।
शोचत खल मोदितभये हरिजन ऋषयसुपर्ब॥
कतहुँ रामकरिकर गहि लेहीं। झटकिद्विरद कहँअतिदुखदेहीं॥
कहुँ गहि पूँछ श्याम करकरषैं। चलतनहरिबशलखिसुरहरषैं॥
जब रिसाय धावत गण स्वामी। दूरिजात बिबिसुत गुणधामी॥
ताहि खिलावत भे बहुबारा। जिमिबच्छनकहँनन्दकुमारा॥
जानि समय अंतक अहि भूपा। खींच पूछगहि पाणिअनूपा॥
बसुधा मर्यो सहज कृपाला। मुष्टिक पुनि हरिहन्योकराला॥
प्राण रहित तब भो शुण्डाला। हरषे सुर भये असुर बिहाला॥

रुचिर दंत लखि लीन्ह उखारी । गजमुख चली रुधिरसरिभारी ॥

॥ दो० मृतक देखि गजराज गज पालक धायोराय ।
ताहूको श्रीकर सरज निधन कस्यो तेहिठाय ॥

बिहसत बिबिभ्राता नर नाहा । गजरदयकयकगहिकर माहा ॥
रूप त्रिभंगी अतिहि मनोहर । भूषन रसुरादिक तनमनहर ॥
रंगालय जब गये बिहारी । लख्योसबनतबरुचिअनुहारी ॥
मल्लन महा मल्ल अनुमाना । नृप अधिराज महीपनजाना ॥
सिखिरसनाबूभहिं निजत्राता । ज्ञाति बांधवन जानसुभ्राता ॥
सुरभी पालन सखा बिलोका । नंदादिकशिशुसमगतशोका ॥
पुरबासिन सुंदरता खानी । बालक फिरहिंबालसँगजानी ॥
कंसादिक खल शमन कराला । काल बिबश देखत महिपाला ॥

दो० साधूजन हेरत भये पूरण पुरुष प्रबीन ।
॥ जोसुख लखि बसुदेवलह सोअकत्थसुकबीन ॥

हरिहि बिलोकि कंसअकुलाई । कह्योसकलखल मल्लबोलाई ॥
निजबल युगल बंधु धरिमारौ । अथवा रंग अवनिते टारौ ॥
नृप आयसु सुनि मल्ल अनेका । गुरुसुत शिष्य एकते एका ॥
चले सकल जुरि हरिदिशिभूपा । बलनिधान पुनि नानारूपा ॥
ठोंकत ताल महाबल रासी । चारिओर लीन्हों हरिगाँसी ॥
मल्लग्राम निरख्यो प्रभुकैसे । सहल गज रदनायक जैसे ॥
करिप्रणाम मन तब चाणूरा । प्रभुप्रति भणत भयो बचरूरा ॥
आजुनराधिप कछुक उदासा । तेहिकारण पठवा तुवपासा ॥

दो० मल्लयुद्ध हमसों करो लखिनृप होहिं सुखारि ।
। बिद्यानिधि बनबासकरि डारबीर सँहारि ॥

तजिदुबिधा हमसों रण मांड़ौ । देखै सकल समाज अखाड़ौ ॥
बड़ि दायाकरि हमहिं बोलावा । नृपहितहोय सो करौ बनावा ॥
बाल बहिक्रम युद्ध न जानै । हमबलवान चित्त नहिंआनै ॥
बीर पराक्रम समर सुज्ञाता । यह कस बात कहत अज्ञाता ॥
जो सम्बन्ध बैरु अरु प्रीती । ऊंच नीच करि करै अनीती ॥

सो अपलोक लहै न सँदेहा। हमहिं हेरि हेरौ निजदेहा॥
भूप सुनै नहिं कहिय बुझाई। बाल मल्ल सँग कृत रौताई॥
मिलि खेलहु राखहु जगलाजा। होय प्रसन्न बिलोकत राजा॥
दो॰ करिदाया शिशु जानिकै लीजिय हमहिंबचाइ।
पटकि न दीजिय आपु बल धरम युद्धके भाइ॥
सो॰ हरिबाणी सुनि भूप भयबश कह चाणूर अस।
तुवगतिअगमअनूप जानिसकततिहुँलोकको॥
दो॰ शिशु बपु तुम मानस नहीं महाबली हौ दोउ।
धनुषभंग कीन्हींसुखहि गजबल निधिहनसोउ॥
युद्धकिये नहिंहानि कछु हमरे तुमसों तात।
जेसुजान पंडित जगत ते जानत यहबात॥
मंगलदेखु बिचारि हिय हरि प्रताप चहुँओर।
त्यागिभूलभ्रम सत्यभजु प्रभुपद यह मतमोर॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकुवलियाबधवर्णनो
नामचतुःचत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥
दो॰ चातक जैसे प्रेम दृढ़ करत स्वातिके संग।
पान करत नहिं गंगजल यदपि होय तन भंग॥
बधै बधिक शर सों चहौ राग सुनाइ कुरंग।
तदपि न त्यागै नेह बुध नित नूतन हित अंग॥
चितवत जैसे चंद्र दिशि दुखसहि सदृढ़ चकोर।
ऐसी साँची प्रीति जब करै एकही ओर॥
आदि अंतलों एक रस प्रीति निबाहै कोइ।
चतुर साधु पंडित गुणी है कुलीन जग सोइ॥
भवभव पावै बिभव युत मुक्ति पदारथ अंत।
दृढ़ सनेह सों पुरुष तिय ध्यावै रुक्मिणि कंत॥
यहिबिधिआमितबारताकीनासि। नृपचाणूर इंश सम चीन्हसि॥
जीवत कठिन मुक्तितन त्यागे। को पौरुष हमार तुव आगे॥

भिरयो श्यामसन तत्र चाणूरा। राम साथ मुष्टिक अघभूरा॥
मल्लयुद्धकृत अति गति सोई। निरखत सभा बैठ नृप जोई॥
भुजसों भुज शिरसोंशिर मारैं। पद पद कर कर धरि ललकारैं॥
चौं चष एक दृष्टिभयराजा। चकितसमरलखिसकलसमाजा॥
कहतपरस्पर होत अनीती। बालकसकैं मल्लकस जीती॥
कुलिश कठोर मल्लबलवाना। कोमल अंग राम भगवाना॥
दो० जोवरजै तौ नृप भुकै चुपकत धर्मकि हानि।
सभात्यागियेउचितयह कहतचित्तअनुमानि॥
जहां नरवगुण चलै नय कहईं। तहां न चतुर एक क्षण रहईं॥
अति पछितात साधु मनमाहीं। दुष्टहृदयलखि लखि हरषाहीं॥
उत असुरारि राम रण करहीं। अखिल प्रकार मल्लगतिलरहीं॥
अमित भांति रण खेल खिलाई। दोऊ मल्ल हने दोउ भाई॥
मल्ल राजिका तब नर नाहा। घेरयोहरिजस नग हरिकाहा॥
लखिखल अनीप्रबलबलखानी। क्षण महँ हत्यो कोपउरआनी॥
रण थल मल्ल रहित जबभयऊ। बुधजयकहि निशानरवठयऊ॥
फल पितुराजी साजि अपारा। वृष्टि करत नभते तेहि बारा॥
दो० जयजय ध्वनिहरिजन करत अतिप्रसन्नमनभूप।
सभयअसुर तेहिक्षणअपर निरखतकालस्वरूप॥
कंस कहत निज चरन रिसाई। हनत निशान मोद उरछाई॥
भावत तुम्हैं श्याम जय काहे। जानत हितू मोर उर दाहे॥
चञ्चल अन्याई ये दोऊ। बाँधि सभा बहिरावो कोऊ॥
अरु बसुदेव देवकिहि लाई। घात करौ मम सन्मुख भाई॥
तापाछे इनहूँ को हनहू। सुकृतपाप कुछ चित्त न गुनहू॥
करो अकंटक राज सकेली। सुनि प्रभुबचनचले खलपेली॥
मर्दत असुर समूह नृपाला। आतुर क्षाइ चले नँद लाला॥
पहुँचे भूप मंच तट जाई। बैठ कंस अहमित अधिकाई॥
छं० अहमित अमित करचर्म असितन कवच शिरटोपीदिये।
बूझतनभ्रम बश अधम बुधिबिनु कालकर चोटीलिये॥

लखि काल काल कराल मोहन कंसतन कंपत भयो।
उठिमंचपर ठाढ़ोभयो अंतक विवश गुण गण गयो॥
दो० अति सभीत है जीवतब चहत पलावन सोइ।
लज्या बशनहिं भजिसक्यो जीवनआशहि खोइ॥
मंडलाग्र घातत श्रमसानी। लीलावत रोंकत सुरध्यानी॥
अपरअस्त्र नृपकरत प्रहारा। करतश्याम सहजहिं निरवारा॥
तेहिक्षणविबुधतीनि दशजाती। देखिममर शोचत बहुभाँती॥
धर्मसेतु भवदुष्ट ढहावा। जेहिकरि तुवदासन दुखपावा॥
है भयमान पुकारत भयऊ। यहिलघुबुधन अकथदुखदयऊ॥
अब न खिलाइय यहि असुरारी। हतौ बेगि सुनि बिनयहमारी॥
सुनि सुर गिरा बार अनुमानी। समय मृत्युकर ताकरजानी॥
सबहि दुखित लखि कुन्तलपानी। गहिआकर्षिसुनहुनृपज्ञानी॥
दो० सिंहासन से पटक महि ऊपरकूदे आपु।
भयो जीवबिनु कंस नृप जाकर अधिकप्रतापु॥
छं० भयो जीव बिनु नृप कंस लखि नरनारि यहै पुकारहीं।
हरिहन्योकंसहिकुमति बश मन जानिजयतिउचारहीं॥
अस्तुति करत सुरबृन्दसानँद कुसुम अवली बर्षहीं।
नभ दुन्दभी बाजहिं घनी सुनि सेवकादिक हर्षहीं॥
दो० नगर नारिनर मुदितमन कृत बिनती चहुँ ओर।
प्रभु आनन बिधुभा निरखि प्रफुलित मनोचकोर॥
कंसमरत बसु सोदर ताके। बीर प्रसिद्ध समर रस छाके॥
ते समस्त आयुधकर धारी। क्रोधित घेरत भे बनवारी॥
रोष बलित प्रभुतिनहिं पछारा। अपर निशाचर कटक संहारा॥
कंस हितू सेवक अघ खानी। जबनरहा कोउखलअभिमानी॥
तबनृप तन मृतयक द्वौ भाई। यमुना तट लैगये नृपराई॥
तहाँ लीन द्वौ बन्धु बिरामा। भाविश्राम घाट तेहि नामा॥
भूप मरण सुनि ताकर नारी। व्याकुलकृतबिलापध्वनिभारी॥
कृष्णा निकट कृष्ण तटआई। लिये मृतक राजत यदुराई॥

दो॰ लखिमुख निजपति नारिगण रोदतमहा कराल ।
गुण गण बरणत दुख मगन उरशिरमर्दिनृपाल ॥
प्रमदा बिकल देखि खलहारी । आवतभये जहां गण नारी ॥
मधुर बचन कह सबहि सुनाई । देहु तिलांजुलि नेह बढ़ाई ॥
शोक परिहरो ज्ञान बिचारी । जीवत सदा न कोउ तनधारी ॥
यह संसार असत्य असारा । बेद शास्त्र सब करत पुकारा ॥
मात पिता सोदर सुत नाती । प्रमदा हितू सुबंधु सुज्ञाती ॥
परिहरि तनु पुनि धरैं शरीरा । सुनो सकल जैसे घन नीरा ॥
जबलगि जासन रह संबंधू । तबलगि मीत सगाशुभ बंधू ॥
प्रभु उपदेश सुनत सब नारी । धीरज धरि तरप्यो तिलबारी ॥
दो॰ दाह कंस निज कर कस्यो श्री गोविंद कृपाल ।
मुक्ति दई उत्तम जगत मुनिन कठिन त्रैकाल ॥
दायकसुख जो शत्रुकह ताहि तजत मतिहीन ॥
मंगल त्यागि अपारश्रम भजु हरिपदछ्लचीन ।
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसासुरबधबर्णनोनाम
पंचचत्वारिंशोध्यायः ४५ ॥
दो॰ काम कलपना नारि रत कलपत द्रव्यहि लोभ ।
मनचाहत मद नित्य प्रति हिंसा क्रोध सचोभ ॥
मोह सबन में लिप्तता मन अशुद्ध सब बात ।
बुद्धि बोधिनी बुध कहत जीव शुद्ध विख्यात ॥
इन सबही को एक करि बुद्धि संग बुधमेलि ।
चीन्है पूरण आतमा तृष्णा पापिनि झेलि ॥
जल थलनभ बासीन में मंडि रहा जो कोइ ।
ज्ञान योग ज्ञाता बदत लखै हृदय महँ सोइ ॥
कहत कठिन दुर्लभ करब गेहाश्रम दुखरूप ।
राधा बल्लभ ध्यान सों पावै मुक्ति अनूप ॥
नृप बांधव त्रिय करत पुकारा । जात महीपति भई अगारा ॥

दोनों बंधु राम अरु श्यामा। गये बसुदेव देवकी धामा॥
करिप्रणाम बंधन कटवाई। बारबार बिनवत बिबिभाई॥
रूप मनोहर जन दुख हारी। लखिदम्पतितनदशा बिसारी॥
उपज्यो ज्ञान ब्रह्म पहिचाना। पूरण पुरुष सत्य करिजाना॥
मन शोचे ये तिहुँपुर सांई। निज इच्छा प्रगटे भुवआई॥
क्षमा भास्कर कमल उतरि हैं। असुर रहितकरि धर्म प्रचरिहैं॥
इनकर चरित को जानन हारा। सृष्टा जटी लहत नहिं पारा॥

दो० अंतरयामी जान यह उपज्यो पूरण ज्ञान।
निजमायाप्रेर्‍यो हर्‍यो उत्तम ज्ञानसुजान॥

ब्रह्म बिबेक नशात सुत जाना। तबश्रीहरि इमि बचनबखाना॥
ममहित दंड सह्यो तुमभारी। बिपुल काललगि रहे दुखारी॥
अहिरजनीं हिय सुरति हमारी। करत रहे प्रभु बश्य सुरारी॥
दोष हमार तात कछु नाहीं। अमिटबरण अजभूप सदाहीं॥
जब ते नंद गेह करि आये। हमकहँ पिता मोद उर छाये॥
तब ते परबश रहे कृपाला। शोच यहै मनरह सब काला॥
जिन दशमास गर्भ महँ धारा। कंस दंड पुनि सह्यो अपारा॥
तिनहिन सौख्यरंचहमदीन्हा। बय ब्यतीत परघरहीं कीन्हा॥

दो० हमहुं न देखा बालसुख पितु निकेत दिन एक।
बृथा जन्म भवभव भयो गावत नीति बिबेक॥

सुत सपूत सोई भव अहई। जेहि करि तातमात सुखलहई॥
जननी जनकपुत्र जो सेवै। दोनोंदिशि शुभ कीरतिलेवै॥
सो उद्धार लहै भ्रम हीना। ऋणी रहे हम भयबय क्षीना॥
सुनतअब्याज नीतिमयबानी। दम्पति महामोद उर आनी॥
कंठ लगाय युगल सुत भेटे। अघदुख भूतकाल के मेटे॥
कह सपूत तुम समको आना। हन्यो कंस नाश्यो दुखनाना॥
पितहि प्रबोधिचले बिबिधाता। उग्रसेन पहँ गय हरषाता॥
जोरि उभयकर कह मृदुबानी। नाना करिय राज सुखमानी॥

दो० आजुलग्न खगऋक्ष भल योग करणसुनुतात।

राजकरो मन मोद धरि परिहरिशोक सुगात ॥
उग्रसेन सुनि श्याम रजाई । पस्यो नृपाहि सरज तलआई ॥
करि विज्ञप्ति कह्यो करजोरी । दयाधीश सुनु बिनती मोरी ॥
कंस सबन्धु जौन बिधि मारा । अपर तमीचर कटक संहारा ॥
भक्त सुजन सुख दयउ अनंता । प्रभुतुमअज अनादिश्रीकंता ॥
जस बसुदेव बंदिते मोच्यो । कृपासिंधुजिमिममनरोच्यो ॥
तिमि सिंहासन राजिय नाथा । करहिंराज्यअभिषेक सुमाथा ॥
मधुपुर बैभव पति बिभु होहू । पालहु प्रजा नाथ करिछोहू ॥
वृद्ध बैस यहि लाभहि पाऊं । सकलकलुष निजहाथबहाऊं ॥
दो० बिदित जगत यदुबंश महँ नाधिकार अभिषेक ।
सुनहु तात इतिहास भल भाषौं सहित बिबेक ॥
नृपति ययाति पितामहँ जोई । जेठर बहिक्रम भयजब सोई ॥
यदु अणु तुर्ब सुद्रुह्य सुजाना । अरुपुरु तासु तनयशरनाना ॥
प्रथम बोलि यदु कहँ समुझाई । लै मम बैस देहु तरुणाई ॥
सुनि पितुबचनशोचमनमाहीं । देहुँ आयु कछु संशय नाहीं ॥
मैं परंतु पाछे पछिताऊं । पाप समृद्धि घोर गति पाऊं ॥
तरुण होय पितु करिहैं भोगा । अपकीरति यह कर्मअयोगा ॥
ताते तरुणाई नहिं देहौं । जनककोप शिरधरिसहिलेहौं ॥
द्वौ करजोरि भएयो सुनु ताता । हमसन बनिनपरिहियहभ्राता ॥
दो० सुनि ययाति अतिकोपकरि यदुकहँ दीन्होशाप ।
नृपन होय तुव बंश मम शापन लंघन पाप ॥
अपर सुवन उठि चले पराई । पुरु करजोरि जनक तटजाई ॥
सविनय सानुराग बदबानी । मम बयलेहु जीव मुदमानी ॥
भावत मोहिं न बय दुखदाई । बृद्धापन सुख लहौं सदाई ॥
यह शरीर जड़ वृथा कहावै । धन्य गुनोंजुकाम तुव आवै ॥
बालापन जिमि तात सिराना । तिमितरुणतासु करिहिपयाना ॥
अति प्रसन्न तब भये ययाती । पलट्योबय निजउर हरषाती ॥
आशिष पुरुहि दीन्हमनमानी । महिपति होइहि तवसन्तानी ॥

यहि कारण नृपता अधिकारी। हमनहिं निजमनदीखबिचारी॥
दो० सानँद तुम बिभुता करो दुबिधा तजिसब काल।
आनकाज हम सबकरैं आयसुवत महिपाल॥
आज्ञा भंग करिहि जोतोरी। सहिहि सो घोर ताड़नामोरी॥
प्रजा पालिये नृप सहनीती। परिहरि सकल शोचयुतप्रीती॥
कंस त्रास जे बहु यदुताता। गये बिदेश शोकमय गाता॥
खोज लागिचर अमित पठावो। झटित काज महँबारन लावो॥
मधुपुर सबहि बसाइ सुखेनू। प्रतिपालौ गुरु महिसुर धेनू॥
जन मनरंजन आयसु पाई। उग्रसेन बोलेउ शिरनाई॥
तुव अनुशासन मानि अघारी। करब राज हम सदा सुखारी॥
हरिआसनतेहि चणहि बिराजा। कीन्हो राजतिलक ब्रजराजा॥
दो० राम श्यामकर चमर लै ढारत भये महीप।
कीरति यहछाई अवनि प्रतिथल जम्बूद्वीप॥
पुरबासी अतिशय मन हरषे। नभ ते सुरन फूल बहु बरषे॥
यहि बिधि उग्रसेन कहँराजा। दइचले जहँ नन्द समाजा॥
बसनाभूषण बिपुल मँगाई। प्रफुलित हृदयभूप दोउभाई॥
नन्दराय तट जाइ बिहारी। कारि प्रणामकल गिराउचारी॥
तात तुम्हारि प्रशंसा भारी। किमिकहिसकलघुबुद्धिहमारी॥
शेष सहस रसना करि गावैं। तदपिन तवगुण पारहिपावैं॥
हमसों कहत बनत नहिं कैसे। निर्गुण गुणगणअर्थहि जैसे॥
कीन्ह तात निर्व्याज सनेहा। सुत समान पाल्यो मम देहा॥
दो० आठ यामकरि प्रीति बड़ि प्रतिपाल्यो सुदुलार।
यशुदा मात सनेह युत सब दीन्हे सुख सार॥
अधिक तनय ते नित प्रतिपाला। अखिलप्रकारमेटिदुखजाला॥
जानन आन सूनु मनमाहीं। निजबालकसम पालसदाहीं॥
उदासीन सुनिके मम बानी। पितान होहु सुनहुमुदमानी॥
जननि जनकतुम दम्पतिअहऊ। जनि वियोगमहँउरदुखलहऊ॥
मथुरा रहौं कछुक दिन ताता। भेटौंअखिलमुदितयदुजाता॥

यदुकुल उत्पति शुभ इतिहासा । सुनोबसोनिज पिताअवासा ॥
पितु बसुदेव देवकी माता । लहैं मोद सुनिसुनिममबाता ॥
हमरे हित कलेश अति पावा । कंस त्रास तव सदनपठावा ॥
दो० नृपति जानि करिबंदि पुनिदीन्हो दण्डमहान ।
अबकछुदिन आचरण मम देखिलहैं कल्यान ॥
अस कहि बसनाभरण नृराई । नन्द अग्र धरि कहयदुराई ॥
उदासीन बोले घनश्यामा । मातासों पितु कह्यो प्रणामा ॥
तुम निष्कपट राखियो प्रीती । नीति बिचारिपुराकी रीती ॥
सुनत नन्द व्याकुल अतिभयऊ । रंक ग्रंथि पारस जनुगयऊ ॥
गज सम स्वासभरैं सुधिनासी । नीरज सुख तुसार बत्रभासी ॥
ग्वाल सखाभ्रम बश तेहिकाला । सुनतअचंभितबचन बिहाला ॥
कहत श्याम मति कसभइधाता । कुलिश कठोरबदतकटुबाता ॥
बूझिपरत मधुपुर अब रैहैं । बहुरि न नन्दग्रामकहँ जैहैं ॥
दो० सखा सुदामा जोरिकर कहत सुनो नँदलाल ।
ग्रामवाक्य केहिलगिबदत तुमप्रबीनतिहुँकाल ॥
बध्यो कंसयह अतिभलकीन्हा । गोद्विजादिसाधुनसुखदीन्हा ॥
अबचलि नंद संग गुणराशी । तुवकीरतिजगसकलप्रकाशी ॥
वृन्दाबन बैभव पति होहू । प्राण प्रिया परिहरोन छोहू ॥
राज लोभ कीजै न गोसाँई । अनुगामी तुम्हारि प्रभुताई ॥
जस आनन्द निकर वहिठामा । मथुरा तस न लहो हरिरामा ॥
यह प्रभुत्व नीरद करि छाया । सथिरनतातमुनिनअसगाया ॥
मूरुख भूलत राजहि पाई । बुधन मनहिंलावतभ्रमभाई ॥
गज तुरंग पुनि बाहन नाना । अंतसंग नहिंचलहिंसुजाना ॥
दो० वृन्दाबन तजिहेत बिनु इहां रहो जनिबीर ।
मधुऋतु घन बन जमीतट रहत बहतात्रिसमीर ॥
बृंदाबन सुख तजि हठ करिकै । बसिहो इहां लोभउर धरिकै ॥
मात पिता परिहरिहितु मोहन । मथुरा रहत ससुखरिपुछोहन ॥
को बड़ पद पावहुगे आगे । नृप सेवा महँ रहिहौलागे ॥

निशिदिन चिंताबसिहि शरीरा। सेवा कर्म निषिद्ध अधीरा॥
जाहि राज दीन्हो तेहि बन्दौ। पराधीन किमितात अनन्दौ॥
तुव मरयाद अधिक अपमाना। सहौ किमर्थ कहौ दृढ़ज्ञाना॥
ममशिख उत्तम निजउर धरहू। नृपता लोभ दूरिकिन करहू॥
नन्दलहैं दुख होत बियोगा। चलियसंगसबबिधियहयोगा॥
दो० ब्रज सरितासर बिपिनमग कीजियश्यामबिहार।
धेनु नेह नहिं त्यागिये सुनिप्रभुबचन हमार॥
नातरु ब्रज परिहरि हमस्वामी। होउ बसब तुम्हार अनुगामी॥
इमिबतरायबिबिध बिधिग्वाला। हरिसँगमें कछुसखानृपाला॥
नन्दहि कहत सखा समुझाई। सबहि संगलै गवनहु राई॥
रामश्याम कहँ साथ लवाई। पाछे हम आवत सुखपाई॥
ब्याकुल अपर गोप सुनिबानी। बिथक्योज्ञान सुबुद्धिनशानी॥
प्रभु बियोग अहि काहुइकाटा। जीरण पट सनेह जनुफाटा॥
चित्र लिखित जसिपूतरिकोऊ। जानत हरिगति बिथुरितसाऊ॥
क्लेश ग्रसितनन्दाहिअनुमानी। कृतप्रबोध हरिमूशल पानी॥
दो० तात बृथाउर दुखसहत समयशोक करनाहिं।
कछुक दिवसरहि मधुपुरी हमआउबतवपाहिं॥
निरखत मरकट ध्वज दुखपूरी। यशुदा मातु होइ भ्रमभूरी॥
चित धीरजधरिहैं सुधिपाई। याहि कारण गमनोमुदलाई॥
हम अनुचरपितु बिबिधप्रकारा। वैभव बिपुल प्रतापतिहारा॥
अबकी बारसंग सुत चलहू। अलखचरितबूझनजनिछलहू॥
भेटि सबहि आवहु असुरारी। सुनिसनीतियहबिनयहमारी॥
सरित बियोग अपार अगाधा। नेहावर्त्त अमित चहुकाँधा॥
नन्द जीव पन्थी परदेशी। पस्योकुघाटबिकल अलवेशी॥
आनन भाभा रहित नरेशा। बुद्धिथकितरह ज्ञाननलेशा॥
दो० प्रभुपद सरितट परतभो सजलित अच्छ अधीर।
कहत कृष्ण हे कृष्ण नृप हरो बिषमतन पीर॥
हरि सर्वज्ञ अमाया ज्ञानी। अतिशयबिकलपिताहितजानी॥

मम बिछोह सरि बूडहिं आजू। अपयशअमितहोइमनकाजू॥
मोहन माया घाट लगाऊं। कीरति बिशदसुगमभवपाऊं।
प्रीति हरणि माया प्रभु प्रेरी। कीन्ह कठोर सुमति सबकेरी॥
माया बिवश बिचारि नृपाला। सन्तामृत बचबद गोपाला॥
शोक किमर्थपिता कृत भूरी। मधुपुर ते पुर केतिक दूरी॥
जब चाहौ तब मिलोअत्रासा। समुझिकालगतितजियेआसा॥
ह्वै हैं दुखी तात पुर बासी। तुमहिं देखि सुखलहैं सुपासी॥
दो० मर्म बचन निरमोह सुनि नन्द जोरि कर दोउ।
कह्यो करौनिज रुचि सरिसबरजक दूसरकोउ॥
तुव अनुशासन शिर सबहीके। कृपासिंधु धन जीवन जीके॥
राख्यो प्रीति कृपाल हमारी। अकथ चरित तुमहौबनवारी॥
गोपन सहित चले नँदराई। फिरे बन्धुद्वौ तिनहिं पठाई॥
नन्द महर मन शोच अपरा। मनो रंक धन पाइ बिसारा॥
ग्वालसखा इमि दुखितभुवाला। सर्ब सुहार ज्वारि जसख्याला॥
चेत अचेत चलत मग माहीं। लटपट चरणधरत सुधिनाहीं॥
फिरि पाछे देखैं दुख दाहा। अवद दशाको कथनरनाहा॥
पाय सुद्धि धाये पुर लोगा। युवतीपुरुष सुयोग अयोगा॥
दो० सुनि यशुदा आतुर चली भेटन मोहन लाल।
जब न दीख घनश्यामकहँ भई अमित बेहाल॥
अहह कंत सुत प्राण हमारे। सत्य कहौ तुम कहां बिसारे॥
पट भूषण लै घर कहँ आयो। जग जीवनतजि अमृतपायो॥
अक्षहीन पारस जिमि पावै। उपल बिचारि तुरंत बहावै॥
जब गुण सुनै धुनै शिर सोई। तिमिबालक पतिआयउखोई॥
बसनाभरण पलटि सुत लाये। मगादिय मुदित काँचकरपाये॥
सुत बिनु तन धन करिहौंकाहा। बिहरत उरहरिबिनुसुनुनाहा॥
बुद्धि रहित मूरुख तुम भयऊ। बिछुरतकसनफाटिहियगयऊ॥
तूबावरि त्रिय बकत अकाजा। ग्वाल न श्याम बनेयदुराजा॥
दो० कंस निधन करि पास मम आइ कह्यो यह बात।

निठुर बचन माया रहित जो सुनि दुख ममगात ॥
कहयो कि हम बसुदेव कुमारा। पोषण कर्म बताव हमारा ॥
यह अचरज की बात सयानी। सुनिबिस्मितभोमनक्रमबानी॥
अब न सूनु करि जानु अघारी। ईश्वर जानि प्रीति करुनारी ॥
नारायण हम प्रथमहिं जान्यो। मोहबिबशबालक करिमान्यो ॥
पति मुखबचनसुनत भ्रमभयऊ। हरि माया सनेह हरिलयऊ ॥
पुत्र शोच आवत मन कबहूं। यशुदा नृप रोवत क्षणलवहूं ॥
काहू काल लाय उर ज्ञाना। जानत आदि पुरुष भगवाना ॥
गावत यश सानन्द सुजाना। मेटत दुख धरि उत्तम ध्याना ॥
दो० ब्रज बासी सब नारि नर घूमत हरिरसलीन।
बरणिसकतनहिंबुद्धि मम सुनु महिपालप्रबीन ॥
मथुरा चरित सुनो अब राजा। जुरयो जहां सुखसदनसमाजा॥
बल हरि सखहि पितहि पहुंचाई। गये बसु देव भवन मुदपाई ॥
दम्पति युगल तनय मुखदेखी। निरखत नृप परि हरे निमेखी ॥
जो बसुदेव पाव आनंदा। कहिनसकतसोब्रजशिरचंदा॥
उपमाबिनु प्रबोधनहिं होई। तपफल जिमि तपसीलहकोई ॥
पुनिबसुदेव कहा निजबामै। नन्दगेह निबसत हरिरामै ॥
बीतोदिन बहु देखु बिचारी। खायो ग्वालन संग बिहारी ॥
यदुकुल धर्मजान नहिं दोऊ। कीजिय सो जेहिहसैं न कोऊ ॥
दो० बोलि गर्ग सम्मत करिय उचित कर्म जगमाहिं।
ज्ञानवान उनते अधिक दूसर सुनु पति नाहिं ॥
तब कुलपूज्य गर्गऋषिबोली। कलित मनोहर इच्छाखोली ॥
नाथ हृदय मम यह सन्देहा। राखिय कृष्ण कहौ कृतकेहा ॥
को उपाय जप तप मख पूजा। कह प्रभुतव तजिहितूनदूजा ॥
प्रथम निमंत्रहु निकरसज्ञाती। बिप्रादिक कृतज्ञ शुभजाती ॥
करि कुल धर्म उचित सुखदाई। मखउपबीत करौ द्वौ भाई ॥
दोष रहित बालक बिबितोरे। सदाशुद्ध जगमय मत मोरे ॥
तदपि लोक कुल रीतिहि करहू। मनअसमंजससहजहि हरहू ॥

ऋषिशासनसुनि चरन हँकारी । मृदुल सनयशुभ गिराउचारी ॥
दो० क्षमा बिदौता ज्ञाति जन देहु निमंत्र सम्हारि ।
दूतन तुरतहि नगरमहँ न्योत्या गृह प्रतिभ्कारि ॥
बसुधा देववृन्द चलिआये । ज्ञाति बन्धु सब मोदहिपाये ॥
जाति कर्म प्रथमहिं अनुसारा । बेदबिदितकरि कुलब्यवहारा ॥
बाण द्विगुण सहस्र क्षीरोदा । दानकीन्हयहिबिधियुतमोदा ॥
मढ़वाये अष्टाबद शृंगा । ताम्र पृष्ठि पदरजत सुरंगा ॥
रोम पाट पाटित महिपाला । संकल्पी हरि प्रसवत काला ॥
भयउ मंगलाचार निकेता । श्रुतिवतमखकीन्हा कुरुकेता ॥
राम श्याम कहँ दीन्ह जनेऊ । हरषे ज्ञातिबन्धु द्विज तेऊ ॥
पठइ सबन पुनिसुतन बोलावा । सोपहार गुरु गेह पठावा ॥
दो० ऋषि संदीपन ज्ञान निधि नृप अवंतिका बासि ।
तिनकीशाला बिदितभव बिशदठाम पुरकाशि ॥
तिनहिं युगल सोदर सानंदा । जोरिहाथ कीन्हों अभिबंदा ॥
आरत गिरा बद्यौ यदुराई । विद्यादान देहु द्विज राई ॥
देखि मिथुनसुत रूप निधाना । संदीपन अतिशयसुखमाना ॥
सानुराग राख्यो निज गेहा । शिक्षा करहिं सप्रेम सनेहा ॥
अल्पकाल महँ वेद सुमंदा । तर्क शास्त्र पढ़ि गये मुकुंदा ॥
विद्या निधि विद्यामनु सीखी । सुनो नाम जेबदत मनीखी ॥
ब्रह्मज्ञान[१] ज्योतिष[२] व्याकरना[३] । जूप[४] कोक[५] धनुर्धर[६] जलतरना[७] ॥
स्वासा[८] वैद्य[९] चौर[१०] नटकर्मा[११] । अश्वारूढ़[१२] प्रबोधन[१३] धर्मा ॥
दो० अपर रसायन[१४] सहित नृप सिखत भये यदुराय ।
तंत्र मंत्र पौराणहू काव्य करण मुद पाय ॥ ॥
तब करजोरि गुरूसन भाषा । सुनौनाथमम दृढ़ अभिलाषा ॥
नीति कहत विद्यागुरु जोई । सबते अधिक जगतमहँसोई ॥
सकल बस्तु बिद्या करिजानिय । मूरुखु बिनु विद्यापहिचानिय ॥
कोटि प्रकार देइ धन कोई । विद्या गुरुते अऋणनहोई ॥
करुणा निधिमम शक्तिबिचारी । गुरुदक्षिणा भणौ अघहारी ॥

सोदै सदन जाउँ द्विजराई। तव प्रसाद विद्या सब पाई॥
यह सुनिबिप्रभवन निजगयऊ। प्रभुगुणप्रियहिसुनावतभयऊ॥
राम कृष्ण बालक जो दोई। आदि पुरुष मानुषनहिं सोई॥
दो० धरा भार टारन करन भक्तन को प्रतिपार।
अकल अनीहस्वतंत्रहरि लीन्हमनुजअवतार॥
विद्यानिधि अपार जग जाना। कोअस जानि सकैपरमाना॥
जन्म अनेक परिश्रम करई। विद्या सिंधु तदपिनहिं तरई॥
येबिबि तात गये तरि पारा। ताते आदि पुरुष अवतारा॥
जो चाहैं सो करैं अछोभा। मांगिय सो देहैं बिनु लोभा॥
जो कछु सोगुरुदक्षिणा मांगों। भव अरणवहिपारजेहिलागों॥
अल्प काल जो सुत मृतुपाई। गयो शमन पुर मांगो जाई॥
प्रमदा सहित श्याम तट आये। दीन बचन द्विजराज सुनाये॥
कृपा उदधि मोरे यक सूना। निरखत सुख पावौंप्रति जूना॥
दो० सा कुटुम्ब यकबारगा पर्व योग निधि न्हान।
न्हातसमयनिधिबीचिका सुत बहिगोभगवान॥
ताकर शोक अमित यदुनाथा। अहनिशिदाहशोकसतपाथा॥
गुरु दक्षिणा देहु सुत सोई। जो पै नाथ कृपा बड़ि होई॥
करिप्रणाम गुरु कहँ द्वौ भाई। पुत्र काज गवने कुरु राई॥
सिंधु श्यामकहँ जानि सरोषा। बिरच्यो नर शरीर नृप चोषा॥
सभय अधीर लिये उपहारा। प्रभुसन्मुख आयउ तेहिबारा॥
साष्टांग करिदण्ड प्रणामा। भेट राखि भाख्यो निजनामा॥
सबिनय कहत भाग बड़ मोरा। त्रिपुरनाथ दरशन लहतोरा॥
केहि कारण आयउ सुरपाला। सुनि बोलतभेदीनदयाला॥
दो० एकसमय परिवार युत आये मम गुरु देव।
तिनके सुतकहँतुम हरयो सुनु आगमकरभेव॥
जो निज कुशलचहौ जनपाला। लाय देउ तौ श्रीगुरु बाला॥
शीशनाइ कह सुनुजनपालक। जानतमैंनहिं तुवगुरुबालक॥
भुवन वेद दिशिगुरु तुमस्वामी। कृपा उदधि तवचरणनमामी॥

रामचन्द्र बपु बाँध्यो मोहीं। अतिशयत्रसितनाथमैंतोहीं ॥
निज मरयाद सहित नितरहऊँ। तवशरसुतपद सुमिरतअहऊँ॥
जो पै तू न हरसिको हरसी। देह बताय दुराय न करसी॥
शंखासुर कृत कम्बु स्वरूपा। रहत मध्य मम सुनुसुरभूपा॥
जलचर जीवन सो दुख देता। मनुजादिक न्हाते हरिलेता॥
दो० जो कदाचि लै गयउ वह तौ खोजिय यदुराय।
प्रविशे दधि मधि सुनतहरि नृप आनंदबढ़ाय॥
लखत निपात्यो शंखासुर को। उदर फारि हेरयो सुत गुरुको॥
मिल्योन तब कह बलहिसुनाई। बध्यो निरर्थ याहि हमभाई॥
तात दोष नहिंकर यहि धारो। शंख महत्त्व जगत बिस्तारो॥
बधि गरुड़ासन आयुध कीन्हा। बहुरिमोक्षपदअसुरहिदीन्हा॥
सम्मत करि बिबिबाँधव धाये। सानँदसमन निकेतहिआये॥
जहाँ धर्म बैभव पति राजैं। जाहिबिलोकिअघीगणलाजैं॥
आवत प्रभुहि देखि यमराजा। उठिधायो नृप सहितसमाजा॥
करि प्रणाम लायो निज धामा। हरि आसन राजे हरिरामा॥
दो० पादोदक लै समनयह कर्‍यो धन्य मम गेह।
जहाँ दरश तुव पाव प्रभु पूरण प्रगट सनेह॥
भयउं कृतारथ कृपा निकेता। भाषिय नाथ निजागमहेता॥
धन्य जानि सो करों गोसांई। सुनो हेतु आगम यह भाई॥
संदीपन मम गुरू सुजाना। दीन्हो हम कहँ बिद्या दाना॥
गुरु दक्षिणा मांग्यो मृतु सूना। बार न करो देहु यहि जूना॥
आतुर महिषध्वज सुत दयऊ। करि प्रहून पुनिबोलत भयऊ॥
तुव दायाप्रथमहिं यह जाना। आइहि सुतआनै भगवाना॥
करि बहु यतन राखसुरपालक। उपजायोन धरा यह बालक॥
लै गुरु तात यान बैठाई। प्रमुदित चलत भये यदुराई॥
दो० क्षणमहँ हरि पुर आइ हरि गुरुपद कर्‍यो प्रणाम।
दयो पुत्र पूरण पुरुष बजी बधाई धाम॥
पुनि करिप्रणति बद्यौ गुरुपाहीं। कोआयसु कहिये मनमाहीं॥

सुतबिलोकिबढ़िदयो अशीशा। द्विजवर नरवर नायउशीशा॥
अबन मनोरथ कोउ मन रहेऊ। बालकपाइ अकथ सुखलहेऊ॥
जस प्रताप प्रगट्यो पुरलोका। अवनिकेतसुतजाहुअशोका॥
आयसु पाय बंदि गुरु पादा। चले सबंधु कुशल मरयादा॥
मथुरा निकट पहूंचे जाई। सुनि धाये पुर लोग लोगाई॥
उग्रसेन अगमन चलि आये। सबसुदेव बहु करत बधाये॥
भेटि सदन लाये घनश्यामैं। बजी बधाई पुर प्रतिधामैं॥

दो० होत मंगलाचार पुर आनँद कहा न जाय।
मंगल तू भजु श्याम पद दुबिधा मोह बहाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांशंखासुरबधवर्णनोनाम षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

दो० चषनिरखत जिमि रूप कहँ सूरप्रकाशहि पाइ।
तिमि पूषण भासित चतुर ब्रह्म प्रकाशप्रभाइ॥
नवंदशंहरंनखंद्विगुणतिथिं चारिसहितचौरासि।
जलचरनभचरकृमिबिपिनपशुनरयोनिप्रकासि॥
भासित सबमें एकरस परमात्मा सुखमूल।
द्वैतभाव बिनु कृपा निधि कारण सूक्षम थूल॥
निरगुण सगुण स्वतंत्रही होत आपुही आय।
यह दुबिधा मन छोड़िके तू भजु यादव राय॥
पूरण सुख पावै जगत अर्थ धर्म अरु काम।
मोक्ष अंत प्रयास बिनु बदत सकल गुणग्राम॥

वृन्दाबन कीजिय सुधिभूपा। करुणोदयानिधिअकलअनूपा॥
अरुजस ऊधो गयउ सिखावन। सुनु प्रसंगनृपसोअतिपावन॥
एक दिवस हरिबल प्रतिकहेऊ। तात एक चिंता उर दहेऊ॥
वृन्दाबन बासी दुख कोरी। लहतहोहिंगे करिसुधि मोरी॥
कारण अवधि बीतिगइ ताता। सखाप्रियाक्लेशित पितुमाता॥
चतुर बिचारि दूत गुण धीरा। समाधान हित पठइय बीरा॥

ऊधो ते गुण बलित न कोऊ। योग कर्म जानत हैं दोऊ ॥
बोलि कहा वृन्दाबन जाइय। सबहिसुझायतातफिरिआइय ॥
दो॰ एक सखा तुम सत्य मम दूसर ज्ञान निधान।
धीरमान धरमज्ञ पुनि भाषत सकल सुजान ॥
यशुदा नन्दहि ज्ञान बतावो। गोपिन पूरण योग सिखावो ॥
मातु रोहिणी आदिक लाइय। बारन करिय बेगिअतिजाइय ॥
ज्ञान योग हरि नीति बताई। दई पत्रिका लिखि भुवराई ॥
शुभ सन्देश कहेउ असुरारी। सबसन ऊधो कह्यो बिचारी ॥
बस्त्राभरण मुकुट निज दीन्हेउ। निजरथबहुरिअरूढ़ितकीन्हेउ ॥
करि प्रणाम हांस्यो रथ राजा। ऊधो चल्योमुदितनिरब्याजा ॥
अति आतुर बाजी रथ धाये। ऊधो नन्दग्राम तट आये ॥
गहन गहन फल दानव शाखा। द्विजबाणीलाजतद्विजभाखा ॥
दो॰ अमृत दानि राजी बिपुल पीत श्वेत अरु नील।
चारत गोप समोद गुण हरि गावत युत शील।
प्रभु बिहार थल अनुपम शोभा। मन ऊधोकर निरखत लोभा ॥
करत प्रणाम सप्रेम अपारा। ग्राम निकट पहुँचे जेहिबारा ॥
हरि रथ देखि गोप यक आई। ऊधो नाम पूछि नरराई ॥
नन्द समाज तुरत चलि गयऊ। कहिजयजीवबदतअसभयऊ ॥
महाराज प्रभु यान अरूढ़ा। संज्ञा ऊधव पुरुष अमूढ़ा ॥
मथुरा ते आयउ पुर पासा। पूछत नाथ तुम्हार अबासा ॥
सुनत नन्द धाये मुद छाई। जिमिचक्रीगतमणिसुधिपाई ॥
श्याम सखा भेट्यो उर लाई। कुशल पूछि लै चले लवाई ॥
दो॰ अति आदर सन्मान करि लाये नंद निकेत।
पग धुवाय आसन दयो राजे पूरण हेत ॥
भोजन कर्‍यो मोद उर छाई। पुनि शय्या राज्यो सुखपाई ॥
पंथ परिश्रम बश गये सोई। जागे जबहिं नींद नृप खोई ॥
ऊधो तट आये तब नंदा। कीन्ही प्रश्नललित सानंदा ॥
कहो तात बसुदेव प्रसंगा। इष्ट मित्र हमरे छल भंगा ॥

सा कुटुम्ब हैं कुशल क्षेमा। राखत हृदय सत्य मम प्रेमा॥
पुनि अबकुशलकहौ यदुबरकी। सुधि आये बुधिहोतअतरकी॥
सुहृद तात उनके तुम सांचे। हरि अरि याम श्यामरसरांचे॥
कवनौ काल करत सुधि मोरी। अकथ अगोचर गुणगणधोरी॥

दो० अपनी दशा कहा कहैं बिकल सकल नर नारि।
आवन अवधि ब्यतीत भइ आयेनहिंअसुरारि॥

हरि जननी माखन नित धरई। अकलभूमि रुदिबदिनितपरई॥
अपर योषिता हरि रस माती। दिवसरैनि ब्याकुलसबभांती॥
काहुकि सुरति करत गिरिधारी। अथवा सब कहँदीन बिसारी॥
पूछि कुशल भये मग्न सुनंदा। प्रभु रस सर अथाह कुरुचंदा॥
धरि हरि ध्यानअबाकितभयऊ। पुनचैंति इमि भाषन लयऊ॥
बैभव अमित कंसहति पावा। यहि कारणहरिमोहिंबिसरावा॥
यशुदा सुधि बुधि देहँ गवाँई। मन मारे ऊधव तट आई॥
समाचार पूछ्यो हरि हरिके। रोदति प्रभु कर्तबसुधिकरिके॥

दो० ऊधो हम बिनु श्याम हरि मथुरा दिवस अनेक।
रहे कवन बिधिसो कहो शुभ प्रसंग सबिबेक॥

को संदेश कहा बनवारी। आइहियहिपुर कबहुं बिहारी॥
समय बिचारि पत्र हरि केरा। नंदहि दयउ समुद तेहि बेरा॥
नंद रंक धन पाती पाई। चूमि शीश दृग हृदय लगाई॥
गद गद कंठ कह्यो ऊधो सन। पढ़ौ तात यह कह प्रसन्नमन॥
बांचि सुनायो दंडप्रणामा। यथायोग सबके पढ़ि नामा॥
पूरुब तप बर सम हम कीन्हा। मथुरा बास हेत यहि लीन्हा॥
करो नेह मम ब्रह्म बिचारी। तज्यो न सुरति कोउनरनारी॥
वृंदाबन निवास बसुयामा। जानो मोर सत्य गुण ग्रामा॥

दो० ऊधो कह्यो सप्रेम पुनि सुनौ नन्द ममबैन।
धन्य तीनि पुर जानि मम दूसरकोउ अहैन॥

जिनके आयत जनमन रंजन। बाल चरितकीन्होखलगंजन॥
अकथ सौख्य दीन्हो असुरारी। महिमाबिदितअखिलसंसारी॥

पद्मिनि जापद्मिनिरिपु जापति । कौनोविधिनहिंबूझतजागाति ॥
आदि पुरुष पूरण अविनाशी । जननीजनकरहितगुणराशी ॥
ताहि पुत्र तुम जानत ताता । नित्यराग नितराखत गाता ॥
रागा राग अशुचि शुचि कोई । राधा रमणहिं ध्यावै जोई ॥
लहै मुक्ति बिनु युक्ति कराला । प्रभुप्रसाद उत्तम त्रैकाला ॥
आगम निगम पुराण बखाना । सत्यभाव बश श्री भगवाना ॥
दो० दासन हित बिरच्यो बपुष निजबश दीनदयाल ।
मित्र शत्रु जाके नहीं सुनुपुर कृत प्रतिपाल ॥
ऊंचनीच अबला नर कोई । ध्याव मोक्ष सानुराग लहसोई ॥
जिमि भृंगी कीटहि लैजाई । आपु समान करत मुदपाई ॥
अरु जिमि चंचरीक तियराई । पुंडरीक बश निशि ह्वै जाई ॥
गूंजत अलिरजनी शिरवाके । तजतनेहनहिंनिज सुखताके ॥
यहि प्रकार प्रभु आठो यामा । दाससंग डोलत गुणग्रामा ॥
अन्त चतुरभुज रूपहि देहीं । आपुहि माँझलीन करिलेहीं ॥
अबतुमहरिहिसूनु जनिजानो । ममसिखमानिब्रह्म पहिचानो ॥
अंतरयामी जन सुखकारी । देहैं दर्शन तुमहिं बिहारी ॥
दो० परिहरि चिंताजीवकी ध्यावौं लक्ष्मीकन्त ।
सकल मनोरथ जीत तेहि पूरण मुक्तिसुअंत ॥
इमि बतरात निशा गतभयऊ । खदधिमथनचारिदिशिछयऊ ॥
ऊधो कह्यो नन्द प्रति बानी । ऊषाकाल भयउ सज्ञानी ॥
आयसु होइन्हाउं रबिजाता । मेटों अघ संचितनिजगाता ॥
नन्द बद्यौबिलम्ब जनि करहू । संध्याजाप न्हाय अनु सरहू ॥
चढ़िरथ ऊधौ तुरत सिधाये । पूषण सुतातीर चलि आये ॥
शौच कर्म करि रजशिर धारी । जोरि हाथ बिनती बिस्तारी ॥
करिआचमन बहुरि प्रविशेजल । तर्पणकरिध्यायउहरिनिरछल ॥
न्हाय पुनः आये बहिराया । कस्यो शुद्ध मन पूरण जाया ॥
दो० तेहिअवसर तियप्रतिभवन लगींमथन दधिभूप ।
खचीरद छायोअपर नूपुर ध्वनि ध्वनि रूप ॥

दधिमथिपुनिगृहकारजकीन्हा । भईं सुचित्त महीप प्रबीना ॥
जुरि बहुनारि चलीं जल हेता । गावत जाहिं सुनो कुरु केता ॥
अंग अंग प्रति हरि रसमाती । प्रभुगुणबदतन हृदय समाती ॥
बिसरी प्रभुबियोग सुधितनकी । करत बारता जीवन जनकी ॥
कोउ कहहमहिं मिले असुरारी । भयेगुप्त कोउ कहैं निहारी ॥
करमम गह्यो प्रेमबश श्यामा । को असहितू अपर त्रैधामा ॥
ठाढ़े तूल नीय के मूला । रूप त्रिभंगी लखिगत शूला ॥
दुहत धेनु हम लखे मुरारी । देखे गोगण साथ बिहारी ॥
दो० चारत सुरभी हम लखे कोउ कहै मुरली हाथ ।
हैसचेत जलमें धसो चीर हरैं यदुनाथ ॥
चित्त चोर मोहन अबहिं आवैं धाइ मुरारि ।
नेक चितै तनमन हरैं सबही बिधि सुखकारि ॥
जोपै रोकैं बाट हरि तौन पाइहैं जाय ।
श्याम बिरह गोपाल जा कहैं बचन बहुभाय ॥
सत्य प्रेम जस गोपिका राखहिं मोहन साथ ।
मंगल तू मनबचकरम तिमिहिं ध्याउ यदुनाथ ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांऊधौवृन्दाबनआगमनोनाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

दो० पंडित दुर्गामी चतुर हठी गुणी दुरराग ।
बिधवा निरत कुकर्म पुनि हंस गहैं गुणकाग ॥
सधन कृपिण कुलवान नर तजे होय कुलरीति ।
बन्धु नेह बिनु मीत जो करै कपट युत प्रीति ॥
संन्यासी लोभी नृपति कादर मूरुख दास ।
त्रियाबिरोधिनि नीचशुचि तपसीकृतधनआस ॥
जैसे ये सब वृथा जग गावत नीति प्रबीन ।
तैसेही बिनु हरिभजन नर शरीर अघ लीन ॥
बारबार बपु मनुज कर लहत न कोउ संसार ।

तातें तू मन श्यामभजु सुनि शुभमंत्र बिचार ॥
नृप सुत ऊधौ न्हाय सुखारी । बसना भरण सजे तट बारी ॥
नन्दालय दिशि रथ चढ़िचाले । प्रफुलित तनएणावलिघाले ॥
गोपिन जान दूरिते देखा । भयउ सबन के चित्त परेखा ॥
शीघ्रागमन लालसा उर में । झटितचलीं सुखदुख द्वौपुरमें ॥
यानाकार वहै सखि देखिय । होय न क्रूर अक्रूरहि लेखिय ॥
दैव न आव होय खल सोई । हरि लैगयो जगजीवन जोई ॥
मथुरा निवसाइसि मम प्राना । हतवाइसि कंसहि जगजाना ॥
यह बिश्वासघाति फिरिश्रावा । अबधौं का ब्रजकरिहिबनावा ॥
दो० प्रथम प्राण प्रियलैगयउ छलकरि यहखलश्रालि ।
अब धौं प्राणहु लेइगो कपटी खोटी चालि ॥
बकत झकत बहुभांतिहीं शिर घट धरे उतारि ।
तबलगिरथ आयोनिकट त्रियगण रहींनिहारि ॥
लखि ऊधवहि परस्पर कहईं । यहतौ अपर सखी कोउश्रहईं ॥
श्यामबरणचषजलजशुभासन । मोरमुकुट पीताम्बर वासन ॥
विष्णु वेष हरिरथ असवारा । लखतश्रोर यहिकरत बिचारा ॥
एक कहत पाछिल दिनआवा । ऊधौनाम नन्दगृह छावा ॥
प्रभु पत्रिका नन्द कहँ लायो । अरु हरिकर सन्देश सुनायो ॥
गोपिनहूं का लाव सँदेशा । चतुर सुजान किये नर वेशा ॥
सम्मत करि तजि सकुचश्रपारा । ऊधौ निकटगईं तेहिबारा ॥
युत पाटीर पटल मुख देखी । कीन्हदंडवत त्रियन विशेखी ॥
दो० प्रभु अनुरागी जानि त्रिय पूछ्यो कुशलछेम ।
चहुँदिशि करजोरे खड़ीं उर उमड़ान्यो प्रेम ॥
बामावली सनेह बिचारी । ऊधौ रथ परिहर्यो सुखारी ॥
नारिन सहित दलीतल राजीं । चहुँदिशिबनितासोहबिराजीं ॥
कहौ तात केहिकारण आये । प्रभु अवदात सँदेशा लाये ॥
सुनि प्रसन्नभईं सकलसयानी । बात प्रशंसा सहित बखानी ॥
बड़ि करुणाकरि आयउ ताता । इंद्वानन अनुसारौ बाता ॥

निजमाता पितु हेत पठावा। आन सनेहनिकर बिसरावा॥
लज्जादिक त्यागी हरिहेता। अरप्योतननिजप्राण समेता॥
स्वारथ हितू भये बनवारी। बिनुदूषण त्यागी ब्रजनारी॥
दो० समरथ कहँ नहिं कहत कोउ तज्यो प्रीति बिनुदोष।
कल्पतुल्य अहि निशिकटत जीव लहत नहिंतोष॥
प्रीति धर्मजस नीति बखाना। प्रभुसँगतसहमकीन्हसुजाना॥
काहू बिधि न कस्यो दुर्भावा। निजकृतकर्मसत्य फलपावा॥
सारसजिमि जलहित सरतजई। बहुरि न कधरद्वार कहँभजई॥
यथाफलीद्विजबिनुफलत्यागैं। अलियशअरसकुसुमलखिभागैं॥
मृगपरिहरजिमिप्रफुलितकानन। तैसेहमहिंतज्यो खलभानन॥
हमन निरस रस कबहूं कीन्हा। आपनदोषस्वल्पनाहिंचीन्हा॥
पूरण राग भाग बश जाना। मुख्य पुरुषध्यायउ भगवाना॥
पारस पाथर गुण दातारा। कर्म बिबश भाजग करतारा॥
दो० जीवन भरिहम प्रीति को यकरस करब निबाह।
चातृक जिमि घनरसचहत यदपि तृषाउरदाह॥
गोपिन केरि प्रीति लखिभूपा। भाअबाक दारज अनुरूपा॥
प्रेम मगन चाहत पग परसन। अकरकरत कसऊधो करसन॥
तेहिक्षण एकभ्रमरतहँ आवा। पियतकुसुमरस फिरतसोहावा॥
ताहि बिलोकिकहत यकनारी। सुनुमधुकर मृदुगिरा हमारी॥
माधव चरण कमल रसचाषा। मधुकर नामतोर बुधभाषा॥
तू कपटी कर मित्र कहावै। मूढ़ प्रपंच तोहिं भलआवै॥
सो विचारि माधव छलकारी। पठवा दूत तोहिं गुणिभारी॥
कुटिल कलेवररचि ब्रजआवा। जानि अबुधअबला भ्रमछावा॥
दो० चंचरीक यक गंधलहि राधातन शुभगीत।
पद परसतटारत करहि भाषतबचनबिनीत॥
सो० तू कपटी कर मीत पद परसन के योगनहिं।
ऐसे बदत अभीत अतिप्रपंच नहिं चलिसकैं॥
श्याम बरण की नहिं परतीती। रंचक नहिंजानत मगु प्रीती॥

असित रंग पीतांबर धारी । तुव सदृश चीन्हे असुरारी ॥
व्याल यथापालै कोउ नीको । पान करावै पय सुरभीको ॥
तदपि श्यामता बश गुणजाती । बिषबिवर्द्धकतहुँकडसिखाती ॥
बायस पालत शावक पीका । करिसनेहनिर्व्याजक जीका ॥
प्रौढ़ होत तजि काग निकेता । निजकुल बंधुनकहँ सुखदेता ॥
कज्जल कलित पात्र पट धरई । नेम सहित रक्षातेहिं करई ॥
तदपि कलंकरहित नहिं त्यागै । जानिचतुरकोनिजमतिखागै ॥

दो० प्रति प्रसूनकर जौन बिधि तू लेवतरस धाइ ।
प्रीतम साँचा होत नहिं काहू कर सतिभाइ ॥
नन्दलाल तैसे मिलत हित सों तजत अदोष ।
अथिर प्रीति चंचलन की मननलहत संतोष ॥

पुनरपिअपर भ्रमरयकआवा । तेहिलखिललिताबचनसुनावा ॥
अबन हमहिंमधुकरपतियारा । प्रगट्योछलअबसकल तुम्हारा ॥
मधुपुर लेहु जाइ रसआली । जहँ कुबिजागृहहैं बनमाली ॥
जन्म जन्म छली असुरारी । जानंतिहमसबदशा तुम्हारी ॥
कुटिलशिलीमुखसुनुहरिकरणी । कबिन भलीबिधिसोंतेहिबरणी ॥
देशकोश बलि सर्बसु दयऊ । बपुदातव्य बहुरि प्रण लयऊ ॥
तदपि पताल निवास्यो वाको । रंचक अघ न रहे भव जाको ॥
सीतासती सकल गुण खानी । जेहिसमनाहिंमघौनिमृडानी ॥

दो० बिपिन बासताकहँ दयो गुर्बिणि बिनु अपराध ।
ऐसे के तुम मीतहौ बिरचे भूषण साध ॥

ऊधौ प्रति कर जोरि बखाना । हमव्याकुलबिनुदयानिधाना ॥
दशदिशि दीखन सूझत कोई । सँगलै चलिये तुवयशहोई ॥
तब ऊधौ कह सुनो सँदेशा । जेहिहितमोहिंपठवाहृषिकेशा ॥
करिएकाग्रचित्तश्रुति कीजिय । शिक्षावत मारगगहिलीजिय ॥
भोग आशतजि योग बिचारौ । नवली त्राटक कर्म पसारौ ॥
बस्ती धोती नेती साधौ । शुद्ध शरीर करौ मन बाँधौ ॥
यमौनियम आसनशुचि करहू । प्राणायाम चित्त निज धरहू ॥

प्रत्याहार धारना ध्याना। युत समाधि अष्टांग प्रमाना॥
दो० इड़ा पिंगला सुखमना आदिक जौन बिहार।
तत्त्वादिक निरख्यो बहुरि भेदौ चक्राकार॥
त्रिकुटी सदन त्रिबेणी धारा। कहां निरंजन ज्योति पसारा॥
लखौताहिपुनि गगनहिं धावौ। अजपा प्रणवमंत्र चितलावौ॥
जो यह करतहोइ कठिनाई। तौमम भजन करौ मनलाई॥
जेहिफल कतहुं न होइ बिछोहू। जानिब्रह्म ध्यावौ तजिमोहू॥
यहौश्याममोहिंचलत सुनावा। गोपिन समन कोउतिहुँठावा॥
आठौयाम ध्यान मम करहीं। मोरे उरते दूरिन परहीं॥
पुनिकहआदिपुरुषअबिनाशी। अजअद्वैत अकल गुणराशी॥
कस्यौ निरंतर तासन प्रीती। सत्य सनेह पन्थ जसनीती॥
दो० अलख अगोचर जानिश्रुति गावत सुयश सदाहिं।
कहौकान्त निज तिनहिं तुम पूरणहित उरमाहिं॥
महिशिखिजलअरुपवनअकाशा। जेहिबिधितनमहँकरतबिलाशा॥
निरमाया निरगुण अबिकारी। सहजहिंतुममधिबसत मुरारी॥
जो स्वछंद अद्वैत कहायो। तासुराग निज उरदृढ़ लायो॥
सदाभक्ति बश दीन दयाला। रचत सुजनसदा तिहुँकाला॥
नितप्रति संग बसत हित हानी। दूरिनिवास कीन्ह यहजानी॥
रास चरित मोहिंश्याम बतावा। कह्यौसमय यक बेणुबजावा॥
सकल गोपिका बिपिन बुलाई। रासरच्यौ बड़ि प्रीति दृढ़ाई॥
मदन अन्धभई जब सब नारी। भयउंगुप्ततब कुरुचि बिचारी॥
दो० पुनिजब पूरण ज्ञानसों कीन्हा ध्यान हमार।
प्रगट्यौ तिनके मध्यहौं तब तुरंत तेहिबार॥
ऊधौ बचन सुनत रिसबाढ़ी। कहैं गिरा बिरहानल दाढ़ी॥
योग ज्ञान बिज्ञान बतायो। रस छुड़ाइ आकाश लखायो॥
क्रीड़ाबिबिध कस्यो हम संगा। तिनकर अलखबदत परसंगा॥
सुखआबालहिते जिन दयऊ। सोअजअविनाशीकसभयऊ॥
रूपराशि गुणसदन कृपाला। कसअरूप निरगुणनँदलाला॥

प्राणहुते प्रिय मोहन श्यामा । तुव उपदेश सुने को बामा ॥
अपरकहै सखिकरु मनुहारी । अस सन्देश न कहत बिहारी ॥
कुबिजा छलकरि याहि पठावा । यह विपरीत सँदेशा लावा ॥
दो॰ सुनै कौन बिषसम बचन सुनत नशत बुधिगात ।
दहत हृदय ममका करौं पुनि पुनि मन पछितात ॥
करौ योगसब भोग बिसारी । जीवतपतिहिभूतिकिनधारी ॥
धर्म बिरोध बचन यह कहई । यहुआचरणकन्त बिनुअहई ॥
जप तप संयम तीरथ सेवा । ब्रता चार अरु अर्चन देवा ॥
यह न सोहागिलकर ब्यौहारा । युगयुग जीवहिनन्ददुलारा ॥
मलयज शिखिसम दाहत देहीं । गरल लेप भावतकृत केहीं ॥
नेम धर्म हमरे हरिपादा । को अब करै बाद अनुबादा ॥
दोष न ऊधौकर कछु जानिय । कुबिजासीखप्रपंचक मानिय ॥
मीन कमठ सिख नीरन त्यागै । मृगभृग कहे तजतनहिं रागै ॥
दो॰ ऐसे दूत सहस्र नित आवहिं शिक्षा काज ।
को मानै हरिचरण तजि सखिध्याइय निर्व्याज ॥
भाव भवित नारिनकी बानी । सुनि ऊधौ कर धी बौरानी ॥
अतिगलानि अधशिरकरिलीना । बहुरि न कछु उत्तर नृपदीन्हा ॥
लज्जितजानि कहै यक गोपी । दाऊ कुशल कहौ किनसोपी ॥
उनके मन कछु सुद्धि हमारी । सत्य बदौ ऊधौ हितकारी ॥
बीचहि अपर बाल इमि भाषा । तुम्हरे सखीवृथा मन माषा ॥
बुद्धिरूप बिनु ग्वाल किशोरी । मधुपुर नारि रूप गुणधोरी ॥
करत बिहार तहाँ असुरारी । अब कैसे सुधि करैं तुम्हारी ॥
जबते मथुरा कीन्ह निवासा । तबते हम त्यागी पति आसा ॥
दो॰ जो प्रथमैं यह जानतीं तजि हैं नेह मुरारि ।
तौ नहिं देतीं जान हम निजकृत भई दुखारि ॥
अवधि आश त्यागौ सब आसा । बिधिकृतमिटिहिनहोउउदासा ॥
को पछिताव समय तजिआली । वृथा जीव दंडहि बाचाली ॥
महि बननग बसु मास भरोसा । राखत मेघ करत पुनिपोसा ॥

हरिपद प्रीति नित्य चितकरहू। तौ परिणाम दरशिसुखभरहू॥
सुयशबिशदहरिकिय कहकोपी। मार्‍यो कंसासुर प्रणरोपी॥
अब किमर्थ वृन्दाबन आवैं। परिहरिबिभव बिपिनमगुधावैं॥
चिन्ता बिनशै होत निरासा। अवधिआशत्यागौअनयासा॥
कोऊ सुनत कहत बिकलाई। हरिआशा तजिये किमिमाई॥
दो० जहँजहँ प्रभुलीला करी तहँतहँ लखिदुख होत।
बिसरत नाहिं यशुदातनय दुखसागरकर पोत॥
वृन्दाबन भा उदधि कलेशा। बोहित शुभगनाम हृषिकेशा॥
कस गोपी पति गोपी भूले। नाम लाज पेलन नहिंभूले॥
मनमन ऊधव कहत बिचारी। तिहँपुरअधिकधन्यब्रजनारी॥
लोक लाज तजिदृढ़ धी श्यामैं। ध्यावैं सदा सकल गुणग्रामैं॥
करत प्रशंसा मन बहु भाँती। अन्तर राग प्रगट बहिराती॥
उठीं नारि सब बिकल बिचारी। ऊधौको बिनती अनुसारी॥
सादर कर गहि चलीं लिवाई। सपदि मुदित निकेत लै आई॥
देखि प्रीति ऊधौ हरषाने। भोजन कर्‍यो मोदमन आने॥
दो० निशावास करिश्याम यश सबहि सुनाव सप्रेम।
युवती सुनि प्रफुलितभईं जिमि नेमी सुनिनेम॥
ऊधव कहँ पूज्यो सह नेहा। भेंट दीन्ह पुनिसहित सनेहा॥
सबिनय बोलीं बचन बिनीता। कहयोतात सन्देश अभीता॥
करगहि बिपिनफिरौतबस्वामी। लखिब्याकुलहोवतमतिकामी॥
अब ठकुरत्व पाय बिसरावा। दासीसंग सनेह बढ़ावा॥
सम्मततासु लिख्यो प्रभु योगा। अगुरनारिकिमित्यागैभोगा॥
दृढ़ आबाल प्रीति तुव साथा। को बिरागकी मानै गाथा॥
आपु आइ इत योग सिखाइय। किमिसन्देशनयोगहिगाइय॥
हरिसों कहियो तात बुझाई। जातजीवकिन लेहु बचाई॥
दो० असकहि गोपी ध्यानहरि धारि भईं सब मौन।
ऊधव उठि दंडवतकरि भूपति कीन्हों गौन॥
नन्दालय दिशि चले सुखारे। गोपी प्रीति विवशमनमारे॥

जात सराहत नारि निकाई । पहुँच्यो गोवर्द्धन तटजाई ॥
कृष्णस्थल बिहार जहँ जाहीं । करयोबासादिनप्रतितहँताहीं ॥
नन्दभवन पुनि आयउ राई । कह्यो सनीति बचनशिरनाई ॥
तवसत्कार बिलोकि अपारा । केतिकदिनब्रजकीन्हबिहारा ॥
गौनौं मधुपुर होइ रजाई । मगु निरखत ह्वैहैं यदुराई ॥
पुण्यासन यशुदा तब दीन्हा । यहिबिधिपुनिबचभाषनकीन्हा ॥
यह दीजो हरि रामहिं जाई । अरुदेवकिहि कह्यो समुझाई ॥

दो० पठइ देहुँ ममसूनु दोउ क्यों राखे बिरमाय ।
असबँदिबिलपतक्लेशयुत किमिदुखबरणोजाय ॥

बहुरिनन्दकह बचन बिचारी । देखत ऊधौ दशा हमारी ॥
तुमहिं बुझाय कहिय का ताता । ज्ञान बिबेक निपुणसज्ञाता ॥
सपदि श्यामब्रजआय बिलोकै । गोपिन सहितहरैं ममशोकै ॥
बिथुर बिकल रोवै नँद लागे । रोवत अपरहु ग्वालसभागे ॥
तब सब कहँ ऊधौ समुझावा । रथ रोहिण्यादिकहि चढ़ावा ॥
भेंटि सबहि ऊधौ गुणखानी । मथुरहिचले मोद मनआनी ॥
सातुर आवत भे प्रभु पासा । महामुदित मुखभा परकासा ॥
लखि हरिराम आशु उठिधाये । पूंछिकुशल निज कंठलगाये ॥

दो० नन्दादिक ब्रजजननकी पूंछिकुशल सुखपाय ।
गोपिनकेर बृतान्तपुनि पूंछि सुथल बैठाय ॥

ब्रजमहत्त्व नारिन कर नेहा । बरणि न सकतनाथयहिदेहा ॥
तुव पदकंज ध्यान बसु यामा । तीनिआयु पूरणगुण ग्रामा ॥
भजत यथा निस्प्रेही ज्ञानी । तसगोपिका प्रेमकी खानी ॥
प्रभु उपदेशक योग सुनावा । भजनभाव गोपिनसन पावा ॥
अंतरयामी तुम भगवाना । अधिककहा करिकहौंसयाना ॥
थिर चर दुखित नाथ ब्रजबासी । अवधि कपाट जीवगृहग्रासी ॥
सुनि निज सेवक सदुखकृपाला । शोचतबन्धुसहिततेहिकाला ॥
ऊधौ करि दंडवत महीपा । जातभये बसुदेव समीपा ॥

दो० कह्यो तिनहिं समुझायतब यशुदानंदसँदेश ।

ऊधौनिज मंदिर गये उर ध्यावत हृषिकेश ॥
राम श्याम मिलि रोहिणी रही आपनेधाम।
मंगल सुनिकेसीखशुभ भजुकिनमोहनश्याम ॥
इतिश्रीमद्विविधकिलिखषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांगोपीसंबोधनऊधौआगमन
वर्णनोनामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

दो० बिनाभाग्य सतसंग नहिं भाग्य सुकर्माधीन।
धर्माधीन सुकर्म है धर्म दया पद लीन ॥
शांतिबिबश दाया सदा तोषाधीन सुशांति।
ज्ञानाधीन सुशांति पुनि सो दुखके बहिशांति ॥
नर शरीर दुर्लभ जगत ता महँ उत्तम बर्ण।
तामहँ बिद्या निपुणई भव अमोल दुख हर्ण ॥
ताहू में चतुरत्व बुध ज्ञान चतुरई मोह।
कठिन होब ज्ञानौ भुवन यह बरणत कबिनोह ॥
ज्ञान पाय संन्यास मत ध्यावै आतम आप।
अथवा राधारमण पद ध्याय मिटावै पाप ॥

मुनि कह सुनु नर कुरलयशूरा। जो प्रसंग सुनि बिनशैक्रूरा ॥
हरि बिचारि कुबिजा अनुरागा। निजप्रण पालन पूरणभागा ॥
ऊधौ संग लाय यदुराई। कुबिजा सदन गये सुखपाई ॥
कुबरी हरि आगम अनुमानी। पाटाम्बर डासे मगु आनी ॥
कस्यौ दरश सत्वर चलि आगे। बढ़्यौ सुकृत अघपूरुब भागे ॥
नवलासन नवलांग सोहाये। पंथासन ऊधौ बैठाये ॥
धवलधाम अंतर प्रभु गयऊ। अद्भुत कौतुक देखत भयऊ ॥
रच्यौ बिचित्रित उज्ज्वलशाला। तहँप्रसूनमय तल्प बिशाला ॥

दो० तापर राजे जाय हरि सानँद सागर शील।
कुबरी तन उबट्यौ इतै मद्यौं गन्धि अढील ॥

नख शिख रचि षोड़श श्रृंगारा। चलीश्यामतट असतेहिबारा ॥
यथा अनंग बाम पति पासा। प्रथम भेट उर लाज बिलासा ॥

मुग्धा मष्ट यकान्त बिराजी। पटअंतर कटाक्ष गति साजी॥
बचन प्रमाण श्याम करपरश्यौ। कंठ लगाय इंदुलयदरश्यौ॥
तासु मनोरथ सम प्रभु कीन्हा। पूरण सुख कुबरी कहँदीन्हा॥
उठि ऊधौ पहँ आवत भयऊ। अधचप किये लाजउरछयऊ॥
ताहि प्रतोषि श्याम गृह आये। कुबिजा बहुबिधि करतबधाये॥
नीलाम्बर प्रति यक दिन भाषा। तात सत्यसुनुमनअभिलाषा॥
दो० यह निबंध अक्रूर सन कर्यौ प्रथमही तात।
तुव आलय हम आइहैं पूरण कीजिय बात॥
नर शरीर धरि बचन प्रमाना। करहिं न सो जीवत सबमाना॥
प्रथम भेटि पुनि कहिय बुझाई। जाहिं हस्तिनापुर यदुराई॥
समाचार पाण्डव कर लावैं। जोसुनि निबिड़कलेशनशावैं॥
युगल बंधु हरि ठवनि सोहाये। चलि अक्रूर निकेतहि आये॥
दूरिते तासु दृष्टि हरि परेऊ। धाइचरणरज निजशिरधरेऊ॥
सविनय बदत जोरि द्वौ हाथा। दयाधीशजन कर्यौसनाथा॥
सानु कोश आयो मम धामा। पावनकर्यौ सदनगुणग्रामा॥
तुम न प्रशंसा करौ हमारी। सुतसेवक निजहृदयबिचारी॥
दो० बालक दोष न चितधरहिं तात गुरू पितु मात।
अरु न प्रशंसाहू करत यह प्रसंग बिख्यात॥
पुनि कह तुव पद कंज प्रसादा। निहते खल दुखदामनुजादा॥
एक चिंतमन रह उर मोरे। निपटिहि नाथ निवारे तोरे॥
कहिय प्रसंग तात जो करहू। छोहक मम चिंताप्रभु हरहू॥
कह अक्रूर होइ अनुशासन। कछुमिषकरबकरतनहिंतासन॥
सुन्यौपांडु निजतन परित्यागी। सुदिर नाथ पुर गये सभागी॥
तिनके तनय अकथ दुखपावत। जड़ दुर्योधनउनहिं सतावत॥
कुन्तीमातु दुखित है भारी। समुझावौसुनि विनयहमारी॥
यह चिन्तमन तजौ तुम ताता। जाउपांडुगृह शिरधरिबाता॥
दो० सबहि बुझाय समोद पुनि समाचार सब लाय।
तुमहिं सुनाऊं कृपानिधि दुबिधा देहु बहाय॥

सदा दास रक्षा करत यदुनायक सुख देय।
मंगल मन आनंद युत कसन ताहि भजिलेय॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषांधकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकुबिजाकेलिवर्णनोनाम
ऊनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

दो० अलख अगोचर ब्रह्म हैं माया रहित मुकुंद।
अज अबिनाशी शत्रुहा हरत सकल दुखद्वंद॥
वृन्दारक क्लेशित निरखि बिरच्यो मनुजशरीर।
जाहिभजत नहिं अधमनर जगमग फिरतअधीर॥
इतकदेन बहुबिधि लहत उतहि अधोगति बास।
माया बशपरपंच करि द्वौ दिशिरहत उदास॥
धृक जीवन बिनु हरिभजन भ्रमत वृथाभवआय।
बार बार दुखही लहत रहतन थिरता पाय॥
चतुर सुजान प्रबीन जे तेपरिहरि सब भूल।
ध्यावत रुक्मिणि नाथपद कंज सकल सुखमूल॥

सुनौ रसाधिप चरित सोहावा। जब अक्रूर रजायसु पावा॥
चल्यो यान चढ़ि गज पुरसोई। मिथुन तातगृहगे सुखभोई॥
कछुक दिवस मारग महँबीते। नागनगर गये श्याम परीते॥
कौरव सभागये यदुराई। द्वार यान राख्यौ सुनुराई॥
हरि आसन दुर्योधन वैसा। सहितकायअभिमानसुजैसा॥
जाय सभा भूपतिहि जुहारा। देखि उठ्यो धृतराष्ट्र कुमारा॥
मिल्यौ सभासद करि सन्माना। जस सत्कारकरत बुधिवाना॥
बैठारयो नृप आपु समीपा। पूछ कुशल कौरवकुलदीपा॥

दो० शूरसेन बसुदेव हरि उग्रसेन बलराम।
सानँद सब नारिन सहित कहौ तात गुणग्राम॥

उग्रसेन जड़ता बश भारी। करतराज निज तनय सँहारी॥
साभिमान मानत नहिं काहू। बैभव बिपुल कृष्ण बललाहू॥
मीत बन्धु सुधि दीन्ह बिसारी। को गुरुता उन पासहमारी॥

भे अक्रूर मौन सुनिबानी । यहिप्रकार निजमनअनुमानी ॥
दुष्ट प्रकृति यह अखिलसमाजा । इहाँ निवास मोर नहिं काजा ॥
खल मंडली अनीति कहानी । कहिहैं मोहिं सुनाय कुबानी ॥
अनुचितसुनिदुखउरमोहिंलागिहि । बृथाक्रोधउरअंतरजागिहि ॥
लै रजाय सँगबिदुर लगाई । पांडु निकेत गये यदुराई ॥

दो॰ तहाँ जाय देख्यो बिकल कुंती पति के शोग ।
कृत बिलाप संतापमय कृशतन बाल अयोग ॥

निकट जाय कह ज्ञान बुझाई । गहनबिपुलकृतकेहिहितमाई ॥
इन्दीबरज लेख बश लोका । संगासंग मोद अरु शोका ॥
अमर मरत मृतु धारि शरीरा । जड़ जंगम कोउभो न सुथीरा ॥
स्वप्न बिभव जागत सबुनासै । तेहिबिधिजग असारयहभासै ॥
को पितु मात तात सुत नाती । बाम दहिन पंथी सम जाती ॥
पंचतत्त्व मिटि तत्त्व समाहीं । देहीं अबिनाशी नश नाहीं ॥
यह बिचारि धीमान अशोचा । तीनि काल कृत चिन्तामोचा ॥
संशय करत मोद कर हानी । सुखी न होत सचिंतक प्रानी ॥

दो॰ सुनि शिक्षा अक्रूरकी कुन्ती शोकहि मोचि ।
कुशल क्षेम पूछत भई मथुरा की मनरोचि ॥

जननी जनक बन्धु बसुदेवा । रहत प्रसन्न कुटुम्ब सतेवा ॥
मुरली मूशल धर आनन्दा । हैं कहुँ यदुकुल कैरव चन्दा ॥
कतहूं सुधि अजात रिपु आदी । ममतनुजनकर कृतअबिषादी ॥
दुख सागर बूड़त बश भूपा । उडुप रूप बिषदानि स्वरूपा ॥
अति धृतराष्ट्र जात दुख देता । पार करहिं प्रभु क्षमासमेता ॥
असह क्लेश दुर्योधन सम्मति । लहतजातममसुतयदुबरमति ॥
बधन हेत नित करत उपाई । लेत महेश भवानि बचाई ॥
भीमहिं बिष दीन्हा कित बारा । पचयो कृष्ण कृपा बिकरारा ॥

दो॰ शत बांधव मन शत्रुता राखत भूधर याम ।
यहिपुर निवसत तातसुत दंडअमित परिणाम ॥

हरि तजि दूसर हितू न मोरे । कहियो तात बिनय करजोरे ॥

मोचौ दुख निज बंधुन केरा। चहुंदिग सूझत कालबसेरा॥
पीड़ित भो सुनि कुन्ती बानी। मृदुल गिरा करजोरि बखानी॥
नेकहु शोक करिय जनिमाई। यदुबर आठौ याम सहाई॥
बली बिक्रमी यशी प्रबीना। पुत्र तुम्हार सगुणछलछीना॥
करिहैं निजकर शत्रु निकंदा। पक्षी काल तीनि यदुचंदा॥
यह सँदेश दे मोहिं पठावा। सुनितवदशाअमितदुखछावा॥
धीरज धरैं तजैं सब पीड़ा। गहन हरौंहौं आइ अब्रीड़ा॥

दो० बहुबिधि ताहि बुझाय नृप चले रजायसु पाय।
बिदुर संग धृतराष्ट्र पै गे अक्रूर सुभाय॥

करि जोहार कह तिनहिंबुझाई। कस अनीति कृत धर्मबिहाई॥
निजसुत बश सुत बंधु सतावौ। कोसुलोक यहिलोकदिपावौ॥
धर्मशास्त्र कोउ रच्यो नवीना। करतअनीति जासुआधीना॥
ऊरधांध अंतर चष देखौ। कुल बिनाश बशपातकलेखौ॥
पांडु राज बिनु अघ तुमलयऊ। धर्मादिकन अमितदुखदयऊ॥
कह धृतराष्ट्र करिय का भाई। दुर्योधन सन कछु न बसाई॥
निजमति सरिस करत प्रभुताई। मूरुख हमहिं कहत मदछाई॥
यहिते हरिहि यकान्त मनाऊं। तात सभाहौं भूलि न जाऊं॥

दो० सुनत बचन दंडवत करि रथचढ़िचले नृपाल।
मथुरा नृप बसुदेव सन कह्यो जाय उत्ताल॥

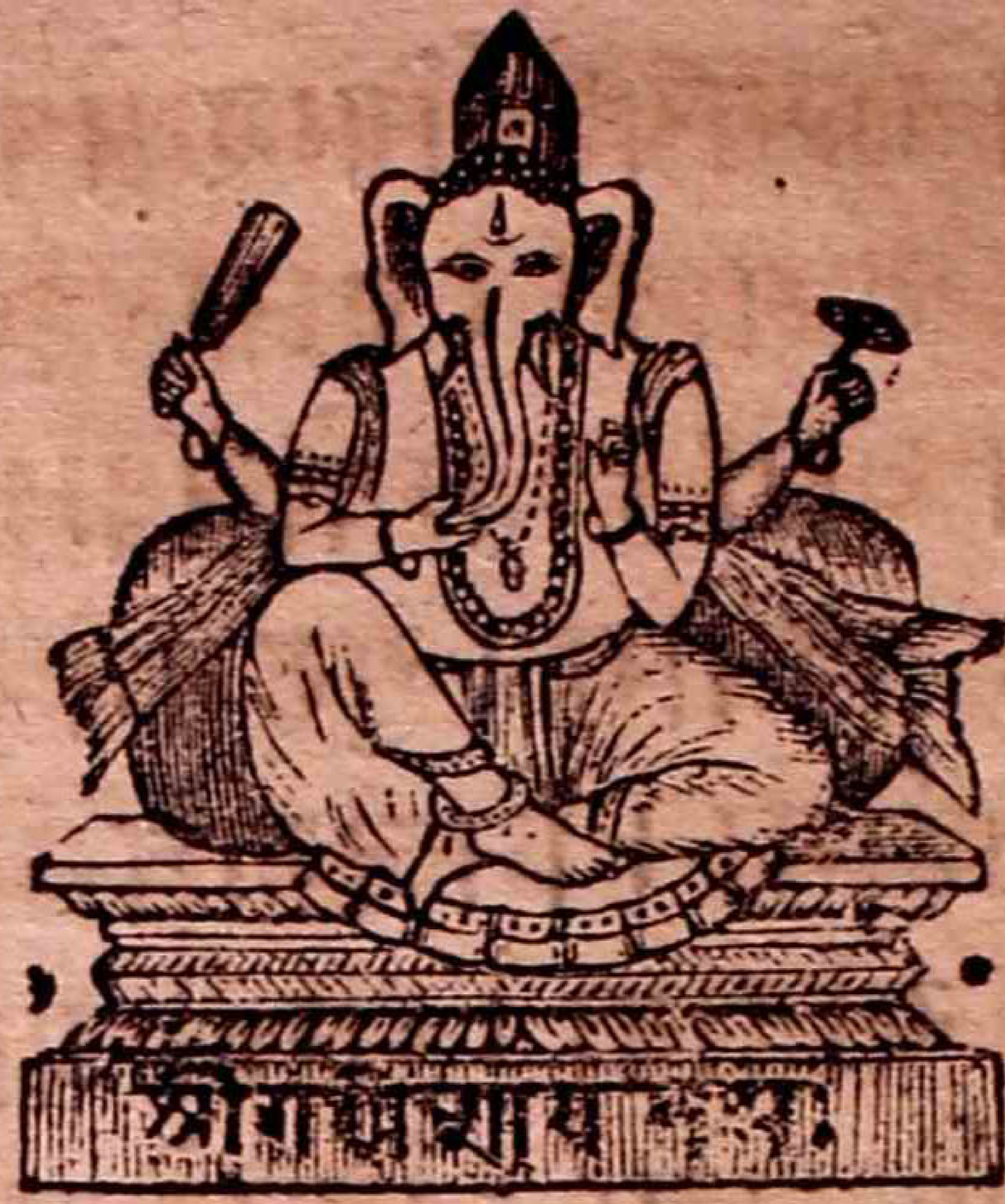
उग्रसेन बसुदेव दुखारी। गजपुर दशा सुनत भयभारी॥
पुनि अक्रूर गयउ प्रभुठामा। मोदमिलितकियदंडप्रणामा॥
कह करजोरि नागपुर नाथा। तव पितुभगिनीपरमअनाथा॥
देखि ब्यवस्था बुद्धि सिरानी। बरणत बनत न दुखकरखानी॥
अंतरयामी आपु कृपाला। कारक हारक तुम प्रतिपाला॥
पुनि कुंती कर कह्यो संदेशा। सुनिहरिमनकछुउपजकलेशा॥
आयसु लै अक्रूर सिधाये। निज निकेत भूपति तबआये॥
बल अब इलाभार सब हरहू। उत्तम बुद्धि चित्त यह धरहू॥

दो० जो चाहत सोई करत ऐसे दीनदयाल।

ब्रजबनमथुराचरितयहहौंबरण्योमहिपाल ॥
निजमति सरिस गुरू परसादा । ब्रजरहस्य बरण्यो अबिषादा ॥
काव्य भाव बिद्या बुधि थोरी । छम्योसकलकबिलाखिकै खोरी ॥
बालक बचन अबूझ अपारा । गुरुजनबुधसमुझतसबिचारा ॥
मैं कायस्थ बरण मतिहीनो । निजरुचिसमहरियशकहिदीनो ॥
शाहजहाँपुर नगर सोहावा । सरही ग्राम बसत तेहिठावा ॥
राजाराम सुबुद्धि बिशाला । तिनकेसुतगणेश गुणपाला ॥
उनके तनुज बिहारी लाला । ते गुणखानिहितू प्रतिपाला ॥
बकसी राम तनय तिनकेरे । चतुर सुजान जनक ते मेरे ॥
छं० तेजनक ममयश बिदितभव पितुतात ऐसे शुचिगुनी ।
निजकुलजरठजन मुखनहौं उज्ज्वलसुकीरतिशुभसुनी ॥
रुचिभई बरणौं श्याम यश यह दशम मतसुंदर महा ।
यदुनाथ चरण प्रतापसों दुख मूलहौं मानौं दहा ॥
दो० जेजन साधु प्रबीणजग पढैं बिचारि सप्रेम ।
कृष्ण कृपा उतरार्द्ध हू करिहौं है यह नेम ॥
जय राधाबर कृष्णकी जयजनपालक एक ।
दुखनाशौ सुखदेहु प्रभु मांगतसहित बिवेक ॥

इतिश्रीमद्बिबिधकिल्बिषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांअक्रूरहस्तिनापुरगमनो
नामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इतिश्रीदशमस्कंधपूर्बार्द्धसमाप्तंशुभम् ॥



अथ कृष्णप्रिया उत्तरार्द्ध ॥

सोरठा ॥

बिघ्न हरण गुणखानि लम्बोदर आनन कलभ ।
करौदया जनजानि तव प्रताप शिखिअघशलभ ॥
गुण गण करण प्रकाश विद्या दा गुरु ईश सम ।
पूरण कीजियआश सकल बिघ्न हरिनाथ मम ॥
श्रीस्वामी कपिराज खल जवास जलधार जस ।
राख्यो जनकी लाज छंद भंग पुनिरुक्ति रस ॥
कवि कोबिद सुर साध चतुर्भाग चतरासपुर ।
आशिष देहु अवाध उत्तरार्द्ध अब बदौं फुर ॥
सत्यमीत जे मोर तीनिकाल उर रूप धर ।
तिनसों करतनिहोर आशिषदीजिय सिद्धिकर ॥

भुजंगप्रयात ॥

नमो पूतना भंगकारी मुरारी । नमस्त्वंअघाबच्छाविध्वंसकारी ॥
नमोगोपिकासौख्यदाश्यामरूपं । नमोकालिमद्धंगकारीअनूपं ॥
नमोकेशिव्योमादिहंताकृपालं । नमोकंसचाणूरनाशं दयालं ॥
नमोविश्वपालंनमोविश्वकारी । नमस्त्वंरमानाथदुःखौघहारी ॥
दो० जानिदास राधारमण बुधि दीजिय दुखहारि ।

तबयशगावों मोदमय भवअघदेउ निवारि ॥
श्रीशुकदेव नृपति प्रति गावा। विशदचरित पापघ्न सुनावा ॥
सुनु नरेन्द्र पांडुर शुचि गाथा। दुखहारक सुखदायशपाथा ॥
जेहि प्रकार यदुनाथ कृपाला। जरासन्ध भूपति मदघाला ॥
अरुजिमिकालयमनकहँनाशा। पूरण लोकलोक परकाशा ॥
नृपमुचकुन्दमोत्तजिमिकीन्हा। व्यूहशिखंडी शीतल चीन्हा ॥
तिमि मथुरा द्वारिका बसाई। कीन्हे तहँ बहुकृत यदुराई ॥
चितदैसकल श्रवण नृपकीजै। मुक्ति पदारथ करतल लीजै ॥
उग्रसेन नृपता अधिकारी। हरि हलधर नृप आज्ञाकारी ॥
दो० करत नीतिमयराज सो प्रजा सुखी दिशिचारि।
दोष शोक बिनु नारि नर रह्यो मोद विस्तारि ॥
सानँद नृप चहुंबर्ण अथाई। केवल कंस बधून विहाई ॥
निशिनिद्रादिनक्षुधा न व्यापै। कंत शोक अर्जुन उर तापै ॥
उदासीन त्रिय रहैं नृपाला। अतिशयबिकलग्रसितदुखजाला ॥
कहैं परस्पर इमि द्वौ नारी। भूप बिना जिमि प्रजादुखारी ॥
शशिबिनुनिशिअदीपनिशिधामा। शोभालहतनसोपरिणामा ॥
तिमिकामिनिबिनुकन्तअभाती। पतिवियोगविहरतअतिछाती ॥
उचित रहबनहिं इहां अनाथा। नैहरपितुहि कहियदुखगाथा ॥
काटिय काल जनकपुर माहीं। मथुराहमहिं सौख्यकोउनाहीं ॥
दो० अस बिचारिचढ़ि यानते चलींजनक अस्थान।
मगध देश गृह राजमहँ पहुचीं भूप सुजान ॥
भेटि पिता मातहि नरपाला। निजदुखकरसबकह्यो हवाला ॥
जिमि हरिराम असुर सहकंसा। सहजहि मथुराकीन्हविध्वंसा ॥
पूरबवत दुख मग्न बखाना। सुनतजुरानिधिअतिदुखमाना ॥
सभाजाय क्रोधित नृप सोई। कहत भयो मंत्री मुख जोई ॥
महाराज कारण को आही। आननक्रांतिमलिनदरशाही ॥
कहाकहिय यह अकथकहानी। सत्यझूठ नहिंजात बखानी ॥
को बलवान भयो यदुबंसी। असुरसैन सिगरी जेहिध्वंसी ॥

हन्यो कंस चाणूर प्रतापी। निज मरयाद कंसपुर थापी॥
दो॰ विधवा दुहिता करेसिमम यहकलेश बड़मोहि।
दल बटोरि मथुरहिचलों बधौं समरमहँ ओहि॥
बधि यदुकुल पुरसकल उजारों। रामकृष्ण निजकर संहारों॥
मंत्रिनहूके मन मत भावा। करिय नाथ यह बेगिबनावा॥
तुरत पत्र दिशिचारि पठाई। भूपन कहँ यह सुधि जनाई॥
दलयुत सब आवो ममपासा। कीन्हचहतहौं यदुकुल नासा॥
कंस बैर लेहौं सुखमानी। भ्रष्टकरौं सिगरी रजधानी॥
जरासन्ध कर पाइ सँदेशा। देशदेश के अखिल नरेशा॥
कटक समेत राज गृह आये। चारों ओर नगर के छाये॥
जरासन्ध निज चमू बनाई। अस्त्र शस्त्र तन त्राण सजाई॥
दो॰ बाजे बाजे समर के रव छाये चहुँ आश।
चल्योजुरानिधिनृपनयुत रजमंड्योआकाश॥
तीनिविंश अक्षोहिणि साथा। असुरमनुजदलदुबिधिसनाथा॥
का प्रमाण अक्षोहिणि स्वामी। कहो नाथ तवचरण नमामी॥
नंभ मुँनि गजबिंधु नैनसुजाना। जुरैं रथी जहँ बीर महाना॥
रथी प्रमाण गजपती सोहैं। शत्रु समरमहँ लखिमनछोहैं॥
खेंषुगुणखनिधि शशिपदवारा। प्रबल धनुर्द्धर समर जुझारा॥
खंनभं गगंन रसंतर्क सवारा। भूप पदाति जुरैं यकबारा॥
यह अक्षोहिणि केरि प्रमाना। बदतचतुरकबिमुनिबुधिवाना॥
ऐसी चमू तीनि अरु बीसा। मथुरा लैगो नृप मग धीसा॥
दो॰ तिनमहँ असुर महाबली बरणत बनत न सोइ।
सुरपतिकम्पतकटकलखि बिकलधरणिधरजोइ॥
बरुण कुबेर आदि दिगपाला। भयबशकम्पितसबतेहिकाला॥
बिकल सुपर्व दशौ दिशि धाये। मेदिनि दबतिभार अतिपाये॥
पशु पक्षी मारग खग भागे। ध्वनिनिशानसुनिमुनिवरजागे॥
जुरा पयोधिकैक दिन माहीं। मथुरा गयो मूढ़मद साहीं॥
नगर निरोध कर्यो चहुंद्वारा। गर्जत तर्जत असुर अपारा॥

लखि यहदशा बिकल पुरबासी । अतित्रासितसुस्मृतिधीनामी ॥
आरत बदत श्याम शरणाई । आये नृप नर नारिअथाई ॥
कृपा उदधि यम धारि कराला । निजसँगलाइमगधमहिपाला ॥
दो० आतमभूमुख सुता पुर करयो निरोध कृपाल ।
इषुधीपति सूझतनहीं कित जाइययहिकाल ॥
सुनत पुकार सबहि समुझावा । धीरज गहौ शोच उरछावा ॥
करत बिचार कंस आराती । भृकुटिभंगलखिकालसकाती ॥
तेहिछण तहँ नीलांबर आये । बचन विनीत सनीतिसुनाये ॥
महाराज प्रगट्यो भवमाहीं । भक्तन हित हित दूसरनाहीं ॥
बसुधाभार हरण यदुराई । असुर चमू नानाविधि आई ॥
नीलकंठ बपुधरिय गोसाईं । खल तृण भस्म करौ यहिठांई ॥
चुपकिरहै कर औसर नाहीं । सुनतचले प्रभु भूपति पाहीं ॥
उग्रसेन प्रतिकह सुनुराजा । मगधराज लै सकल समाजा ॥
दो० मथुरापुर घेस्यो अबहिं आज्ञा देहु नृपाल ।
संगर ठानैं लषण सँग तुम कीजिय पुरपाल ॥
नृप आयसुलहि पितुगृह गयऊ । पुरबासी तहँ आवत भयऊ ॥
कहतत्राहि प्रभुखल बनपावक । रक्षहुनाथजानिनिजशावक ॥
दम्पति कहत कालकी धारी । नगर चारिदिशि घेरअघारी ॥
असउपाय कीजिय खलभानन । नशौंअसुरजन बचैंशुभानन ॥
भयवश नगर जानिजनपाला । सकलप्रबोधे पूरुष बाला ॥
कृत चिंतमन किमर्थ अकाजा । मृत्यु विवशयह दुष्टसमाजा ॥
तुम देखौ यह घन कस छाया । थिर न रहैंक्षणदुष्ट निकाया ॥
अथवा जल बतास जिमि होई । आशु होत पयरूपी सोई ॥
दो० अखिल बुझाये नारिनर पितुप्रतिशासन पाय ।
युगलबंधु रण होत नृप चलतभये सुखछाय ॥
सकल वराक ब्यमानारूढ़ा । इंद्रादिक जे अखिल अमूढ़ा ॥
अवसर जानि उभय रथसोहर । सायुध बिबिधंबिचित्रमनोहर ॥
प्रभुहित समर भूमि पठवाये । सन्मुखमिथुनजानिचलिआये ॥

सब उर पुरबासी कृत ज्ञाता। नरबपु तीनिलोक पितुमाता॥
भये व्यमानारूढ़ महीपा। विविभ्राता यादव कुलदीपा॥
हलधरश्याम आशु नरनाहां। असुर कटक जहँ गवनेताहां॥
जुरापयोधि निकट चलिगयऊ। लखत दुष्ट भणत इमि भयऊ॥
हेकंसारि तोरि मतिनासी। लाई मृत्यु डालि गलफाँसी॥

दो० जोजीवन निज चहसितू वेगिहि जाहु पलाय।
ममसमान तू अहसिनहिं साभिमान कहराय॥

नीलाम्बर यद्यपि बलथोरा। तदपिसमरममसहिहिअघोरा॥
प्रभुकह ओ मूरख अभिमानी। कहतअबूझितयहकसबानी॥
समरथबीर समरजित जोई। जल्पत वृथा मूढ़नहिं सोई॥
कादर कूर भीर अविचारी। बदतसुयशनिजशत्रुप्रचारी॥
बीरबृती रण पंडित ज्ञानी। कहत न करतयुद्धमुदमानी॥
करणी बिदित जल्पना नाशा। नीतिशास्त्रअसन्यायप्रकाशा॥
निजमुख आपनि करणीकहईं। गतसुलोकअपलोकहिलहईं॥
जोघन अति गाजत घहराई। बरषत अल्प सोहयह भाई॥

दो० केहिकारण सुनु मगधपति बकतअहित जिमिभेक।
उद्यम संगर शीघ्रकरु कुमति त्यागि सविवेक॥

अस कहि चले नाग रिपुगामी। जरासन्ध क्रोधेउमतिबामी॥
हरि पश्चात धाव मतिहीना। इमि भाषत कटुबचन प्रबीना॥
कहँ अबजात सुतापति घाती। प्रबलशत्रुलखि त्रिहरतछाती॥
निज जीवन आशापरिहरहू। कसन दुष्टममसन्मुख लरहू॥
कंसगयो जहँ सैन समेता। तुमहिं पठैहौं तौन निकेता॥
बहुदिन कंस राज तुमभोगा। भयो तासुफल मृत्युसँयोगा॥
का शोचेउ अपने मनमाहीं। जग जितभये कंसबध ताहीं॥
बैनतेय ते अहि बचि जाई। मम तट शत्रु बचब कठिनाई॥

दो० करौं भूमि यदुबंश बिनु यह प्रण मैं मन कीन।
उग्रसेन इत्यादि खल बधौं आजु मतिहीन॥

कटु बच सुनत दुष्ट कर भूपा। फिरे श्याम क्रोधित हरिरूपा॥

खल सन्मुख आये बनवारी। आयुधअखिलजलजकरधारी॥
हल मूशल समर्षि निज पानी। चले राम गहि रोषित ज्ञानी॥
निकटमूढ़दल जेहिक्षण आवा। घोरशब्दकरि सबहिसुनावा॥
आसी बिष सहल लखि जैसे। हरि धावत धाये हरि तैसे॥
चले बाण दुहुँदिशि नरनाहा। असिवरअग्निज्वलितरणमाहा॥
बिपुल निशान बजत रणमारू। मेघाघात होत हहकारू॥
नीलबरण खलदल दिशिचारी। क्षीरद समनृप परत निहारी॥
दो० शर बरषा जल वृष्टिवत चहूं ओर कुरुकेतु।
युगल बंधु मुखक्रांति जो सोइ तड़ितछबिदेतु॥
समर होत जनु प्राविट काला। देखत युद्ध देव सुरपाला॥
अपर दिवौकसगुण महिजाती। बधुन समेत लखत रिपुघाती॥
हरि प्रताप बल यशहि बखानैं। अमितप्रकार सुमनझरिठानैं॥
जयजय बदि हरि जयमनचाहैं। प्रभु बोधहि सुरारि दल दाहैं॥
उग्रसेन यदुबंश अथाई। उतमहिपाल मनहिं पछिताई॥
चिंतत बिबिध भांति यहकहई। बिनुबुधिहम समस्तह्यांअहई॥
राम कृष्ण कहँ समर पठावा। कछु न शोच हमरे उर आवा॥
दुष्टअनी बिकराल अपारा। परमात्मा बिनु को रखवारा॥
दो० कह बसुदेव न शोचहू कृष्ण आपु करतार।
क्षणमहँ दलबधि आइहैं को जग जीतनहार॥
समर होत बीता कछु काला। मिटिगइसकलसैनमहिपाला॥
मूशल पाणि सरोष सिधाये। बांधि जरासन्धहि लैआये॥
नागपाश बंधित लखि वाहीं। भन्योकृष्ण दाऊप्रति ताहीं॥
जीवत तात तजौ तुम याही। बधै योग यह नरपतिनाही॥
जीवत भवन जाइ जो पैहै। तौ पुनि अमित असुरलैऐहै॥
तेबधि हरिहौं बसुधा भारा। जेहिहिततात लीनअवतारा॥
असुर पलाय समरगे जोई। याहि बधे बचिजैहैं सोई॥
दाउहि इमि समुझाइ मुरारी। दीन छुड़ाय प्रबलविवुधारी॥
दो० छूटि जुरानिधि जातभो निज सैना मधि तात।

अनीभंग दिशि चारि लखि कहत सचिव प्रतिबात ॥
तात चमूमम सकल सिरानी। मोहिंभईअतिशयगिल्यानी ॥
यहि लज्जा त्यागिय नृपताई। तपकीजिय गहवर बनजाई ॥
सचिव महीपहि बद्यो बुझाई। तात अयोग तजिय कदराई ॥
समर जाय जयविदित बखानी। कालाधीन बदत विज्ञानी ॥
ज्ञानवान नृप तजै न देशू। सुनौ कृपाल उचित उपदेशू ॥
आजु अजय आगे जय होई। सैन जोरिये चिन्ता खोई ॥
चलि निकेत करि समरबनावा। अंतवंत त्यागिय पछितावा ॥
बहुरि राम श्यामहिं बधकीजै। स्वर्गबास यदुकुल कहँ दीजै ॥
दो० इमि मंत्री समुझायकरि लैआवा निज धाम।
कटक बटोरयो भूप पुनि सजि उद्यम संग्राम ॥
रामश्याम इत रणमहँ हेरी। रुधिर तरंगिनि बहचहुँफेरी ॥
मृतक गयंद सोह दुहुँकूला। शूरबीर तरु परे समूला ॥
उडुप तुल्यरथ काग सवारा। खेवक पवन करत सरिपारा ॥
कोउ कोउ गजबिच धारसोहाई। नगरूपी उपमा छबिछाई ॥
झरत रुधिर तिनते जनुझरना। सोहावर्त चक्रकर तरना ॥
इषुधी सर्प रूप उतराहीं। मत्स्यतुल्यअसिखड्गदिखाहीं ॥
चर्म मनौ कच्छप दरशाहीं। भूत प्रेत योगिनी नहाहीं ॥
तहँ शम्भुयुत गण महिपाला। करत अनंद समोद बिशाला ॥
दो० मालामुंड बनायतन पहिरत भूत पिशाच।
शंकरसहगण भूषिये लखतमुदित सुरपाँच ॥
प्रेतबधू योगिनी समेता। रक्त पियत भरिखप्पर लेता ॥
वायस गृद्धादिक जो शृगाला। भषत मान्स सानन्दनृपाला ॥
यह कौतुक बिलोकि असुरारी। हूंकहि चले पूज्य त्रिपुरारी ॥
हरिइच्छा आयो पवमाना। अहिबाहननर मृतक महाना ॥
सकल बटोरि करे यकठांई। जलजतेज निजदीन जराई ॥
पञ्चतत्त्व निज अङ्ग समाने। जीवकर्मबश त्रिबिधभुलाने ॥
आवत जात लखे नहिं काहू। जननीजनकादिक सुहिताहू ॥

यहि प्रकार बधिसैन सुरारी । कृपासिन्धु हरिजन हितकारी ॥
दो० उग्रसेनपहँ जायकरि युगल बन्धु सुखपाय ।
करि प्रहून बोले वचन सुनौ धन्य नरराय ॥
तुम्हरे पुण्य प्रताप गोसाईं । बधे असुर भै जय यहिठाईं ॥
विभव अकंटक भूपति कीजै । अमितप्रकारप्रजाहि सुखदीजै ॥
सुनि प्रभुवचन नृपति आनंदे । समुद श्याम पदमनमहँबंदे ॥
सब बिधि निजपुर कर्यो बधावा । गृहप्रतिपुरहरि जययशछावा ॥
धर्मराज युत नीति सदाहीं । उग्रसेन कृतमन भ्रमनाहीं ॥
यहि प्रकार बीते कछुकाला । कोपिचढ़्योपुनिमगधनृपाला ॥
काल पच्च च्चोहिणि दल लायो । समाचार यह यदुवर पायो ॥
क्षणमहँ सकल सँहारे धाई । मगध भूप भाग्यो पछिताई ॥
दो० स्वर्ग भूमिधा मगधनृप गुणचष च्चोहिणिसैन ।
लायभिर्यो यदुनाथप्रति जय न लही दुखऐन ॥
जाय जुरानिधि निजरजधानी । बहुरि सैन जोर्यो अज्ञानी ॥
अंतर कथा सुनौ कुरुराई । जो सुनि मोद लहौ समुदाई ॥
मुनि कौतुकी सकौतुक धाये । आकस्मात यमनपुर आये ॥
कालयमन जहँ पालत च्चोनी । महाबलिष्ट बुद्धि अतिलोनी ॥
लखि देवर्षिहि उठ्यो महीपा । कर्यो दंडवत जाय समीपा ॥
पांडुर आसन मुनि बैठाई । जोरिपाणि कह बचन नृराई ॥
कोरथ गृह पवित्र मम करेऊ । संचित कलुष नाथ सबहरेऊ ॥
मुनिकह सुनु नरपाल मनीषी । तुव असिसदा समरमहँतीषी ॥
दो० मथुरा महँ बलराम हरि भये प्रबल जगजान ।
सुहद जुरानिधि तात तव हार्यो सत्रह ठान ॥
उनहिं बधै नहिं तुमहिं बिहाई । विदित तीनिपुर तुव प्रभुताई ॥
अमर बलिष्ट समर विज्ञानी । तवमहिमाकोनहिंजगजानी ॥
बालक राम कृष्ण रण पंडित । जानौंनृपतुम समरअखंडित ॥
कह नृप कहा कहौं मुनि तोहीं । मित्रअजयसुनि दुखभामोहीं ॥
अवशिराम श्यामहिं रणहनहूं । समर आजितहै भीरुन बनहूं ॥

चीन्हरंग अरु रूप बतावौ। जोबधि युद्ध मोदहौं पावौ॥
मेघबरण कुबलय चषसोहर। बिधुमुख आनहु अंगमनोहर॥
पीत बसन बासित तनमाहीं। सोइकृष्ण तुवहितु रिपुआहीं॥
दो० तोहिंबधे बिनुतज्यो जनि यद्यपि समर पलाय।
शिक्षादै यमनाधिपति गये स्वर्ग ऋषिराय॥
कालयमन बाहिनी बनाई। महामलेच्छ कोटि गुणराई॥
रूप भयानक परत न जोई। भुजप्रलंब बड द्विज खलसोई॥
वेषमलीन केश शिरभूरे। नैन कृष्णता रूपक पूरे॥
अतिपापिष्ट गवास अपारा। जगदुखदानि बुद्धि विकरारा॥
बजत निकर संग्राम निशाना। मथुरानगर भूप नियराना॥
सिन्धुसुतापुर करसि निरोधा। सहल असुर युद्धहित क्रोधा॥
समाचार पाये असुरारी। तबनिजमनयह बुद्धिबिचारी॥
दुष्टअनी आई चहुंओरा। महाप्रबल जगविदित प्रघोरा॥
दो० पत्यशुद्धि निज मीतकी आइहि मगध नृपाल।
प्रजापाइहै बिबिध दुख तजिय नगर यहिकाल॥
सो० अस बिचारि यदुतात बोलि बिश्वकर्महि कह्यो।
सुनौतात ममबात करौ अवश्यहि काजयह॥
निज माया जलनिधि के तीरा। रचौ नगर हरिगृह जटिहीरा॥
जहँ यदुवन्श रहै सुखसेती। सकल सुपर्व सपर्व समेती॥
निज गृह जानैं लहैं न भेदा। बसहिंजहाँतिहुंकाल अखेदा॥
पुनि पलमांझ सबहि पहुँचावौ। वेगि करौ जनिबार लगावौ॥
आयसु पाय सिन्धु तटजाई। पुरपुनीत बिरच्यो भुवराई॥
चक्र सुदर्शन ऊपर सोहै। योजन भानु देव मनु मोहै॥
जस प्रभुबद्यो रच्यो तेहि तैसा। नाम द्वारिका हरिपुर जैसा॥
प्रभुपहँ बहुरि आय जगकारी। भनो समस्त वृतांत बिचारी॥
दो० सुनि मोदे प्रभुकह्यो पुनि आशु सबहि लैजाय।
जानि न पावहिंनारिनर तेहिपुर देह बसाय॥
आज्ञा पाय झटित सुनु राजा। उग्रसेन बसुदेव समाजा॥

अखिल बिवश माया मतिभोई । लैगो नगर द्वारिका सोई ॥
हरिबल साथ गये सब केरे । अखिलायत निजनैनन हेरे ॥
यहि अवसर दधि शब्दसुनावा । जगे सकल मनसंभ्रमछावा ॥
कहत दैव मथुरानिधि काहा । जागतस्वप्नलखतमनमाहा ॥
अत्याश्चर्य्य बिवश पुरबासी । लहत न भेदबुद्धिभ्रमपासी ॥
यहि प्रकार प्रभु सबहि बसाई । कह्योबन्धुप्रतिबचन सुनाई ॥
अब चालि मथुरा रक्षाकीजिय । कालयमनकहँसुरपुरदीजिय ॥

दो० युगल तात सानंद नृप आये मथुरा धाम ।
मंगल भजिले श्यामपद तजिके द्विबिधा काम ॥

सो० सदा कृष्णकीरीति पालतदास अनेक विधि ।
करौं कमलपद प्रीति मम पालन कीजै प्रभू ॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगल
दासाविरचितायांजरासंधपराजयद्वारिकाबासकालयमन
आगमनवर्णनोनामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

दो० ज्यों अकाशके अंतहित द्विजगण उड़तअनेक ।
पौरुषीय पौरुष रहित करिनहिं सकत विवेक ॥
तिमि निरन्नके भेदहित कल्पत बहु भव भूत ॥
असुर अमर इत्यादि बुध नर पशुपूत अपूत ।
जासुनाम भवअकर अज प्रभु स्वतंत्र गुणराशि ॥
निजबशनरतन भवधरयोजगयश रह्योप्रकाशि ।
ताहि भजे बिनु सर्बथा हानि चारिहू ओर ॥
ध्यावत पूरण पद मिलत नाशत पाप कठोर ।
मंगल के मत कृष्ण तजि मुक्तिदानि नहिंआन ॥
जन सुखकरजीवत सकल अंतमोच्छ कल्यान ।

मथुरा आय श्याम सुनु भूपा । करत भये यह चरित अनूपा ॥
बलहि नगर रक्षाहित त्यागा । कालयमन बधमुदउर जागा ॥
रैनिवरण धारे बपुबासा । शृंगारित तनभादिग आसा ॥
द्विज नायक गति चले कृपाला । गये दुष्टदल मधि नरपाला ॥

कालयमन सन्मुख चलिगयऊ । पुनि परोक्ष मारग प्रभुलयऊ ॥
हरि स्वरूप लखि यमन भुवाला । निजमनकृतबिचारतेहिकाला ॥
मेरि जान कृष्ण यह आहीं । नारद बदे चिह्न तन माहीं ॥
सम्यक् चिह्न लखतहौं नैना । अहै कृष्ण यह कछुभ्रमहैना ॥
दो० कन्स बध्यो यहि सुहृद दल योंमन करि अनुमान ।
कहत भयो पुनिश्यामप्रति कत पलात बलवान ॥
बीरव्रती रण पंडित जोई । संगर पृष्ठिदेत नहिं सोई ॥
जीवघात निज मन अनुमानो । मोसों तात समर अवठानो ॥
कन्स जुरानिधि हौं न महीपा । करौ समर निरछल यदुदीपा ॥
मैं प्रण कस्यों हनौं यदुवंशी । रणकीरति मम जगत प्रशंशी ॥
असकहि साभिमान तजिसैना । हरिपश्चात धाव कटु बैना ॥
अति पौरुष चांडाल अबूझा । त्रिपुरनाथ चषहृदय न सूझा ॥
अग्रागमत श्याम खल पाछे । हस्तान्तर खलमगमत आछे ॥
भागत भागत भूप निदाना । बिपुल दूरिगय कृपानिधाना ॥
दो० प्रविशे प्रभुगिरि खोह महँ तिमिर पूरतेहि माहि ।
एक पुरुष सोवत पस्यो हरि निरख्यो जब ताहि ॥
वाहि उढ़ायो पीतपट आपुन रहे लुकाय ।
दुष्टगयो पश्चात तहँ हरिगति विदित नराय ॥
पीतवास वासित लखि ताही । इमिशोच्योखलनिजमनमाही ॥
हरि प्रपंच सोयो यह श्यामा । बधौं आजु याकहँ यहिठामा ॥
सरुढ़ चरण मर्यौ तन तासू । कटुबाणी खल कस्यो प्रकासू ॥
कपटी धूर्त्त कहामिष साधा । बन्यो साधु आई जिय बाधा ॥
उठिकरु समर अमरपति तूहै । विदित प्रबलता तुव सबभूहै ॥
असकहि पीताम्बरहि उतारा । जग्योमहीप चौंकि तेहिबारा ॥
युतामर्ष निरख्यो खल ओरा । कह्यो न नृपमृदु बचन कठोरा ॥
भस्मीभूत असुरपति भयऊ । मन महीप सुनिचिन्ता छयऊ ॥
दो० कह्यौ जोरिकर सुनौ मुनि कृपासिंधु गुणग्राम ।
को पूरष जेहि देखतहि जस्यो असुर बलधाम ॥

सरवर श्रापक तापस कोई । तासु प्रसंग कहौ प्रभु सोई ॥
मान्धाता सुत नृप मुचकुन्दा । महाबली अरुदाससुकुन्दा ॥
अरिदलदलन विदितयशजासू । नंद खंड पूरित दश आसू ॥
एक समय सुपर्व दुख लीन्हा । असुरनतिनहिंदशडबहुदीन्हा ॥
सकल उदासित निपट निरासा । रहित अमरपुरबिगतबिलासा ॥
नृप मुचकुन्द पास सब आये । दीन बचनकरिबिनयसुनाये ॥
महाराज बहु खल जग बाढ़े । निज क्रोधानल सबसुरडाढ़े ॥
तुम बिनको अब करै सहाई । प्रबल न कोउतुमतेअधिकाई ॥

दो० पुराकाल ते रीति यह आवत चली सुदेश ।
सुर मुनि ऋषि लखि दुखित तब रक्षाकरहिंनरेश ॥

सुनि नृप चल्यो संग सुरवृन्दा । जुझोजइनसँगजायअनन्दा ॥
कृत संगर बहु युगचलि गयऊ । जयदुर्नाद समर नृप लयऊ ॥
तब वृन्दारक नृप तट आई । मृदुल मनोहर गिरा सुनाई ॥
हमरे हेत अमित श्रम कीन्हा । निकरअमरगणकहँसुखदीन्हा ॥
अब बिश्राम काहु थल कीजै । निज जीवहि महीप सुखदीजै ॥
अमित काल बीते नरनाहा । रहा न बंश धाम तुव ताहा ॥
ताते अवध पुरहि जनि जाहू । आनकहूं लीजिय सुख लाहू ॥
नृपकह सुनौ अमर गण बानी । तुमसब भांति सकलसज्ञानी ॥

दो० ठाम यकान्त बिचारिकै दीजिय मोहिं बताय ।
सोऊं जहां अचिन्तहौं कोउ न जगावै जाय ॥

भूप बसहु धवलागिरि खोहा । सुथल सुधाम हेत तुव जोहा ॥
सोइय तहां अचिन्त महीपा । कोउनजगाइहिहरिकुलदीपा ॥
चारि खानि महँ जीव जोकोई । तुमहिंजगाइहि बलबुधिसोई ॥
सो तुव दृष्टि होइ जरि छारा । सत्य बचन यह भूपहमारा ॥
नृप मुचकुन्द नाम हो सोई । कालयमन नाश्योतेहि जोई ॥
अग्र कथा अब कहिय कृपाला । मिटिगा सकल मोहभ्रमजाला ॥
श्रीहरि मेघबरण शशिआनन । अम्बुजचपप्रभुखलबलभानन ॥
रूप चतुर्भुज आयुधचारी । अहिर किरिट पीत पट धारी ॥

दो० मकराकृत कुंडललसत उरबनमाल बिराज।
दरश दयो मुचकुन्दको जोदुर्लभ ऋषिराज॥
हरि स्वरूप लखि उठ्योनरेशा। विह्वल मन आनँद अलवेशा॥
जोरि हाथ किय दंड प्रणामा। बोल्यो सुबच भूप गुण ग्रामा॥
कृपासिन्धुमुखकांति बिलाशा। जेहिबिधिकरयोगुफापरकाशा॥
तेहिप्रकार जनजानि गोसांई। कहिय नाम निज मोहिंबुझाई॥
जानि भेद नाशौं भ्रम मूरा। करौं भजन तुवमन चित पूरा॥
जन्म कर्ममम अमित प्रकारा। को पुर तीनि करै निरधारा॥
यहितन भेद कहौं नृप तोहीं। सुनु चितलाय जानुपुनिमोहीं॥
यदुकुल महँ बसुदेव सुजाना। जनम्यों तिन गृहहौंभगवाना॥
दो० बासुदेव मम नामहै मथुरा खल बधकीन।
कंसादिक कर भूर सुनु जानत सकल प्रवीन॥
मुनिशशिबार समर करिभारी। हारयो जरासंध बलधारी॥
प्रतिधा गुणचष क्षोहिणिलायो। हमसन सो नृपयुद्धपलायो॥
अरु यह कालयमन बलराशी। मथुरा खलदल लैकरि ग्रासी॥
काल कोटि मलखानि कुरूपा। तुम्हरी दृष्टि जरयो सो भूपा॥
मधुर मनोहर सुनि प्रभु बानी। नृपमुचकुन्द भूप बड़ज्ञानी॥
जान्यो नारायण जनपालक। अद्भुत बपुष धरे तुम बालक॥
अनुकम्पा पयोधि करतारा। तुव मायाभव बिदितअपारा॥
जावश लोक लोक सब प्रानी। निजबलरहितबिदितबिज्ञानी॥
दो० बुद्धि स्मृति चर अचर की दृढ़ता गहत न नाथ।
क्रिया करत सुख हेत हित तद्यपि होत अनाथ॥
जिमिसुष्कास्थि श्वान मुखचावै। निजलपच्चतजस्वादबहुपावै॥
आनँदगत दुखहै परिणामा। मुखक्षत पीर पाय श्रृणु श्यामा॥
तिमि नर बिषय भोग रत होई। बन्धमुक्त माया बश जोई॥
यहि जग अंध कूप गृह धर्मा। वहिरागम तन नरबहुकर्मा॥
च्छमा राशि अनुकम्पा हीना। बिषय भोग सोदक नर मीना॥
अहोरात्रि क्षिसितहौं रहऊं। किमि नरधार भवँर भवलहऊं॥

आजुसुलभमोहिंपरतजनाई । दृढ़ उपाय मोहिं देहु बताई ॥
सुनु नृपभवभय जालअपारा । जस तू बदत कठिन निरधारा ॥
दो० हौं परन्तु तुव मोक्षहित बदौं उपाय महीप ।
सानँदकरिलहु मुक्तिभव कह असयदुकुलदीप ॥
भूमिधरणि तियसुत हितराजा । अधिकाधर्मिक कीन्होकाजा ॥
तप बिनु तेन नशत सुनुभूपा । ताते सुनु उपदेश अनूपा ॥
राजराजकन्या दिशि जाहू । करि तपतन तजिलै सुखलाहू ॥
ऋषि गृह बहुरि जन्म तू पैहै । भक्ति पदारथ लहि तरि जैहै ॥
हरि निदेश सुनि भूप बलिष्टा । प्रभु मूरति हिय धरि करि इष्टा ॥
आगम कलि बिचारिमनमाहीं । करि दंडवत चल्यो दुखनाहीं ॥
बद्री बिपिन तपस लागि गयऊ । मथुरा प्रभु तब आवत भयऊ ॥
नीलाम्बर प्रति यों वचगावा । कालयमन सुर भवन पठावा ॥
दो० बद्री दिशि मुचकुन्दगे अबन रहाभ्रम नेक ।
अखिलम्लेच्छबाहन बधौं करिमनसमरविवेक ॥
शीघ्र चलिय खलदलबध कीजै । क्षमा भार भारित हरिलीजै ॥
युगल बन्धु पुरबाहर आये । संहारक बपु उभय सोहाये ॥
असुर अनीजहँ रणमहँ सोहै । जोबिलोकि सुरपतिमदक्षोहै ॥
संगर करनलगे दोउ भ्राता । अतिबल नारायण सुरत्राता ॥
रण बिस्तार कथा बढ़िजाई । दुष्टसेन यमसदन पठाई ॥
मधुपुरतात द्रव्यसब लीजे । द्वारावतिहि पठइ अबदीजै ॥
सम्मतकरि विवि बांधव राई । पुरसम्पति बहुभार भराई ॥
द्वारावती पठइहरि दीन्ही । इतनृपमगधसैनसजिलीन्ही ॥
दो० पूर्वोक्तदल साथलै मथुरा कस्यो निरोध ।
उभयबन्धु पुर बाहिरे आयेलहि यह शोध ॥
जातभये जब तट मगधीशा । बलप्रतितब्रइमिकहजगदीशा ॥
सत्रहबार अजय नृपपाई । यहपावै सुख चलिय पलाई ॥
असमत आनिचले भगिभूपा । जगत सुखद त्रैकाल अनूपा ॥
हरिहिपलात सचिव लखिबोला । देखुकृपानिधि समर अडोला ॥

तुवप्रतापदिशिबलित बिलोकी। कोबलवान सकै रणरोकी ॥
रामश्याम दोउबन्धु प्लाने। तजिधनधामप्राणप्रियजाने ॥
त्रासितत्राण बिनापग भागे। स्वल्पहुनहिं रण उद्यमलागे ॥
मंत्रदवाक्य सुनत सुखपावा। लैनिजचमू भूप पुनिधावा ॥
दो० क्यों पलात परिहरि समर अमरनाथ जगजान।
बिह्वलतन सुधि बिनुभये अबनहोइ कल्यान ॥
प्रफुलित मगध राजमनभयऊ। प्रभुहिपलातसमरलखियऊ ॥
जोमुद भो ताके उरमाहीं। अनुपमकथिनसकतकविताहीं ॥
हरिआगे पाछे नृपजाई। बिपुल दूरि चलिगये नृराई ॥
गिरिगौतम ऊंचा योजनहर। चढ़जाय हरिबल नृप तापर ॥
शिखा शिखर सोहतद्वौ भाई। लखतसुपर्व शोक अधिकाई ॥
तब नृप मगध बदत असटेरी। शृंगशिखा देखौ हरि हेरी ॥
अग जग सिंधुसुताहि निरोधौ। दारु पुंज काननमहँ शोधौ ॥
नगयुत भस्मकरौ यहि काला। भागिजायअबकहँ गोपाला ॥
चरवर नृप निदेश सुनिराई। घेरिअद्रि बहुकाष्ठ मँगाई ॥
घृत तैलादि लाय गिरि रोपा। जरासन्ध के उर बड़ कोपा ॥
जलज प्रचार कस्यो तत्काला। प्रगटीशिखीव्योमलागिज्वाला ॥
बिकलभयेलखि सुरमुनिज्ञाता। प्रबल धनंजय कथी न जाता ॥
दो० गुप्तभये बिबि बन्धुनृप मर्म न जाना काउ।
अलखअकथ इंद्रियअबुझ श्रीयदुनाथ प्रभाउ ॥
गिरिवर छार भयो ताही क्षन। मगधभूप आनन्दित भोमन ॥
भस्मीभूत बूझि द्वौ भाई। मथुरहि चल्यो घूमि नरराई ॥
आइनगर सब निजबशकीन्हा। राज कोष आपनकरिलीन्हा ॥
उग्रसेन बसुदेव निकेता। सकल नशाये तब कुरुकेता ॥
निजजन राजपाद परथापी। गयो राजगृह जग सन्तापी ॥
इमि नृप जुरानिधिहि भरमाई। गये द्वारका यादव राई ॥
जेखलहरिहि मनुजकरिजानत। पूरणपुरुष सत्यनहिं मानत ॥
ते मतिमन्द दुष्ट चाण्डाला। उनकरसंगतजिय तिहुंकाला ॥

दो० तीनिलोक आनन्द दा दास दुखन कृत दूरि।
मंगलताजि संशयसकल भजु हरिजीवनमूरि॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकालयमनवधमुचकुंदउद्धारमथुरा
परित्यागवर्णनोनामद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥
दो० कोटि बिघ्न तुरतै नशै जब ध्यावै ब्रजराज।
परमहंस यह गति लखत आनँदमय सबसाज॥
निजरिपुकोसबकोउडरत बिदितबात यहआहि।
अपरनशत अहिडसतही अहिरनशतपै नाहि॥
ज्ञान जानियो कुमतिसब आपुहिजात पलाय।
ज्योंपारदलखि अनलको जानतबुधचितचाय॥
मननिजबशकरि सुजनजन ध्यावत राधानाथ।
आन ओर हेरत नहीं होवत अन्त सनाथ॥
तूमंगल परिहरिकपट भजिले मोहन श्याम।
बर्णन कुरु सुन्दर यशहि सुख पावै द्वौ धाम॥
सुखद चरित द्वारावति केरे। नाना भांति बिचित्र घनेरे॥
ते अब श्रवण करौ कुरुराई। जे सुनि मोह चमू विनशाई॥
पूरुब कौतुक करि यदुराई। गये द्वारका अति मुदपाई॥
हरि बिलोकि यदुबंशी हरषे। नभते सुर प्रसून बहु बरषे॥
प्रत्यायत भा मंगल चारा। मंगल नाद गीत भनकारा॥
उग्रसेन आदिक सुख छाये। हरिमिलिबहुतककालबिताये॥
एक दिवस जुरि बहुयदुजाता। उग्रसेन आगे सुनु ताता॥
करि प्रहून कह सुनौ कृपाला। सब लायकभे रामगोपाला॥
दो० अब उत्तम गृह जोइ करि करिये रामबिवाह।
भूपति सुनिकह कह्योभल सम्मतदा उत्साह॥
बोलि एकद्विज ज्योतिष ज्ञाता। कह्यो तात तुमजाहु प्रभाता॥
उत्तमकुल समता निजपाई। करिय बिप्रबल राम सगाई॥
असकहिनिशिअक्षतधनदीना। नारिकेर फलसहित प्रवीना॥

द्विजशिरकरि अभिषेक पठावा। चल्योविप्र कछु बार न लावा॥
करि बिचार अर्णता प्रदेशा। रेवत नृपपुर कस्यो प्रवेशा॥
जाय सभानृप कह समुझाई। निज आगम वृत्तान्त बताई॥
कन्या तासु रेवती नामा। सकलसुलच्छणलच्छित बामा॥
तासँग बल बिवाह ठहराई। लग्नपत्रिका शुद्ध लिखाई॥
दो० तिलक बस्तुनृप बिप्रसन द्विजवर चल्यो लवाय।
उग्रसेन पहँ आइ नृप कह्यो बृतांत बुझाय॥
सुनि हरषे सब यदुकुल लोगा। जानिबिवाहसकलबिधियोगा॥
उग्रसेन शुभ घरी सुधाई। लयो तिलक उरआनँद छाई॥
मंगल गान करैं कल बैनी। गृहप्रति त्रियमृगशावकनैनी॥
करि सत्कार विप्र बर केरा। बहुधन दै रेवत पुर फेरा॥
पुनि सजि सुन्दर भूप बराता। संग सकलहितुयदुकुल जाता॥
नृप अर्णता देश महँ जाई। करिबियाहबिधिजसश्रुतिगाई॥
दाउहि ब्याहि चले सुखपाई। आयेपुर द्वारका नृराई॥
यहि प्रकार करि हलधर ब्याहा। महामोद मय भे नरनाहा॥
दो० पुनि हरि दाउहि साथलै कुंडिनपुर में जाय।
हरिलाये नृप रुक्मिणी रण शिशुपाल हराय॥
निज आयत कीन्हो उद्बाहा। सुनियहचक्रतकहयोनरनाहा॥
कुंडिन पुर नृप भीष्मक भारी। तासुतनयमुनि समर विहारी॥
अरुशिशुपालबलीजगजाना। तिनहिंअजयकरिजिमिभगवाना॥
लैआये रुक्मिणि छबिराई। निकर प्रसंग बदौ सुखपाई॥
देश विदर्भ विदित महिपाला। कुंडिनपुर तहँ नगर बिशाला॥
निवसततहँनृपभीष्मकज्ञानी। जेहियशवलितदिशादशजानी॥
ताके भवन शक्ति श्री सीया। जन्मीजाय दानि कमनीया॥
प्रसवतही द्विज ज्योतिष ज्ञाता। बोलि पूछि भूपति यहबाता॥
दो० लग्न मुहूरत ऋच्छ दिन शोधि कहो द्विजराय।
अखिल दोष गुण सुताकर रहौं मोदको पाय॥
विप्रन लग्नादिक लिखिराजा। ज्योतिषमतशोध्योशुभसाजा॥

कह्योनाम रुक्मिणिनृप कहऊ । बड़भागी महपि जग अहऊ ॥
शील स्वभाव रूपकी रासी । सुता सुलक्षणि भैकमलासी ॥
आदिपुरुष उद्वाहित होई । नृपगृह भूप कहत हमजोई ॥
क्षमाविदोत बाणि सुखसानी । श्रवणितभूपसुभाग्य बखानी ॥
मंगलचार सहित उत्साहा । करवाये निजगृह नरनाहा ॥
दै बहुदान समोद सुजाना । द्विजवर बिदाकिये गुणवाना ॥
वृद्धति सुता कला शशि तूला । नितनव लहतभूप सुखमूला ॥
जा दिनते निवसी जगमाता । बसुधादिक सबगृह सरसाता ॥
कृषीवणिज फलदायक सबही । त्रियनरसकलशीलयुतनवही ॥
कुंडिन पुर श्री पुर निधिछाई । परिपूरण नहिं बरणि सिराई ॥
सिन्धुजात जहँ बसत नरेशा । वरणिसकतजगकौन कवेशा ॥
दो० तनया नित प्रति नृपति सुनु विरचत बाल चरित्र ।
लखिहरषत जननी जनक लीला परम पवित्र ॥
संग सखी सम वैसानि सोहैं । लीला निरखि देव कुलमोहैं ॥
प्रौढ़त प्रौढ़ कर्म चतुराई । निज सहेलि सँग कृतनरराई ॥
यकदिनचोरमहीचिनिख्याला । रच्यौसुतान समोदविशाला ॥
रुक्मिणि सँग जहँजायँलुकाई । सुखभा द्वितिय चंद्रिकाराई ॥
देखि प्रकाश सखी अनखाई । रुक्मिणि हमन तोरसंगजाई ॥
आनन क्रांति करावलि सोमा । खेल नशात उठत भय रोमा ॥
तिमिरनाशमुखछबिलखि तेरी । विस्मितआलिहोत मतिमेरी ॥
लुकिनसकत हम काहुनिकेता । तुवलप क्रांति बताये देता ॥
दो० यहि प्रकार खेलत नृपति प्रभा अमित लपतासु ।
देखि सुलक्षण बुधिनिपुण सबदुखलहत विनासु ॥
मुनिकौतुक कारक गुणखानी । स्वारथ गत परमारथ ज्ञानी ॥
एक दिवस भीष्मक पुर आये । रुक्मिणिदेखि महामुदछाये ॥
आतुर पूरण पूरुष पासा । मुनिगयभूप गूप अनयासा ॥
ऋषिहि बिलोकि उठे यदुराई । करि आदर शुभथल बैठाई ॥
पूछयो आगम चरित बिशाला । तबनारद इमि कह्योहिवाला ॥

सबके उरबासी असुरारी। सुनौ ध्यानयुत गिराहमारी॥
भीष्मक सुता रुक्मिणी नामा। कमलासम सोनारिललामा॥
सब लक्षण परिपूरण ताके। हस्तरेख पति हौ तुम जाके॥
दो० असकहि सुरपुर ऋषि गये प्रभुयहि सुद्धिहिपाय।
प्रीति परोक्ष अपार कृत सुनु कुरुपति चितलाय॥
यहिबिधि नृप सीता अवतारा। जान्यो यदुपतिजगकरतारा॥
रुक्मिणिजिमिघनश्यामैजाना। सो चरित्र शुचिकरौंबखाना॥
देश देशके मागध सूता। कुंडिन पुर गयनृपकबिनूता॥
हरियश पूरब कृत बहुगायो। नृपतिसभामहँसबहिसुनायो॥
बसुधा भार हरण अवतारा। यदुबंशी बसुदेव अगारा॥
जन रक्षक बहु असुर सँहारे। कंसादिक रणभूमि पछारे॥
मथुरा त्यागि द्वारिका आये। मुनि महिधामगधीशपलाये॥
प्रभु चरित्र सुनि पुर नर नारी। बदत परस्पर बचन बिचारी॥
दो० जासुबिशद यश मुदितमन आजु सुन्यो दुखहार।
निज नैनन मूरति वहै कब देखब करतार॥
समाचार सुनि सब रनिवासा। चढ़्योधवलगृहहरियशआसा॥
पूत चरित सुनि रहीं लुभाई। तन मन बचन सुनै मुदपाई॥
रुक्मिणि सुन्यो श्यामकरतूती। जागिउरप्रीति नारिगृहसूती॥
अंकुर प्रेम उरस्थल जामा। मनमन रटै लागि हरिनामा॥
क्षणक भये बिहवल भव माता। हरिगुण बुद्धिहरी तेहिगाता॥
वादिनते जग कुछ न सोहाई। अलख प्रीति हरिपदउरछाई॥
जामभेक अह गौरी वाको। श्याम ध्यानमग दूसरथाको॥
कान अवस्था कान्ह सनेहा। कोद्वितीय भावत नहिंदेहा॥
दो० प्रभुयश गावत मगन मन लगन दरशउरमाहिं।
याँचत हरिसों काल तिहुं बेगमिलत कस नाहिं॥
प्रात गौरि मूरति रचि सोई। षोड़श बिधि पूजतभ्रमखोई॥
करि बंदना जोरि दोउ पाणी। यह मांगत महीप मृदुबाणी॥
दया राशि प्रिय भार्ग भवानी। देहुमोहिं बरदासी जानी॥

देवकि तनय होइ पति मोरा। तुव महिमा प्रसिद्धचहुंओरा॥
यहि प्रकार नित राज कुमारी। ध्यावत प्रभुहि प्रपंच बिसारी॥
एकदिवस निज सखिन समेता। करत बिनोद समोदनिकेता॥
नृप भीष्मक तेहिंअवसरआयो। तनया लखिउर शोचबढ़ायो॥
भै उद्वाह योग तन जाया। करिय बिवाहमनहिंअसआया॥
दो० मुग्धा कन्या जासु गृह पुराय तासु को छीन।
नरक पिता पावत अवशि भोमन नृपति मलीन॥
सतरज तम देवै त्रै दाना। अफलसकलऋणसुतामहाना॥
कन्या ते पावै उद्धारा। सो जग साधु सुयशबिस्तारा॥
अस बिचारिगा सभानृपाला। ज्ञातिज सचिव बोलितत्काला॥
सबन बुझाय बद्यो नरनायक। अब दुहिता भइब्याहबलायक॥
कुलबलगुण स्वरूप निधि होई। रुक्मिणि योग तात बरुसोई॥
हृदय बिचारि कहौ सब भाई। जहँ तनुजाकर करौं सगाई॥
निजमतिसरिसअनेक अनेका। बरणे महिप एकते एका॥
भूपति मनहिं न कोउबरआवा। तबहिं रुक्म अस बचनसुनावा॥
दो० चन्देरी नृप अति बली जासु नाम शिशुपाल।
सकलभांति समतालहत आपनि तात कृपाल॥
जग भल कहै मोर मन माना। करिय बिवाह तात सज्ञाना॥
लोक सुलोक बिशद तुवछावै। कीरति बिपुल देवपुर पावै॥
पैन भूप मन भाई बाता। रुक्म केश बोल्यो लघुजाता॥
कृष्णचरित उज्ज्वलजगजाना। पाटी जटी धरत दृढ़ ध्याना॥
रुक्मिणि ब्याहकृष्णसँग कीजै। त्रिपुर मनोहर कीरतिलीजै॥
लघुसुत बचन सुनत नृप हर्षे। जिमि चातक बारिद हितुबर्षे॥
साधु सुजान सुसम्मत भाषा। श्यामदरश ममउरअभिलाषा॥
बुधबद आयु बड़न बुधि भाई। तुव सम्मति सबबिधिसुखदाई॥
दो० कहत चतुर लघु बड़न नर पूछि करै जो बात।
सबको सम्मत सारले सो न जगत पछितात॥
भीष्मकपुनि इमिबचन बखाना। रुक्मकेश बालक बुधिवाना॥

शूरसेन यदुबंशिन माहीं। यशी प्रतापी बिदित सदाहीं॥
भये तदात्मज शुचि बसुदेवा। ऋषियोगीश चहत जेहिसेवा॥
आदिपुरुष पूरण अबिनासी। भवनिशिकीर्त्तिचंद्रिकाभासी॥
सुरमुनि महादेव करि जाहीं। ध्यावत सकल समाधियमाहीं॥
कबिशापति तीनों गुण जासू। तेहि सुतहैं तिन गृहकियबासू॥
समराजित बलखानि प्रसिद्धा। कंसादिक मलराशिनिषिद्धा॥
निज बल बधे हस्यो महिभारा। यदुकुलयश जग सकलपसारा॥

दो॰ प्रजा हित गोत्रजन कहँ दयो मोद बहु भाय।
ऐसे श्रीपति कृष्ण हैं करिय बिवाह सचाय॥

यहि पुर अति आनँद को पाऊं। अंत देव पुर मोद बढ़ाऊं॥
सभा बिराजक सुनि नृप बानी। कह्यो धन्य महिपालसुज्ञानी॥
यहि बिवाह भल प्रभु सबहीका। हमरे नाथ भाव तो जीका॥
असघरबर न मिलिहि पुरतीनी। यह मति सकल साररसभीनी॥
सुनि सबकी सम्मति नरपाला। क्रोधित रुक्म भयातेहिकाला॥
कामति मंद बकत अन्यायी। कहत अबूझित बात अभायी॥
कृष्ण चरित्र जानि बौराने। पशुरत बचनकहतअनजाने॥
षोड़श बर्ष बस्यो नँद धामा। ग्वाल कृष्णताकर तहँ नामा॥

दो॰ रोमबस्त्र तनपरधरे बन बनचारीगाय।
ग्वालनसँग भोजन कस्यो क्षत्रीधर्म बिहाय॥

गोपजात जानत सब कोई। सो सम्बन्ध योग कस होई॥
जाकर मात पितानहिं जानिय। औरकहा कुलज्ञातबखानिय॥
नन्दग्वाल सुत कोऊ बतावै। कोउबसुदेव तनय कहिगावै॥
पैसतिभेद जाननहिं जाता। काकर तनुज श्यामकोमाता॥
यदुकुल निंदनीय नृपताई। जग बिभुता कासों अबपाई॥
उग्रसेन कर सेवक श्यामा। यदुबंशी बसुदेव सरामा॥
कछुक दिवसते भै बलदाई। कहाभयो लघुता प्रभुताई॥
कोयश लहबतासु सम्बन्धा। जुरेसकल तुमबुधि चषअन्धा॥

दो॰ रिपुताहित सम्बंधजग करिय समानहिं पाय।

करत कुलाकुल बुधबदत अयशरहै जगछाय ॥
जोपैपिता सुता तेहि देहौं । अपकीरति समस्त अवलेहौं ॥
देश देशके क्षोणिप ताता । सुनिहँसिहैंयहअनुचितबाता ॥
कुलकलंकलागिहियहिब्याहा ।जगशिशुपालबिदितनरनाहा ॥
सबबिधि समरथ चतुर महाना । नृपतातिलक सदाजगजाना ॥
लोकप रसपत्रसत जेहित्रासा । आन ओर पितु होइ निरासा ॥
सुतासुलक्षणि तेहि उद्राहौं । जो आपनिशुभकीरतिचाहौं ॥
उत्तमयहै अयोग बिचारा । कृष्णहि कहत जगत कर्तारा ॥
तासुनाम त्यागै भ्रम खोई । ग्वालन त्रिपुरनाथ भवहोई ॥
दो० सबके सम्मत खंडिके मम कहनी नृपमानि ।
देतनया शिशुपालकहँ सबबिधि समता जानि ॥
सुतहि बिरोधित जानि नृराई । कछु न कह्यो शिररह्यो नवाई ॥
रुक्म ज्योतिषी बोलि सुजाना । भूपसमाजमनहिं पछिताना ॥
लग्नपत्र तुरतै लिखवाई । बोलि पुरोहित द्रव्य बँधाई ॥
सामग्री अभिषेक अपारा । दईसंग द्विजके तेहिबारा ॥
गमन्यो शीघ्र बिप्रबर राई । चन्देरिहि मनमोद बढ़ाई ॥
नगर पहुँचिगा राज समाजा । उठ्योसभासदद्विजलखिराजा ॥
करिबंदन पांडुर दिय आसन । पूछयो तबहिइलपब्राह्मणसन ॥
अनुकम्पा रतनाकर देवा । निज आगम कर भाषियभेवा ॥
दो० कहिय मनोरथ द्रुत द्विजप करौंशक्ति अनुमान ।
आशिषदे महिसुरकह्यो सुनु क्षितिपालसुजान ॥
भीष्मक नृपदै तिलक पठाये । नृप अभिषेक साजहमलाये ॥
सोलैकरिय बरात बनावा । सुनतरसाधिअकथसुखपावा ॥
निजकुल पूज्य बोलाइ भुदेवा । करिदंडवत कह्यो सब भेवा ॥
शुभघटिकाबिचारिज्योतिषमत । लईलग्न सानंदित दुखगत ॥
दानदेइ महिसुरहि घुमावा । पुनिबहु भूपन नेवति पठावा ॥
जरासंध इत्यादि नृपाला । सहसहाय गमने ततकाला ॥
चमूपाल शिशुपाल हँकारी । सजौसैन यह कह्यो प्रचारी ॥

जबअनेक छोणिप चलिआये। तबशिशुपालअमितमुदपाये॥
दो० सकल बनाई निज अनी ब्याहचार करवाय।
कुंडिनपुर कहँ चलतभो सुनु कौरव कुलराय॥
भीष्मकसों इत द्विज कहआई। करिआये अभिषेक नृराई॥
अब उद्वाहिक करिय बनावा। सुनिमहीप मनभा पछितावा॥
निपट उदासित शोच अपारा। बहुरि धरापति गयउ अगारा॥
समाचार रानिहिं समुझावा। नृपबच सुनि सुंदरिसुखपावा॥
कुल वृद्धा बैश्यका बोलाई। तुरतहिं मंगलचार कराई॥
ब्याहसाज साजन त्रियलागी। दुबिधा अखिल जीवतेभागी॥
सभा महीश आइ पुनि बैसा। सोहत धर्म धर्मपुर जैसा॥
कहि बुझाय मंत्रदा प्रधानहिं। जो विवाहकारजकरिजानहिं॥
दो० सकल बस्तु उत्साह की यकठौरी करि देहु।
किंचिन्मात्र न घटिपरै कारज कीजै एहु॥
पाय रजायसु तत्तत् काजा। जनु करि राख समग्रसमाजा॥
यह चरचा सम्यक पुर छाई। रुक्मिणिअरुशिशुपालसगाई॥
राजा चहेउ कृष्ण कहँदीन्हो। रुक्मदुष्ट विपरीतिहि कीन्हो॥
सुनि पांडुजपुर नर त्रियशोचै। बिनु स्वारथ नैनन जल मोचै॥
राजभवन बहु बजति बधाई। प्रफुलित नृप नर नारिअथाई॥
छोणी देव कान सम भाखैं। कोऊ कर्म्म गुप्त नहिं राखैं॥
दुंदुभि बजत महीप दुवारा। मागध सूत सुयश बिस्तारा॥
मंडफ रच्यौ बरणि नहिंजाई। जो बिलोकि कबि बुद्धिभ्रमाई॥
दो० राजसदन शोभायथा तथा नगर प्रतिधाम।
द्वार द्वार हरि कलश युत तरु रंभादि ललाम॥
बंदनवारि बँधी प्रतिधामा। पुररथ्या स्वाच्छित सब ठामा॥
पाटम्बर डासत पुरबासी। प्रफुलितयुवतिपुरुषगुणरासी॥
मिलि द्वै चारि सखी कलबैनी। रूप मृगांक मनोहर नैनी॥
रुक्मिणि निकटजाययहभाषा। सुनुसखिबिधिपुरई अभिलाषा॥
सँग शिशुपाल तोर उद्वाहा। करत रुक्मपुर बड़ उत्साहा॥

सुबुधि सुलज्ज होहु अबरानी। सुनिरुक्मिणिबोलीमृदुबानी ॥
मन बच क्रम हरि मोरअधारा। दूसर पतिको कृत करतारा ॥
महा शोच बिकलित नृपजाता। बोलिएक द्विज सबगुणज्ञाता ॥
दो० करि प्रहून सविनय सुबच बिप्रहि कहा बुझाय।
मम सँदेश लै कृपा दधि अवशि द्वारकाजाय ॥
श्रीगोविन्दहि सुबुधि सुनाई। पश्चिमा निधि लाउलवाई ॥
जन्मभयन्त तोर गुण मानौं। हरिबरदानि तात अनुमानौं ॥
देवि बेगि किन कहिय सँदेशा। नगर द्वारका दूरि प्रदेशा ॥
बोधि बोधदा त्रिपुर सयानी। तब संदेश सप्रेम बखानी ॥
बरुणा जनक बारुणी श्यामा। अंतरयामी सब गुण ग्रामा ॥
मानि प्रीति जो मम सँगऐहैं। तौ तुव दुख भ्रम दूरि बहैहैं ॥
सुनि प्रिय बचन दशनबरकेरे। लिख्यो पत्रिका प्रेम घनेरे ॥
बिहँगराज कर दीन्ही पाती। बचनबद्धो सुप्रीतिअधिकाती ॥
दो० श्री हरिसों करजोरि द्विज कहियो बैन बिचारि।
घट घट बासी आपु हैं अंतरयामि मुरारि ॥
जन लज्जा तुम राखन हारे। जन्म जन्म के कंत हमारे ॥
दरशदेइ अघओघ नशाइय। निमिषमात्रनहिंबारलगाइय ॥
चल्यो क्षमामरकरिहरि ध्याना। दिशिद्वारकाकस्यो प्रस्थाना ॥
दूरि देश महिदेवन जाना। क्षणमहँगा द्वारका सुजाना ॥
नहिं आश्चर्य कृष्ण प्रभुताई। राम समय जनपति यदुराई ॥
रतनाकर मधि नगर सुहावा। देखि सुपर्व इला सुख पावा ॥
बन उपबन चहुँओर बिराजैं। दंतबिपुलकलध्वनितहँ भ्राजैं ॥
सरवर नलिन मिलित जलपूरे। डोलत चंचरीक मन रूरे ॥
दो० सरतट जलचर बहुबसहिं भाबरणै कबि कौन।
शेष शारदा मतिभ्रमै गायक हरिगुण जौन ॥
द्विजबर अग्र जाय पुर देखा। हरि पुर ते पूरण मन लेखा ॥
चारिओर दृढ़ कोट सोहावै। करण द्वार बहु शोभा पावै ॥
जटित मणिन कपाट तहँलागे। भूसुर प्रबिशिलख्योपुर आगे ॥

रजत शूर मंदिर सुखदाई। जोबिलोकिबिधिबुधिचकिजाई॥
धवल धामभा अकथ नृपाला। जोलखिमोहलहत सुरजाला॥
सध्वजपताक कलश सबधामा। सिंचीसुगंध नृपति सबठामा॥
आयत प्रति बहु मंगलचारा। बरणि न जायँ सहितबिस्तारा॥
पुर रत्तक बसुयाम सुदर्शन। करिनसकत खलनगरस्पर्शन॥

दो० देखत शोभापुर द्विजप राजसभा महँ जाय।
दै आशिष पूछत भयउ कहँ राजत यदुराय॥

कोउ नृप सेवक ब्राह्मण जानी। हरि निकेत दरशायो आनी॥
द्वारपाल लखि द्विज पदबन्दे। पूछ्यो बचन सप्रीति अनन्दे॥
स्वारथ देश बदौं सुखपाई। जोहौं प्रभुहिं सुनावौं जाई॥
हौं द्विज कुंडिनपुर ते आयों। भीष्मकसुता पत्रिका लायों॥
अंतःपुर चलि जाइय ताता। हरि आसन राजत सुरत्राता॥
तब नृप सदन गयो चलिसोई। उठे कृष्ण मुख महिसुर जोई॥
करि प्रणाम सादर बैसाई। पादोदक निजभवन सिंचाई॥
कुशलप्रश्नकरिसुरुचिकृपाला। सुनौ महीप बहुरि सुरपाला॥

दो० इष्टदेव सम सेवकरि पुनि अस्नान कराय।
रसरसभोजन नेह युत नृप द्विज बरहिजिमाय॥

दैतम्बोल सुथल शुचि धामा। बहु सुगंध सींचिहि तेंयामा॥
छपरखट्ट पर बिप्र सोवाई। आपुन पास बैठ यदुराई॥
मन शोचत कब भूसुर जागै। कहै बचन रुक्मिणि रसपागै॥
जबनजग्यो तब तेहि पगदावा। चौंकिउठ्योमहिसुरभ्रमछावा॥
कहौ तात निज आगमभाऊ। जिमि अजानपूछततातिमिराऊ॥
कोस्वारथ दरशन मोहिंदीन्हो। पदजलसदनपूत प्रभुकीन्हो॥
कुंडिनपुर भीष्मक नृपताई। बसत जहां चहुँबरण अथाई॥
दुहिता तासु रुक्मिणी आहीं। तवयशसुनिप्रफुल्लितमनमाहीं॥

दो० निशिदिन तव पगध्यानकृत यह लालस उरतास।
निज सेवामहँ राखिप्रभु मेटिय सब अघ त्रास॥

भीष्मकहू यह कस्यो बिचारा। सबके सम्मत करले सारा॥

रुक्मिणि तुमहिं देइ अनुमाना। पैजड़ रुक्म आन मतठाना॥
नृप शिशुपाल तिलककरवावा। व्याह हेत शुभ साज पठावा॥
सो व्याहन आवत यदुराई। रुक्मिणि महाहृदय पछिताई॥
यह पत्रिका मोहिं प्रभु दीन्ही। अरुबड़िबिनयजोरिकरकीन्ही॥
लैपत्रिका समोद कृपाला। समाचार बांच्यो तेहिकाला॥
बिप्रहि कह्यो प्रसन्नित बानी। होहु अचिन्त धीर बिज्ञानी॥
अवशि चलतहौं तुम्हरे संगा। सकल दुष्टदल करिरणभंगा॥

दो० पूरण इच्छा तासुकी हौं करिहौं बिनु खेद।
असकहिमनचिंततकछुक प्रभुअचिंतनिभेद॥
प्रीतिबिबशहरि काललिहुं बिदित जानिमनमाहिं।
मंगल तन मन बचनतू हरिध्यावत कसनाहिं॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायां श्रीकृष्णप्रतिरुक्मिणिसंदेश बर्णनोनामत्रैपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

दो० पारवती शशि छबि लहत तारागण सुप्रकाश।
पै प्रगटतही रश्मि के निर्छबि लसत अकाश॥
योंहीं प्राणी पाप रत शोभित पाप समाज।
धर्म्म सभा महँ दुष्ट नर अमित उठावत लाज॥
याभव भूप अपार मग चलत प्रकृतिबश आहिं।
बुधहरिजननिजधर्म्ममय जड़ मूरुखतेहिनाहिं॥
श्वानादिक जे जीव हैं ते उत्तम ममजानि।
वा नरते जो हरिभजन करतनहित चितआनि॥
सुखदायक दुख हरसदा राधा नाथ सनेह।
सो परिहरि तू क्यों भ्रमै छूटि जाय यह देह॥

किल्विष तिमिरसहसकरबानी। पुनि बोले मुनिवर बिज्ञानी॥
इमि ब्राह्मणहि भूप परबोधी। कहइमिपुनिहरिबाक्यविरोधी॥
जिमि काढ़त शिखि संघटदारा। खलदलमलिहमताहिप्रकारा॥
सुन्दरि कहँ लाउब द्विजराई। असभाणि सभागये सुखपाई॥

करि प्रणाम कह सुनौ महीपा। कुण्डिनपुर भीष्मक नृपदीपा॥
निज दुहिता मोहिं देवे काजा। पठवा पत्र हस्त द्विजराजा॥
अकसर हमहिंबोलाव गोसाँई। का आयसु कहिये समुझाई॥
उग्रसेन कह दूरि बहूता। जानकहौं किमि तात अदूता॥

दो० राज समग्र समाज तहँ व्याग्रितरारि अपार।
समाचार को हमहिं पुनि कहिहि आइतद्वार॥

चिन्तनवृथा न भूपति कीजै। अवशिजाउँ आज्ञामोहिं दीजै॥
जोपै जाव अवश्यक जानिय। तौ तजि हठ सैना सँग आनिय॥
मूशल पाणि चमूप समेता। जाहु तात अनुशासन देता॥
करि बिवाह आतुर गृह आयो। काहू प्रति न विरोध बढ़ायो॥
अग्र जात मैं तात सुजाना। पाछे सदल बंधु प्रस्थाना॥
पितु प्रति पुनि प्रभु पायरजाई। दारुक निज सारथी बोलाई॥
बेगि यान सजि लाइय ताता। क्रिमपि न बार होइविख्याता॥
आयसु पाय लाव सो याना। भूसुर सहित चढ़े भगवाना॥

दो० स्वयं सिद्धि मिति बदि चले कुंडिन पुर दिशिभूप।
पुर बाहिर भे सगुणशुभ सब बिधि सुखद अनूप॥

दक्षिण दृश्य मान मृगचक्रा। कृतक्रीड़ा बिहाय गति वक्रा॥
सन्मुख हरिपतनी युतजाई। निजभय आनन लीन्हेराई॥
देखि सगुण ब्राह्मण इमिकहई। सिद्धि मनोरथममत अहई॥
हम महिसुर सेवक गुणबेला। सगुण अगुणबूझत सबखेला॥
सगुण रूप अवतार हमारा। अनुगामी गुण तीनि प्रकारा॥
पवन बेग हय सूत चलाये। नाना नगरदेश चलि आये॥
कुंडिनपुर पहुंचे असुरारी। यह चरित्र देख्यो बनवारी॥
ठाम ठाम प्रति श्याम निहारा। सामग्री विवाह चहुंद्वारा॥

दो० चच्छ प्रतोली बिबिध बिधि चर्चित शुचिपाटीर।
नारिकेर पुंगी कनक हरित पात युत नीर॥

प्रति निकेत बन्दनवारी अस। गीतानंद होत सुरपुरजस॥
नृप उपबन उतरे यदुनायक। राजे तरु छाया सुखदायक॥

विप्रराज कन्यहि सुधिदेहू । निज करतबकर प्रतिफललेहू ॥
बहुरि मोहिं वृत्तान्त बताइय । बेगिजाहु द्विज बारन लाइय ॥
नाथ बिवाह प्रथमदिन आजू । जुरयो राजगृह अखिलसमाजू ॥
पायएकान्तरुक्मिणिहिस्वामी । कहिहौंतुव आगमद्विजगामी ॥
असबदि चल्यो द्विजप कुरुराई । आन वृतांतसुनौ चितलाई ॥
यहिप्रकार प्रभुतहाँ बिराजे । उत शिशुपाल बरातहिं साजे ॥
दो० जरासंध इत्यादि नृप संगसमोद बिशाल ।
असुर कटक अगणितचल्यो प्रबलदुष्ट बिकराल ॥
बोझित बोझ अनन्त महाना । कच्छपकोलहृदय अकुलाना ॥
पुरअबिदूरि बराती आये । समाचार भीष्मक नृपपाये ॥
सचिव गोत्रज हित अगमानी । नरपतिगयोसबहिसँगआनी ॥
सादरभेंटि सबहि पहिराई । रत्न जटित भूषण नरराई ॥
दै बहु पारसीक द्विपदाना । पुरलाये करिबहु सन्माना ॥
उत्तमथान दयो जनवासा । जहँ सबोंबिधि भूप सुपासा ॥
सामग्री अहार मँगवाई । उचित महीपन पास पठाई ॥
अंतर चरित तात अबगाऊं । मोदकसबबिधितुमहिसुनाऊं ॥
दो० हरिजब इत मारगलियो तबजुरि बहु यदुजात ।
करिप्रणाम तब भूपसन कह्यो सुनौ बरबात ॥
सुधिस्पृष्ट यह सुनी नृराई । मगधराज शिशुपाल सहाई ॥
अपर अमित खल युत सेवकाई । सब प्रकार निज साजबनाई ॥
सोत्साह कुंडिनपुर आये । नृप दुहिता ब्याहन मुदछाये ॥
अकसरश्याम गये बड़िशंका । बहुशिशुपाल जगत आतंका ॥
उरशत्रुता राख मगधीशा । ह्वैहै समर सत्य अवनीशा ॥
यहिकारण अनुशासन दीजै । जानितात कसअपयशलीजै ॥
सुनि भूपति शंकित उरभयऊ । बोलिराम अस आयसु दयऊ ॥
संग बिरुत्थी सैन पलाई । कुंडिन पुरहि बेगि किनजाई ॥
दो० बोधिश्याम कहँ तात तुम लै आवो सुखपाय ।
नृप आयसु सुनि रामतब सेनालई बोलाय ॥

यदुबंशी जुरि रस इषु कोरी। कुंडिन पुरहि चले गुण धोरी॥
प्राबिट किधौं बाहनी राई। कलभव्यूह बरणिय मेघवाई॥
नकुल पंक्तिद्विजमदकल सोहैं। शब्ददमाम रसध्वनि रोहैं॥
बिद्युल्लताशस्त्र छबि देहीं। नृपनृत्यकजनु जलद सनेहीं॥
बिबिध प्रकार बीर बर बोलैं। षटपद मंडुक सुबुधि किलोलैं॥
बासव बाण धारि धनुबीरा। आक जवास शत्रु उरपीरा॥
मुदित मीनजनदेखिसुकाला। क्षुभितद्युतिकरखलश्रुतिबाला॥
दलशोभा बिलोकि सुर बृंदा। यानारूढ़ गगन सानंदा॥

दो० बरषत सुमन अपारते नभमारग मुदपाय।
पुलकित गावत श्यामयश कहिजैजै यदुराय॥

हरिपश्चात सदल बलरामा। कुंडिन पुर पहुंचे सुख धामा॥
रुक्मिणि यहन नेकु सुधिपाई। महा बिकल अतिउरपछिताई॥
मुखछबि महा मलिन कुरु केता। बिधुकर प्रात तथा छबिदेता॥
उच्च सदन चढ़ि चहुं दिशिहेरैं। काहि कहै चिन्ता निरखैरैं॥
जल प्रबाह बाढ़्यौ चषतासू। महा बिकलमन निपटउदासू॥
निजमन बदत कहतइमिराजा। तीनि समय रच कजनलाजा॥
को कारण बिलंब बिधि भयऊ। मम दोहद बिसारिहरिदयऊ॥
अंतरयामी अघहर श्यामा। स्वर्पाताल व्याप्त सुखधामा॥

दो० अथवाद्विज ह्वाँनहिं गयो वाकुरूप मोहिं जानि।
प्रीति प्रतीतिन हरिकरी को दृढ़ कहै बखानि॥

प्रह्लादिक हित बारन लाई। कहि अबदैव कृष्ण बिसराई॥
खल बाधक साधक प्रणदासा। सुनि मगधेशकरी उरत्रासा॥
कालिह करिहिशिशुपालबिवाहा। जात मोर प्रण उरदुखदाहा॥
बिनु हरिप्राणरहिहि किमिधाता। जाउँ कहां अतिबिथुरितगाता॥
बहु जप नेम धर्म ब्रत साधे। निष्प्रपंच हरिपद आराधे॥
कोउ न सहायकभो यहिकाला। जो बिलम्ब कीन्होगोपाला॥
देखि दुखित इमि सखी बखाना। नगर द्वारका दूरि महाना॥
बिनु पितु बन्धु रजायसु आली। केहि प्रकार आवत बनमाली॥

दो० आनसखी कह धीर धरु अंतरयामी श्याम ।
आवहिंगेहरिअवशिसखि करुकछुकालबिराम ॥
रे मन प्रतीति दृढ़ होई । कहन चहत आये हरि कोई ॥
तदनंतर द्विज दर्शन दयऊ । रुक्मिणिशोकउरगभाजिगयऊ ॥
दे आशिष भल अवसरपाई । प्रभुआगमकहसुबुधि बुझाई ॥
नृप बाड़ी महँ राजतश्यामा । आवत सदल पिछारी रामा ॥
बिप्रबचन सुनि अमी समाना । आँनदरुक्मिणिलहाअजाना ॥
करि बन्दन पद रुक्मिणिभाखा । कृपासिंधु ममजीवन राखा ॥
जो न होत तुव आगम आजू । प्रातहोत सब भाँति अकाजू ॥
सुधि प्रतिफल न तीनि पुरकोई । भूसुर तुमहि देउं मैं जोई ॥
दो० इंद्र भवन सम्पतिहु देहोउं अऋण नहिंतात ।
असकहि मौनित सुख गलित होत भईनृपजात ॥
सुनि प्रिय वचन तोष द्विजपाई । प्रफुलितगयउ महीपअथाई ॥
हरि आगम यकान्त कहराजै । आद्योपान्तत्यागिजगलाजै ॥
हरष्यो भूप सुनत द्विज बानी । भीष्मकचल्योआशुनृपज्ञानी ॥
राम श्याम शोभित तहँ आयो । करिप्रणामबाड़िबिनयसुनायो ॥
पुनि कह मैं मन बचअरुकाया । कन्या तुमहिं देत यदुराया ॥
दुष्टन मत बिपरीत बिचारा । अभिमतलहलाहिदरशतुम्हारा ॥
शुचिस्थान प्रभु बास कराई । निज आयत महीप गाराई ॥
चिंतत अकथ कर्म हरि केरे । को जानै कस होय सबेरे ॥
दो० युगल बंधु राजत जहाँ पुरबासी तहँ आय ।
करत प्रशंसा बिबिध बिधिकरि प्रणाम शुचिभाय ॥
आपस में इमि सब बतराहीं । रुक्मिणि योगकृष्णबरआहीं ॥
हमरे पुण्य प्रताप बिधाता । श्याम ब्याह नृप करैंप्रभाता ॥
चिरुजीवन जीवहिमतिदायक । जोयहि ठामलाव यदुनायक ॥
हरिकह चलौ नगर बलदेखिय । पुरशोभानिजनैननबिलोकिय ॥
चले कुमार रूप गुण राशी । प्रबिशे पुरबीथिनद्युतिकाशी ॥
जेहिमग जात बन्धु दौ राजा । जरत बिपुलनरनारिसमाजा ॥

गंधसार अबीज जल मेली। चरचहिं प्रभुहिंनारिसतकेली॥
पुष्पावलि अपार उर डारैं। आपस में इमि मंत्र बिचारैं॥
दो० नील बास बासित सुहरि पीताम्बर धरश्याम।
कुंडलश्रुतिशिरमुकुटलस अंबुजचषगुणग्राम॥
भूपति प्रथम इनहिं बर शोधा। दुष्टरुक्म सुनिबचन बिरोधा॥
खल शिशुपाल सगाईकीनसि। देवशिरोमणिहृदयनचीनसि॥
पुर शोभा देखी कटकाई। जरासन्ध शिशुपाल अथाई॥
निज आसन राजे पुनि आई। उत नृपरुक्म सुबुधि यहपाई॥
आमर्षित पितु पास सिधावा। बैठिसभा इमिबचन सुनावा॥
अन्यायी हरिबल द्वौभाई। केहि सम्मत आये यहिठांई॥
दूत निमंत्रन काहू दयऊ। अनुचितपिताब्याहसुखगयऊ॥
ब्याह काज उत्सव गृह माहीं। भयउ उपद्रव संशय नाहीं॥
दो० महाप्रपंची कुटिल मति उत्पाती द्वौ तात।
निजभल जो भूपतिचहौ बदौभेद बिख्यात॥
प्रति उत्तर न राउ कछु दयऊ। तब उठिरुक्म तहांचलिगयऊ॥
जहँ शिशुपाल जुरानिधि सोहै। जिनहिंबिलोकिलोकपतिछोहै॥
बैठिकह्योमहीपसुनिलीजिय। गुणिनिजमनउपायदृढ़कीजिय॥
चक्रपाणि नीलाम्बर दोऊ। आये इहां बोलावन कोऊ॥
सावधान पुर की रखवारी। करबोभूमिपतिसमयबिचारी॥
मनबिकलितसुनिभोशिशुपाला। बचनबद्योइमिमगधभुवाला॥
कठिन उपद्रक बिदित सुजाना। नहिंपरिणाम रुक्मकल्याना॥
बल सागर प्रपंच जल राशी। बध्योकंस बहुअसुर न त्राशी॥
दो० बाल बहिक्रम प्रबल अति कृत अपार संसार।
समर अजय पूरण पुरुष है दूसर करतार॥
तू न जान मैं जान प्रभाऊ। इन कर भेद जान नहिंकाऊ॥
स्वर्ग चंद्रधा समर पलाना। गयउ पुराण बार अकुलाना॥
क्रोधित मोहिं निरखि द्वौ भागे। हमहूं रुक्म गये सँग लागे॥
आदि अरूढ़ भये द्वौ भाई। धूमध्वजानग दयो जराई॥

व्याजक उभय अंतरित होई। गये द्वारका जान न कोई॥
को त्रिलोक इनते बलखानी। कर्तब अलख बिदित बिज्ञानी॥
कारणगत आगम ह्यां नाहीं। कौतुकीय रस भंग कराहीं॥
यहिते रुक्म सो करो उपाई। जेहिकृत हमरी पति रहिजाई॥
दो० क्यों शोचत मनभूप तुम रण अबूझ वै दोउ।
नृत्ये बनबन त्रियन सँग बनबासी कह कोउ॥
रावत कृत प्रभाव अज्ञाता। कहा भयउ नृप कंसहिघाता॥
क्षणभरि संगर संगम ठानौं। मिथुनजिह्मकर नृपधरिआनौं॥
इमि धीरज धराय महिपालै। गयो महीप रुक्म प्रभुतालै॥
चिंततगत रजनी भा प्राता। इतउतव्याहसाज कुरुजाता॥
रुक्मिणि द्विज हरिपासपठावा। शुभसँदेश यहप्रभुहिसुनावा॥
दिवस विवाह केर प्रभुआजू। सजे अखिल उत्साह समाजू॥
जब दिन शेष दंड युग रहई। दिव्यार्चन मुहूर्त तब अहई॥
पुरप्राची जग मात निकेता। आउब तहां सखीन समेता॥
दो० मम प्रण लाज तुम्हारकर राख्यो दीनदयाल।
आन प्रसंग सुरंग शुचि सुनु चितदै नरपाल॥
त्रियनरुक्मिणिहि उबटिन्हवावा। सुथलचौकमधिपुनिबैठावा॥
स्वर्ग बधून सुलेत चढ़ायउ। बहुरिउबटिन्हवाय सुखपायउ॥
भूषण रचि षोड़श शृंगारा। करि बैठाय यकान्त अगारा॥
पूजन समय सखिन सँग लाई। चली रुक्मिणी प्रेम बढ़ाई॥
बाजत बिबिध तूर्य्य सहनाई। खग्ग अनेक सुभट चहुँधाई॥
यहसुधि पाय भूप शिशुपाला। बिपुल सुभटबोले तेहिकाला॥
हरिभय त्रसित रक्षिबे काजा। पठये सकल बजावत बाजा॥
निकरायुध योधा करधारे। भयेभूप रुक्मिणि रखवारे॥
दो० त्रियसमाज उडखल घटा मधिरुक्मिणि बिधिरूप।
जगतमात लक्षित सगुण कथि न सकत कबिभूप॥
पहुंचीजब जगजननिनिकेता। तब धोयेकर चरण समेता
करिआचमन द्विबसुबिधि पूजा। हरिपद आशतजे मतदूजा

बिप्रबधुन पुनि दै ज्योनारा। पटभूषण पहिराय अपारा॥
दै दक्षिणा बन्द पग राई। अभिमतदानि आशिषा पाई॥
परिक्रमा पुनि करियुत नेहा। हरिपद रति यांच्यो बरएहा॥
बाह्यालय आई नृप जाया। चहुँदिशिदरशनहरिकरपाया॥
बिकलितगमनभवनचहकीन्हा। तेहिअवसर हरिदर्शन दीन्हा॥
रथारूढ़ प्रभु निपट अकेले। खलदल मध्य आशुही पेले॥

दो० प्रियबादिनिकह रुक्मिणिहि आये लखु जनपाल।
देखिध्वजा रथ मुदितमन भई दशा आबाल॥

अंग अंग प्रति तेहिमुद बाढ़ा। हरिपद कमल नेहभा गाढ़ा॥
बिहँसत चली सखिन सँगसोई। छबि बिलोकिछबिउरभ्रमहोई॥
प्रभुप्रेरयो भवमोहनि माया। सबकरबुधिबलहरयोनिकाया॥
इत रुक्मिणि निजबदन उघारा। गयचकचौंधिअखिलरखवारा॥
रहित स्मृतिगत सुधितन सोई। जीवत सब शव चेतककोई॥
दारज चित्र पुत्रिरक्षक गन। हरिरुक्मिणीगही आनँदमन॥
यानारूढ़ित जब हरिकरेऊ। रोमांगित रुक्मिणि थरहरेऊ॥
तजि जगलाज चली हरिसाथा। प्रगट प्रीति बैषानसगाथा॥

दो० नेम यज्ञ ब्रतफल लह्यो नृपजा हरिपद पाय।
देखत खल नहिंकहतकछु अकथकथा कुरुराय॥
पुंडरीक हरिसदल ते जिमि अहार लैजाय।
त्यों रुक्मिणि हरि हरिचले दुंदुभिदीन्ह बजाय॥
सैन सहित रेवतिरमण आइ मिले कुरु भूप।
मंगल भजु यदुनाथ पद करतब अकथ अनूप॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारादिनमणि श्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांरुक्मिणीहरणबर्णनोनाम
चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४॥

दो० बनसुत सुतकर बरणलिपि कारक लसत अनीक।
तद्विपरीतन होत भव ज्यों पाहन की लीक॥
मनुज उपाय अनेक कृत पौरुष तुल्य सुजान।

सुख न लहत संसार में बुधि बिपरीत अमान ॥
मुनि जन भाषत रोपि प्रण यह कर्तब मतिधीर।
हरिपद ध्यावै प्रेमयुत नशै अखिल भवभीर ॥
परिहरि राधारमण रति पूजत देव अपार।
सिद्धान्त मत मुक्ति तेहि होत अंत संसार ॥
अकरकरयो जग सर्ब जेहि पूरणपुरुष अनादि।
कृष्णरूपजन्म्यो सुब्रज तेहिभजुतजिभ्रमबादि ॥
मुनिबर कह्यो सुनौ कुरुराई। कछुक दूरि पुरते हरिजाई ॥
संकोचित लखिरुक्मिणिभाषा।कतशोचतलहिफलअभिलाषा॥
कम्बुध्वनि हौं करत सुजानी। निजबलकरैंसुनतअभिमानी ॥
तिनहिंजीतिश्रुतिव्रततोहिंब्याहौं।अखिलशोकद्विजजनकरदाहौं
असबदितेहि निजश्रकपहिराई। बामभाग रोचित बैठाई ॥
पंचजन्य फूंक्यो जनपालक।जासुशब्दअघखलगणघालक॥
मगधराज शिशुपाल समाजा। सुनतशब्द चौंके कुरुराजा ॥
नगर कोलाहलचहुंदिगछयऊ। नृप दुहिताहरि हरि लैगयऊ ॥
दो० कह्यो रक्षकन चरित यह निज भूपहि समुझाय।
सुनिआमर्ष्यो मगधनृप सहशिशुपाल सहाय ॥
कवचबर्म करि बपुष नरेशा। आयुध लिये सक्रोध कुबेशा ॥
कटक समेत रोष मन आनी।प्रभुपश्चातचल्योअभिमानी॥
जिमि यूथप हरि बालहि धावै। नहिंपरिणाम कुशलतापावै ॥
निकटजाय कह हरिहि प्रचारी। सुनुत्रियचौरमनुजअबिचारी ॥
कत पलात तजिरणमहिआजू। क्षत्री ह्वै न गहत उर लाजू ॥
बीर समर्थ समर जित जोई। संगर पृष्ठि न देवत सोई ॥
कठिन बचनसुनि प्रभुकहताही। महा अबूझ मूढ़ तू आही ॥
जानि अमृत पावत कस मूढ़ा। मम कर्त्तब त्रैकाल अगूढ़ा ॥
दो० असकहि प्रभुआज्ञादई फिरे अखिल यदुजात।
क्रोधभरे दोउ ओर ते करै लगे निज घात ॥
छं०तो०लागे चलै बहुबान। फुंकरत ब्याल समान ॥

उरशोच रुक्मिणिनारि । करतारका होनिहारि ॥
प्रभुताहिब्याकुलजानि । यों कह्यो बचनबखानि ॥
क्यों वृथा कीजियशोचु । दुखदानि उरते मोचु ॥
धरभारहरमोहिंजानि । यहबचन जी अनुमानि ॥
क्षणमें हनौं सब बीर । जिमिचक्रिहरत अहीर ॥
इमिताहि प्रभुसमुझाय । रण में रहे रुपिठाइ ॥
सुरसाजि ब्योमबिमान । आये सुरण बलवान ॥
निरखैं महा संहार । जड़ लरतकरि हहकार ॥
यदुजात प्रबल महान । मर्दत करत बिनप्रान ॥

छं० मर्दतखलन यदुजात बहुबिधि पूरिशर अवलीमहा ।
धर मुंडकर पद महिपरत कटि जात नहिं कौतुककहा ॥
बाजत दमामे सूत बोलत सुयश दुहुं दिशि मुदभरे ।
गजपाल गजपति सों भिरे पायक सु पायक सों अरे ॥
कृतसमर रथपति रथपतिन सँग अश्वपतिसँगतुरिपती ।
रणभूमि बीर अपार गर्जत तर्जि कृत संगर अती ॥
कादर पलावत जीव निज लै क्षतन युत घूमत बली ।
धावत कबंध अनेक रणमहि मारु धरु पूरित थली ॥
मेदिनिमईा बहु रुंडशिरमय रुधिरसरित सोहावनी ।
गज मृतक किधौं करारसोहत खड्गकबि सफरी भनी ॥
बहुचर्म कच्छप मानराजहि जान मृतक बिराजहीं ।
खग पंथितिन चढ़ि पारधावहिं देखिसुर सुखसाजहीं ॥
बैताल भूत पिशाच योगिनि सरित तट पुरजन बसे ।
जल पान क्षतज ते करतबहुबिधि देखिरण शंकरहँसे ॥
श्रकमुण्ड पहिरतमुदितमन निजसैनयुतकल्याणमय ।
बायस शृगाल अपार श्वानसुमान्स भक्षत मग्नवय ॥

दो० निरखि समर बिकराल अति कोपे मूशलपानि ।
क्षणमहँखलमर्देसकल धरिउर अधिकगलानि ॥

राम शिशिररण तरु खल पाना । देश बिदेश गये चहुँथाना ॥

कञ्चुकच्तनयुतनृपशिशुपाला । सहमगधीश भगे तेहिकाला ॥
अल्पक दूरिजाय भय ठाढ़े । अतिमनत्रसितशोकउरबाढ़े ॥
कह शिशुपालसुनौमगधीशा । अपयशतिलकचढ़येोममशीशा
यहिकारण जीवन धृग मोरा । भयो क्लेशयह कुलिशकठोरा ॥
करिरण मरौं रजायसु देहू । नततप हित काननमग लेहू ॥
धन परिवार राज तन धामा । गत बहोरिपावत परिणामा ॥
पतिगत मिलत न कौनौं काला । जीवनवृथाबदत शिशुपाला ॥
दो० तुम प्रवीण सबभाँति नृप कहा कहौं गुणज्ञान ।
अज्ञानी शोचत बिपुल नहिं बिखलतधीमान ॥
लोक अलोक कार करतारा । अवशिमनुजकृतकृत्यअपारा॥
ईश स्वतंत्र सुवश सुन भाई । पराधीन यह जीव सदाई ॥
नटनागर जिमि पूतरि दारा । स्ववशनचावतबिबिधप्रकारा ॥
तिमि अदृष्ट बश जीव बिचारौ । निजबशगत त्रैकाल निहारौ॥
दुख सुख पाय बिबुधयाहिकारण । शोकनकृतकरिदोउ निवारण॥
यथा स्वप्न सम्पति जग राई । तथा समस्त त्रिपुर प्रभुताई ॥
त्रैबिंशति चोहिणिदल साजा । गा मथुरहरिअजयककाजा ॥
हन्यमानभा मुनि महिबारा । यहिहरि मद्यौं कटक हमारा ॥
दो० हाथी धरणी धा समर संग्रह कस्यो बहोरि ।
जयति युद्धमहँ पाय भल द्वौ भागे रणछोरि ॥
तबकदेन पुनि सौख्यन पावा । सहज स्वभाव संगहौं धावा ॥
नगारूढ़ लखिघृत तृण दारा । रोपि जलज प्रेरयो चहुँबारा ॥
भस्मित जानि घूमिहौं आवा । दैव जानको इनहिं बचावा ॥
अद्भुत गति माया धर दोऊ । इनते प्रबल त्रिपुरनहिं कोऊ ॥
काटै वय नहिं काल कटावै । चतुर सुजाननीति असगावै ॥
उचित अहै राखिय नृप प्राणा । जग परिणामहोइ कल्याणा ॥
पालक देत मनोरथ सबहीं । तीनिकालमहँ कबहिंनकबहीं॥
ज्योंहौं अजय जयति द्वौ पाई । परिहरि हठ गृह चलियनृराई ॥
दो० सुनि शिक्षा धीरजधस्यो चल्यो भवनसुत शोक ।

यदुबंशी प्रफुलितसबै शशि बिलोकि जिमिकोक॥
उत शिशुपाल जननि भुवराई। पुत्रागम बिचारि सुख छाई॥
लागी करन मंगलाचारा। असगुन ताहि भये बिकरारा॥
यहि अन्तर यह सुधिदे काहू। दुलहिनि लैगय यदुकुलनाहू॥
समर सैन युत सब बिधि ठयऊ। पुनिपलाय गृह मारगलयऊ॥
चित्र लिखित अवाक सुधिपाई। अग्र प्रसंग सुनौ कुरुराई॥
रुक्म अजय सुनि द्वौ नृप केरी। कहो सभा इमि नैन तरेरी॥
मम सन्मुखकिमि हरिबचिजाई। अवशि ताहि मर्दौं खताई॥
लै रुक्मिणी बरौं शिशुपालै। पूरब प्रण पूरण प्रतिपालै॥
दो० जो न करौं यह कर्म तौ बसौं न पुनि यहिधाम।
एक छोहिणी सैनसँग चल्यो बिजय रणकाम॥
बेगि धाइ प्रभु दलखल रोका। प्रबल धनुर्द्धर कृष्णबिलोका॥
कहोरुक्म निज अनिहिप्रचारी। बधौ सकल तस्कर करधारी॥
जीवत चौर बांधिहौं लाऊं। तुव देखत यमपुर पहुँचाऊं॥
खलमुख सुनियदु जाकदुबानी। फिरे समस्त समर बिज्ञानी॥
पूरब पावस बरषेउ बाना। बहे असुरतृण चहुंदिगनाना॥
रथबढ़ाय प्रभुतट खल आवा। व्यंगबाक्य इमिप्रभुहिसुनावा॥
ओकपटी दुबंश जग जाना। का जानै महीप सन्माना॥
रम्भापाल बाल वय रहेऊ। करिचोरी घृत माखन लहेऊ॥
दो० सो बुधिउरधरि मूढ़मति हरी बाल ह्याँ आय।
गोपन हमतुम कालकर यों बादिपुनि कुरुराय॥
इष्वासन चढ़ाय गुणवाना। प्रभुचिन्हित त्यागे अज्ञाना॥
ते शर खंडे मध्य कृपाला। सरुढ़ रुक्म अलिहनउत्ताला॥
खग दिशिचारि पूरि नृप रहेऊ। तब हरितोमर शरधर गहेऊ॥
अमित शिलीमुखरणमहँत्यागे। जड़सैनप त्रैदिशि नृपभागे॥
आन असुग मारे कम्बोजा। रथसारथी कस्यो बिन खोजा॥
बहुरिशरासन भंज्यो तासू। पुनि बहुअस्त्रहरे प्रभु आसू॥
असिकर गहि तब धावतभयऊ। गदा घात रथ ऊपर ठयऊ॥

आशुश्यामतेहिबंधनकीन्हा। रुक्मिणिसबिनयइमि कहिदीन्हा॥

दो० तुव सेवक मम बंधुयह जनि मार्‍यो असुरारि।
परमात्मा प्रभुअजय तुम किमिखलसकतविचारि॥

तुमअनादि योगेश्वर ज्ञानी। वाणीपति भोगी धरध्यानी॥
सेवक सुखद स्वबशतन धारा। तुवकृत तीनौं काल अपारा॥
मूरुख बन्धु कि जानै योगा। प्रभु आधीन बुद्धि उद्योगा॥
सुबुधिसन्त मूरख अपराधा। क्षमत सदाप्रभुबुद्धिअगाधा॥
मरदेयाहिअलोकबिलोकिय। किमिकीजियममभ्रातसशोकिय॥
अजय निरंजनप्रभुकरतारा। सम्बन्धी बध हृदय बिचारा॥
यह अयोगकृत करिय न स्वामी। क्षमा राशितुव चरणनमामी॥
जनक मोर सुत बध दुख पैहैं। प्रभुकेहि काज प्रीति तुव ऐहैं॥

दो० परसि चरणरज पतित जग पावतमुद सबभाँति।
भीष्मकहावैशोकमय यह अनुचित न सोहाति॥

भल हित सम्बन्धी संग कीन्हा। बाँधिखड्गबधहितकरलीन्हा॥
अस कहिपुनि तनकंपज नावा। बंधु बंध लखि चखजलछावा॥
द्वौकर जोरि चरण गहि मांगा। बधियनप्रभुकरिमम अनुरागा॥
आरत गिरा सुनत आरत हर। कोपशांत कीन्हो तेहिअवसर॥
सैन देइ प्रभु सूत बुझावा। क्षौर कर्म तेहि तेहि करवावा॥
दाढ़ी मूछ मुंडि नृप ताकी। कसिरथरुक्मचल्यो सोहांकी॥
रेवति रमण मारि खल सैना। चले श्याम पहँ भूप सुखैना॥
मर्दिभक्षि सरसुत हरि जैसे। मिलै युत्थ निज हरिगयतैसे॥

दो० निकट जाय बंधन रुकुम देख्यो मूशल पानि।
कह्यो कुचालि न जाततव राखत नाहिं गलानि॥

खंड्यो तात स्वकर व्यवहारा। बाँध्यो रुक्मनकर्‍यो बिचारा॥
उज्वल यदुकुल तीनौं काला। अनुचितकसकीन्होगोपाला॥
जेहि बिरिया रणहित तुवपासा। आवायहअहमितबुधिनासा॥
कसनबुझाय तबहिं गृह फेर्‍यो। तद्वय तात मोहिं नहिंटेर्‍यो॥
अस बदि बंधन ताकर मोचा। करिसत्कार सुमनकहँ रोचा॥

पुनिरुक्मिणिप्रतिकहसनुचाला। लेखकचरणअमिटतिहुँकाला॥
बन्धन सोदरलखि न गलानिय। कर्माधीन त्रिपुरअनुमानिय॥
संचित परारब्ध क्रिय कारा। त्रिबिध अदृष्ट भोग संसारा॥
दो० पुनि क्षत्रियकर धर्म रण लहै जयाजय दोउ।
दुखरूपी यहि जगतमें सुख देखिय दुखसोउ॥
माया बिवश जीव निज भूला। भव रथ्याबिचरत मनफूला॥
सम्पति बिपति दुखादुख जानत। योग बियोगजयाजयमानत॥
अनुजबिरूपबिलोकिनशोचिय। अनुभवबूझिअखिलदुखमोचिय
नित्य अमर अज आतम देही। कौनोबिधिन नाशजगतेही॥
तनपतिगत न जीवपति जाई। दृष्टादृष्ट दुबिधिभव गाई॥
नीलाम्बर बाणी सुख सानी। सुनिरुक्मिणिनृपतजीगलानी॥
कहत सब्रीडसैन मधि श्यामहिं। हाँकिय कन्त बेगिरथधामहिं॥
प्राण प्रियाकी सुनि प्रभुबाता। चले द्वारकहि जनसुखदाता॥
दो० इते रुक्मनिजसैन मधि जाय मिल्यो महिपाल।
कहत भयो क्लेशित बचन महाबिकल बेहाल॥
प्रण अमोघगा अपयश भारी। निजपतिगतअबयहैबिचारी॥
परिहरि गेहाश्रम धनधामा। बैखानस ह्वैहौं परिणामा॥
तबकोउ सचिवकहत असभयऊ। यह अबूझप्रण कसनृपठयऊ॥
बिभुयश्वी तुम प्रभू प्रतापी। महाबीर रण रिपु गणतापी॥
समय निषिद्ध न शोचिय राई। भाग्य बिबश बचिगे द्वौभाई॥
द्विजपअमे आगी बिषबचई। तब सन्मुख रिपुगणनहिंरचई॥
बिजय अजय द्वौ समर प्रधाना। बयबल नहिं चिन्ततमज्ञाना॥
अति ब्रीड़ापनि प्रण गतभयऊ। तब उपदेश शीशधरिलयऊ।
दो० पितु पुर जाउँ न जन्म भरि यहै बिचारी बात।
ग्राम बसायो भोजकट तहाँ रह्यो नृप तात॥
प्रभुसराम द्वारावति आये। समाचार भूपति तब पाये॥
सिक्तामय अम्बर चहुँ द्वारा। पुरबासी धाये अबिचारा॥
पुर शोभा बिरचैं शुचि चारा। जोबिलोकिबुधिपातिमतिहारा॥

युवती पुरुष चहूँ दिग आये । अत्यानंद उमग तनछाये ॥
उग्रसेन लै निकर समाजा । आगे आय मिले कुरुराजा ॥
बैदिक लौकिक बिधि व्योहारा । करिमहीप लै चल्यो अगारा ॥
जेहि अनमिष पुर कस्यो प्रबेशा । सगुण अखिल पायेबहुबेशा ॥
नरनारी चहुँ ओर बिराजे । लौकिक सब मंगलतनसाजे ॥
दो० कोउ आरती उतारहीं कुसुमावलि पहिराय ।
होत कुलाहल चारिदिशि उपमा कही न जाय ॥
कृत परितोष सबनकर श्यामा । निज निकेत पहुँचे युतरामा ॥
आनँद मगन सकल रनिवासा । निरखिरुक्मिणीकांतिप्रकासा ॥
यहिप्रकार कछु काल व्यतीते । यक दिन सभागये जनप्रीते ॥
नृप पितु बन्दि बघ्यो भगवाना । सुनौतात श्रुतिबाक्यप्रमाना ॥
समर जीति त्रिय लावत जोई । राक्षस ब्याह कहावत सोई ॥
तब कुल गुरु नृप तुरत बोलावा । हरिबिवाहहित दिवससुधावा ॥
सचिव सुसेवक पुरजन जेते । सामग्री बिवाह कृत तेते ॥
लिखि पत्रिका निमंत्र पठावा । कुरुपांडव आदिक न बुलावा ॥
दो० सुद्धि पाय भवभूपतहँ आये सहित समाज ।
कबि कोबिद चारण लिये बान्धवादि सुनुराज ॥
भीष्मक नृप बिवाह सुधिपाई । यौतुक बिबिध दयो पहुंचाई ॥
आयुध भूषण पाटित बासा । स्यंदन करभ तुरग बहु दासा ॥
कन्यादान भवन मन कीन्हा । द्विज द्वारा पठाय नृप दीन्हा ॥
इतबहु अवनिप निवते आये । द्वारावती चारि दिशि छाये ॥
उतयौतुक लै महिसुर आवा । महा मोद यदुजातन पावा ॥
पुरशोभा जस रची नृपाला । कहिनहिंसकतकोटिपतिव्याला ॥
आदि शक्ति त्रैपुर कर तारिनि । जेहि पुरभई महीप बिहारिनि ॥
अरु जहँ ईश ब्रह्म करतारा । पुरुष पुराण धाम सुख सारा ॥
दो० तेहिपुर की शोभा बदत शारद बुद्धि भ्रमाय ।
किमिप्राकृतिकोउ कहैतेहिअरु बिवाहदिनराय ॥
अष्टसिद्धि नवनिद्धिनृप बिरचि मनुज तनआय ।

सकल सौख्यसब कहँदये क्योंबय बरणी जाय ॥
दिवस बिवाह आव जब राजा। सजे सबन बहु मंगल साजा ॥
जग श्रुति रीति प्रथम करवाई। धर्म प्रबंधरहै जेहि छाई ॥
प्रभुरुक्मिणिहि सँवारि सरीती। मंडफ तल बैठार सप्रीती ॥
सुमनस त्रिदश जातिनर देही। कौतुक हित आये वय तेही ॥
लखिहरि रुक्मिणिरूप अनूपा। नमत अजादि देव कुरुभूपा ॥
यदुवंशी नृप नाना जाती। यथा उचित बैठे बहु पाँती ॥
गर्गाचार्य आदि मुनि आये। श्रुतिवतअखिलकर्म करवाये ॥
बेद ऋचा बहु बिप्र उचारैं। शुद्धशब्दसुनि बिधिहियहारैं ॥
दो० भांवरि फेरैं बेद बिधि बजैं तूर्य डफ ढोल।
देवबधू नृत्तहिंगगन डोलहिं बिबुध खगोल ॥
छं० डोलहिं बिबुध शुचि कुसुम बर्षहिं दुंदुभी बहुवाजहीं।
सिद्ध साधक यक्ष चारण गंधर्वादिक भ्राजहीं ॥
देवांगना कल गान मंगल सुनत मुनि ध्यानै तजैं।
इत चंद्रबदनी मकरनैनी अकर गुण गानै सजैं ॥
वामांग हरिके डारि भामरि रुक्मिणिहि बैठाइयो।
कुलदेव पित्रादिकन के पद बंदना करवाइयो ॥
लखिरुक्मिणीतनरुक्मउज्ज्वलकोटिरतिछबिलाजहीं।
श्रीकृष्णछबिअतसीकुसुमवत्कथअकथसककोकहीं॥
कुल वृद्ध ब्राह्मण देव मुनि जोरी अनूप निहारि कै।
बहु देहिं आशिर्बाद सुखमय शुद्धचित्त बिचारि कै ॥
बसुदेव तोषे याचकन जनु मीन बरही भेकहीं।
गज बाजि रथ पट द्रव्य जल बर्षाय प्राविट टेकहीं ॥
दो० बहुरि सबहि ज्योनार दै षट्रस चारि प्रकार।
ज्ञाति बन्धु तोषे सकल करि आदर सत्कार ॥
सो० देश देशके भूप बिदा होय निज गृहगये।
यह नृप चरित अनूप पढ़ै सुनै जो चित्तदै ॥
दो० अश्वमेध मख जौनफल और त्रिबेणी न्हान।

सोफल ताको देय हरि भक्ति मुक्ति कल्यान ॥
मंगल हरियश ब्यालसम नाशत कलिमलभेक ।
क्योंनहिं गावत द्वुचित तजि करिनिजचित्तविवेक ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांरुक्मिणीबिवाहचरित्रवर्णनो नामपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

दो० योगीजन शुचि ध्यानयुत ध्यावत प्रेम बढ़ाय ।
करिकरणी हठयोगकी लहत पर्म पदभाय ॥
सुमिरण पूजन बंदना प्रीति श्रवण दासत्त्व ।
पदस्परश कीरतनहू आत्म निवेदन तत्त्व ॥
जेहि ध्यावत नव भजनकरि चहुज्ञाता सुखरूप ।
सोइ निरंजन दासप्रिय भयोमनुज यदु भूप ॥
ताहि भजिय तजि दुर्मतिहि यहैज्ञान को मूल ।
मुक्तिलहै संशयनहीं बदत साधु अनुकूल ॥
मंगल के मत तीनिपुर अपरबस्तु कोउनाहिं ।
परिहरि हरियश मुक्तिदा बुधिशोचियमनमाहिं ॥

सुनु कौरवमणि रुचिर प्रसंगा । एकसमय निजगिरिधरगंगा ॥
कंजासन आरूढ़ीशाना । तजिदुभेदकृत आतम ध्याना ॥
आकस्मात बारिचरकेतू । गयउ समाधि जगावन हेतू ॥
हन्यो कुसुम शर सबलित मारा । मनक्षोभ्यो तब रुद्र भुवारा ॥
कामकेलि मन आवत भयऊ । पुनिचहुंदिगूबिलोकिअसउयऊ ॥
अंतरयामी प्रभु त्रिपुरारी । दाह्योकाम क्रोध करिभारी ॥
पावक बिजयचहै जिमिदारा । तथा मारखल कस्यो बिचारा ॥
कंतनाश लखि रति अकुलानी । बिकलपरीमहिउरहनिपानी ॥

दो० अहि मणिबिनु निशि चंदबिनु ज्यों पाठीनकहीन ।
तथानारि पति बिनु जगत रतिइमि बदत मलीन ॥

दयाराशि हर सहज सनेही । बिकल बिचारि दीन्ह बरतेही ॥
द्वापर बिष्णु कृष्ण तन धरिहैं । बहुप्रकार कौतुक भवकरिहैं ॥

तिनकेगृह जन्मिहि पति तोरा। सत्य जानु ममवाक्य प्रघोरा॥
नाम प्रद्युम्न होइहै तासू। संबर हरि लै जैहै आसू॥
डारिहि जाय राशिकी लाला। मकर भक्षिहै तेहितहँ बाला॥
पुनि संबर गृह आइहि सोई। बात भविष्य नारिहौं जोई॥
मम आयसु बसुतू तेहि गेहा। मिलिहि तोरपति कर्तब एहा॥
प्रतिपाल्यो तेहि सहित सनेहा। बधिसंबर तोहि लैनिजगेहा॥
दो० द्वारावति महँ आयपुनि क्रीड़ा करिहि अपार।
तोषीरति यह बचन कहि तुरत सो चली भुवार॥
बिरचि युवति तन संबरधामा। आयबसी सुंदरी ललामा॥
नृप उत रति नित मारगेहेरैं। मिलैकंत प्रियदुःख निवेरैं॥
इतरुक्मिणि तन गर्भ सोहावा। पूरणकाल जन्म सुतपावा॥
तब महीप ज्योतिषी बोलाई। पुत्रजन्म बेला समुझाई॥
बिप्र बिचारि कहैं सुनुराई। भयउसूनु गुणनिधि सुखदाई॥
बल बिक्रम श्रीमान सुजाना। एकबात बिपरीत महाना॥
बारिनिवासिहि सुत आबाला। शत्रुमारि आइहि सहबाला॥
नाम प्रद्युम्नकाम अवतारा। यहनृपज्योतिषशास्त्रबिचारा॥
दो० असबदि द्विजबर गृहगये लै दच्छिणा अपार।
भूप सदन ततच्छण भये अमित मंगलाचार॥
ऋषि नारद संतत शुचि भाऊ। संबर भवन गये सुनु राऊ॥
का सोवत सुख नींद अचेता। तवअरिजग जन्म्योझषकेता॥
प्रद्युम्न नाम कृष्णके धामा। करुउपाय नत दुखपरिणामा॥
अस उपदेशि देवऋषि गयऊ। ताकेहृदय शोच अतिछयऊ॥
अलख रूप द्वारावति आयउ। श्यामधामनिर्बुद्धिसिधायउ॥
रुक्मिणि सुत पय पान करावै। मन आनंद सुबुद्धि बढ़ावै॥
करिमाया आसुरी कराला। शिशुहरिसंबरचल्यो नृपाला॥
नारि वृंद कोउ जान न भेदा। भयउसबहि बालकबिनुखेदा॥
दो० प्रभुजाना जड़ कर्म नृप पैन कह्यो कछु बैन।
बिधि कर्तब पुनि काल खल जान्यो पंकजनैन॥

रुक्मिणि इत्यादिक त्रिया रोय उठीं तेहिबार।
रुदन शब्द सुनि नारिनर बहुगे नृप आगार॥
करत बिचार बिपुल यदुजाता। लहत न भेद सूनु हरताता॥
मुनि नारद आये तेहि काला। समुझायेसब जानि बिहाला॥
पुत्रशोच जनि तुम कोउ करहू। सुनिममबाक्यशोकपरिहरहू॥
मैं बिधि बरण बिचारेहीमें। तासु काल नहिं तीनिपुरीमें॥
सानँद रहिहि देश पर देशा। कहत न पैजानत हृषिकेशा॥
प्रौढ़भये निज प्रिय सँगलाई। प्रद्युम्नसबहिमिलिहिपुनिआई॥
हौं जानत हैं जेहि थल सोई। पैन कहत बिधि कर्तब जोई॥
यहि प्रकार नर नारि बुझाई। खपुर गये नारद ऋषिराई॥
दो० उत संबर लै अतन कहँ पय निधि बोरयो जाय।
मत्स्य प्रथुल भक्षयो तुरत बिधिकर्तब अतिताय॥
केवट सोइ मत्स्य गहिराई। दयो भेंट सम्बर कहँजाई॥
पाकालय सुरारि पठवावा। पाककार झषउदर चिरावा॥
ताते एक श्यान प्रथुगेमा। निकरी नृपउज्वलप्रतिसोमा॥
तासु जठरते एक कुमारा। प्रगट्यो जासुबदन पतितारा॥
श्यामबरणजनुद्वितियगोपाला। बनजचक्षुउर बाहुबिशाला॥
बिस्मित भयउ देखि भषकारा। दीन्होरतिहिसोझटितकुमारा॥
यह सुधिपायअसुर चलिआवा। सुत बिलोकिबड़आनँदपावा॥
सानँदरतिहिकहयोप्रतिपालो। अहरजनीशिशुक्षखलखिचालो॥
दो० लैबालक आलय गई रति अतिमोद बढ़ाय।
कौतुक दृष्टा मुनि कह्यो रतिहि भेदु सबु आय॥
मानि प्रतीति करै प्रति पाला। प्रफुलित नारितीनिहूं काला॥
कलावृद्धिजिमि सित मृगअंका। वृद्धति सूनुतथा निशंका॥
रूप प्रकाश प्रभामुख देखी। हृदय लगावत प्रीतिबिशेखी॥
अक्षानन कहुँ चूम कपोला। कंधर लावत कहि मृदुबोला॥
धन्य बिश्वकर्म्मा सुखदाई। मीनउदर पति दीन्ह मिलाई॥
बिशद क्षीरनित लाय पियावै। कहै कंतबहु बिधि दुलरावै॥

जबभा पुत्र बयसशर वर्षा। अलंकार पहिराव सहर्षा॥
मनहिं प्रबोधत लखिशुचि रूपा। लहत अलौकिकमुदकुरुभूपा॥
दो॰ कहत सुनौ पति चित्त दै पूरुब कथा सहेतु।
जारि तुमहिं अतिक्रोधकरि मोहिं बरदिय वृषकेतु॥
रति निवसौ सम्बर गृह जाई। मिलिहितोरपतितेहिथलआई॥
चितवत पंथ रहिउँ तमि आही। तुमहिं पाय दीन्हो दुखदाही॥
धनुर्वेद पुनि ताहि पढ़ावा। थोरेइ काल निपुणता पावा॥
यक दिन रतिकहसुनौगोसांई। रहत धाम यहि अबनसोहाई॥
तव पितु त्रिपुरनाथजग जाना। चलौ बसिय द्वारावति थाना॥
जननी रुक्मिणि दुखितमहाना। प्रभुतुव बिननतासुकल्याना॥
दुखित पयशिवनिबिनु सुतजैसे। अंबा रहत द्योस निशितैसे॥
बधिजड़संबरमोहिंसँगलीजिय।दरशनजननिजनककेकीजिय॥
दो॰ यहिबिधि नित प्रतिनारिसो उपदेशत नरनाह।
सुनत चित्तदै कृष्णजा कृत बिचार मनमाह॥
प्रौढ़ भये यकदिन रतिनायक। हितअनहितसबकेसुखदायक॥
संबर सभा गये मुद पाई। लीनअवनिपतिहृदयलगाई॥
सुतसम जानि उछंग बिठावा। यह प्रसंग माधिसभाचलावा॥
पुत्र तुल्य पोष्यो सुत एहा। प्रतिपालिहिपरिणामस्वदेहा॥
सुनि सरोष कह यदुपति बानी। हौं तुव शत्रु करौं तनहानी॥
करि रण दुष्ट देखु बल मोरा। सुवन न जानु कालहौं तोरा॥
रज अनुराग बध्यो मुसुकाना। द्वितिय प्रद्युम्न भयउ सज्ञाना॥
पय पियाय का पाल्यो नागा। हमसों समरकरनसुत लागा॥
दो॰ अस्त्र हाथलै उठ्यो शिशु कहा सुनो महिपाल।
करौ युद्ध मम संगतुम जानि आपनो काल॥
हँसि कामारि कहा सुनु सूना। ग्रस्यो कालतोकहँ यहिजूना॥
प्रद्युम्न नाम मोरही नीचा। बोरयोउदधि हनौ क्षणबीचा॥
शमन रूप लखु तू मोहिं आजू। तजु पितु तनय नातबेकाजू॥
क्रोध्यो सुनत कामरिपु राई। आयुधअमित लिये तेहिधाई॥

सहज बैर जाग्यो उर तासू। काली यथा देखि अहिनासू॥
सजि सहाय बहुखग्ग बोलाये। बिस्तृतठाम तहां चलिआये॥
लैकर गदा सरोष सिधावा। शब्द बलाहककृत रणश्रावा॥
श्यामहिं कहत तोहिं को राखै। अपर कुबचन कालबश भाखै॥
दो० गदाघात कीन्ही असुर सो भंज्यो यदुराय।
जलज बाणप्रेरथोबहुरि सकलजगतदुखदाय॥
बरुण बिशिखहति ताहिनशावा। सदाचार तोमरहि चलावा॥
भंज्यो तेहि गजारि नाराचा। युद्ध सुरासुर मंड्यो सांचा॥
सम्यक् अस्त्र शस्त्र खल घाते। मघवा हितुते अखिलनिपाते॥
भयउ निरस्त्र भिर्‌यो बरियाई। मल्ल समर गति बरणिनजाई॥
वृन्दारक समेत रिपु पाका। कौतुक हित छाये सब नाका॥
गहिसंबरहि उड़्यो शिव द्रोही। गयउ अनंततज्योनहिंओही॥
असिबर घाति तासु शिरकाटा। पर्‌यो भूमितल रुण्डालिलाटा॥
पुनरपि आय असुरदल नासा। कंतबिजयलखिरतिहिहुलासा॥
दो० मघवायस सुरधाम ते आयो रुचिर बिमान।
तदारूढ़ रति काम द्वौ पितु पुर कर्‌यो पयान॥
बिद्यल्लता सहित जीमूता। सोहत तस तिय संग हरिपूता॥
क्षणमहँकनकनगरचलिआये। यानत्यागि पितुसदनसिधाये॥
अकस्मात सब नारि निहारी। कहहिं श्याम लाये कोउनारी॥
प्रद्युम्न कहँ न काहु पहिचाना। बादि बदैं आवत भगवाना॥
आय प्रद्युम्न कहा कहँ माता। सुखसागर कहँ यदुपति ताता॥
रुक्मिणि सखिसों कहतप्रचारी। अलिकोआहिश्यामअनुहारी॥
मोरीजान तोर सुत आली। सुनतबचनसविमणिप्रतिपाली॥
छुटीउरजते अमृत धारा। शकुन अंग फरक्योबहुबारा॥
दो० सुत भेटन हित चित चहै डरै पतिब्रत धर्म।
तौने काल सुरर्षि तहँ कहा आय सब मर्म॥
तबरुक्मिणिनिजहृदयलगावा। चूमिशीशअतिशयसुखपावा॥
पाय सुद्धि आये बनवारी। पर्‌यो सूनु पितुपद सुतबारी॥

बेद बिहित करि कर्म बिवाहा। रति प्रद्युम्नकरक्रियउद्बाहा ॥
पुर नर नारि मुदित सबभयऊ। गृह प्रतिसुतमंगलनृपछयऊ ॥
जेहिबिधिनृप प्रद्युम्न अवतारा। अरु जिमिरिपुसंबरकहँमारा ॥
प्रियसमेत जिमि पितुपुर आये। सो चरित्र परिपूरण गाये ॥
प्रभुअजअमरत्रिपुरयश छायो। लोक लोक मर्याद बँधायो ॥
मूरख तेहि ध्यावत जग नाहीं। भ्रमतफिरत बहुबीथिनमाहीं ॥

दो० मंगल साँचे मग चलिय तजिबीथी भयकार।
भजिय मुदा रुक्मिणिरमण भक्ति मुक्तिदातार ॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांप्रद्युम्नस्यउत्पत्तिसंबरबधवर्णनो
नामषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

दो० काम क्रोधत्याग्यो नहीं भूति लपेटे अंग।
सिद्धि लह्यो नहिं कोटिकृत बरणे बिबिध प्रसंग ॥
काया बन खोज्यो नहीं तरुबन फिरे अपार।
परमातम मृगहै नहीं यों बुध करत बिचार ॥
इन्द्रीजित श्रद्धा सहित करि मन निज आधीन।
शोधत आतम आपनो साधू चतुर प्रवीन ॥
करणी कठिन न बनिपरत कलि कुयोग चहुँओर।
कपटत्यागि हरियशगुणे सबविधि भल मन तोर ॥
कीरति विमल यशोदजग गिरिधरकी दिशिचारि।
ताहि गाय दुर्भाव तजि दुहुँ पुर लेह सम्हारि ॥

मुनि कह सत्राजित यक रहई। सो मणिचोर श्यामकहँकहई ॥
पुनिप्रभुविभवसमुझिमनमाहीं। हरिहिदीन्हनिजसुताविवाही ॥
को सत्राजित मणि कहँ पाई। तस्करता क्यों प्रभुहि लगाई ॥
पुनिकाजानि सुता निजदीनी। कहौ मुनीश्वर कथा नवीनी ॥
यक यादव सत्राजित नामा। बसत महीप द्वारिका धामा ॥
तपस मित्र कृदित ब्रत साधा। जानिईश तन मन आराधा ॥
तप कराल लखि हरण निहारा। दैमणि पुनि इमिवचनउचारा।

सुत सीमन्तक यहिमणि नामा। सुख सम्पति यामहँ विश्रामा॥
दो० मम सम तेज प्रताप चित जानि ध्याइये याहि।
अभिमतफल सुत पाइहौ यामहँ संशय नाहि॥
यह मणि रहहि जौनआगारा। तहां न दुखगण करिहिप्रचारा॥
करि प्रहून मणि लै गृह आवा। नितप्रतितेहिपूजनचितलावा॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै। हंस समान जानि मुद पावै॥
प्रतिदिन रुक्म लहै बसु भारा। रहै प्रसन्नित विविध प्रकारा॥
अर्चनकाल एक दिन भूपा। मणिभासुखदविलोकिअनूपा॥
शोच्योयहमणिप्रभुहिदिखावों। मान अखिलयदुकुलमहँपावों॥
कंठ बाँधि मणि सभा सिधावा। यदुबंशिन लखिअचरजपावा॥
श्यामहिंकहहिंसुनिययदुनायक। जीव चराचरके सुखदायक॥
दो० तुव दर्शनकी लालसा आवत पूषण देव।
सत्य बात यह श्याम जी अति प्रकाशहै एव॥
तुम अनादिअजबिनु पितुमाता। ध्यावत तुमहिं देवसुरधाता॥
कमलादासी तुव गति वाना। अलखचरित पूरणभगवाना॥
गुण अनंत बिधि हरिहर कारी। गुप्त रूप प्रगटे असुरारी॥
हरिकह यह न प्रभाकर होई। सत्राजीत भ्रम्यो जनिकोई॥
तपफल मणियहिदीन दिवाकर। सो प्रकाशकर कहाकृपाकर॥
सभा मध्य आवा मद छावा। सबकेउर मणि मोह जनावा॥
निमिष रहित अनमिष तेहि हेरैं। कौनौ ओर न मुख कोउफेरैं॥
प्रभुकुछमणि दिशिदेखनृपाला। बिस्मितभयोनिरखिमणिपाला॥
दो० बिदा मांगि नरनाहते गयउ गेह निज सोय।
नितप्रति आवै बांधि मणि सभहिन अंतरहोय॥
प्रभु प्रति यदुजातन इमि कहेऊ। एक मनोरथ उर महँ छयऊ॥
मणिलैनाथभूपकहँ दीजिय। बिशदसुलोकजगतमहँलीजिय॥
सत्राजीत योग मणि नाहीं। नाथ विचारि देखु मनमाहीं॥
हँसि हरि ताहि कहा यहिभांती। यहमणितातनतुमहिंसोहाती॥
देहु महीपहि जग यश लेहू। गवनो गेह बचन सुनि एहू॥

निज सोदर प्रति कहसिबुझाई। मणि मांग्यो यादवकुलराई॥
दयो न तात अनीति बिचारी। सुनि प्रसेनजितभयउदुखारी॥
सायुध मणि निज कंठ लगाई। चल्यो अहेर अश्वचढ़िराई॥
दो० घोर बिपिन महँ जाइकरि मृगया कस्यो अपार।
मृग भाग्यो यक भूप लखि कस्यो प्रसेन पछार॥
गयो गहन बन बनचर राई। अनुगामी प्रसेन जितजाई॥
अति बिकराल गुफाअंधियारी। प्रबिश्योतेहिमृगजीवदुखारी॥
क्रोधित प्रबिश्यो ताहि प्रसेना। निपट निहारन सूझतनैना॥
पंचानन लखि मणि उजियारा। धायसतुरँग प्रसेनहिं मारा॥
लै मणि बस्यो कंदरा ताहीं। अतिप्रकाशभातेहिथलमाहीं॥
जामवन्त संयुत परिवारा। रहत गुफातेहि सुनौ भुवारा॥
लखिप्रकाशहरितटचलिआवा।तेहिबधिमणिगहिभवनसिधावा॥
दुहिता पालन बांध्यो जाई। भयो प्रकाश गुफा सबठाईं॥
दो० मणिइमि लैगयो भालुपति बधिप्रसेन छितिपाल।
संलग्नी भट तासुके आये भवन बिहाल॥
सत्राजितहि बद्यो बुझाई। तुव बांधव बन गयउ हिराई॥
कानन सम्यक् खोजत थाके। कौनौ चिह्न न पाये ताके॥
बन्धुतासुसुनिसुमतिभुलानी। दुखितभयउजिमिझषबिनुपानी॥
निंदनीय मन कस्यो विचारा। बन्धु प्रसेन कृष्ण बन मारा॥
याँच्यों तब न दयो हौं वाही। घाति सहोदर मणिहरिग्राही॥
कोद्वितीय समरथ भव आना। जो प्रसेनकर करत निदाना॥
अब निश्चित पाप मणिभयऊ। जगत प्रसंश निंदकृतठयऊ॥
गौरी अखिल शोचबश बीती। दुःख अधिकृतगुणतअनीती॥
दो० अरुणोदय उहि नारि प्रति भएयो भेद समुझाय।
बध्यो प्रसेनहि कृष्ण बन मणि हित रोष बढ़ाय॥
यह चर्चा सत्राजित नारी। कह्यो परोसिनि सखी हँकारी॥
अरुकह कह्यो नकाहुइ आली। ममपति बद्यो भेद यहकाली॥
उठि सखिवृन्द स्वभाव सिधाई। चर्चा यहै करत गृह आई॥

कोउत्रियप्रभुरनिवास सुजाना। यहै प्रसंग अयोग्य बखाना॥
सब युवतिन मनभा बिश्वासा। बध्योप्रसेनश्याममणिआसा॥
कहहिंसर्वहरिभलनहिंकीन्हा।मणिहितहन्योस्वकुलनहिंचीन्हा॥
यहसुधि पाय कोऊअनुगामी। बन्दिप्रभुहिकहसुनुजगस्वामी॥
बधप्रसेन मणि ग्रहण कलंका। लाग आपु कहँ पुर आतंका॥
दो० कछु उपाय करि नाशियै सुनि चिन्ते भगवान।
जाय सभानृप तातहितु सब सन कियो बखान॥
सबकोउकहतश्याममणिग्राही। निधन प्रसेन कियोभ्रमनाही॥
खोजिय ताहि जो होय रजाई। अकृत कलंक कृपालनशाई॥
बंदि पतिहि बहुभट संगलाई। सत्राजीत द्वार नृप आई॥
लीन्हे संग प्रसेन के संगी। दिशि उद्यान चले तिरभंगी॥
सघन बिपिनगिरिवर तटजाई। चिह्न तुरँग पदलखे निराई॥
गुफा द्वारतन मृतक बिलोका। युत पारसिक प्रसेन बिशोका॥
पुंडरीक मर्यो हरि जाना। अग्रागमन कस्यो भगवाना॥
कौतुकनिधि प्रभु अंतरयामी। नरलीला कृत द्विजबरगामी॥
दो० अहि रिपु मृतक बिलोकि मन चिंते यदुकुल चंद।
खोज न मणिकर मिलत बिधि होत न मनआनंद॥
कोअस प्रवल जीवभा कानन। यहिथल हतो आइ पंचानन॥
अचरज बिवशभये यदुजाता। हरिप्रति बद्यो सपुटकर ताता॥
महाभयानक कंदर एहा। त्यागि लोभमणिबहुरियगेहा॥
बन्दनीय शिवअज तुम एका। बदै कलंक सोबड़ अबिवेका॥
पुंडरीक शिर अपयश भयऊ। जानईश मणि कोलै गयऊ॥
अग्र चलौ यह गुफा ढँढोरैं। घातक सिंह गहैं मणिचोरैं॥
देखत सकल होत भय भीता। नहिं समर्थप्रविशबखलजीता॥
मानिबिनय हठतजियगोसांई। चलियनिकेतत्यागिदुचिताई॥
दो० पुर महँ सबसन कहहिं हम बध्यो प्रसेन गजारि।
गुफा दुरयोकोउ ग्राहि मणि बलीमृगेन्द्रहिमारि॥
खोजत श्रमित भये गिरि माहीं। तासु खोज पायउ कछुनाहीं॥

प्रभु अंतरयामी अवनीशा। सम्यक् गति जानीजगदीशा॥
दिनदश तुमसब यहि थलरहऊ। मम मग हेरिपंथ गृह गहऊ॥
मणि महँ लाग मोर मनश्राही। प्रबिशि गुफा खोजौंहौं ताही॥
बिकूट दरीभृत चले अकेले। रुचिर रूप तिहुँपुर पर हेले॥
नेक दूरिचलि लख्यो प्रकाशा। पहुंचे जामवंत के पासा॥
सोवत भालुनाथ भय हीना। बुधि सागर बय बहु कालीना॥
त्रेता रहेउ राम सँग जोई। बिदित प्रसंग जान सबकोई॥

दो० तासु नारि निज कन्य कहि पेलन रही झुलाय।
मणि बांधी ता पालने श्रच्यो हग यदुराय॥

हरिहि देखि त्रिय करयो पुकारा। जामवंत जाग्यो तेहि बारा॥
धाय श्याम तट गयउ सरोषा। जानसिनाहिंत्रिपुर प्रतिपोषा॥
मल्लयुद्ध कर कस्यो पसारा। बरणि न जायसमरब्यवहारा॥
रण कर्तब करि हारि रहोई। चल्यो उपाय न ताकर कोई॥
शोच्यो मन ये मनुज न देवा। पूरण पुरुष करौं पदसेवा॥
रावणादि दुर्नाद अनेका। हौंजीते रिपु समर कितेका॥
ममबल तुल्य जगत को दूजा। युद्ध मनोरथ इन संग पूजा॥
उपज्यो ज्ञान प्रभुहिं पहिचाना। कहकरसपुट त्राहि भगवाना॥

दो० सबिनय आरत बाणिकह श्रब मति नाहिं भुलाय।
इलाभारहर अवधपति भये आपु यदुराय॥

त्रेता सुर ऋषि यहि थलआये। कह्यो मोहिं अधिकारी पाये॥
मणिकारण आइहि भगवाना। दरश होइ मम बचन प्रमाना॥
मुनि बरबाक्य मृषानहिं होई। इष्टरूप मम धारिय सोई॥
प्रीति सत्य लखि यदुपति राजा। रामरूप भय सेवक काजा॥
इष्वासन करशर शुभरूपा। सुर दुर्लभ दिय दरशअनूपा॥
देखिरूप पूजी मनकामा। साष्टांग किय दंड प्रणामा॥
आरत गिरा बिनीत सनीती। बद्यो क्षितीश भालसह प्रीती॥
जो आयसु पाऊं असुरारी। निजअभिलाषकहौंखलहारी॥

दो० बिहसि श्यामकह कहसि किन निजअभिलाष सनेह।

सुनौ पतित पावन अकल अज अविनाश अदेह ॥
तनुजा जामवंति यहमेरी। कीजिय पद्म चरण की चेरी ॥
मोर सुलोक लोक गति याकी। सेवततुमहिं अजादिपिनाकी ॥
किमपिन बारकरिय हरिदासा। पूरणकरियआशु अभिलासा ॥
अनुशासन पावत मुदबाढ़ा। भयउ अवाक प्रेमबपु गाढ़ा ॥
संज्ञाप्राप्त पूज बिधि जैसी। पुनिकियव्याहरीति भवकैसी ॥
कन्यादान समर्पि तेहि दीन्हा। जन्मसुफलतबआपन चीन्हा ॥
सास ससुर ते पाय रजाई। सतिय गमन किय यादवराई ॥
जे यदुनाथ कंदरा द्वारे। प्रथमहिं सेवक नृप बैठारे ॥
दो० अष्ट विंश दिन तिनहिंभे नहिं आये भगवान।
चलेद्वारकहि दुखितसब करत बिबिधअनुमान ॥
रोदत बदत बिथुरता भारी। कहतकृष्ण हा कृष्ण पुकारी ॥
यह सुधि पाय नगर नर नारी। भये चराचर जीव दुखारी ॥
जीवन वृथा बदत सब लोगा। धृकयहबपुभाश्यामबियोगा ॥
जननी आदि सकल पटरानी। अकथदशाभूपतिअकुलानी ॥
फणि बिन बिषधरमीन निरापा। तथा सकल बहुकरैं बिलापा ॥
सकुश बपुष मन महा मलीना। तजिमंदिर त्रियचलीप्रवीना ॥
प्रभु प्रभुत्व कहि राम बुझावा। तदपि न बोध काहुउरआवा ॥
गौरि निकेत नगर ते दूरी। महिमाजासुअखिलजगभूरी ॥
दो० क्लेश मग्न हर बाम प्रति कहहिं बाम महिपाल।
पूजनीय सुर मात तुव बिदित तीनहूं काल ॥
श्यामकुशल कहुआदिभवानी। जगदम्बिका अमरपतिरानी ॥
उत युवती सेवहिं मृड बामा। उग्रसेन बसुदेव स्वधामा ॥
महा शोचमय धीय हेरानी। सबहि प्रबोधहिं मूशलपानी ॥
अमर अनादि अरूप कहावै। काल काल भ्रूभंक नशावै ॥
तीन काल तिहुँ पुर को ताता। सुर नर नाग करै हरिघाता ॥
तदनन्तर सँग ऋक्षकुमारी। आये सभा हँसत अघहारी ॥
जीव मृतक लहि तथा सुखारी। भेसब द्विज मुखचंद्र निहारी ॥

जननी आदि पाय सुधि धाई। पूजि गौरि आतुर गृह आई॥
दो० भये मंगलाचार पुर अकथ अलौकिक राय।
सत्राजीतहि तुरत हरि लीन्हो सभा बुलाय॥
बैठ सभा करि सबहि जोहारा। हरि मणि ताहि दई तेहि बारा॥
हमहिं कलंक वृथा तुम दयऊ। यह मणि जामवंत बनलयऊ॥
सुता समेत समर्प्यौ मोहीं। मिटै कलंक दयउहौं तोहीं॥
लै मणि लज्जित चल्यो निकेता। मुख मलीन चिंतत कुरुकेता॥
हरि सर्बदा काल निरबाधा। कहा तिनहिं हौं युत अपराधा॥
भइ शत्रुता तुच्छ मणि काजा। नाशै बैर करौं सोइ साजा॥
सतिभामा हरि संग बिवाहौं। अघ समस्त पूरबकृत दाहौं॥
इमि चिंतमित धाम चलि आवा। सब प्रसंग निज त्रियहि सुनावा॥
दो० मुदित नारि कह प्राणपति यह भल कस्यो बिचार।
देहु सुता श्रीश्याम कहँ लेहु सुयश दुहु द्वार॥
सबकर सम्मत पाय सप्रेमा। द्विजबर बोलि समोद सनेमा॥
लग्न सुदिन सानन्द सुधाई। तिलकसाज तेहि दय उपठाई॥
ब्याह दिवस जब आव छितीशा। जुरी बरात सुजाति छजीशा॥
ज्ञाति बन्धु धर अधिप मुनीशा। हरि उद्वाहन गे कुरु ईशा॥
प्रथम बेद कुल रीति कराई। पाय गर्ग ऋषि केरि रजाई॥
पुनि भामरि फेस्यो सुख पाई। अति प्रमोद नहिं बरणि सिराई॥
यौतुक मध्य धरी मणि सोई। बाहर कस्यो नैन हरि जोई॥
यह निरर्थ नहिं काज हमारे। राखिय आइहि काज तुम्हारे॥
दो० कठिन तपस्या सूर की करि पाई मणि तात।
हमरे कुल भगवान तजि आनन देव सुहात॥
तेहिते अपर अभर कर दाना। लेतन चित बूझिये सुजाना॥
लाज्यो सुनत श्याम मुखबानी। गये सधाम भवन धनुपानी॥
अखिल शकुन हरि आज्ञाकारी। लखिय प्रगट चहुं ओर निहारी॥
सतिभामा संयुत गृह गयऊ। महामोद गृहपति पुर छयऊ॥
मुनिवर मम जिय शंका एका। कहत कुमति बश निज अबिबेका॥

पारब्रह्म हरि तिनहिं कलंका। लग्योकृपालहृदय ममशंका ॥
चौथि चंद्रनृप नभ शशिताता। लख्योलग्योतेहिअपयशताता॥
लोक बेद मर्यादन नाशै। प्रभुयुगयुग शुचिधर्मप्रकाशै ॥
दो० चौथि सुधाधर जो लखै सुनै चरित यह सोइ।
मिटै दोष जग यश लहै मम बच मृषा न होइ ॥
शत्रु मित्र जानत नहीं मानत दास सनेह।
भजु मंगल पूरण पुरुष पाय सुभग नर देह ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांजामवंतीसतिभामाविवाह
वर्णनोनामसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥
दो० पर तियगामी जीव हा गणिका रत मतिहीन।
नृपाधिप अरु अनृत बद छलकारी अप्रवीन ॥
मिथ्यासाखी बादि नर परधन हर निर धर्म।
स्वर्ण चौर बिश्वासि छल हितु द्रोही बिनुकर्म ॥
श्रुति बंचक गुरु संत श्रुति निंदक अघकी खानि।
अनृतीमनबशलोलुपौ कुटिल पिशुनअनदानि ॥
गुरु प्रीतमत्रियगामि नर त्रिय पति बंचक जोइ।
बेद बदत ये अखिल नर नरक निवासी होइ ॥
मंगल मन दृढ़करि भजै ऐसेउ पतित गोपाल।
मुक्ति लहै संशय नहीं बदत बिपुल गतिकाल ॥
शतधन्वा सत्राजित मारा। लैमणि च्योणिप गेहसिधारा॥
यह प्रसंग बड़ मोद बढ़ावन। हरिजनहृदयसुमतिहुलसावन ॥
एक बार बलराम सुखेना। गजपुर गये बन्धु सुधि लेना॥
समाचार श्यामहि कह आई। जो अनीति किय कौरवराई ॥
बिरचि लक्ष गृह अंधकुमारा। अलखआग्निमयतहिसम्हारा ॥
ता महँ बसे पाण्डु सुत जाई। अर्द्ध रैनि सुतिजात दिवाई ॥
रथ चढ़ि चले सुनत सुधि हेता। श्री रुक्मिणिबरबंधु समेता ॥
हत स्यंदनहि बेग चलावा। अल्पकाल हरि पुर पहुँचावा ॥

दो० उतरि यानते बन्धु दोउ गये कुरुप दरबार।
मन मलीन बैठे सकल गत नृपता ब्यवहार॥
दुर्योधन कछु निज मन शोचै। भीषम चीरधार चष मोचै॥
बुद्धिचच्छु गुरु बांधव रोवैं। तिनसँग बिदुरवृथा दुखजोवैं॥
गंधारी आदिक त्रिय जोई। महा शोकमय देखी सोई॥
शोच ग्रसित आनहुं सब देखे। जरे पांडु सुत उनके लेखे॥
आवत हरि हलधर नृप जानी। उठ्योसभासदमानिगलानी॥
सादर हरि रामहिं कुरुनायक। दीन्हसिंहासनसबबिधिलायक॥
पांडव समाचार अनुसारा। पै न भूप कछु बचन उचारा॥
गंगजादि कोउ भेद न दयऊ। जानि भेद हरिमौनितभयऊ॥
दो० मन बिहँसत यदुपति कुरुप जीवन मरण बिचारि।
आन चरित सुनु अंतरित कुरुबर भवभय हारि॥
यादव यक शतधन्वा नामा। हरिपुरबसत सुनौ बुधिधामा॥
सतिभामाकी प्रथम सगाई। वासँग कीन्ह रहै मणिस्वांई॥
तासु सदन कौतुक उर धारे। कृत ब्रह्मा अक्रूर सिधारे॥
भेटि कह्यो हरि रेवति नाथा। अहिपुर गये धरे धनु भाथा॥
सत्राजीत तोर अपमाना। कियोबिदितजगसकलसुजाना॥
प्रथमहि कीन्हसि तोरि सगाई। दुहिता हरिहिबिवाहिसिजाई॥
बधनिजशत्रुत्यागिभ्रमभूला। हरिबिनुभाबिधितोहिंअनुकूला॥
कोनभ्रमै सम्मत करखाई। मूरुख को शिशुबुधिभ्रमिजाई॥
दो० आमर्ष्यो सम्मत सुनत कह्यो मताभलकीन।
रजनीगहि आयुध क्रुधित तेहिगृहगयो प्रवीन॥
द्वार जाइ कटु बचन उचारा। करि छल समरताहि संहारा॥
मणि लै शतधन्वा गाधामा। हरिभय मनचिंत्योपरिणामा॥
कृष्ण बैर मनभा पछितावा। कत अक्रूर मोहिं भरमावा॥
सज्जन कहैं कपटयुत बाता। तासों बलका चलै बिधाता॥
चिंता मग्न मनहिं समुझावै। अजआखरकिमिकोउमिटावै॥
सत्राजित त्रियपति मृत देखी। बिलखी उरदुख भयउबिशेखी॥

हाहाकंत प्राण प्रिय स्वामी । मोहिं त्यागि भे सुरपुरगामी ॥
तासु रुदन सुनि जन परिवारा । आये बिपुलबिकलतेहिबारा ॥
दो० पिता मरण सुनि दुखित अति सतिभामातहँजाय ।
प्रथम बिकल पुनि धीरधरि बोधे लोग लुगाय ॥
जानि मृतक पितु तेल धराई । रुचिर मनोहर यान मँगाई ॥
तदारूढ़ हरि नगरहि आई । जहँ राजत थिरचर सुखदाई ॥
देखि यान अनुमानि स्वनारी । मृदुल सुखद हरिगिराउचारी ॥
कुशल च्तेम त्रिय प्रिय संकेता । तुम यहिथलआई केहिहेता ॥
पुछित बाह लय आरत बानी । सतिभामा नरनाह बखानी ॥
कौशल चरण पंकरुह साथा । शतधन्वा पितुहन्योअनाथा ॥
लैमणि आलय करत बिलासा । मैं पितुमृतक तैलदियबासा ॥
भइउँ अधैरज दया सुमंदा । आइउँ तुवढिग देव मुकुंदा ॥
दो० यों बदि बैकल प्रेम पितु बिलपी कठिन नरेश ।
तासु रुदन सुनि बंधुदोउ भये उदासी वेश ॥
लौकिकरीति दुखितजगस्वामी । बिधि कर्त्तब बूझतद्विजगामी ॥
प्रिय समुझाय ज्ञान बहुभाषी । गये निकेत शोक दुखनाषी ॥
बाम दुखित लखिदीनदयाला । कियोतासुबध प्रणतेहिकाला ॥
श्रवणितशतधन्वाहरि आगम । जीवतासुभा अमितपरिश्रम ॥
चिंतनीय कृत किय हौं मूढ़ा । आन सुलाये मृत्यु अगूढ़ा ॥
प्रभुप्रणसुनिअतिशयअकुलाना । आयो कृतब्रह्माशुभथाना ॥
करिप्रणाम बिज्ञप्ति अपारा । राखु शरणइमि बचनउचारा ॥
सत्राजीत बध्यों तुव आयसु । उचितनीतियुतकरियरजायसु ॥
दो० श्याम कोप रच्चक त्रिपुर दृश्यमान नहिंजान ।
हरिहर अज इन्द्रादि सुनु राखत जिनकोमान ॥
कृष्ण शत्रुता जेहि उरबासी । परी सदृढ़ तेहि लगमृतुपासी ॥
भजत चराचर पद जलजाता । जानि तात तूभा अज्ञाता ॥
आन कहे कृत करै जो कोई । निन्दक होय जगतमहँसोई ॥
प्रथम शुभाशुभ काज बिचारै । तेहि पाछे कृत अकृत पसारै ॥

तू अबिबेक अजित रिपुमारा। श्यामकोपनहिंहृदयबिचारा ॥
जानि समानित कृत खताई। जे प्रवीण मानस भवभाई ॥
मोरेबल न रहो तुम ताता। लोकचतुर्दशनाहिं कुशलाता ॥
प्रभु सँग रिपुता जगमहँकरऊं। शरणराखितोहिं नर्कहिपरऊं ॥
दो० मित्रशत्रु यम जनक हितु ब्याल तूल तेहिहोत।
हरि प्रतिकूलित भूपजग अपयशकरत उदोत ॥
महामलिन तजि जीवनआसा। गाबहोरि अक्रूर अवासा ॥
सनति जोरिकर ताहि बखाना। मोर बधनप्रण यदुपतिठाना ॥
तव आज्ञा सत्राजित घाता। राखुशरणआपनिमोहिताता ॥
यदुनायक तुम पूरण साधा। हरो दीन जनकी बहुबाधा ॥
धर्म धुरंधर आरत पाला। सबबिधिमानततुमहिंगोपाला॥
जीवदान दीजिय जन जानी। पाहिपाहि यदुबर शुचिज्ञानी ॥
बड़ मूरुख तू निपट अयाना। रक्षिसकतकोउ रिपुभगवाना ॥
भूर्भुवः स्वः तोहिं न ठाऊं। शरण राखिकहँ तोहिलुकाऊं ॥
दो० सुमन समानस तपससब स्वारथ मीत बिचारु।
तवहितुता अब शत्रुता यहै जीव निरधारु ॥
कुसमय सखा शत्रु की करणी। करत यथालखिरिपुसुतहरणी ॥
रिपु उपदेश मृदुल कटुपाछे। मधु मृदुपान कालकृत आछे ॥
पितु पालत सुत सेवक जोई। कुसमय भक्षिजात द्विजसोई ॥
अब जीवन आशा परिहरऊ। तजिदुबिधा हरिपद उरधरऊ ॥
प्रभुप्रण मृषा न ह्वैहै ताता। जैहौ अवशि भवनहरिजाता॥
स्वारथ रहित गहौ परमारथ। बृथा चिंतमन काल अकारथ ॥
अग्रशोच पश्चातहु शोचा। बुध पंडित मूरुख मनरोचा ॥
प्राणतजहुं करिपच्छ तुम्हारा। जाहुसदन बशनाहिं हमारा ॥
दो० परुष बचन दुःकृत सुनत जानि काल तिहुंबाल।
मणिदे श्री अक्रूरकहँ स्यंदन चढ़ि तेहिकाल ॥
चल्यो पलाय नगर तजिराई। समाचार सुनि रोष बढ़ाई ॥
बाहन आरूढ़ित प्रभुधाये। तत्पश्चात हलग्रह आये ॥

शत योजन भाग्यो महिपाला । पाय निरोध करो गोपाला ॥
तिरहुति प्रविश्यो यान बिहाई । दयो सुदर्शन कृष्ण पठाई ॥
भंज्योतासु तासु शिर राजा । मृतक समीपगये मणि काजा ॥
खोज्यो अंगवस्त्र अरुयाना । मिलीन मणिपै सुनौसुजाना ॥
भ्रातहिकहतमिली मणिनाहीं । बध्योयाहि करि रुढ़ मनमाहीं ॥
आनपुरुष प्रतिहै मणि सोई । ताते तात परी नहिं जोई ॥
दो० छपिहि न कोटि उपायसो प्रगटैगी परिणाम ।
यहि कारण गृह जाहुतुम हम खोजैं सबठाम ॥
बंध्वायसु सुनि तिहुं पुरकर्ता । देव देव थिरचरके भर्ता ॥
पोषण भरण करण कृतस्वामी । जानतमणिहिंसुअंतरयामी ॥
तदपि न कारण कारण खानी । नीलाम्बरसनकहह्योबखानी ॥
हरिपुर हरि गमने सुखराशी । पूरण पुरष तमारि प्रकाशी ॥
रेवति रमण शोध मणिकाजा । गये देश देशन सुनुराजा ॥
धरा प्रजटन करत मुदपाये । अवधपुरी सादर चलिआये ॥
दुर्य्योधन नृपता अधिकारी । हरिसुधि पाय मोद उरभारी ॥
अग्रभेटि पाँवड़े बिछाई । बिशदासनशोभितकियजाई ॥
दो० बहुबिधि बिनती करासि नृप बिनती युत शिरनाय ।
भोजन चारि प्रकारषट हरिहि करायो आय ॥
कंठिर बासन पुनि बैठावा । जोरियुगलकर बचन सुनावा ॥
निजआगम कारणयदुनायक । कहियकृपाकरममकृतलायक ॥
देखि सनेह सत्यबल ताको । बह्योवृतांत अखिल रमनाको ॥
कृपा उदधि मणि भावन आनै । त्रिभुहिबिभातिबिभवपरमानै ॥
पुनिकहअमितक्षमाप्रभुकीन्हा । पतितदासकहँ दर्शनदीन्हा ॥
लोप्यो कलुष जन्म बहुकेरा । पायउँ चारिलाभ यहिबेरा ॥
जसयहथलपवित्र कियनाथा । रहिकछुदिनतसकरियसनाथा ॥
सेवकजानिशिष्यप्रभुकीजिय । गदायुद्ध उपदेशहि दीजिय ॥
दो० ताहि शिष्यकरि समर बिधि उपदेशी बहुभांति ।
करि प्रवीण तेहि संगरहि चले निलय मुदशांति ॥

प्रथमहि कृष्ण नगर कहँआये । पाछे हलधर दरश दिखाये ॥
मृतकअजितअरिनिजकरिदाहा । कस्यो कर्मसबयदुकुल नाहा ॥
सम्मत कृतब्रह्मा अक्रूरा । निजमनशोचकियोयहपूरा ॥
हरिहि बन्दितजि नगरपलाइय । अवशि प्रशंसा ताकहुपाइय ॥
प्रभुपहँ आय सो मणि दरशाई । सबिनय सोहरि गिरा सुनाई ॥
यदुबन्शी धनमद बौराने । इंद्रीभोगहि विषय भुलाने ॥
रावरभजन तज्यो बिधिचारी । दुखित नाथलखि बुद्धिहमारी ॥
धृगधनतियजग भोग अनेका । जो नपद्मपदनाथ बिबेका ॥

दो० मणि मिष त्यागि निवास हमसहपरिवार पलाव ।
बसत मूढ़ पुर साधुकर होवत दुष्ट स्वभाव ॥
तुमसनीति शुचि भक्त मम सबके भलकी चाह ।
जो भावै चितसो करो कह्यो जोरिकर बांह ॥

जबसब दुखितहोयँ तुव ध्याना । मन बच कर्म करैंयुतज्ञाना ॥
तब बहोरि तुव पाय रजाई । निवसब आय नाथयहि ठांई ॥
महा भक्त सूरति बिज्ञाना । यशअक्रूर बिदितजग जाना ॥
सुठि सम्मत मोरे मन माना । करियताततयह अवशिबिहाना ॥
प्रभु अनुशासन पाय सिधाये । बरणतबिमलकीर्त्ति गृहआये ॥
कृत ब्रह्मा समेत परिवारा । अर्द्ध निशापुर तज्यो भुवारा ॥
मर्म न जान काहु पुरबासी । यहचर्चा प्रभात पुर भासी ॥
कृतब्रह्मा अक्रूर समेता । गयेभागितजिशुभगनिकेता ॥

दो० जानि परत मणि लै भगे कारण दूसर नाहिं ।
इत चर्चा यह भूप सुनु प्रचरित सबपुर माहिं ॥

प्रथम प्रयाग गये अक्रूरा । तहां करायो कर्म प्रभूरा ॥
न्हाय त्रिबेणी पमरि बँधाई । गये बहोरि गया मुद पाई ॥
पितृश्राद्धतहँ विधिवत कीन्हा । उत्तमदान द्विजनकहँ दीन्हा ॥
पुनि सहप्रेम लौटि भुवराई । बाराणसी रहे द्वौ छाई ॥
तपजप करैं सदृढ़ बिज्ञानी । भेटहिं ऋषय भूपतहँ आनी ॥
बहुदिन भये तजे पुर जाना । प्रभुअक्रूर मिलन अनुमाना ॥

रामहिं कह्यो तात सुनु बानी । अब अक्रूर बोलाइय ज्ञानी ॥
कहिभल हलधरमौनित भयऊ । सुनौनगर बिपदाजस छयऊ ॥
दो० त्रिज्वर बिषम त्रयताप नृप पांडुक्षयी शिरपीर ।
कुष्ठ जलंधर शूल दुख मृगी भगंदर भीर ॥
कंठमाल खांसी अतिसारा । सन्निपात शीतांग विकारा ॥
अपर अनेक रोगगद आदी । थिरचर जीवनके जु बिषादी ॥
हरिमाया बश नगर प्रचारे । भये अखिल नर नारि दुखारे ॥
अरु जबते अक्रूर सिधारा । बरष्यो जलद न एकौ बारा ॥
तृण अन्नादि भयउ कछुनाहीं । त्रिधाजीव दुखलहहिं तहांहीं ॥
बड़ दुर्भिक्ष रोग प्रभु छावा । त्राहि त्राहि चहुंओर कहावा ॥
कर सम्मत बहु नर सुत बाला । हरि शरणागत गये नृपाला ॥
अति आरतमय विनय सुनाई । महाबिपतिबश बरणि नजाई ॥
दो० जोरिहाथ बिनती करत सुनु अवनीपति सोय ।
जेहि रीझै रुक्मिणिरमण अमित दीनताजोय ॥
छं० नमो स्वदास बल्लभं । नमामि देव दुर्लभं ॥
नमस्त्वमेक सद्गुरुं । नमामि भंजनं मुरुं ॥
नमो शिवाज कारकं । नमो अघौघ हारकं ॥
निरूप रूप धारकं । अपार भक्त तारकं ॥
अनाम नाम यद्विभुं । अकाम कामवत्प्रभुं ॥
निरीह सेह दृष्टितं । सुरारि व्यूह भ्रष्टितं ॥
त्वयं हृतं दुखार्णवं । त्वतुल्यअन्यकिम्भवं ॥
सकष्ट शर्णत्वं बिभूं । त्रिलोक मेकत्वं प्रभूं ॥
दो० जानि दासरुक्मिणिरमण हरियदुकाल कुरोग ।
बिस्मयमय सुनि सुरअसुर यहननाथ पुरयोग ॥
रावर स्वामि सुचर हम ज्ञाता । कोअघक्षिपतिबदियबिख्याता ॥
सदा रीति यह हरिकर भाई । निज सेवक कहँ देत बड़ाई ॥
सुनो जौन पुर हरिजन त्यागैं । मोदक निकर तहांते भागैं ॥
क्षोभक दाहक पीड़क बासा । तौन नगर होवत अनयासा ॥

ज्ञानवंत निवसैं जहँ साधा। नाशत आपु तहां ते बाधा॥
बासव मुदिर नाथ जन नेहा। मानि समय बर्षावत मेहा॥
जबसे पुर अक्रूर बिहावा। तबते नगर दुःख गण छावा॥
बिनजाने अपयश कोउ दीन्हा। पूरणभक्त हिये नहिं चीन्हा॥
दो० कृपासिंधुकह सत्य तुम भयो हृदय बिश्वास।
सुफलक पितु अक्रूर कर बिदितजगतहरिदास॥
जेहिथल बसत पिता सुत दोऊ। आवत तेहिथलबिपतिनकोऊ॥
सुकृत सीव बुधिगुणदधिसेता। धर्म अवधि परिवार समेता॥
यक इतिहास सुनिय चितलाई। बदत जरठ यह कथा सोहाई॥
समय एक काशी पुर ताता। दारुण दुर्भष भागति धाता॥
काशिपद्विजगणस्वथलबोलाई। पूछ दुकाल ब्यवस्था राई॥
क्षोणिप साध जितेन्द्रिय जोई। षट बिकार बिनु हेरिय सोई॥
यहि पुर चरण रेणु निज धारै। सब दुर्भिक्ष भूमिपति टारै॥
सुफलक नाम चंद्र कुल माहीं। बड़साधू भव दूसर नाहीं॥
दो० सुनत भूप बड़ि बिनययुत सुफलक लियेबोलाइ।
तिनके आवतहीं चतुर मिट्यो काल दुखदाइ॥
दुहिता निजनृपसुफलकसाथा। उद्वाही करि श्रुतिव्रत गाथा॥
ताकर तनय सुजन शिरमौरा। भाअक्रूर भक्त पद रौरा॥
यह बृतांत प्रथमैं हम जाना। भयबशनाथनतुमहिंबखाना॥
अब जस होय तुम्हार निदेशू। तस कीजिय यह मिटै कलेशू॥
शोधहु सकल साधु द्वौ जाई। यहि पुर बहुरि बसावहु आई॥
चले अनेक पाय अनुशासन। चतुराशा खोजत शुचिआसन॥
वाराणसी मिले हरिदासा। करतकठिनतप परिहरिआसा॥
चरण सरज बन्दे सुख पाई। बहुरि जोरि कर गिरासुनाई॥
दो० राम कृष्ण तुम बिन बिकल पुरबासी तिहुंकाल।
चलिय कृपानिधि धाम अब मिटै निकरदुखजाल॥
सुख समूह हरिजन अनुगामी। बिनु हरिदासकालगति बामी॥
यदपि बसत पुर पोषण हारा। तदपि दुकाल परयो बिकरारा॥

सेवक बश्य सदा असुरारी। निगमागमअसनीतिबिचारी॥
हरि संदेश पाय मुद छावा। पुलक शरीर नैन जलआवा॥
चले सजन कृत ब्रह्मा संगा। प्रभुदर्शन लालसा अभंगा॥
नगर निकट आये सुधि पाई। रामश्यामअगमन चलिजाई॥
कंठ लगाय भेटि सन्माना। बड़ सत्कार कर्‍यो भगवाना॥
लाय नगर शुभधाम बसावा। उग्रसेन सुनि अतिसुखपावा॥

दो० तिनके आवतहीं नृपति गये अखिल दुखनाशि।
जलबरष्यो शुभकालभा मंगल मोद प्रकाशि॥

जिनकी महिमा अस बड़भाई। धन्य साधुजन जगसुखदाई॥
समय पाय अक्रूर बोलाई। मणिचर्चा कीन्ही यदुराई॥
नीति बदत परधन जो पावै। आशु तासुके पास पठावै॥
सो न होय तेहि सुत कहँ देई। परधन अघ गृह भूलिन लेई॥
अथवा बन्धु गुरू सुत होई। देइताहि श्रुतिधर्महिं जोई॥
यहिकारण मणिलाय गोसांई। मम तियतनय देहु मुदपाई॥
झटितलायमणि हरिकरदीनी। पुनिमहिपालबिनयबड़िकीनी॥
क्षमिय मोर अपराध कृपाला। मणिलै यह प्रभुदीनदयाला॥

दो० स्वर्ग प्रगट सो नाथलै व्ययतीरथ मगकीन।
सोपिक्षमा प्रभु तुमकरौ प्रभुकह सुनौ प्रवीन॥
नीक कर्‍यो तीरथ गये मन में भयो सुखारि।
तोष्यो इमि अक्रूर कहँ निज मुख आपमुरारि॥
मंगल को हरि सम जगत दास बड़ाई दानि।
ध्याउश्यामपद भूलतजि यहशिक्षामन आनि॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांशतधन्वाबधबर्णनोनामाष्ट
पंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

दो० बिद्या धरत न क्षीणभल मूरुखनहिं तनपीन।
शुक सादर पक्षी जगत गिद्ध सुआदर हीन॥
बिद्या बिन लखि परत नहिं धर्म कर्म मर्याद।

सो पाइय श्रीगुरु कृपा भूषण तन मनुजाद ॥
बाल अवस्थहि सीखिये गुण चतुरई अनेक ।
प्रौढ़भये बिषयी रमण होत न चित्त बिवेक ॥
सर्ब सिद्धि मय जानिये बिद्या हरि गुण लीन ।
बिद्या बिनु यहि भवभवँर द्वितिय न आनतरीन ॥
बिद्यालहि सुंदर सुभग त्यागि रिझाउब लोक ।
तन मन सेवै श्यामपद जाते होव विशोक ॥

तिमिरापत्ति मित्र शुचि गाथा । श्रवणकरियतनमनकुरुनाथा ॥
एक काल जगपाल कृपाला । जनमन मानसरुचिरमराला ॥
चले करभपुर अति रुचिमानी । भक्त बन्धु आरतहरज्ञानी ॥
बहु यदुजात संग भट भारी । पहुंचे पाण्डु सदन बनवारी ॥
पाय सुद्धि पांडव चलि आये । भेंटि समोद हारिहि गृहलाये ॥
बिध्रुगोती रचि बेदी रेखा । कुंती द्रौपदि त्यागि परेखा ॥
रत्नजटित तहँ इभरिपु आसन । तेहिथलधस्योचर्चिशुचिबासन ॥
प्रभुहित दोपर सुरुचि बिठाई । आरति कस्यो प्रेम उर छाई ॥

दो० बिबिध बधाई बाजि गृह बरणत बनत न सोय ।
नृपता लहि नररंक तिमि तिनमन आनँदहोय ॥

भोज्यभक्ष्यलिह्यचोष्यकहावा । चारि प्रकार सुभोग करावा ॥
निकट बैठि भोजन कृत जानी । कुंती पूछ्यो सुधि मृदुबानी ॥
मम पितु बंधु आदि कुशलाई । कहिय सप्रेम मिटै दुचिताई ॥
तुम्हरी कृपा कुशल तिहुंकाला । दशदिशिरक्षकजनजनपाला ॥
पुनिकह जबजब बिपति हमारे । दारुण सहज परी अबिचारे ॥
अनुकम्पा अर्णवत बधाई । रक्षौ है प्रभु आपु सहाई ॥
श्येनब्यूह जिमि त्रासितलावा । किधौंसिंहदल बिचइभआवा ॥
बातप पस्योकि सद्दल चीता । बरहीगण महँजिमि इभभीता ॥
तिमि मम तनय अंधसुतसाथा । परिहरि तात न दूसर नाथा ॥
धर्मराज आरत युत बानी । मंजु शांतरस मिलितबखानी ॥
प्रणतपाल द्विजकेतु कृपाला । अद्भुत रूप धरौ सबकाला ॥

मायामय सब जग उपजायो । जटीकरण मुख भेद न पायो ॥
दो० दुर्लभ दर्शन देव कहँ मोक्षदानि तुवतात ।
जानि दास सुप्रबासहीं दरशदयो बिख्यात ॥
पावस ऋतु आगम है स्वामी । शुचिशुचिमासव्यतीतअकामी ॥
यहिथल निवसि हरियममपीरा । सेइ चरण कज होउँ सधीरा ॥
बिहँसे प्रभु सुनि भूप प्रशंसा । यदुकुल सर्बरसोहर हंसा ॥
धर्म रूप तुम साधु महाना । धर्माधीन अहौं बिनुमाना ॥
रहब लालसा देखि तुम्हारी । नृपहि बोधअसबदिअसुरारी ॥
हरिनृप धाम बास किय राजा । मोदेउसुनिपुरदुबिधिसमाजा ॥
एक काल शरबंधु समेता । मृगयहिचले बिपुलजड़जेता ॥
गहन बिपिन गयसँगधनुसाई । बधे व्याघ्रमृग कोल नृराई ॥
दो० अपर आन बनचर अमित हने कृष्ण धनुधर्ण ।
सब कहँ बांटे धर्मसुत जो जाको भष कर्ण ॥
भोजन योग भूप जे पाये । पाक सदन ते बेगिपठाये ॥
करत अहेर इंद्र सुत श्यामा । गये दूरि बन बपु बहु कामा ॥
सारिता कूल पान पय कीन्हा । कछु बिराम कम्बोजनदीन्हा ॥
प्रभु चितये नृप दूसरि ओरा । दीख तरंगिनि तटचितचोरा ॥
सुंदरि नव यौबन बिधुआनन । मृगचषतनचम्पकद्युतिभानन ॥
पिकबचकेसरिरिपुगतिगामिनि । हरिकटिनखशिखमनहरभामिनि
शृंगारित छबि सदन सुनारी । अकसर बहुमद मद मतवारी ॥
फिरत कूलसरि संग न कोई । अर्जुन कौन नारि यह होई ॥
दो० सुनि देख्यो तब ओरतेहि भयाबिकलमनतासु ।
प्रभुरुख लहि सानंदमग गये तासुतट आसु ॥
कोहसि केहि कारण यहिठामा । अकसर फिरतमोहिंकहुबामा ॥
अवशिनाम गृह देह बताई । जोसुनि ममचितचिंताजाई ॥
पूषणसुता अहौं नरनायक । कालिंदी ममनाम सुभायक ॥
पिताआपमहदेइ निवासा । पुनियहिबिधि कियवचनप्रकासा ॥
सरितट फिरत मिलिहि बरतोरा । सत्यबाक्य यह दुहितामोरा ॥

नामकृष्ण श्रीहरि अवतारा। पूरण धरिहि हरण महिभारा॥
आदिमध्य अवसान बिहीना। कृपाउदधि सतचित्तअक्षीना॥
मन पितुबचनसांचु अनुमानी। ध्याऊं हरिहि सत्यपतिजानी॥
दो० जिनके पदकर ध्यानतोहिं तेप्रभु पूरण रूप।
आयेयहिथल नैन लख सुंदर पुरुष अनूप॥
यहिअवसरहिश्यामचलिआये। समाचारकहि तिनहिंसुनाये॥
बिहँसिश्यामकहसुनुप्रियबानी। बेगिहिचलौ चढ़ौ रथ आनी॥
स्यंदनताहि चढ़ाइ सिधाये। अर्जुन सहित परम मुदछाये॥
जबलागि हरि आये नृपबासा। तबलगियकपावनसुअवासा॥
हरिइच्छालखि पर्म स्वधर्मा। निर्मायो सोहर त्रिश्वकर्मा॥
तेहिगृह हरि हरि सुता बसाई। सत्य चिदानंद प्रभु यदुराई॥
सुखद प्रसंग समय यक भयऊ। सुनौतातजिभिहरि मुददयऊ॥
हरि हरिजात बैठ यकठांई। करत ज्ञानचर्चा बहुभाई॥
दो० कंजजोरिकर आयतहँ बोल्यो शीश नवाय।
क्षुधित फिरतहौं कृष्णजू भोजन देहु कराय॥
उदरनभर्यो यज्ञभष मोरा। कहाकहौं निजक्षुधा अघोरा॥
जो तुवनाथ रजायसु पाऊं। तौ नन्दनबन अवशि जराऊं॥
निडर भस्म करु कानन जाई। पूरण क्षुधा करिय मुदपाई॥
त्रिपुल बार में बनहि लगावा। पावस पव वरषाय बुझावा॥
बिनु सहाय शरणागत पाला। उदरन मोरभरिहितिहुकाला॥
हँसि हरिकहा बली मुख केते। जाइय अवशिकरणसुतहेते॥
आज्ञा पाय अमिष धनुधारा। कटि तूणीर कर्यो तेहिबारा॥
बनसुत संग चल्यो रणधीरा। बासव बिपिनजायसुतक्षीरा॥
दो० लग्यो जरावन काननहिं चारि ओर तेहिकाल।
प्रजरत बहुपद पिकप्रिया तरुतालीस तमाल॥
मंजुल बकुल ताल तरु श्यामा। हेम प्रसून पलाश सुनामा॥
प्रियककर्ष फल बानरआनन। कोलवल्लिका तिक्ताकानन॥
कोला अभया बिद्रुम पीडा। गुंजा मृदुका सुमना ब्रीडा॥

केतकि एला सहित लवंगा । अपर अपार वृक्षभय भंगा ॥
अरणी चटकत वनचरभटके । अर्जुन बाणसुअर्जुन अटके ॥
हाहाभूत ज्वलित बन आगी । कौनो जीवन पावत भागी ॥
अमर नाथ सुनि क्रोधितभयऊ । बोलिजलदपतिआयसुदयऊ ॥
महा बृष्टि करि अग्नि नशावो । कानन तरु बहु जीवबचावो ॥
दो० आज्ञा पाय सुराधिकी चले मेघ मुद पाय ।
अंधकारभा ओर चहुं बिद्युन्मग दरशाय ॥
इषुधी कंत तजेउ नाराचा । शरपंजर नभबिरच्यो सांचा ॥
कामक सिक्ता समद्वै गयऊ । ध्वंतनश्योकाशितरबिभयऊ ॥
झंझा बायुउड़त जिमि तूला । उड़े वलाहक नृपतेहि तूला ॥
आवत जात परे नहिं जानी । दुगुणअनलप्रजरीसुनुज्ञानी ॥
मयथल पावक पहुंच्यो जाई । उठ्योअसुरतनमनअकुलाई ॥
करि प्रणामकह आरत बानी । रक्षा मोरि करो सुखदानी ॥
दीन गिरा सुनि पंथ दयाला । राख्योशरणअसुरतेहिकाला ॥
वृक्षबिपिन भषि पावक भयऊ । पंथ असुरयुतहरिपहँगयऊ ॥
दो० कहा जोरिकर सुनो प्रभुयह मय बड़गुण खानि ।
शरण राखिये देव प्रति निज सेवक अनुमानि ॥
शरणराख मय पावक तोषी । प्रभुद्वौरीति सदा संतोषी ॥
मणिमय सदन मयासुर कीन्हे । अद्भुतचक्रतजातनहिंचीन्हे ॥
जल थल कथल द्वार बिनु द्वारा । बरणिनजायबिचित्रअपारा ॥
बिधि सुरेश लखि जीव सकाई । मानसजानिसकै किमिभाई ॥
बिहरत तहँ तीनों पुर नामी । जेहि माया कृत अंतरयामी ॥
चारि मासतहँ बसे कृपाला । सुखीकिये बड़लघुनरबाला ॥
राजसभाजहँ धर्म बिराजा । आयेसुरुचि तहां बृजराजा ॥
कहेउ रजायसु दीजिय भाई । जाउँद्वारकहि मोचित आई ॥
दो० सुनतउदासित भयो नृपसभा सहित तेहिबार ।
अज्ञ तज्ञ सर्वज्ञ हरि किये प्रज्ञ अनुसार ॥
सबहि बोधि पथ हरिजासंगा । चले द्वारकहित्रिबयअभंगा ॥

कुंती द्रौपदि भेटि सयानी । गईं गेह दुविधा अनुमानी ॥
राखब पठउब दौ कठिनाई । आज्ञा प्रेम भंग लखि राई ॥
कछुन कह्यो सुत धर्म स्वबानी । भेट्यो बार बार उरआनी ॥
वेगवंत रथ जिमि उरगारी । इंग तज्ञ बाहन सुखकारी ॥
बासर महँ पुर पहुंचे जाई । नहिं आश्चर्य दूरि बहुताई ॥
हरि आगम सुनि पुरके बासी । चले त्रिविध रुचिपर्मप्रकासी ॥
बीचहि भेटि बन्दि पद कंजा । कलुष नाग दर्शन हरिगंजा ॥
दो० हरि आवत पुरमोद नव छाय रहो चहुं आश ।
कहतबनैनहिं सहसमुख सोकिमिकरियप्रकाश ॥
हंस सुता लखि त्रियन सराहा । लहो भूपपितुहितसुनि लाहा ॥
उग्रसेनसन प्रभु कह जाई । कालिन्द्री की कथा सोहाई ॥
बिहँस्यो राउ सुनत मृदुबानी । सचिवहि कह्योसुनौ सज्ञानी ॥
ब्याहसाज साजि हमहिंजनावौ । पुनिकुलगुरुमुनिगर्गबोलावौ ॥
आज्ञालहि सब बस्तु मंगाई । ऋषिहि बोलिपुनिलग्नधराई ॥
कर्यो वेदवद हरि उद्वाहा । मन प्रसन्न है यादव नाहा ॥
जिमि ब्याही कालिंद्री श्यामा । बद्यौ अपूर्ब चरित गुणग्रामा ॥
जेहि प्रकार हितु वृंदहि लाई । ब्याही कृष्ण सो सुनु नरराई ॥
दो० सुनौ अवनिपति चित्तदै कथा रुचिर सुखदानि ।
जो श्रुत प्रफुलित होयमन और पापकी हानि ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

अहै शूरसेनात्मजा बिष्णु सेवी । महाज्ञानमैनामराजाधिदेवी ॥
सुतातासुकी मित्रबिंदासुनामा । युवावैसभाचंद्र देवी ललामा ॥
पिताठान ताकोस्वयंकंतजागा । महामोदस्योशोचिकैसानुरागा ॥
रसानाथलै सुद्धि आये तहांहीं । बिलोकेबिभौदेवराजासकाहीं ॥
गुणी संयमी वेदवक्ता सुखेना । जुरे यज्ञशालाधराधीशसेना ॥
बली बिक्रमी संगरी रूपरूरे । कहांलौं बखानौं सबैभांतिपूरे ॥
सुनेसुद्धि श्रीकृष्णलै पंथसंगा । गये यज्ञशालामहामोदअंगा ॥
बिलोके मुखाभारहीभूलिनारी । शकंजैतिसानन्द सोकंठडारी ॥

दो० देखिलजे बहु भूप तहँ मन माखे कुरुराय ।
मित्रसेनि ताबंधुसों कह्यो भूपयों जाय ॥
तव मातुल सुत कृष्ण कहावा । कौतुकलागि मखशालाआवा ॥
रूप देखि तुव भगिनि भुलानी । लोक बिरुद्ध शोचुमनजानी ॥
जोउद्वाह कृष्णसँग भयऊ । अपयशअकथजगततवछयऊ ॥
यहिकारण अनुजा समुझावो । तजै श्यामबरभवयश पावो ॥
सुनत व्यंग दुर्योधन बानी । निजभगिनिहिं समुझाइसिआनी ॥
बन्धुबचन सुनिमनसकुचानी । परिहरि हरिपुरचलिसँगलानी ॥
हरिश्रुति लागि पंथइमिभाषा । बिगरतकाज करियमनमाषा ॥
कानिकरत यहिसमय कृपाला । हँसिहैं प्रभुसमुदाय नृपाला ॥
दो० कोपि कृष्ण त्रियहाथ गहि रथलीनी बैठाइ ।
अखिलभूप देखतखड़े सबकीकानि बिहाइ ॥
जब स्यंदन चढ़ि चले मुरारी । तब रोषे महीप भटभारी ॥
निज निजआयुधसाजिसिधाये । समर हेत बहुअनी बनाये ॥
पुरजनकह हरिकर्‍यो अनीती । उचित बिवाहलोकश्रुतिरीती ॥
प्रभु देखा क्षोणिप दल आयो । सैनहि प्रभुकपिकेतु बुझायो ॥
गुणाकेश तोमर धनुधारा । आपनहूं शारंग सम्हारा ॥
मंड्यो असुग पंजराकारा । जोबिलोकि भूपति दलहारा ॥
बिपुल जीव तजि हरिपुर धाये । शेषसमर तजि नृपतिपलाये ॥
प्रभु निरद्वंद गये निज बासा । मुदित भये नरनारिअबासा ॥
दो० कियो व्याह जग बेदबिधि कहे ग्रंथ बढ़िजाय ।
जिमि सत्यालाये बहुरि सो चरित्र सुनुराय ॥
कौशलदेश बिदितजग जाना । तहांनगनजित नृपबलवाना ॥
सत्या नाम तासु सुकुमारी । रूपशील लक्षण अधिकारी ॥
व्याहन योगजानि महिपाला । यह प्रण कीन्हो राउकराला ॥
अगजगवृषभप्रबल अनुमानी । छोड़वाये रसाधि अभिमानी ॥
जो नाथै निज बल नर कोई । मम जामात होइ भव सोई ॥
भ्रमैं बृषभ कोउगहि नहिंपावै । बधैताहि जो निकटहि जावै ॥

पारथ सहित श्याम सुधिपाई। कौशल देश गये सुनुराई॥
सभाकश्यपी पति जब गयऊ। हरिहि बिलोकिमगननृपभयऊ॥
दो० सत्वर आसन त्यागि उठिकीनेसि दंड प्रणाम।
करिआसीनसुआसनहिं पुनिपूज्यो परिणाम॥
करि अर्चा कह सुनो कृपाला। उदितभाग्यममभयउबिशाला॥
भूती सपितु तनय जेहि ध्यावैं। समय पाय तुव दर्शन पावैं॥
तुववाणी बिरच्यो दशचारी। आदिपुरुष प्रभुकलिमलहारी॥
सहज स्वभाव धाममम आये। पूरब सुकृत चारि फल पाये॥
निज मूढ़ता कहौं छल छोरी। जाबश रहत सदा मतिभोरी॥
दुहिता व्याह हेत प्रण कीना। नाथै वृष जो सुभटप्रवीना॥
सप्तवृषभ बर मत्त छोड़ाये। फिरतनाथ कोउ बेधि न पाये॥
ताहि बरैं निज प्राण पियारी। एक बार नाथै भट भारी॥
दो० अहै कठिन प्रण सुलभभा पाय दरश असुरारि।
उठे सुनत हँसि तुरतही हरिसुख दुःख बिसारि॥
मुनितनधरिकटिकसिनिजचीरा। मर्मन जान काहु यहबीरा॥
एकहिबार वृषभ प्रभुनाथे। कुसुममालमालीजिमिगाथे॥
वृषभ बिलोकि श्याम भय कैसे। प्राण बिहून काठतन जैसे॥
यक रज ग्रासि सभालै आये। देखि सभायुत नृपसुखछाये॥
नगरलोगसुनि बिस्मितभयऊ। कौतुकलागिनिकरचलिगयऊ॥
धन्य धन्य इन कर बलभाई। भणै परस्पर लोग लोगाई॥
कुलगुरु बोलि नगनजितराजा। लग्नपूछि सजिमंगलसाजा॥
कन्या दान बेद बिधि कीन्हा। यौतुकअमितइलापतिदीन्हा॥
दो० धेनु सहस दश कर भनव सहस लाख दशअश्व।
लक्षतीनि मुनिरथ दिये प्रगट्यो यशशुचि विश्व॥
बहुसेवक सेवकिनि अपारा। दैबिनयोअति अवधभुवारा॥
चले श्वशुरकर पाय रजाई। कीरति सब देशन महँ छाई॥
सम्मत करि अनेक नृप आये। मारग मांझ युद्ध अरुझाये॥
रोषि धनुर्द्धर सबहि भगावा। बायुप्रबलदलदल बिचलावा॥

पावन चरित छयो दिशिचारी। गये द्वारकहिं नृप असुरारी॥
आय प्रणाम करैं पुर लोगा। कहहिंसराहि ब्याहसमयोगा॥
कौशल राज सुयश बड़लयऊ। अगणितदायजशुचिमनदयऊ॥
प्रभुकह पंथहि तुम बड़ज्ञाती। बिज्ञानी रणधीर अघाती॥
दो० जो दायज अवधीश दिय सोतुम लेउ सप्रेम।
सुनत अचम्भे सब रहे दुर्लभ प्रभुकरनेम॥
गुड़ाकेश करि अंगीकारा। लियोबिपुल धनदायजबारा॥
कमला जासु चरण सेवकाई। तनमन बचन करत मुदपाई॥
तृष्णा लोभ मोह नहिं जाके। कोधन एतिक गोचरताके॥
अब भद्राकर सुनौ बिवाहा। मन दृढ़तामधि गोपउछाहा॥
केकय देश प्रसिद्ध महाना। भूमिपाल तहँ चतुर सुजाना॥
भद्रानाम सुतातेहि ज्ञानी। नृप तद्धत न रमा ब्रह्मानी॥
तासुस्वयंबर हित नरनाहा। लिखेपत्र बहु सहित उछाहा॥
बोले अपर अपर च्छितिपाला। बलबुधिमयजेबिदितबिशाला॥
दो० गये सकल केकय पुरहि त्रिया लोभ उरधारि।
तेहिसमाज महँ जातभे अर्जुन सहित मुरारि॥
मखशाला भल जुरयौ समाजा। शोभितबिपुलबिबिधकुलराजा॥
मध्यसभा राजे यदुराई। तेहिअनमिषहिसुतानृपआई॥
देखिरूप मोहे बहु कामी। करिबनाव बैठे मति वामी॥
देवपितृ गुरुइष्ट मनावैं। अध ऊरधनिज मनहिंचलावैं॥
शुचिजयमाल हाथसखिसंगा। निरखत भूपन नैन कुरंगा॥
कोउ बरभूप न तियमन आवा। दैवयोग यहभयो बनावा॥
रूपराशि मोहन तिहुँ धामा। बिलजाहिदेखिभांतिबहुकामा॥
जहं शोभित आई तहँ बाला। प्रभुहिदेखि मेली जयमाला॥
दो० मुदितभयो पितुतासु लखि श्रुतिब्रत कर्यौ बिवाह।
दैदायज बहु को गनै बिदा कीन्ह नरनाह॥
मग मंगल युत बजत निशाना। द्वारावति आये भगवाना॥
पुर प्रमोद को बरणै भाई। वृद्धिग्रंथ लखिमन भ्रमखाई॥

प्रबललक्ष्मणा ब्याहनृप सुनहू। हरिप्रताप निज उरहृढ़ गुनहू॥
भद्रदेशकर अमुक नरेशा। बल सागर नागर सुठि वेशा॥
तनयातासु लक्ष्मणा सोहर। गुणनिधानप्रति अंगमनोहर॥
उत्सव योग बिचारि महीशा। रच्यौ स्वयंबर बोलिऋषीशा॥
द्विजबरनिगमधारि गुणखानी। प्रथम निमंत्र्यौ क्षोणिपज्ञानी॥
देश देश के पृथ्वीपालक। प्रबलबिजयरणरिपुगणघालक॥
दो० निवति बोलाये यज्ञसब आये साजि सहाय।
पंक्ति पंक्ति पदयोग मख राजितभे नरराय॥
रुक्मिणिरमण गये संगबाटा। साधारण शुचि पूरणठाटा॥
भूपसुता करमाल उठाये। देखतआखिल फिरत मुदपाये॥
परिहरि सबहि प्रभुहि पहिराई। बिजय प्रसूनावलि सुखदाई॥
जस मर्य्याद ब्याह श्रुतिगाई। तसकरि ब्याहिचले यदुराई॥
बहु महीप तिन मारगरोका। लज्जितह्वैतजि नीतिविवेका॥
कोउकह जीवत बांधौ याको। संगरघात बेगिही ताको॥
निधन करिय मूरुख कहकोऊ। जानअजान बदतजड़सोऊ॥
रोकत पंथ पंथ अरुझाना। महा समरभा सब जगजाना॥
दो० चलेबाण दुहुँओरते प्राबिट बुन्द समान।
मारु मारु घनगर्ज भट मेघ तड़ित दुकृपान॥
प्रभु रोषे को रक्षण हारा। मारग समर प्रगट बिकरारा॥
निशितबिशिखलखिभूपपलाने। जनुहरिलखिहरिव्यूहलुकाने॥
क्षत्रीधर्म धारि जिय कोई। जीवन आशत्यागिरण सोई॥
जुरेत्यागि तनगे सुरधामा। पहुँचेपुर प्रभु पूरण कामा॥
बहु आनंद द्वारका छावा। पावन चरित भूप हौं गावा॥
पंचब्याहइमि करि जनपाला। कर्यौ बिहार पवित्र बिशाला॥
आठौं पटरानी सुखदानी। रहैं सदा सेवा महँ सानी॥
रुक्मिणि भालुसुता सतिभामा। कालिंदी हितुबिन्दा नामा॥
दो० सत्या भद्रा लक्ष्मणा नाम मनोहर आठ।
दुखदारिद भंजन नृपति करै जो नितप्रतिपाठ॥

मंगल को सामर्थजग हरि तजिभव जयकाज।
परिहरि आशभरोसतू भजु दुखहर ब्रजराज॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णपंचविवाहवर्णनोनाम ऊनषष्टितमोऽध्यायः ५६॥

दो० यह शरीर जड़है सही बदत बेद बुधिवान।
देखि लेहनिज अत्तहू तजिमन भ्रमअभिमान॥
जैसे याकी पालना करत सरुचि नितमीत।
तैसे चणहूं मूढ़मन गाउ श्याम यश गीत॥
सिद्धि लहै तिहुं कालमें दुहूं ओर की सत्य।
भ्रमत बृथा भव बीथिका लहत अनेक बिपत्य॥
काम क्रोध लोभादि को भोगचहत मनमूढ़।
अंत समय पुर दंड कह डरत न लहत अगूढ़॥
बिनु ध्याये हरिपद कमल गाये बिनु यशतासु।
जीवत क्लेश अपार भव मृतेनरक महँ बासु॥

एक समय मानस तन धारी। चोणी कस्यो भूपतप भारी॥
तपसअकथलखिबिधिहरिबामा। तासु कूल आये गुणग्रामा॥
कहिय कश्यपी को बर चाहा। सो पांचौ भेटौउर दाहा॥
कोउ कृत करत अकारण नाहीं। बदत नीति यहनीतिसदाहीं॥
कृपापयोधि पुत्र अभिलाषा। मोरे हृदय सत्य मतभाषा॥
सबल होइ अति तेज प्रकासी। बहु प्रताप मयभूमिबिलासी॥
महा अजित रण जुरै न कोई। काहू कर न मरैसुत सोई॥
जो दयाल मोपर तुम देवा। तौबर याच्यमान है एवा॥

दो० रसा बचन सुनि हँसि बद्यो त्रैदेवन यों राय।
नरकासुर असनाम सुत ह्वै है तजु दुबिधाय॥

बल प्रताप युत महा प्रबीना। युद्ध अछीण तोर आधीना॥
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि सुनु चोनी। बधिहिनताहिकोउचहुंयोनी॥
भूपति तोर पृष्ठितल जेते। होहिं तदज्ञा बश सब तेते॥

अमर लोकलहुसोगति पाइहि। बार अपार दिवेश सताइहि॥
संगर जीति अमरगण नाना। माधवसनबिरचिहिनिजथाना॥
कुंडल अदिति केर लै आइहि। भूषण करणसुआपुबनाइहि॥
वासव छत्र धरिहि शिर आपू। बिपुलातंकित तासु प्रतापू॥
षोडश सहस महीपति जाता। लाइहिसमर जीतिबिख्याता॥
दो० अनउद्वाहित बंदि गृह राखिहि ते बहुनारि।
शुद्धि पाय परिणाम हरि आइहि कटक सम्हारि॥
तब तू हरिहि तासु बधकाजा। कहिहि सरोषधरातजिलाजा॥
मर्दि ताहि तुव आज्ञा पाई। नृपजालै जाइहि यदुराई॥
बिहँसि महीकह अस जड़ताई। मैं किमर्थ करिहौं सुरसाई॥
कोटि दुष्टता वश महतारी। सुतवधचहतनदीख बिचारी॥
दैबर तोषि रसा भुवराई। गयेलोकनिजनिजत्रिबिधाई॥
समय पाय प्रगट्यो यकजाता। भौमासुर खलजग दुखदाता॥
कोऊ कहत नरकासुर नामा। बसतप्रागज्योतिषपुर धामा॥
बल प्रताप बरबश बहु ताके। बायु आग्नि रक्षक भे जाके॥
दो० जसबर दीन्हो प्रथम बिधि हरिहर संभव जानि।
करै लाग तस असुरसोइ बिनुप्रयास मुदमानि॥
देश देशके अधिप अनेका। बन्दी गृह राखे अविवेका॥
सोरह सहस नृपन की जाया। बन्दि करसिकरितमचरमाया॥
यतन समेत राख आगारा। संध्या प्रात रहै रखवारा॥
सेवहि तिनहिंबिपुलबिधिराजा। यथासाधु कोउअतिथिसमाजा॥
जीति लंकपति पूरुष याना। लैआयो खल प्रबलमहाना॥
तदारूढ़ वृंदारक बासा। गयउभूमिपतिबिनहिप्रयासा॥
अखिल दिवौकस दुष्ट सताये। अमरलोकसबकहँबिकलाये॥
जीव लोभ अमरेश पलाना। दारुणबिपतिबिवशबलवाना॥
दो० कुंडल लीने अदिति के छत्र मुकुट सुरराय।
यम कुबेर इत्यादि सब तजि थल गये पराय॥
हरिजन ऋषय बिप्र गो राजा। दंड देत सबकहँ बेकाजा॥

व्रततीरथ निंदा रत रहई । श्रुति बिरोधखलधर्महिगहई ॥
सुनि आचरण तासु यदुनायक । दीनबंधु आरतसुखदायक ॥
शोचे यह जड़भा अन्याई । अवशिदेउ यमलोक पठाई ॥
त्रियगण मोचि बंदिते लाऊं । शुचिनिकेत द्वारकाबसाऊं ॥
छत्र लाय रिपु पाकहि देऊं । अभय बसाय सुयशबड़लेऊं ॥
कुंडल अदिति देइ सुख पाऊं । असुर भंजिमहिभारमिटाऊं ॥
पुनिबर तासु बिचारिबिशाला । सतिभामहिकहदीनदयाला ॥
दो० जोमम संग चलुतो बधौं भौमासुर बिनुवारि ।
बिनु आज्ञा तुव मरि हि नहिं धराअंश तू नारि ॥
जब त्रिदेव बरमहि कह दीन्हा । सुतहित तब यहबाचाकीन्हा ॥
निज मुख मृत्यु याचिहै जबहीं । जूझहि समर तनय तबतबहीं ॥
धरा अंशतू जननी ताकी । तुव आज्ञाकारी मृतु वाकी ॥
मन मलीन दुख तरु मुकुलानी । आरत मय फलगिराबखानी ॥
ममजा तुव सुत बधब अनीती । करियकंतवासंग अतिप्रीती ॥
जननी नेह हृदय तरु जामा । प्रभु देखा फल दुखपरिणामा ॥
खंड्यो तेहि निर्मोह कुठारी । प्रेरि योगमाया असुरारी ॥
पूरुब चर्चा टारि विहारी । कह्यो प्रिया सुनु बात हमारी ॥
दो० नहिं इच्छा बध तासुकी एक बारता आन ।
एक समय हौं भूतहीं दियो तोहिं बरदान ॥
ताहि चहौं पूरण प्रिय कीना । को बरदीन सोकहियप्रबीना ॥
एक काल सुर ऋषि हरि फूला । दयो आय मोहिं मंगल मूला ॥
सो रुक्मिणिहि प्रेम युत दयऊ । तोरे उर अपार दुखभयऊ ॥
कह्यौं नहो प्रिय जीव उदासा । करु प्रबोध पुजवौंतुवआसा ॥
तरु मंदार लाइ तोहि देहौं । मन प्रसन्न करि जगयशलेहौं ॥
यहि कारण चलु तू मम संगा । पुर बैकुंठ देखु अघ भंगा ॥
पारिजातगण जहां सोहाये । देत मनोरथ उर मुदछाये ॥
मन प्रसन्न बहुसुनि प्रभु बानी । तरस उपस्थित भई सयानी ॥
दो० बैनतेय आये तबहिं हरि इच्छा अनुमानि ।

सतिभामा युत चढ़ि चले दुहूं भांति सुखदानि ॥
का बिचारि प्रथमहिदुखमाना। नित्यवाक्यप्रियकरिहिबखाना ॥
कछुन शोच भौमासुर मारे। दुष्ट निधन कत्रि बेद पुकारे ॥
मर्दि असुर बहुभूप दुलारी। बरिहौं लाय दयाल अघारी ॥
तेहि समाजमहँ गणना मोरी। करिहौं नाथ धर्म सुख धोरी ॥
यहै बिथुर मोरे मन आवा। अजहूं नाथ जीव पछितावा ॥
तरु संतान लाय तुव धामा। धरिहौं सत्यमानु प्रिय बामा ॥
तेहिसंग पुण्यकर्‍यो तुममोहीं। भवसुलोक बहुहोइहि तोहीं ॥
पुनिद्विजतेमोहिंलिहेउबिसाही। मेट्यो चिताचिन्ता बहुताही ॥
दो० तवाधीन रहिहौं सदा यहि कर्तत्र सुनु बाम।
कर्म अयोगन नारिसुनु महापुण्यदा काम ॥
इंद्रानी निजपति दिय दाना। एकसमय यहि भांति सज्ञाना ॥
अरुकश्यपहिअदितियककाला। दानदयोतजिभ्रम अघजाला॥
तुवसम प्रिया न मम कोउहोई। यह सुदान शुचि बेदकहोई ॥
अस बतरात भौमपुर गयऊ। नगरनिरोध बिलोकतभयऊ ॥
कोट ओट गिरिपथ हरिबारी। लखिअतिदृढ़अद्योभवनवारी॥
पठयो चक्र अनिल अरिभाना। कहा बेगि नाशहु बलवाना ॥
क्षणमहँ दाहि बुझाय बहावा। रोकि सक्रमशुभ पंथ बनावा ॥
प्रबिशे नगर देवजन त्राता। बिस्मय मोद रहित बिख्याता ॥
दो० हरिहि देखि धाये अमित पुररक्षक करि क्रोध।
गदाघात मर्दै अखिल सुनि पुर बढ़्यो बिरोध ॥
रक्षक बध सुनि पुर आतंका। भयो महीश यथा कपिलंका ॥
समाचार सुनि रोष बढ़ाई। चल्यो पंचशिरहित ख ताई ॥
मुरनामेति सुगढ़ रखवारा। महाबली जेहिकर जगहारा ॥
कर त्रिशूल जनु दंड कराला। गरजतमुदिर शब्दततकाला ॥
प्रभुतट आय अरुण करि नैना। दशन घाति बोल्यो कटुबैना ॥
ममसमद्वितियनबिधिउपजावा। कालबिवशकसपुरचलिआवा॥
असबदिदपटिझपटिखल धायो। मनो मत्त अहिहरिपरआयो ॥

तज्यो त्रिशूल देव आराती । जोबिलोकिमतिमृत्युसकाती ॥
दो० हरिस्वभावही चक्र करि खराड्यो शूल कराल ।
देखिअसुरबिस्मितभयो पुनिगाहिधनुनरपाल ॥
क्रोधित जेखल बिशिख अपारा । तेप्रभु सहजकस्यो निरुवारा ॥
निकरायुध मर्दे मुरुकूरा । सकल हरे यदुनाथ समूरा ॥
अस्त्र रहित भा अमरअराती । धायो दुष्ट बज्रकरि छाती ॥
जुस्यो मल्लगति अबल महाना । कौतुक लखत देवगणनाना ॥
बहु उपाय छलबल युत करई । जाइवृथा नहिं पूरण परई ॥
सरुष भिरत जड़ सहजकृपाला । सतिभामा लखिभई बिहाला ॥
प्रिया बिकल जानी असुरारी । क्रोधितभे खल ध्वंत तमारी ॥
प्रेरिसुदर्शन खंडे शीशा । जयध्वनि गगनभई भूमीशा ॥
दो० तजतप्राणकिय शब्दअति सुनिचौंकेउ भूजात ।
कहतभयउ रवधन कहा मर्म जान कोउतात ॥
तस्मिन्काल बध्यो चर आई । सुनियदयानिधि चित्तलगाई ॥
बासुदेव अस नाम कहावा । बिहंगारूढ़ द्वारगढ़ आवा ॥
रक्षक मर्दि कस्यो मुरुघाता । महाप्रबल अकसर नरताता ॥
सुनिसखेदभा निशिचर नाथा । सैनपबोलिभरयोसबगाथा ॥
बधौ कृष्ण यदुबंशी होई । बिदित उपद्रवी यह है सोई ॥
आयसु मानि चमूप सक्रोधा । साजिअनीखलसबलितयोधा ॥
नगर त्यागि चलिबाहिरआवा । हँसे श्यामलखि समरबनावा ॥
मुरसुत सुनिपितु मरणदुखारी । चले अस्त्रबहु निज तनधारी ॥
दो० सप्तबन्धु अति प्रबल नृप मुरजा बिदित जहान ।
जीति सकत जग एक यक पण्डितरणबिज्ञान ॥
आयकृष्ण सन्मुख भये अगणित भट बिकराल ।
समर भूमि बाजे बजे सुनु सत्तेम महिपाल ॥
तो०छं० तबआइकहीचरयुद्धकरौ । अरित्रेगिबधौ जनिजीवडरौ ॥
नृप आयसु पाय जुरे रणमें । हरित्रासितभे खलके गणमें ॥
सुरभान अपार चहूं दिशिमें । तियसायतमारिकिधौंनिशिमें ॥

चहुं ओरहि बाण अलेख चले। लखि युद्ध सुरेश महेशहले॥
खगनायक सों कह यों हरिजू। त्रियरक्षक होन त्रसैडरिजू॥
खर ब्यूह यथा जलजात जरैं। खल अस्त्र तथा हरिकोपिहरैं॥
द्विजराज कहा सुनुदेव पती। सतिभाम भयातुर नाथअती॥
सुनि क्रोधित ह्वैकर चक्र धस्यो। क्षणमेंदलज्योंदलबायुहरयो॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

चमूपालभंज्योबिनात्रासस्वामी। मृगाधीशसर्पैंतथाचक्रभ्रामी॥
मुरूजात सातौ बधे खेतहीमें। मिलायेघने युद्ध मंडीमहीमें॥
सुने सुद्धिभौमासुरै मोहआवा। कहादैवकरतारकोकालखावा॥
महाशोच में बुद्धि वे बुद्धिसोई। बलीनिर्बलीजीवक्योंज्ञानहोई॥
मुर जोरधे औ हने सैनपाला। नहीं पुन्स संसारपुंरूपकाला॥
लिखाजोबिधाताममानीकहोई। जयाजै सदायुद्धमें कर्मदोई॥
वृथाशाच की भूलमेंआयजावै। बिनाकर्म क्योंकर्मह्वैजीवपावै॥
कुचिंतासु चिंतानकीहानिकारी। तजेयाहि तू जीवहोवैसुखारी॥

दो० असमन शोचिनाथ दल चल्यो समर महिसूत।
आच्छादित आयुध बपुष महाबली महिपूत॥

सो० समरभूमि महं जाय हरिहि देखि गर्जत भयो।
महारोष उरछाय बिशिखासन शरकर धरयो॥

छं० करधारि धनुशर समर मंड्यो बाण बहु छंड्यो तहां।
अमरेश देखत देव मुनि गणसहित चित चिन्तामहा॥
जो तजै तोमर तीव्र निशिचर तुरत प्रभु खंडन करैं।
चहुं ओर घोर अपार आयुध छुटहिं ते सहजहिंहरैं॥
हरि कोपि त्यागे प्राण हर शर चलेते हहकार मय।
बेधेअनीतन सहज सिगरेबिपुलखल बिनप्राणकय॥
कोउ तात तातपुकार पितु पितु भ्रातभ्रात पुकारहीं।
लैजीव भागे युद्ध महि नहिं मित्र मित्र सम्हारहीं॥
पवमान रिपुसम बाण धावहिं असुर बाहनिकोडसैं।
बिललाय त्राहि पुकारि भागैं देखिकौतुक सुरहसैं॥

कव्यादिसत्रहिबँधाव धीरज तदपि कोउरणनहिंजुरैं ।
अवलोकि तीक्षण शर डरें अघिमहाभट भटता मुरैं ॥
दो० रसासून लखि सैनबध गहिकर तीव्र कृपान ।
झपट्योप्रभुदिशिकटु बदत भागि न पात्रोजान ॥
मेघ शब्द करि करैं प्रहारा । क्षमा राशि तेहिकरैं निबारा ॥
गदाघात कोनसि बहु बीरा । कुसुम तुल्यप्रभु बज्रशरीरा ॥
अखिल अस्त्र निर्फल भय ताके । टूट्यो गदा गर्व बलजाके ॥
तबताजिसमर चल्यौ सुरद्रोही । बिह्वलदर्प रहित अतिक्रोही ॥
ताहिपलात बिलोकि सुजाना । जयजय शब्द देवतनठाना ॥
जयजनपाल असुर आराती । जयजयमान जैतिअनुभांती ॥
सदनजाय पुनि अनी बनाई । चल्यौक्षमा जायक कुरुराई ॥
इंद्रबज्र यमदंड समाना । करत्रिशूललै रण नियराना ॥
दो० समर उपस्थित होयजड़ प्रभुहि सुनायोटेरि ।
सजगहोय संगरकरौ रह्यौ कालहै घेरि ॥
देखिकराल रूप खलकेरा । आशुबधौ सतिभामा टेरा ॥
बिहँसिश्यामसुनिप्रियसुखबानी । सहजचक्रलीन्होनिजपानी ॥
बधौ असुर असकहिपरित्यागा । दुष्टकंठ हरि आयुधलागा ॥
गिर्यौ धराधर शीश समेता । कुंडल मुकुट महाद्युति देता ॥
जयजय ध्वनिछाई नृपनाका । तजतकुसुमभृकबिपुलबराका ॥
नर नारिन मन आँनद भयऊ । तमचरनश्यौकिभवतमगयऊ ॥
त्रिपुरमोद पूर्यौ दश आशा । दुखतमनशि सुखहंसप्रकाशा ॥
मरतकाल कहिजय यदुनायक । संतबंधु थिरचर गतिदायक ॥
दो० तासुज्योति प्रभुबदन नृप गई समाइ सुहेरि ।
धन्यशब्द सुर मुनि बद्यौ देखिमुक्ति तेहिकेरि ॥
अखिलदिवौकस व्यौमअरूढ़ा । कहैंजयति हरिज्ञान अगूढ़ा ॥
तुमबिनको अतिउग्र निशाचर । मर्दत देव हेत करुणाकर ॥
तासुमरण सुनि जननी ताकी । युतनाती हरि शरण सुताकी ॥
जोरिहाथ आई रण क्षोनी । कहि जयजयतिकृपालुअयोनी ॥

आदि ज्योति प्रभुब्रह्म अनादी । बदतबेद परमारथ बादी ॥
जनहित बिरचिमनुजबपुसोहर । करत चरित्र अनूप मनोहर ॥
मायानंत अबूझ मुनिंदा । जयजनपाल सदारत बिन्दा ॥
लीलातुव अपार बिधिपूरी । कोजानै काकी मति भूरी ॥
दो० नाथदया बिनु त्रिपुरको तुवगति जाननहार ।
देवदेव सुरपूज्य प्रभु लय पालन करतार ॥
यहि प्रकार बड़ि बिनय बखानी । कुंडलछत्रआदिति हरिआनी ॥
प्रभुसन्मुखधरि कहकर जोरी । कृपाउदधि यक बिनती मोरी ॥
सुभग दंत भौमासुर सूना । शरणराखिये मानि प्रहूना ॥
कोमल अरुण बनजकर शीशा । धारिकारिय अबयाहिमहीशा ॥
अभय बसाइय दीनदयाला । सुनि बिहँसे हरिमेदिनिपाला ॥
राख्यो शरण दयो शिरपानी । अभय होहु कहअसमृदुबानी ॥
भौम नारि भौमावति नामा । बिबिधभांतितेहिकस्यो प्रणामा ॥
कहि जयजयजन आरतहारी । करियसुदया अनाथबिचारी ॥
दो० मणिगण रत्न अपार नृप धरिसिआइ उपहार ।
करिअनेकधाबिनयशुचि कीन्हिसुबाक्यउचार ॥
जिमिजन बंधु दरश दियआई । निरय पंथ ते लयो बचाई ॥
तिमिचालिपूतनिकेताहिकीजिय । यहबरबरबरबशमोहिंदीजिय ॥
गूढ़ प्रेम लखि सहजसुभाऊ । भौमसद्म गय चिंतन काऊ ॥
रोमपाटमग तेहि बिछवाये । सुभग दंतलै नगरहि आये ॥
पुंडरीक थल करिआसीना । पदपखारि पादोदक लीना ॥
सुभगदंत सबिनय नरनाहा । दीनबचन बदसुनु अघदाहा ॥
पिता पापमय बेद बिरोधी । नीति रहित दायाबिनुक्रोधी ॥
तुवसँग बैर किये फल पायो । तासुमरबमोहिंसबबिधिभायो ॥
दो० बेद बिरोधी कुपथ रत हरिजन दुखद अधर्म ।
हरिहर निंदक भक्ति बिनु मूढ़रहित शुभकर्म ॥
अपर अनेक दुष्ट पथ गामी । जीवतभले न मरे भलस्वामी ॥
तुव बैरी जो खलजग भयऊ । निजमूढ़ताबिबशनशिगयऊ ॥

जात रूप चप बन्धु समेता । रावणघट श्रुति आदि अचेता ॥
कंसादिक अपार जे नीचा । मदबश बसे ते मृत्यु नगीचा ॥
मम पितु अन्यायी जगजाना । बध्यौ ताहि नाहिंउरदुखमाना ॥
भौमावती जोरिकर भाषा । कृपापयोधि एक अभिलाषा ॥
षोड़श सहस इलाधि कुमारी । बंदिपरीं मोचिय बनवारी ॥
अंगीकृत करिपुरलै जाइय । पूरण सुयश कालथल पाइय ॥
दो० असकहि रुख लहि बोलिसब हरिसन्मुख करिदीन ।
देखि रूप जग रूपकर भईं अपनपौ हीन ॥
संज्ञा लब्धि सबन अस कहेऊ । करुणामयकलेश सबदहेऊ ॥
जस मोच्यो खल थलते नाथा । तस सेवा महँ राखिय साथा ॥
त्रिपुर कंत तजिकंत अनंता । को अबकरै सुनिय भगवंता ॥
सुभग दंत नृप प्रभुरुख पाई । मँगवाये बहु यान नृराई ॥
बहु सुखपाल पालकी बाहन । महारुचिरसुरपतिमदगाहन ॥
सकल चढ़ाईं युतहित राईं । दैबहु सम्पति अरु रतनाई ॥
सुभ गदंत शिर तब नृप टीका । करयोमहीपतिजगयशलीका ॥
सबहि संगलै चले कृपाला । अतिअनूप शोभातेहिकाला ॥
दो० बिनुप्रयास निजपुर गये जन रक्षक बिधि चारि ।
निकर उतारीं सदन महँ सुनिपुर लोग सुखारि ॥
उग्रसेन प्रति कह प्रभुजाई । बधभौमासुर सुनु भुवराई ॥
भूप सुतन कर कह्यो प्रसंगा । सुनिप्रमुदितभेनृपप्रतिअंगा ॥
पुनि प्रभु पक्षिराज चढ़िधाये । सतिभामायुत अतिसुखपाये ॥
पुरबैकुंठ गये क्षण माहीं । प्रतिथल दिखरायो चहुघाहीं ॥
तोषि प्रिया सुर पुरगेराजा । जहां इंद्रकर सुभग समाजा ॥
कुंडल दये अदिति करजाई । बासव छत्र दियो सचुपाई ॥
हरि आगम सुनि नारद आये । दरश पाय उर आनँदछाये ॥
बध्यो सुरर्षिहि श्रीअसुरारी । माधव पासजाहु सुखकारी ॥
दो० कहौजाय मांगत अहै कल्पबृक्ष सतिभाम ।
उत्तरलै मुनि बेगिकहु यतन करौ परिणाम ॥

कौतुक ऋषिगे जहँरिपुपाका। हरिसंदेश कहसुरुचिसुबांका॥
सुनिदिबीशाबिस्मितअतिभयऊ। मौनित इंद्रन उत्तर दयऊ॥
चुपकिउठ्योगानिजत्रिपयासा। हरिआज्ञातहँ करयोप्रकासा॥
इंद्राणी कह बुधिबिनु स्वामी। को यदुनाथ देव अधिनामी॥
सुरतरु दै कत दारिद लेई। निज शत्रुहिकसपतिसुखदेई॥
तुव अर्चाब्रजते जेहि मेटी। गिरिपुजाव सब बिभवसमेटी॥
मदभंज्योकर नगवर धारी। घन हारे अपयशभा भारी॥
अहहकंत तव हृदय न लाजा। श्यामहिंमित्र कहत बेकाजा॥

दो० मानि माषतिय बचन सुनि कहो ऋषयप्रतिआय।
नन्दन बन ताजि देवतरु अनत न जाय सकाय॥

बलकरि जो लै जाइहि कोई। दुखपरिणामगहिहिनहिं सोई॥
कृष्णहि कहोन ब्रजब्रजबासी। पूजा मोरिदेउ जो नासी॥
इहांबिरोध करत रणहोई। मानमहतु सबु जाइहि खोई॥
सम्मत नारिहृदय जोधरई। नीति बिरोध पुरुष सोकरई॥
उत्तर तासु आसु मुनिराई। श्री माधव सन कहाबुझाई॥
सुनासीर त्रिय सम्मत लीन्हा। मोर प्रतापहृदय नाहिं चीन्हा॥
आरत मग्न रहित बनवारी। गर्बिनके अर्भक नित हारी॥
नन्दन जाय भंजि रखवाये। पारिजातनिजप्रियाहिदिखाये॥

दो० गरुड़ पृष्ठि धरिदेव तरु चले कृष्णमहिपाल।
सुद्धि पाय अमरेशतब चल्यो चक्षुकरिलाल॥

ऐरावत चढ़ि सुरगण संगा। समरहेत आवा अतिबंगा॥
नारदकहा ताहि समुझाई। काबुधि हीनभयसि सुरराई॥
हरिशत्रुता योग शिव ताता। बृंदारक पति नहिंसुनुबाता॥
जानि मूढ़ता कृत मत नारी। जोपै प्रबल रहेउ बृत्रारी॥
कसन इला सुत रण महँ जीता। केहिकारण तवभयउसभीता॥
कुंडल छत्र सहज लैगयऊ। अबका तोहिआनबलभयऊ॥
त्रिपुरजीति हति असुरकराला। दिये छत्र कुंडल सुरपाला॥
तासुसमर है है जयकैसे। जयति शशा हरियुद्धनजैसे॥

दो० भूलि गयो ब्रज की बिनय तू मतिमंद सुरेश।
सुनि चेत्यो सुरनाह उर कहभल कहत नरेश॥
शोचि बिचारि श्याम प्रभुताई। मंदिरगयउ बहुरि सुरराई॥
प्रभुसानंद गये निज धामा। लखिहरषे सुरतरु नर बामा॥
कल्पबृच्छ सतिभामा धामा।शोभितकियोसमुदश्रीश्यामा॥
पुनि षोड़श सहस्र उद्वाहा। कस्यो बेद बिधिसुनुनरनाहा॥
सबके भवन बास प्रभु करहीं। सुनिबुधहृदय नसंशयधरहीं॥
पटरानिन संगनेह बिशेखी। भ्रमत बुद्धि हरि कौतुक लेखी॥
जेहिबिधिभौमादिक बधकीन्हा। सोचरित्र नृपहौं कहिदीन्हा॥
द्वारावति नितनव उत्साहा। छोणिपहोत सबहिसुखलाहा॥
दो० यहि प्रकारलीला अगम करत नित्य भगवान।
मंगल परिहरि तासुपद कस भूलत बिषयान॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांभौमासुरवधवर्णनो
नामषाष्टितमोऽध्यायः ६०॥
दो० मंगल तरु शाखा बढ़त निज बीजहि के तूल।
पय सींचेन सुस्वादज्यों सोनेके फल फूल॥
जाकी मति में शुद्धता मंगल परै न जानिं।
ताको शिक्षा करतही मनमें होत गलानि॥
जल उज्ज्वल खरसूनको नित्त न्हवायो ग्वाल।
बच्छभयो नहिं कोटिकृत तिमिमूरुख तिहुंकाल॥
यहिकारण कबिबुध सुनौ तजौ मूढ़ उपदेश।
ध्यावो राधारमण पद जेहिते मिटै कलेश॥
आन प्रकारन मुक्तिपद लहौतात यहि लोक।
आराधत हरिपद सरज इहु बिधि होहुबिशोक॥
सुन सैमुखी ग्राम नरनाहा। एककाल प्रभुसहित उछाहा॥
पद्मचक्षु द्युतितन जलखानी। अहिरकिरीट शीशसुखदानी॥
उर बनमाल पीतपट वासा। लखि प्रभुरूप रूपमदनासा॥

तीनिभुवन शोभा की खानी। प्रभुभा भूपन परत बखानी॥
चित्रशाल जहँमणिगणभासी। चहुंदिग सोहतबस्तु सुवासी॥
पलंग मनोहर बरणि न जाई। तहँ राजत सानंद यदुराई॥
सँगरुक्मिणी महाभा दामिनि। षोड़शबिधिशृंगारितभामिनि॥
शुचि[1] स्नान[2] निर्मल पट[3] सोहै। जावक[4] पगनखपतिमनमोहै॥
दो० बेणीबंधन[5] शीश कच मांग सिंदूर[6] सोहाय।
भाल[7]खौरिभादाअधिक तिल[8]कपोलसुखदाय॥
कश्मीरी[9] मर्दन सब अंगा। मेहँदी[10] पगसोहै दुख भंगा॥
कुसुमा[11]भरण सुहेमा[12] भूषण। लवंगा[13]दि भक्षण भ्रम दूषण॥
रद मंजन[14] ताम्बूल[15] ससामा। चष[16] अंजन ये षोड़श नामा॥
वाक्य हास्यमृदु चाखि सनेहा। इनते अधिक नारि कृतएहा॥
श्रीरुक्मिणि तन सोह निकाई। यक रसना नहिं गायसिराई॥
रुक्मकरणबसुमृग शिशु नैना। हरिकटिइभगतिशुभपिकबैना॥
उपमा त्रिपुरखोजिमनहारा। रुक्मिणिसमरुक्मिणिहिबिचारा॥
एक सेज शोभित द्वौनीके। रमाबिष्णु अहितल्पगफीके॥
दो० बिहँसिरुक्मिणी प्रतिबद्यो योंजगमोहनश्याम।
एक बारता मोरिसुनि पुनि उत्तर देबाम॥
रूपवती गुणमय तू नारी। जनु निज हाथ बिरंचिसँवारी॥
पुनि भीष्मकतनयाबुधिधामा। रतिलजात लखिरूप सुबामा॥
बलनिधि अतिप्रताप युतभूपा। जग शिशुपालस्वरूपअनूपा॥
जेहि भयभीत होत रिपुपाका। कुछ चिंतमन मोहिंहै बांका॥
जासु मित्रडर यहिथल आये। बहुबलखानि नपारिहिलखाये॥
ताहि तिलक दै भूप बुलावा। व्याहनहेत तोहिंचलिआवा॥
तुम तजिलोकलाजकुलकानी। बिप्र इहां पठयो शुचि ज्ञानी॥
पितु भ्राता आज्ञा तुम नासी। सुबरपान नहिं जीवहुलासी॥
दो० याचक मुख कीरति सुनी हमन तुम्हारे योग।
जरासन्ध शिशुपालबल सकलसराहतलोग॥
प्रबल धनुर्द्धर द्वौ नरनाहा। समर बीरहौं गा तेहि ठाहा॥

मानभंजि भूपनकर भारी । बरबस लैआयों तोहिं नारी ॥
तव प्रण समुझि न इच्छामोरी । खलबाहनी बिबिधबिधिमोरी ॥
जो भारी पद चहौ सयानी । खोजौ कोउनृप शीलसुज्ञानी ॥
निज अनुरूप बरौ कितनाही । दोषन मदकलगतिकृतयाही ॥
हरिमुख बचनसुनतअकुलानी । बिह्वल धरणिभुषी बिनुपानी ॥
ऊरध श्वास महासुधि हीना । बिकलितकुंतलखपभाक्षीना ॥
बदनोपर सोहत लटबाला । चंद्र अमी जनु पीवतकाला ॥
दो० देखिदशा बिकलित महा उठ कृष्ण अकुलाय ।
जान्यो चाहत तजनतन तन भुजचारि बनाय ॥
चतुरायुध आभादा कर में । मेघबरण द्विजपदशुभ उर में ॥
करगहि तेहि उछंग बैठाई । पवनकस्यो बहुबिधि यदुराई ॥
यककर तासु सम्हारत केशा । भये प्रेमबश सुनौ नरेशा ॥
अमित चेष्टा करत कन्हाई । कहतबनत नहिं बुद्धिसकाई ॥
पोछत पीताम्बर कर आनन । उरकरधरत कतहुंखलभानन ॥
बारबार प्रभु ताहि जगावत । अंतरयामी दुबिधा भावत ॥
यहि प्रकार कछुकाल सिराना । रुक्मिणितन आवातनप्राना ॥
धन्य धन्य हित प्रिया प्रबीना । जीवन तोर मोर आधीना ॥
दो० बचन ब्यंग संज्ञातजी हास्य बिचास्यो नांहिं ।
बुद्धि भवन निर्बुद्धि कृत कसकीन्ही यहिठाहिं ॥
अबधरुधीर हास्य रस जानी । करु सम्हारबपुसुनिमृदुबानी ॥
लोचन बनज खोलिलखुमोहीं । अमित प्रसन्न भयोंहौं तोहीं ॥
बिहँसि बोलु मम चिंता जाई । बिनु बोले दुख नाहिं नशाई ॥
चेती अतन मातु सुनि बाता । नैन पसारि दीख प्रभु गाता ॥
हरिउछंगलखि आपु लजानी । उरसंकोचि उठी सुनु ज्ञानी ॥
द्वौकरजोरि चरण शिर दयऊ । पृष्ठि कमल कर परसतभयऊ ॥
धन्य प्रेम मूरति मम प्यारी । हंसी सत्य निज जीवबिचारी ॥
क्रोधचोभ द्वौ हास्य अयोगा । तेहिते तजौ करौ शुभ भोगा ॥
दो० कहा बन्दि पद सुनौ पति त्रिभुवन पतिपतिदानि ।

बद्योन तुम्हरे योग हम नाथ सत्य तव बानि॥
कमलाकंत बन्द अज शंकर। द्वैत रहित कारक त्रैशंकर॥
समता बिनु अयोनिअजनामा। आदि अंतबिनुसबगुणग्रामा॥
मैं प्राकृती अधम पुनि नारी। तुम्हरे योग न सांचु मुरारी॥
मुनिवरबदत अकुलभगवाना।सबहित्यागिकीजियपदध्याना॥
जे मतिमंद भ्रमत संसारा। परिहरि कजपगरतसुखसारा॥
जोप्रभु बली नरप बहु कहहू। यहअनुचितकसगुरुतालहऊ॥
मोरी जान असुर आराती। प्रबल न तुव तजितेरहजाती॥
शासन पाक अयोनीशाना। तवपदकरत त्रिसंधिकध्याना॥
दो० बर बरदायक देवबर तव प्रताप जगदीश।
बहुतजन्मकरितप कठिन तबभवहोतमहीश॥
राजत श्रीमद बशनृप होई। जपतप भजन देत सबुखोई॥
नीति रहित कृत कर्म पसारा। अंत नरक पदको अधिकारा॥
निज कृत पूरब कर्म नशावत। सुमति भ्रष्टहुं ओर कहावत॥
यहि कारण जग क्षुद्र नृपाला। एकहि ओर होत प्रतिपाला॥
तव गति सदा एकरस स्वामी। सुजन हेत जन्मत रदगामी॥
बहु अवतार धरहु भव आई। धराभार भंजौ यदुराई॥
खल दल हरौ स्वधर्म प्रचारौ। बिबिधप्रकार दासनिजपारौ॥
जापर रावर दया अपारा। सोपद कंज करत आधारा॥
दो० धन नृपता यौबन बिभव रूप पाय मद होत।
दया धर्मशात तप भजन तवभागतगति पोत॥
अनुचित जानि दरिद्र निवासा। करत नाथ तुम तासुअवासा॥
कष्टबिवश नित ध्यावत नाथा। तुवपदसाबिनयमाणिशुभगाथा॥
दारिद बंधु दीन यहि कारण। देतन धनचाहत जेहितारण॥
पुनिकह प्रभु काशी अधिकारी। इन्द्रदवन तेहि सुताढुलारी॥
अम्बा नाम कर्‌यो जस कामा। तसमैं करि न सकतपरधामा॥
स्वयं कंत तजि भीषम संगा। आई भयउ मान कर भंगा॥
सुरसरि सून बर्‌यो नहिं ताको। गई तासु पहँ बांच्योजाको॥

तेहि दुरिआइ दयो तजिनेहा। गङ्गा तीर करयो तप तेहा ॥

दो० आराध्यो शंकर चरण करि तप नाथ महान।
भये प्रसन्नित शंभु तेहि बर दीन्हो सह मान ॥

बरप्रताप त्रियते नर सोई। जानत जेहि हित भईघमोई ॥
भीषम बधकरिहै प्रभुजानत। मौनहेत केहिक्योंनबखानत ॥
सोनहोइहै मोहिंते स्वामी। कृपापयोधि बिहंग बरगामी ॥
अरु यहबद्योकिसुनिममगाथा। याचकमुखकीन्होमोहिंनाथा ॥
तुव कीरति गावत बंदीजन। शिवबिरंचि शारदसानँदमन ॥
दयाधीश सुनि बिप्र पठायो। बहुदुष्टन कहँ स्वर्ग बसायो ॥
आरत जानि सेवकिनि कीन्ही। महाप्रशंसादासिहि दीन्ही ॥
ज्ञान प्रभाव जान गति मोरी। धन्य प्रमोदिनि नेहकिधोरी ॥

दो० प्रीति बश्यहौं सर्बदा वेद बदत यह जानु।
मन मानी तूबाम अति प्रीति अलौकिकठानु ॥
प्रभुबाणी सुनि मोदमय रुक्मिणि भईनृपाल।
मंगल सेवा महँ लगी तू भजु मोहन लाल ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांश्रीकृष्णरुक्मिणीहास्यबिबाद
बर्णनोनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

दो० बिनुजाने ब्रत दंड तन तीरथ दुख को रूप।
जप तप फलद न होत कोउ यह सिद्धांत अनूप ॥
तिलकदिये मालालिये मुक्ति न करतल होत।
बिनुजाने हरिनाम वय चहुंदिशि भ्रमधी पोत ॥
यहि कारण तजि द्वचितई भजिले मोहनपाद।
जीवन फल जीवतलहै अंत मुक्ति मरयाद ॥
अलसअनखबशसुजनकोउ कैसेहुध्यावैश्याम।
पावै भव भय बिभवयुत बहु आनँद सुरधाम ॥
वेद बदत यह सत्यमत मूरुख बूझत हैन।
जग बीथिन भरमत फिरत जानत जीवपदैन ॥

मुनिपुनिभएयोसुनौनरनायक। षोड़शसहस आठत्रियलायक॥
तिनसंगरमणकरतकमलापति। किमिबिस्तारबदै मंगल मति॥
सेवा सुरुचि करैं बसुरानी। प्रहर गूढ़ या बिनय बखानी॥
कोउ उबटैकोउ प्रभुहि न्हवावै। कोउब्यंजन श्रुतिभांतिबनावै॥
कोउ ताम्बूल सप्रेम खवावै। कोउचुनिबस्त्र सुरुचि पहिरावै॥
कुसुम माल कोउ गूथै राई। समय समय पहिरावै जाई॥
कोउ गुलाब चंदन सुरप्यारी। चरचै अंग अंग सुखकारी॥
कोउ सेवत पग अति मुदपाई। महामोदमय नारि अथाई॥
दो० सकल भांति सुख कृष्ण कहँ देवैं नारि नृपाल।
आननारि यहि भांतिहीं करैं सेव तिहुँकाल॥
दश दश सूनु सबन के भयऊ। बर बर धाम लोक यश छयऊ॥
महावृद्धि यदुकुल की राजा। कहतबनतनहिं अद्भुतसाजा॥
एकलक्ष यक षष्टि हजारा। भये कृष्ण के सुभग कुमारा॥
यकयक दुहिता प्रतितियजाई। सुनुमहीपप्रभुयश चितलाई॥
सब सुन्दर सबगुण गण रासी। आनन प्रभा चंद्रमा भासी॥
कोसमरथ सब नाम बखानै। एकश्याम सबकहँ पहिचानै॥
सुनिसमृद्धि यदुबंश अपारा। रुक्मकीन्हनिजहृदयविचारा॥
कहा काल त्रहि सम्मत जाई। चंद्रबदनि ममसन यह आई॥
दो० चारुमती जोहै मगी कृत ब्रह्मा सुत संग।
देहौं ताहि न कोटिकृत यह भावत मम अंग॥
करौं स्वयंबर भूप बोलाई। यहिमिस दरशदेहिं यदुराई॥
ससुतरुक्मिणिहि बोलुनिकेता। पठै पत्र निज बास सचेता॥
आज्ञा कंत केरि तिय पाई। पत्र द्वारका दयो पठाई॥
रुक्मिणि पाय स्वबंधु सँदेशा। पूछ्यो तुरतबोलि हृषिकेशा॥
आज्ञा पाय यान चढ़ि चाली। पुत्रसहितसुमिरतअहिमाली॥
शत्वर भूप भोजकट आई। निरखिरुक्मबहुबिनयसुनाई॥
सादर करि दंडवत सनेहा। निजभगिनिहि लायोनृपगेहा॥
रुक्म बधू लखि हिय हुलसानी। बंदिचरण बोली मृदुबानी॥

दो० जा दिन ते भा हरण तुव तबते दर्शन आज ।
पायों पूरण पुण्य बश भे दयाल ब्रजराज ॥
सकलभांति करि सिष्टाचारा । प्रीति बिवर्द्धयों बड़व्यवहारा ॥
समयपाय यकदिन असभाषा । मोरे हृदय पर्म अभिलाषा ॥
जेहि बिधि दायाकरि मम गेहा । आइउ सहजै मानि सनेहा ॥
तेहिप्रकार सुनि बिनय हमारी । चारुमती मम सुता पियारी ॥
निजसुतसँगसम्बंधित कीजिय । यहिप्रमोददुहुँबिधिसुखदीजिय ॥
कह्यो नीक जग सुखदाबानी । सखी अहै परिणामगलानी ॥
बंधुबिरोधी सत्य उपाधी । अतनतातभवबिदितबिषाधी ॥
कलह कठिन जानत सबकोई । सफल न होत मोद मयसोई ॥
दो० कहत आनकृत आनहीं रुक्म रीति यह आहि ।
तेहि अवसर आयो रुक्म बद्यो पूछि चरचाहि ॥
कछुन अंत अब होइ उपाधी । मतिनिजमैंनिजकर्तलसाधी ॥
श्रुतिभाषत भगिनी सुतलाहिय । दक्षिणदेशस्वसुताबिवाहिय ॥
तुवगृह गुर्ज्वर याम्य प्रदेशा । यामहँ कछुनहिंभयलवलेशा ॥
रूप राशि सुत दुहिता योगा । यह उद्वाहन निंदहिं लोगा ॥
कृष्णबैर पूरुब बिनशाऊं । नवसम्बन्ध बिबिध मुदपाऊं ॥
कीन्ह स्वयंबर सुरुचिबनावा । बहुभूपन कहँ सुद्धि पठावा ॥
अमित नृपाल भोजकट आये बलानिधान सबभांति सोहाये ॥
जुरी स्वयंबर महिप अथाई । परिपूरणनहिं बरणिसिराई ॥
दो० तन शृंगार करि भूपसुनु गे प्रद्युम्न यगठाम ।
अवलोके नरपति अखिल सायुधबहु गुणग्राम ॥
सबके हृदय ब्याह उत्साहा । यथा योग राजत नरनाहा ॥
जैति दाम कन्या कर सोहै । देखिरूप सुर नर मन मोहै ॥
मध्य सभा निरखत चहुं आसा । पै न दृष्टि ठहरत कहुंपासा ॥
तदाकाल लखि रूपनिधाना । मोहित सुता भई बिनुमाना ॥
कंधर श्रक मेल्यो अतुराई । आश रहित भे सब नरराई ॥
करत परस्पर सम्मत राजा । यहि समाजभाबड़ाअकाजा ॥

यदुबंशी अतिभे बरियारा। चहुंदिशिदेखिपरतअधिकारा॥
आजुसकलमिलिरणमाहिभिरहू। कन्या छीनि पराजय करहू॥
दो॰ रुक्म देखि सानंद नृप सुत तनया द्वौ लाय।
ब्याहवेदबिधिवत कस्यो निज मंदिरमहँजाय॥
बड़ आनंद रुक्म मन छयऊ। दायज भूप बहुत बिधि दयऊ॥
रुक्मिणिसानंद चलीं निकेता। पुत्रबधू युत सुनु कुरुकेता॥
मग रोक्यो बहु भूधर आई। मख शाला जे रहे लजाई॥
प्रबल अराति देखि तेहिकाला। अस्त्र शस्त्र लीन्हे भ्रूपाला॥
महा धनुर्द्धर कृष्ण कुमारा। को समरथ पावै रणपारा॥
अल्पकाल महँ सब बिचलाये। महा मारु लखि रसपपलाये॥
मंगल मोद सहित यदुराई। गये द्वारका युत कुशलाई॥
आगम जानि अखिलपुरबासी। हित बांधवकबि बिप्रउदासी॥
दो॰ अगवानी करिलैगये नृप आलय कहँ तात।
बजत बधाई नगर बहु किमि सुख बरणो जात॥
बिपुल काल बीते मुद एही। गायकहैं असदृढ़ मतिकेही॥
जन्म्यो यक प्रद्युम्नके पूता। प्रभु ढिगसुधिकीन्ही कोउदूता॥
सुनि हरि गुरु ज्योतिषी बोलाई। पौत्र जन्म घटिका समुझाई॥
ज्योतिष मत पञ्चांग बिचारी। अति प्रमोदमय गिराउचारी॥
शुभ अनिरुद्ध नाम प्रभु धरहू। जातकर्म नाना बिधि करहू॥
पुर मंगलाचार प्रतिधामा। उत्सव पुत्र किधौं सुखसामा॥
दुहिता पुत्र जन्म जब सुनेऊ। कछुदिनबादिरुक्ममनगुनेऊ॥
लिख्यो पत्र कृष्णहि सुखपाई। तिलक बस्तु दीन्ही पठवाई॥
दो॰ ब्राह्मण आयो श्याम पै लैसुवस्तु अभिषेक।
देखि कृष्णयुत ज्ञातिजन उठिकीन्हा पदटेक॥
बहु सत्कार सहित सन्माना। करि आसीन पूछ भगवाना॥
क्षमाराशि केहिकारण आये। कौन नगर गृहकासु पठाये॥
ग्राम भोजकट मोर निवासा। रुक्मभूप पठवा तुव पासा॥
तूव सुत जात तासुसुत जाता। यह सम्बन्ध जगतसुखदाता॥

असकहि पत्र श्यामकरदीन्हा। पढ़िबोलाय बांधवमतकीन्हा॥
सम्मत स्यौं लीन्हो अभिषेका। बिप्रहि दानदीन्ह सबिवेका॥
द्विज पठाय आये बलपासा। तिथिबिवाहकरकह्योप्रकासा॥
युगल बंधु गय भूपति पाहीं। बह्यौ कार्य्य बिस्तरयुत ताहीं॥
दो० नृप आयसु लहि बंधु द्वौ कस्यो बनाव बरात।
ज्ञाति बंधुहितु संगलै सकल चले यदुजात॥
पुर समीप जब गई बराता। समाचार लहि भीष्मकताता॥
नृपति कलिंगादिक सँगलाई। आवतभयो समुद अगवाई॥
शुभथल सबहि दीन्हजनवासा। जहां न कौनौभांति कुपासा॥
षटरस चारिभांति ज्योनारा। सादर सबहि जिमायभुवारा॥
लग्न समय दुहिता दै दाना। सबिनयकीन्हेसिबड़सनमाना॥
दायज अकथ दयो को गावै। रसना एक पार नहिं पावै॥
भीष्मक नृपमनजानि उपाधी। गयो जहां राजत अबिषाधी॥
करि दंडवत श्याम प्रति कहेऊ। भयउबिवाह अखिलरसरहेऊ॥
दो० अब न बिलंबिय तातह्यां शीघ्रहि जाइय धाम।
रुक्म मित्र आये सकल रारिहोय परिणाम॥
रुक्मिणिपास रुक्म उतआवा। तबतिननिजभ्रातहिसमुझावा॥
बिभु बैरीपति तुव हितु आये। चारिओर सैनायुत छाये॥
जो सुलोक भलिचाहौ लोका। इतउतहैं अबआखिलअशोका॥
तौ हमरे सँग पुरलगि चलहू। जानिबूझि जनिबूझिहिछलहू॥
कत चिंतमन करौ बिनुकाजा। बिदा करतहौं पाहुन राजा॥
पुनि जसकहौ करौं तससाजू। सुखपावै जेहिसकल समाजू॥
असबदिगयउ महीपन पासा। जो पाहुन आये चतुरासा॥
कोउ नृप रुक्महि कहा बुझाई। बड़ दायज दीन्हो तुमभाई॥
दो० पैन कृष्ण मान्यो कछू अभिमानी यदुजात।
यह अचरज संभ्रममहा कहत बनत नहिंबात॥
दूसर प्रथम मूशली पानी। तोहिंअपतिकीन्होसुनुज्ञानी॥
धृकक्षत्रिहि निज रिपु बिसरावै। अजय पाय पुनिमित्रकहावै॥

सुनि सकोप भा रुक्म अपारा। तबकलिंग असबचनउचारा॥
कछु नहिंकाम कृष्णसन आही। बलदाउहि बोलौ यहिठांही॥
जूपखिलाय हरौ धन ताको। नाशौ गर्ब वाहिमद जाको॥
सम्मत तासुरुक्ममन आवा। बिधिबिपरीत ज्ञानबिनशावा॥
आतुर रुक्मरामतट आयो। भूपनकर सँदेश सुनायो॥
हरि रुखपाय चले हलधारी। बिधिकर्तबनिजहृदयबिचारी॥
दो० महिपसभा आये जबहिं उठे सकल शिरनाय।
करि आसीन बहोरि बद सुनौ मनोरथराय॥
जूप खेलिये हमरे साथा। कहतबनतनहिंबचनअगाथा॥
हँसि कह जूप कर्म अति पोचा। खेलिय जो तुम्हार मनरोचा॥
पन्सासारि नृपति मँगवाई। जुरि बैठी सबभूप अथाई॥
खेलन लगे रुक्मबलदाऊ। जीत्यो रुक्मभूप दशदाँऊ॥
अखिल सम्पदा हलधरहारे। बैठे राय कछुक मन मारे॥
व्यंग बचन कलिंग कहिहँसेऊ। राम हृदय लज्जा नृपबसेऊ॥
मुद्रापुनि दशकोटि लगाये। रुक्म सगर्ब मोद उरछाये॥
ते जीते जब मूशलपाणी। तब मिथ्या बोले नृप बाणी॥
दो० युद्ध जूप क्षत्री लखत ग्वाल न जानत ताहि।
सुनत कटुक बाणी नृपति बलकोपे तेहिठाहि॥
क्रोधमरीचि हृदय दवबाढ़ी। धीरजधरयो करयोबुधिगाढ़ी॥
सप्त अब्जधन बहुरि लगायो। जैतिपास हरिके कर आयो॥
दुष्ट समाज तदपि नहिंमाना। रुक्म जीति सबकरत बखाना॥
बाढ़ि अनीति लखि भैनभबानी। हारयोजूप रुक्म अज्ञानी॥
नृपसाखी असत्य सबदेहू। धर्म बिहाय दुरित कसलेहू॥
बाक्य सुबर्त्त सुनत बलरामा। बद्यौ समर्ष बचन तेहि ठामा॥
बैरभाव नहिंतज्यो सगाई। अबतौ रुक्म मृत्यु तबआई॥
पाप पुण्य परिहरि जगकानी। बधौंतोहिं सुनुरे अज्ञानी॥
दो० सबके सन्मुखही हत्यो रुक्महिं श्री असुरारि।
बांध्यो बहुरि कलिंगको लीन्हो दंत उखारि॥

आनहु नृपनभगाय के बल आये हरिपास।
जूप कर्म अरुरुक्मबध कीन्हो सकल प्रकास॥
सुनिहँसि सब कहँ संगलै गयेद्वारका श्याम।
उग्रसेन आदिक सकल मुदित भये गुणग्राम॥
मंगल बिधि लिखनी कठिन मिटैन कोटि उपाय।
यथारुक्म मास्यो गयो तू भजु यादवराय॥
इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांअनिरुद्धबिवाहरुक्मबधबर्णनो नामद्विषष्ठितमोऽध्यायः ६२॥

दो० इंद्री मन साधेनहीं तिलक लगाये शीश।
साधु कहावत भक्तभव मिथ्याबाद बगीश॥
दुरित सकल मनमें बसत ऊपर ज्ञान बखान।
कपटी अन्यायी जगत कलिसुभक्त परमान॥
यहछल चलिहै लोकमें हरिपुर है है न्याय।
छलकारी अरु दुर्मती दंड पाय पछिताय॥
तूमंगल तजि दुर्मतिहिभजु निजआतमानित्य।
अंतर प्रेम प्रतीति सों मुक्त होयगो सत्य॥
अयवाराधाबल्लभहि ध्याउ त्यागि दुर्भाव।
जीवत सुखपावै घने अंत सुपुर शुभठाव।
अबसुनुनृप बर रुचिर कहानी। ऊषा ब्याह कहौं मुदमानी॥
ब्रह्म बंश कश्यप अवतारा। कनककस्यपतासूनुदुलारा॥
बलनिधिसमरअजितजगजाना। नरहरितनतेहिबधभगवाना॥
भक्त शिरोमणि तेहिसुतभयऊ। यशप्रहलादजगतनृपछयऊ॥
नाम बिरोचन ताकर बालक। महाप्रतापी रिपुगणशालक॥
तिनकर सूनु भयउ बलिभूपा। पुण्यरूप जेहिलोकअनूपा॥
बहुमख किये उड़्यो सुरपाला। बावनबपुतब छल्योगोपाला॥
नष्टयज्ञ पाताल बसायो। बाणासुर तेहितनय कहायो॥
दो० बलसागर नागर नवल जेहि सम कोउ न लोक।

शोणितपुर में बसत सो बर महिपाल अशोक ॥
नित कैलास जाय हर सोवै। सात्विकदानाबिबिध बिधिदेवै ॥
ब्रह्माचार धर्म शुचिधारी। गोजित रहै सदा मन मारी ॥
यकदिन पूज्य प्रेम बश होई। लाग मृदंग बजावन सोई ॥
नृत्यहि शिव गुणगाय अनेका। तजे दुष्ट मेधा सबिवेका ॥
ताल तरंग शंभु सुनि जागे। गिरिजायुतआये तेहिआगे ॥
भोलानाथ स्वडमरु बजायो। नृत्य कर्म प्रिययुतमनलायो ॥
बिबिध ताल बाजी गिरि ऊपर। कोअस गान जान नृपभूपर ॥
मन प्रसीदि तन रोम प्रसेदा। शंकर शंकर शंकर खेदा ॥
दो० कह्यो बाण प्रति मग्नभो पुत्र तुम्हार गान ॥
जो इच्छा तव जीव महँ मांगु सोइ बरदान ॥
आरत बिनय बद्यो असुराधी। पुनिकहबचनसुनोनिर्ब्याधी ॥
प्रथमअमर करि दीजियस्वामी। कृपाउदधितव चरणन मामी ॥
नृप शिरमौर होउ जग जीता। त्रिपुरनकोउकरिसकैसभीता ॥
एवमस्तु शिव कहि पुनिभाषा। मोरे हृदय अपरअभिलाषा ॥
भल बाजे तूसुरुचि बजाये। अतिबिनीतिसुतममनभाये ॥
बिनु यांचे सहस्र भुज दीन्हा। अजर अमरतोकहँहौंकीन्हा ॥
निरभय निवसौ जाय निकेता। अचल बिभव भूजोसहचेता ॥
महा मग्न मन बाण नृपाला। परिक्रमा शुचिकरयोबिशाला ॥
दो० लहि आज्ञा दंडवत करि आयो अपने धाम।
ध्यावै छारी चरण शुभ मुदमय आठौ याम ॥
देवासुर नर नाग समेता। जीते सब कहँ सहित निकेता ॥
निजपुर चहुंदिशि कोटबनायो। सदाचार श्रुति सुतयुतभायो ॥
करै अकंटक राज अछोभा। कोकबि बदै बिभवकी शोभा ॥
संगरयोग तासुपुर तीनी। रच्योनकंजसुतभुजबलभीनी ॥
फरकहि अरु सहराय अपारा। बाणासुर हेरै श्रुतिछारा ॥
निजमन कहै भिरौं रण कासों। पूजैयुद्ध आश मम जासों ॥
कबहूं करन अद्रि गणधरई। कंदुक केलिमोलि नभकरई ॥

नग नग मर्दत चूरण गिरई । देश बिदेश बलितबलाफिरई ॥
दो० जब न जुरयो संग्राम जग कोउ समरथ रण धीर ।
तब चित शोच्यो असुरपति भई भुजा बलपीर ॥
अबपुनिहौंशशिमौलि मनाऊं । निजचिंतमनसकलकहिगाऊं ॥
अस बिचारिनृपगा कैलासा । हरसन्मुखकियबिनयप्रकाशा ॥
शूलपाणि सुर शिरमणिनाथा । सुनियदासदुखजानिअनाथा ॥
पौरुष मिलित दयउ बहुबाहू । समर योग पाऊं नहिं काहू ॥
कासन देव करौं खताई । बेगि कृपानिधि कहियबुझाई ॥
शोचिनाथ भव सुभट बताइय । जासनसमरभूमि सुख पाइय ॥
कालग्राम स्वर्भुव पाताला । संगरहित खोज्योंशशिभाला ॥
मिला न खग्ग प्रहारण कोई । मम सन्मुख मंडन कृत जोई ॥
दो० यहि कारण जस बलदयो तस कीजिय संग्राम ।
होय मनोरथ सफल मम कृपाराशि सुखधाम ॥
जोपै अनुचित होइ गोसांई । अपरबीर कोउदेह बताई ॥
अब न समरबिनु धीरज मोहीं । सत्यकहौं दायानिधि तोहीं ॥
बिहँसे शंभु सुनत तेहिबानी । अरुकछु उरमहँ लागगलानी ॥
खलपालन श्रुति निंदितअहई । जस यहदुष्ट मोर चित दहई ॥
सेवक साधजानि बरदयऊ । बरबस समर उपस्थित भयऊ ॥
नीचबड़ाई पावत जासन । प्रथमहिंरारि करत जड़तासन ॥
चतुर सुजानन नीचहि पालै । वृंजिनदानि लखितीनोंकालै ॥
अहंकारतरु यहि उरजामा । नशैबेगि नतदुख परिणामा ॥
दो० निजकर निहतत दोषहै सेवक सुत श्रुति रीति ।
कहत बिबुध सज्जन सकल जबलगि कृतन अनीति ॥
जानि अतुराय धीर धरु जीवा । बरबस बरबस भो बल सीवा ॥
शत्रु तोरबीते कछुकाला । उपजिहि कृष्णदेव प्रतिपाला ॥
तदा काललगि बिकलन होई । गर्बतोर भंजैगे सोई ॥
भा प्रसन्न सुनि विधुधरबानी । बोल्यौ बचन जोरि द्वौपानी ॥
अब अवतारिहि पुरुष प्रतापी । बदियदयाकरि अतनसतापी ॥

जन्मतासु ह्वै कौन प्रकारा। जनिहौंसोप्रभुकहिय बिचारा ॥
तब हर एक ध्वजातेहि दयऊ। कछुरुट धूरजटी उर भयऊ ॥
निज निकेत यहि बांधौजाई। कस्यौ सचेत सदा रखवाई ॥
दो० निजबश जब महितल परै जान्यौरिपु अवतार।
सुनि समोद ध्वज हाथलै बंदि चल्यौ तेहिबार ॥
भवन आय ध्वज मंदिर बांधी। अहिगौरी शिवआज्ञा कांधी ॥
कहै मनाय देव नितबाना। कबउपजिहिममरिपुबलवाना ॥
कछुक काल बीते नरराई। बाणावती कन्यका जाई ॥
सुनत बाण ज्योतिषी बोलाये। बिशदासन सादर बैठाये ॥
सुताजन्मकर समय बतावा। सुनि द्विजराज पर्म सुखपावा ॥
खग तिथिबार भाल युतयोगा। बेद सहित पञ्चांग सयोगा ॥
लग्नेष्टित करि द्विजबर बोला। ऊषानाम महिप आडोला ॥
सकल सुवर्त्त रमण शुभथाना। यहिकर परै नृपाल सुजाना ॥
दो० सुनि बाणासुर मुदित मन बहुबिधि दीन्हेदान।
बिदाकिये खगबर सकल करि सबबिधि सन्मान ॥
पुनि मंगलामुखी बुलवाई। ते गावहिं शुचिताल बजाई ॥
प्रतिदिन आनँदहोय नवीना। पावहिंदानबिपुल द्विजदीना ॥
जिमि जिमिवृद्धत कन्या सोई। तिमि तिमिबाणप्रफुल्लितहोई ॥
जबनगाब्द वयताकर भयऊ। बिद्या हेत पठय तब दयऊ ॥
गिरि कैलास सखी के संगा। ऊषा गई मुदित प्रति अंगा ॥
भर्गसबाम राज जेहि ठाई। कहा सुता तहँ शीश नवाई ॥
मात पिता शिव गौरिगोसांई। यह दासी सेवा लगि आई ॥
विद्या दान देहु सबिचारी। जगत विदित दाया कृपारी ॥
दो० आरत लखि शंकर प्रिया करि आदर सन्मान।
बिद्यारंभ कराइयो कहि गणपति भगवान ॥
गिरि कैलाश निकट पुरताको। बिदितभुवन बाणासुरशाको ॥
नित प्रति जाय पढ़ै अरुआवै। दूसरि ओर न चित्तलगावै ॥
अखिल पुराण शास्त्रपढ़िलीने। तालयंत्र भव बामादीने ॥

गान कला उपमा बिनु जानै । मुनि गंधर्व लाज उर आनै ॥
हरसँग यक दिन बीण बजावा । शुभसांगीत राग तेहि गावा ॥
आगम जानि महेश कृपाला । हिमजाताप्रति कहा हवाला ॥
जास्यो काम श्याम उपजावा । महारूप मय होंलखि पावा ॥
इमि बतरात गये जहँ गंगा । न्हायशंभु सुख लहाअभंगा ॥
दो० अभरण पहिरावत भये गिरिजहि मोद बढ़ाय ।
सुख पूरण ईशान प्रभु सुनु धराधि मुद पाय ॥
अति आनंद मग्न मृड होई । डमरु बजावत भे भ्रम खोई ॥
तांडव नृत्य नचे सुरसाई । युत सांगीत गान श्रुतिभाई ॥
प्रियहि रिझावैं कंठ लगाई । निरखत ऊषा दृष्टि दुराई ॥
मदन दाह उपज्यो उर तासू । कंत चाह मन मिटा हुलासू ॥
जो ममहोत भर्त्त प्रिय प्राना । करतिउं सुख हर गौरिसमाना ॥
गौरीउडगरहित छबि छीना । तसबिनुपतिअबलाद्युतिहीना ॥
अंतरगति अनुमानि मृडानी । बोलिसहित ऊषहि कहबानी ॥
तवपति मिलिहिस्वप्नमहँआई । बीते कछुक काल यहिभाई ॥
दो० तासु खोज करवायकरि मिल्यो मोदमयबाल ।
जनिचिन्तनमनमेंकरौ इमिबिधि लिखतवभाल ॥
गिरिजा बचन सुनत मुदपायो । पुनिविद्यामहँ निजमनलायो ॥
सीखि अमित गुण पायरजाई । पिताभवन गइ प्रेम बढ़ाई ॥
अति दैदीप्यमान गृह एका । बाण रचायो सहित विवेका ॥
तहँ यकांत कन्या कहँ राषा । दीन्ही बहु सेवकनि प्रभाषा ॥
ऊषा सखिन सहित तहँ रहई । निजमन भेदन काहुइकहई ॥
द्वादश बर्ष भई बय जबहीं । मुखभाशशिभालाजततबहीं ॥
भ्रमर श्यामता कुंतल हांसी । चोटीलखिश्रुतिबिन त्रियत्रासी ॥
भ्रूबंकता निरखि धनु लाजै । नैन चालिखंजनगतिसाजै ॥
दो० कीर तुंड नासा लजत अधरहि बिंब लजाय ।
द्विजदाड़िमनिंदकचतुर कोमलतनअधिकाय ॥
कंठ परे बागलदा ब्रीड़ा । कुचश्रीफल कुबलयकृतपीड़ा ॥

कटि कृशता हरिकटिहि लजावै। रंभा उरू देखि भ्रमखावै॥
लज्जित होयकणकलखि देही। चम्पा स्वर्ण लता गति येही॥
करपद नख्र कमल अरुणारे। अंग अंग बिधि हाथ सवारे॥
पिक बचनी नवला करि गामी। मुग्धारूप राशि गुणग्रामी॥
भव शोभाजुरि जनु तन धारा। को कबि उपमा बदै भुवारा॥
यक दिन न्हाय सुगंधि लगाई। सर्बाभरण सजे तन राई॥
स्वच्छबस्त्रतन बिबिध शृँगारा। किमिबरणियप्रतिभाबिस्तारा॥

दो० सखिन साथ निज मातु तट गई सुता युत नेह।
तेहि अवसरही भूप सुनु बाणासुर गा गेह॥

दुहिता देखि शोच मन आवा। निजउरपुनिबिचारअसलावा॥
ब्याहन योग सुता अब भयऊ। इमिबितर्कि शिषआज्ञादयऊ॥
ऊषा सुथल गई नरराई। बाणासुर बहु दैत्य बोलाई॥
रक्षाहित तेहि भवन पठाये। बिबिध भेद कहितेसमुझाये॥
सखी चतुरपुनि बोलि नृपाला। सेवा लगि पठई तेहिकाला॥
जाम करी रच्छा सिवकाई। बीर सखी कृत कौरव राई॥
पति हित दानन्हानब्रत करई। बार बार गिरिजा पद परई॥
रजनीमुख यक दिननृपजाया। नित्यक्रिया करिशोचबढ़ाया॥

दो० परीसेज निजमनगुणत कब पितु करिहि बिवाह।
कौन भांति भर्तार मम मिलि भेटिहि दुखदाह॥

कंत ध्यान कृत ऊषा सोई। पर्‍यो स्वप्न महँ असतेहि जोई॥
पुरुष किशोर बैस द्युति श्यामा। हिमकरआनन पूरणकामा॥
नयन कंजरत नायक रूपा। नख शिखसोहर चतुरअनूपा॥
पीताम्बर बासित तन राजै। बरही मुकुट सुअंग बिराजै॥
छबि सुमनोहर भांति त्रिभंगी। जो बिलोकि बुधिहोतस्वरंगी॥
रत्न जटित अभरण तन धारे। मकराकृत कुंडल द्युतिवारे॥
गल बनमाल अधिकछबिदाई। चंचल खंजन चालिलजाई॥
सन्मुख तासु आव यहि भांती। निरखतरूप न हृदयअघाती॥

दो० मोही ऊषा देखि तेहि सो चलिआवा पास।

चूमि लगायो कंठ निज युत सनेह अनयास ॥
प्रीति बलित कीन्ही बहु बातैं। श्रम संकोच भेट सबु जातैं ॥
पुनिसप्रेम शुभ सेज बिराजो। हाव सभाव कटाच्छहि साजो ॥
चुंबनआलिंगन शुभ कीन्हा। अखिलप्रकारत्रियहिमुददीन्हा॥
नेक काल बीत्यो यहि भांती। ऊषा हृदय न प्रीति समाती ॥
कंठ लगावन चाह बहोरी। गई नींद तब नृप बुधिधोरी ॥
मन मलीन द्युतिक्षीन सुनारी। जागत भई मदन मतवारी ॥
क्लेशदाह प्रजस्यो उरतासू। भयउ सकल आनँदकरनासू ॥
कहत गये कहँ प्राणप्रियारे। अब न लखतहौं नैन पसारे ॥
दो० बहुरि योग केहि भांति बिधि बासब ह्वै है मोर।
कोबैरी मम नींद हर जेहि दुख भयउ कठोर ॥
अहह बुद्धि मम गहै जो धाई। असह जानि पतिगयउपराई ॥
शेष रैनि अब भय यमराती। तल्प अपार भांति पछिताती ॥
प्रीतम बिनु अति प्राण दुखारी। रति पति दाहत देह हमारी ॥
दरशनहित चष अति अकुलाहीं। बचनसुनौलगिश्रुतिबिलखाहीं ॥
भुज भेटन चाहैं उर लाई। कंत कहां तुम रह्यो लुकाई ॥
निद्रा किन पुनि आवत मोहीं। बार बार बिनवत हौं तोहीं ॥
जो फिरि कंत स्वप्न लखिपाऊं। प्रियजीवहि प्रिय संगपठाऊं ॥
धीरज रहित शिली सुख जाता। शोचतनिशिगतभयउप्रभाता ॥
दो० प्रहर अर्द्ध यकदिन चढ्यो जगी न बाणकुमारि।
अतिअचरजकी बारता सखियककहत बिचारि ॥
पाछिल प्रहर जगत नितरहई। कारणआजुकठिनकोउअहई ॥
बाणप्रधान बिदित गुणखानी। कूष्मांड अतिशय बिज्ञानी ॥
चित्रशालतासूनु सुजाना। तनया तेहिकर नृपबुधिवाना ॥
नाम चित्ररेखा तहँ जाई। ऊषा दशा लखी दुखदाई ॥
रोदति बैकल निजमन मारे। बस्त्राभरण समस्त बिसारे ॥
तब अकुलाय पूछ मृदुबानी। सुताकहिय दुखदशाबखानी ॥
परी बिरह दाधिलेत उसासा। त्रिबिधिबिकलकिनकरतप्रकासा ॥

मोसम चतुर न दूसर आली। बिरच्योआदिपिताअघघाली॥
दो॰ तीनिलोक चौदह भुवन सबकी गतिहै मोहिं।
बर इंद्रीबर सात दिय कहि समुझाऊं तोहिं॥
ममबश सबहि रच्यो करतारा। कार्य्याध्यक्ष मोर अधिकारा॥
बरबसभा रति मम आधीना। तेहिमिलिकरौंकार्य्यलघुपीना॥
मोहन गति जानौ बहुभाई। पिता तात सुरपति भ्रमिजाई॥
मर्म मोर को जाननहारा। अकर कर्म कर करौं पसारा॥
अपने मुख अपनी प्रभुताई। कहत बनत नहिंजीवलजाई॥
तदपि प्रीतिबश भाष्यों तोहीं। बिकलबिलोकितोहिंदुखमोहीं॥
मोहिं सर्बज्ञ जानि कहुभेदा। सत्य सुताकरिदेउं अखेदा॥
जो पै प्रपंच धारि नहिं कहई। तौऊषा कलेश बड़ लहई॥
दो॰ तजि लज्जा संकोच तब स्वप्न सुनायो ताहि।
पुनिकहसुनु तूमातुसम कारण दुखयहआहि॥
अति नवयौवन मोहन रूपा। पुरुष मनोहर सुछबि अनूपा॥
चित्त चोर किमिबरणिबताऊं। तनमन बचन पारनहिंपाऊं॥
अस न दीख मानुष बपु कोई। समता जासु भनौं भ्रम खोई॥
पूरुब गौरि मोहिं बर दीना। मिलिहिस्वप्न तुबकंत प्रबीना॥
बुधिबल ताकर खोज कराई। मिल्यो सप्रेम दुखौघ बहाई॥
केहिप्रकार अब प्रीतम पाऊं। को सहाय कर केहिपदध्याऊं॥
नामग्राम कुल पितु नहिंजानौं। कोउपाय यहि दंडहि भानौं॥
असबादि मूर्छि परी शय्यातल। बहुरिउठेअतिबिकलनहींकल॥
दो॰ तबहिं चित्ररेखा बद्यो धरु धीरज निज अंग।
तुव चितचोरहिलाइहौं करौंअखिल दुखभंग॥
श्रेष्ठ सृष्टि जहांलगि कीन्ही। गम्यशक्तितहँलगिमोहिंदीन्ही॥
धाम नाम किन बेगिबताइय। दूती जानि न बात दुराइय॥
जानति जो कुल नामसुधामा। बिथुर किमर्थ करतितौबामा॥
सुधापान कोउ मरो अमेधा। लिख्यो ललाटदंड ममबेधा॥
अखिलशोचपरिहरुकिनप्यारी। लिखौंचित्र बहु देखु निहारी॥

निज हितु जानि बतायो मोको । अवशि मिलाय देवमें तोको ॥
लेखन बस्तु समस्त मँगाई । बैठी गणपति गिरा मनाई ॥
गुरुपद ध्याय बुद्धिबश लाई । लिखैलागि मूरति समुदाई ॥
दो० तीनिभुवन मुनि नंद लिखि पंचतत्त्व निधिलोक ।
हरिपुरादि दिखराइयो तदपि न भई अशोक ॥
तब सुर असुर लिखे बिधिचारी । यक्ष सहित गंधर्व बिचारी ॥
किन्नर ऋषिमुनियुतदिगपाला । लोकपाल अहिद्विजभूपाला ॥
त्रिपुर बिभूति ताहि दिखराई । पै न बस्तु निजकरतल आई ॥
तब यदुवंश लिखै सो लागी । एक एक मूरति अनुरागी ॥
लखि अनिरुद्ध कहासुनु माता । यहैचौर ममदुख करगाता ॥
खोजियाहि जो मोहिं मिलावै । तौकीरतित्रिलोक तुवछावै ॥
कृष्णतनय सुतहै यह आली । महाबीर सुतनीझषमाली ॥
नगर द्वारका गुर्जर देशा । तहांबसत अनिरुद्ध सुवेशा ॥
दो० नामसुदर्शन चक्र नित हरिआयसु पुरपाल ।
आठयाम सुनु सुंदरी प्रबिशि सकतनहिंकाल ॥
असुरादिक प्रवेश तहँ नाहीं । सुनुकन्यापुनिगुणमनमाहीं ॥
कोउन जाय सकतबिनुआयस । पूरबोसकलदिशाभूपतियस ॥
बिस्मित ऊषाभई उदासा । सुनतबचन दुखमें दुखबासा ॥
बिकट ठाम तौ मिलब न होई । सदृढ़ उपाय परत नहिंजोई ॥
देवासुर जहँ प्रबिशि न सकई । मूरुखजनसो मग कसतकई ॥
हरि प्रताप तुव प्रीतम लाई । रहुसंतोषित देब मिलाई ॥
असबादि बस्त्र धारि हरिनामी । गोपीचंदन लै गुणग्रामी ॥
ऊर्ध्वपुंड दैतिलक ललाटा । उरभुज छाप कंठ भल ठाटा ॥
दो० तुलसीस्रक बहुडारि गल कोउशिर भुजमधि मेलि ।
हाथ दाम हरि जपकरत चली सखी दुख झेलि ॥
आसन पुस्तक कांख दबाई । परम बैष्णव बेष बनाई ॥
यहै अहै पाखंड नरेशा । भूलहि चतुरदेखि शुभ बेशा ॥
ऊषहि कहेउ नाक मग जाऊं । लायभर्ततव अवशि मिलाऊं ॥

बंचिनि अनिल अश्वअसवारा। रजनी गइ द्वारावति द्वारा॥
अंतरिक्षते महितल आई। कृष्णालय गय हर्ष बढ़ाई॥
तजिहरि आन जान नहिंकाहू। प्रभु समरथ नृप माया नाहू॥
संभवजानि मौन ह्वै रहेऊ। कछुन चित्ररेखा प्रति कहेऊ॥
सोवत सैना जहँ अनिरुद्धा। गई मोहनी रूप प्रशुद्धा॥
दो० ऊषासंग बिहार कृत स्वपने काम कुमार।
देखि पलँग सहलै चली गुणनिधि त्रिय तेहिबार॥
लियेजात स्वप्नित सप्रयंका। ऊषाहित त्रिय निपट निशंका॥
क्षणमहँ ऊष:गृह पहुंचायो। देखत ताउर अति भयछायो॥
परी चित्ररेखा पद जाई। धन्य धन्य कहिगिरा सोहाई॥
तोर पराक्रम अलख अनूपा। चतुर सुजान को तू अनरूपा॥
परिपूरण प्रण भयउ तुम्हारा। संभव नहिं भव प्रत्युपकारा॥
पर उपकार सरस सुनुजाता। दूसर धर्म न रच्यौ बिधाता॥
नाशवान जड़अहै शरीरा। निजबश हरिय सदा परपीरा॥
स्वारथ परमारथ द्वौ यामैं। समनग्राम आवत निजकामैं॥
बद्यौताहि ऋणिया हौं तेरी। मोदक दानि तु मोदक मेरी॥
हरिप्रतापभा काज तुम्हारा। क्यों गुणमानौ आलिहमारा॥
अबनिज जीवन जीव जगाई। मेटुक दे नहिं कंठ लगाई॥
स्वथल चित्र रेखा गइराजा। मनभावित करि ऊषाकाजा॥
दो० मन प्रसन्न तन भय बलित ऊषा करत बिचार।
केहि उपाय जागै चतुर कंत सकल सुखसार॥
लैकर बीण मधुर सुर साज्यौ। अति गति तारतारसौं बाज्यौ॥
ध्वनि अवरेव सुनतही जाग्यौ। बिस्मितचहुँदिग हेरनलाग्यौ॥
अहह दैव यहको सुनि केता। कोलावा मोहिं सेजसमेता॥
इमि संदेहित बिबिध प्रकारा। अत्याश्चर्य्य विवशगुणहारा॥
उत ऊषा संकोचित ठाढ़ी। मंदिर कोण पुलकतनबाढ़ी॥
पति मुख बिधुकर नैन चकोरा। बदत हृदय तुमहीं चितचोरा॥
कोहसि नामभेद भणु आपू। जो सुनि मिटै मोर संतापू॥

लाइसि मोहिं कि मोढिग आई । सत्यासत्य न परत लखाई ॥
दो॰ यदपि कहा अनिरुद्ध बहु भांति ताहि समुझाय ।
तदपि न बोली सुंदरी रही सु अधिक लजाय ॥
तब गहिबांह सेज बैठारी । मृदुल सनेहित गिराउचारी ॥
मिट संकोच दुहुनकर जबहीं । उपज्यो मदनदाह उरतबहीं ॥
करि रस रीति कंठ लपिटाई । आलिंग्यो चुम्ब्यो सुखपाई ॥
करिसुखभोगपूछवामासन । केहिबिधिलख्योसुन्योपुनिकासन॥
मँगवायो पुनि कौन प्रकारा । सत्य कहिय चितानिरुवारा ॥
कथा प्रथम सब बरणि सुनाई । स्वप्न चित्ररेखा जिमि लाई ॥
प्रभतुम केहिप्रकार मोहिंजाना । जो तुम जागतहीं पहिचाना ॥
जेहि अवसर हौं यहिथलआयो । तबतुहिंस्वप्नमांझलखिपायो ॥
दो॰ आनन हारिहि जाननहिं तब सँग स्वप्न लुभान ।
जागत निरख्यो सत्यही धनि कर्तब भगवान ॥
इमि बतरात निशागत भयऊ । अरुणोदयप्राचीदिशिछयऊ ॥
उठि ऊषा बाह्यालय आई । मोती दाम जानि शितलाई ॥
भयउ प्रभात चंद्र द्युति नाशी । उरगणभांतिरहितखप्रकाशी ॥
नभ अरुणताछयउदिशिचारी ।समुदितकुमुदिनिकासतमारी ॥
कुमुदिनि मुदितकोक संयोगी । लगे काजउठिभकाल भोगी ॥
वैकलगृह कपाट सब ढाकी । पतिगललगीमदनमदछाकी ॥
पतिहि दुराय सखिन तट जाई । करै लागि लीला सुखदाई ॥
सेवै नित्य कन्त चित लाई । गुप्त प्रीतिनहिं परै लखाई ॥
दो॰ उठै सदा तत्कालही ऊषा बुद्धि बिशाल ।
यहिकारण भूपति सुनौ समयसुऊषा काल ॥
कछु दिन बीते सब सखी जानि गईं यह भेद ।
तबतौ ऊषा कंत मय सब दिन रहै अखेद ॥
एक दिवस विधि बश नरराई । ऊषा जननि सुता लय आई ॥
यह चरित्र तेहि गुप्तहि देखा । खेलत पंसासारि अलेखा ॥
तरुण पुरुषसुंदर शशि आनन । मार रूपभा शोभा भानन ॥

गृह अंतर दुहिता सँग सोई। करत हास्य रस खेल ठठोई॥
कछु गलानिकछुमनसुखबाढ़ा। कहा न कछु धरिधीरजगाढ़ा॥
गई निकेत होत जिय आनी। अब ससहरिसुनुआनकहानी॥
सोवत कंत जानि इषु जाया। असचिंतमन हृदयउपजाया॥
अहरजनी मैं पति रत रहहूं। बास्तव मर्म न काहुइकहहूं॥
दो० असन होइ प्रगटै दुरित यह प्रसंग संसार।
बहु सन्देह सँयुक्त तिय तब आई गृहद्वार॥
पतिहि अकेल त्यागि गृहआई। पै अधीर पुनि धाम सिधाई॥
यकरच्छक यहचरितबिलोकी। बिस्मित भयउच्छपाजिमिकोकी॥
कह्यो परस्पर लख्यो किनाहीं। बहुत दिवस बीते घरमाहीं॥
आजु निकेत वहितल ताता। आई पुनि गमनी नृप जाता॥
तूनजान मैं कौतुक देखा। नृपभय चित्तन कस्यो परेखा॥
बन्दकपाट रहत सबकाला। भीतर पुरुष एक गुणपाला॥
कतहुं हँसत कहुं करत बिहारा। कतहूं खेलत खेल अपारा॥
जोपै सत्य यह अहै प्रसंगा। तौकहि नृपहि कराइय भंगा॥
दो० कोउकह अकहन कहि सकत मौनितही ह्वै जाउ।
कह अच्छर बिपरीत नहिं बदबुध कोटि उपाउ॥
कुछ भ्रम पैरै होय दुखभारी। बैरभूप प्रगटै सुखहारी॥
दैवयोग बाणासुर आयो। मंदिरध्वज देखन चितलायो॥
महितल केतु देखि अकुलाना। ध्वजरच्छक प्रति बचनबखाना॥
कोध्वज यह उर्बश गिराई। सुनिचर बोल्यो शीश नवाई॥
बिपुलसमय गत भाछितिपाला। महितल परी आपुरिपुशाला॥
श्रवणित शिव बर स्मृतभयऊ। चिंता मोद हृदय तेहिछयऊ॥
उपज्यो शत्रु कृष्ण संसारा। शुद्धि सत्य जान्यो यहिबारा॥
द्वारपाल यक द्वौ करजोरी। बोल्यो सुनियबिनयप्रभुमोरी॥
दो० अकथ बारता नाथयक कहौं जो होय रजाय।
कसन कथिय अनुचितहि लखि धर्म आपुउरलाय॥
जिअहुअमितबयबुद्धिअगाधा। क्षम्यो अबूझदास अपराधा॥

कछुक कालते देखत आहीं। ऊषा बाहर आवत नाहीं ॥
कोऊ पुरुष रहत तेहि धामा। श्याम बरण सुंदर गुण ग्रामा ॥
बिहँसत क्रीड़ाकरि तेहि साथा। जानत यहन अहै कोउनाथा ॥
क्रोधजलज प्रजस्यो उरतासू। यहिअनमिषहिकरौंअरिनासू ॥
सहसा आयो निकट निकेता। लखा लुकायसु अस्त्र सचेता ॥
मेघरूप पीताम्बर बासी। ऊषासँग सोवत अनत्रासी ॥
बेगिबधौंपै अनुचित सोवत। बिविधउपाय नीतिमयजोवत ॥
दो० बिपुलखग्ग रक्षक किये सुताभवन तत्काल।
जागतही सुधि दीजिये गयो सभा महिपाल ॥
मंत्री मित्रन कह्यो बुझाई। शत्रुमोर आयो यहि ठाई ॥
तनया मंदिर सदल निरोधौ। संगरकरि मम अरिमन बोधौ ॥
तुव पश्चातन लागिहिबारा। आगममोर लख्यो गृहद्वारा ॥
पाय रजाय सुभट गण गाजे। बिबिध निसानसमरकरबाजे ॥
चले तमीचर तमभा नाका। शोभित सूरकिधौं पतिराका ॥
ऊषागार घेर बसु ओरा। गरजेरावत शब्द प्रघोरा ॥
तेद्वौ खेलत पन्सासारी। भवचिंता नरनाह बिसारी ॥
ध्वंत निरंत बिलोकि कुमारी। चमूघटा जलधर छबिकारी ॥
दो० अस्त्र उदय बिद्युल्लता बाहन खघनघोर।
भ्रमबश बोले बिबिध बिधि चातृक दादुरमोर ॥
सुनि चातृक बाणी पियगानी। इमिबादिसुतापातिहिलपिटानी ॥
तजुबियोग भाषा द्विजपापी। तवबचश्रवणतबुधिहृढ़कांपी ॥
चरबर बाणहि बध्यो प्रसंगा। जाग्यो अरिबिरच्यो रणरंगा ॥
आतुर नृपति सहायुध धायो। ऊषासद्म पमरि चलिआयो ॥
लखि अनिरुद्ध बढ़्यो उरकोपा। बचन ब्यंगकहि संगर रोपा ॥
कोहासि लोलुप चौर अयाना। घनतन कमलनैन छबिसाना ॥
मंडु समर किनबाहर आई। यमकर केशन चलिहि उपाई ॥
तोमर बचन किती मरशाले। उभय सुनत नृपभये बिहाले ॥
दो० गलित क्लेश ऊषा बद्यो सुनो प्राणप्रिय बैन।

पितु बाहनिलै आइयो अब उपाय कोउहैन ॥
जनि भयभीत होह तू प्यारी। लवान सकत श्येन रणमारी ॥
बधिकि पाव हरि प्रबलशृगाला। निधनकरतमंडुककिमिकाला ॥
तू देखत पुर शमन पठाऊं। बहुरिआय तोहिंहदयलगाऊं ॥
बसु नभधरकर शिलकर लीनी। वेद मंत्र बश निजबशकीनी ॥
बाहर भवन रिपुहि परचारा। लखिशरशरधनुकोपिसम्हारा ॥
चहुँ दिशिते अपार खल धाये। मधि जीमूत किधौं हरिभाये ॥
अद्रि बिबिध घेरयो रिपुपाका। किधौं रामखर त्रिशिराताका ॥
हरि सुंडाल यूथ जनु घेरा। राज्यो काम जात तेहि बेरा ॥
॥ दो० आयुध छोड़े विविध विधि बरणत बनतन सोय।
भयउ क्रोध अनिरुद्ध उर घात अस्त्र तन जोय ॥
मरद्यो शिलाद्विकरदिशिचारी। हरे असुर तम किधौं तमारी ॥
चले पलाय प्रबल सुर शाली। खलदलकिधौंनिरखिबनमाली ॥
धीरज रहित मत्त खल कैसे। पंचानन यदु निरखत जैसे ॥
जे अजेय जग जेय बलिष्ठा। यांचत सदा समर निजइष्टा ॥
तेलै जीव चले अकुलाई। यह गति लखि सरोष नरराई ॥
सबहि रोकि बोल्यो नयबाणी। सतनअमरकोउभयउनप्राणी ॥
कत अपलोक लोकमहँ लेहू। परिहरि धर्म पृष्ठिरण देहू ॥
फिरे लजित सुनि भूप रजाई। भिरे समर उर क्रोध बढ़ाई ॥
दो० अमितायुध मर्दत असुर पै न लगत तेहि अंग।
हरिमाया दुस्तर सदा करत दुष्ट मद भंग ॥
मंत्रित आयुध अफलित होई। अकथ चरितबरणै किमिकोई ॥
जो कोउअस्त्र निकट तेहि आवै। शिलाधार भुव छार दिखावै ॥
इंद्र कुलिश हर शूल समाना। शिलाघातनृपअसहमहाना ॥
शिरभुज कटिलागतमहिपरहीं। अतिभयभीत असुरथरहरहीं ॥
लखैं समर नभ बिपुल बराका। धन्य पुत्र इमि बदै सुवाका ॥
सर्ब कटक कर भयउ निपाता। रहा अकेल बाण पछिताता ॥
यहअजीतनहिं जयरणलायक। महाबीर रणमहि रिपुघायक ॥

अब न युद्ध मंडे कुशलाई। नागपाश बांधिसि यदुराई ॥
दो० बंधितगाखै निज सभा मन अनिरुद्ध बिचार।
जो न गनौं बिधि बचन तौ घटैमहत्व अपार ॥
ताते दंड सहौं कछु काला। कबहुंक सुधिलेहैं जनपाला ॥
बलकरि भंजों जो बिधि पाशा। नीति धर्म द्वौ होइ बिनाशा ॥
जौन सहायक होवै तोरा। बोलु ताहि यहिसमयप्रजोरा ॥
क्षणमहँ नतरुबसिहि यमधामा। बृथामित्रहित पुनिपरिणामा ॥
यह सुधि पावत राजकुमारी। बद्यो चित्ररेखाहि पुकारी ॥
धृकजीवन मम पति दुखपावै। अवशि मातुकिनयतनबतावै ॥
कसन अशोच होह सुनिबानी। अबध कंततुवबलबुधिखानी ॥
सत्वर सुधि पावत यदुराई। हलधर सहित आययहिठाई ॥
दो० भंजि अखिल दुर्नाद दल सुत बिमोचिलै तोहिं।
द्वारावति चलिजायँगे दृढ़ निश्चय यहमोहिं ॥
जाकरसुता सुलक्षणजानत। छलबलकरितेहिनिजगृहआनत ॥
रुक्मिणि कथाबिदितभवमाहीं। बिस्तृतबदियसमयभलनाहीं ॥
किमि धीरज उरधरौं सयानी। नागपाश बंधित सुखदानी ॥
भस्मत गात क्लेश यहि मोरा। सूझत मगन शुभग चहुँओरा ॥
बिपतिबिबशपतिधृगमषपाना। पियसँग बधै मोहिं पितुबाना ॥
तौ पूरण आनंदहि पाऊं। सत्यलोक प्रीतम सँग जाऊं ॥
अज सुबर्ण बिरचे जोभाला। तद्बिपरीतन कवनौं काला ॥
भवश्रुतिद्वौ मरयाद मिटाई। पति तटसुख दुखलहिहौं जाई ॥
दो० चलिआई अनिरुद्ध तट मानिन शिक्षा तासु।
दूतकह्यो बाणहिं चरित सुनिभा नाश बिलासु ॥
नृपस्कंध प्रति कहा बुझाई। निजभगिनिहिकिनगृहलैजाई ॥
बंधनकरि राखौ सुतज्ञानी। सुधिअनुचितसुनिउरनगलानी ॥
ऊषा निकट गयउ चलिसोई। बोल्यो सरुढ़ बचन मुखजोई ॥
तूदुष्टिनि अकलंक कलंकिनि। प्रगटी दैवबश्य मति रंकिनि ॥
लोकलाज कुलकानि निपाती। तुवमुखलखिबिहरतममछाती ॥

शमनलोकतोहिंअवशिषयावत। नीति बिरोधन अस्त्रचलावत॥
जो भावै जिय कहिय सुभ्राता। सुखपावौं त्यागतयह गाता॥
हर प्रियबर पूरब मोहिंदीना। अब न तजौं यहकंतप्रबीना॥
दो॰ पतिब्रता कुलवान त्रिय त्यागत निजपति नाहिं।
क्लीव निरद्धस रोग जड़ कोढ़ी लखि उरमाहिं॥
बिधि संबंधि जासुसनकीना। सोइप्राणप्रिय सुखदुखभीना॥
आन प्रसंग नरक अधिकारा। तातकन्तमम प्राण अधारा॥
सुनिरिसायबरबस गृह लाई। बन्दिकरयो पुनि आइनपाई॥
अरु अनिरुद्धहि आनअगारा। कारागारित कीन्ह भुवारा॥
प्रिय बियोग अनिरुद्ध अधीरा। उतऊषा उरनृप बड़ि पीरा॥
तजिजल अन्नभजै अनुरारी। कठिन योगकृत भूपकुमारी॥
नारद एक समय तहँ आये। बहु अनिरुद्धहि ज्ञानबुझाये॥
तजो शोच ध्यावो जनपालक। पायसुद्धि आइहि खलघालक॥
दो॰ पुनि बाणहि समुझायकह जेहिबांधा महिपाल।
कृष्ण पौत्र तेहि जानिये नरतन प्रभु गोपाल॥
जोभावै सो कीजिये मैंकरि चल्यों सचेत।
असबदि नारद ज्ञाननिधि गये सुब्रह्म निकेत॥
मंगल परिहरि सकल छल शुद्धभाव हरिध्याउ।
जा प्रताप बंधन मुचै बहुरिन ऐसो दाउ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांऊषास्वप्नअनिरुद्धग्रहण
बर्णनोनामत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥
दो॰ बेद बदत सब योनि में मिलहो मनुष्य शरीर।
ताहिपाय हरिभजतनहिं द्वौदिशिहोत अधीर॥
हरिमाया अति प्रबल जेहि मोहे जीव अपार।
बिनु प्रभु कृपा न जीवकर काहू बिधि निरधार॥
जो सतसंगतिको भजै तजै मनीषा दोष।
लीन रहै आतम बिषे जीवत पावै मोष॥

जोपै ब्रह्मज्ञान में प्रवृतन होवै जीव।
तौ परिपूरण प्रेममय राधावर सुख सीव॥
वेद शास्त्र पौराण में बिदित कृष्ण करतूति।
सेवक रुक्मिणि रमणको सकै न माया धूति।

सुनु नृप रुचिर प्रसंग सहेता। बंदिपरे अनिरुद्ध अचेता॥
बीते चारि मास शर धामा। ऊषा बिकल रहै बसुयामा॥
गये द्वारका ऋषि वृंदारक। जेगत बैरनेह जन तारक॥
चहुँदिशिपुर बीथिका बिलोकी। जीव चराचर लखे सशोकी॥
यदुबंशी सब निपट उदासा। नर चरित्र कृत त्रिपुरनिवासा॥
चिन्ता मग्न राम युत वैसे। अनुपम उपमाकबिकह कैसे॥
बिलपत दारुण सबु रनिवासा। तनय बियोग बिकलउरत्रासा॥
लखि देवर्षि सकल जुरि आये। नति युतआरत बचनसुनाये॥

दो० मुनिबर तुम सर्बज्ञहो सत्य कहौ समुझाय।
कौन देश अनिरुद्धहै मिलै सुकहौ उपाय॥

बोध्यो सबहि तबहिं ऋषिराई। धीरज धरौ तजौ बिकलाई॥
परि हरि शोक सुनो मम बानी। बिपतितिमिररबिहरिसुखपानी॥
जीवत सुत शोणित पुर अहई। नितकलेशमयबिकलितरहई॥
ऊषा बाण सुता गुण खानी। रम्योअब्याहितकामकलानी॥
तोमर जानिसिबंधन कीनसि। कारागार बन्दिगृह दीनसि॥
दारुण समर किये बिनु सोई। मोचिहिनहिंनिजबलमदभोई॥
प्रबल अराति बिदितबलिजाता। देवासुरकरि सकत न घाता॥
पुत्र भेदहौं सकल बतावा। बेगि करौ जो बनै बनावा॥

दो० कौतुक ऋषि सुरलोकगे यदुबंशिन उर शोच।
निज निज बुधिवत बदत सबतनमनस्यो रणरोच॥

उग्रसेन प्रति मर्म जनावा। जेहिबिधि नारदबचनप्रभावा॥
मंडे बिनुरण सूनन पाइय। प्रज्ञअज्ञ किमि पुत्र गमाइय॥
चमूसहितसब मिलिचलिजाहू। करो शत्रुउर शरगद दाहू॥
आयसु सुनत चमूपति साजे। पुंडरीक बानीभट गाजे॥

बजेबिबिधध्वनिसमर निसाना। अंतर कथा सुनो बुधिवाना ॥
द्विजपारुद्रित प्रभुगुण ग्रामा। सह प्रद्युम्न गये शरधामा ॥
रेवति रमण संग कटकाई। तत पश्चात चले भुवराई ॥
दल शोभानहिं परत बखानी। उडीरेणु रबि ज्योति छपानी ॥
दो॰ अंधकार छायो धरणि बरणत बनतन भूप।
करी अमर दंती लसत बाजी हरि यहरूप ॥
बहुरथ कंचन मयद्युतिकारी। ते जानत जिन दीख निहारी ॥
पायक गण अपार नृपजाहीं। रण इच्छा सबके मनमाहीं ॥
इमि चतुरंग चमू कुरुकेता। सायुध पंथ विविध छबिदेता ॥
बंदीजन बिरदावलि गावहिं। सुभटन हृदय रोष उपजावहिं ॥
धृग छात्रिहि जो समरपलाई। पुनिधृक नृपननीतिबशभाई ॥
समरभूमि जो तजै शरीरा। सुरपुर लहै सौख्य गत पीरा ॥
कोक सुंदरी कुमुदिनिकूरा। निशिशितभानुलखतआहिशूरा ॥
प्रवृतकर्म निज भये अशंका। प्रति प्रदेश यह छयो अतंका ॥
दो॰ द्वादश च्छोहिणि दललिये चले जात बलराम।
केहिरक्षहि जगदीश अबकाहि बिधाता बाम ॥
बाण राज्य थल सीमा जाई। बिबिध उपद्रव कृतभुवराई ॥
दाहत कोट दुर्ग मग पाई। भंजत नगर असुर समुदाई ॥
दुंदुभि दीह बजत बहुताई। ध्वनिसुनिजगतअखिलमुनिराई ॥
यदुबंशी पथ करत उपाधी। श्रोणितपुरपहुँचे निरुपाधी ॥
हरिसहसूनु मिले नृपआई। सकलकटकमधि शोभाछाई ॥
यथा विभवयुत सभा सोहावै। भूपतिमिलतअधिकछबिपावै ॥
अंधकार दिशि चारि दिखाई। पूछत बाण सबहि भ्रमखाई ॥
मेघ कि अनी भूप भव केरी। मोरे चित्त कृष्ण अवसेरी ॥
दो॰ कोउपायक तेहिअवसरहि आयकह्यो करजोरि।
राम कृष्ण निज सैनसह आयेपुर रण घोरि ॥
लूट्यो देश दुर्ग गण ढाहे। नगर ग्राम बहु थलथल दाहे ॥
प्रजस्यो सुनतबचन बलिजाता। बोले महा प्रबल जड़ ताता ॥

सचिव सुजान सुभट रणकारी। सैनापाल स्त्रमित्र हँकारी॥
सबहि बुझायकह्यो दलसाजौ। संगर इला कुधर गतिगाजौ॥
समता समर होइगो आजू। शिवप्रसाद बांछितभा काजू॥
बाहिर सन्मुख युद्ध बिरोधौ। यदुकुलयूथहिअवशिनिरोधौ॥
पाछे तुव आवत क्षणमाहीं। मंडि धनुषरिपु सद्दलदाहीं॥
आज्ञा पाय सजी खल सैना। शूर क्षोहिणी सुभट सुखैना॥
दो० सायुधसब आवतभये हरि सन्मुख गल गाजि।
बजत तूर्य्य भेरी पणव बिहँसतभट रण साजि॥
ध्याय सर्पभूषण त्रिशुधारी। रथ चढ़ि चल्यो गर्ब उरधारी॥
पहुँच्यो समर बीर रस मंडी। कातरता त्रिभांति नृप खंडी॥
उत शंकर मन कीन बिचारा। संकट मम सेवकहि अपारा॥
भक्ति बिवश ईश्वर सुखराशी। सत्य व्यवस्था त्रिपुरप्रकाशी॥
छूट्यो ध्यान सुआसन डोला। भव प्रसिद्ध भोला प्रभुभोला॥
अपयश प्रभुता बिनशै नेहू। जोन दाससुधि यहिक्षणलेहू॥
करिबिचारि अस धारिप्रियअंगा। जटा जूट आभरण भुवंगा॥
विषधर श्वेत किये उपवीता। अमृतपान हर सदा अभीता॥
दो० मुंडमाल गजछालधर आसी बिष उरहार।
शूल पिनाक सोहायकर डमरू मर्दित चार॥
गौर बपुषकर सोह कपाला। संग भूत अरु प्रेत कराला॥
बिकट पिशाच भयक बैताला। डाकिनिशाकिनिप्रेतनिजाला॥
बहु योगिनी भयंकर रूपा। अनी सभयकर भूप अनूपा॥
आनन ह्रस्व बिपुल मुख कोई। पीनबपुष लघुतनगुण जोई॥
रुष्ट पुष्ट दुर्बल लघु सोहै। बहुपद बाहु भणै कबि कोहै॥
शिव शोभा बरणत सकुचाई। शारद शेष कोकबि प्रकटाई॥
श्रुतिहरि मणिमुद्राशशिमाथा। गंगाधर शिरपाल अनाथा॥
रोषज्वलित चषअरुण नृपाला। जनुभवहरणकिभवतेहिकाला॥
दो० मगाबिलसत सानंदप्रभु श्रोणितपुर गे राय।
देखिबाण हर्षित भयउ पस्यो चरणतलआय॥

तुमबिनुको जनपालक स्वामी। कुसमयशरसुत चरणनमामी॥
अब जय लहौं न कछु संदेहू। नाशैं यदुबंशी हृढ़ एहू॥
धर्म युद्ध कीजै अहि भूषण। जेहि ते कोउ न बिदूषबिदूषण॥
दुहुंदिशि बजत समर के बाजा। बीरक्रोधमय निजपतिकाजा॥
चले अधीरन पुंस पलाई। रावन अस्त्र लखत हरषाई॥
हरि सन्मुख शशिभूषणआये। अमित प्रकार समरअरुझाये॥
भिरयोबाण मूशल धर संगा। करयो बिरुद्ध कालवत रंगा॥
प्रद्युम्न संग स्कंध बिरुद्धेउ। विविधअस्त्ररणभूमि बिरुद्धेउ॥
दो० भिरे अपर भट समर महि निज निज समताजानि।
महा मारु भइ भूप सुनु दुधा आश अनुमान॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

पिनाकै लियोशंभुजु क्रोधभीनै। रमानाथ शारंगयुद्रोषकीनै॥
तज्यो ब्रह्म अस्त्रै भये तेसद्रोहं। हरयोकृष्णतद्बाणतद्बानकोहं॥
सदाचार प्रेरयो अकालंसकालं।महाबायुमुंडयोहरयोतेजब्यालं॥
श्रुती जात शंभू प्रचारयोसरोषं। गटीज्वालभूतत्रालटीबुद्धितोषं॥
प्रलै चीरधारी बिहारी पठायो। तदाकालहींसप्तजिह्वानशायो॥
करी योगमायासुज्वालाबनाई। तहीं चारमंडी अनामध्यआई॥
जलाये महाभूत प्रेतौपिशाची। कियेरूपभयकारधौंमृत्युसांची॥
तजे युद्ध दैत्यादि द्वौओरधाये। कहौंहौं कहांलौंमहादंडपाये॥
छं० अतिदंडमय शिवदलभयो सब बाणसैना भगिचली।
यहदशा नैन बिलोकि शंकर शोचमयभे नृपबली॥
बरषायपय शिव अग्निनाश्यो राखि दललीनोसही।
मंगल द्विदिशि भगवान समता युद्ध मंडत रणमही॥
दो० बहुरि कोपकरि करगह्यो नारायण इषु ईश।
जानिभेदत्रोणहिधरयो शोचिसमुझिशशिशीश॥
हरि आलस्य बाण धनु धारा। कोपि असुर भव सैन प्रहारा॥
तापताप सब भये अचेता। बधे असुर पुनिकृपानिकेता॥
शिवमन शोच अपार भुआरा। प्रलय समर कर कर्म पसारा॥

हरि रुख लखि बरही आरूढ़ा । गयो नाक बाणज रणगूढ़ा ॥
अंधकार छायो दिशि चारी । हनेबिशिखबहु हरिहिप्रचारी ॥
तोमर तीब्र अनलवत छूटैं । यदुबंशिन कर धीरज टूटैं ॥
ब्याकुल बिचलि चले रणधीरा । त्राहि दयानिधि कहतप्रबीरा ॥
मदन श्याम प्रति बदकर जोरी । क्षमा राशि बिनती यकमोरी ॥
दो० चढ़्यो मयूर महान रिपु समर करत सुनुतात ।
आयसु दीजिय कृपादधि करौं दुष्ट कर घात ॥
पिता रजाय पाय झखकेतू । प्रेर्यो बाण तासु बध हेतू ॥
मुयउ गजारि बिशिखबर लागे । गिर्‌यो भूमितल बुधिबलखागे ॥
सुत बिलोकि बाणासुर धायो । अतिआमर्षज्वलितदुखरायो ॥
शरशत शरधर बेगि चढ़ायो । अगणित जिह्वगभूपबहाये ॥
प्रबल अराति बिलोकि कृपाला । हरैलाग सहजै शर जाला ॥
महामारु रण अजित अराती । पूरणबिधिबरणियकेहिभांती ॥
बाज निशान कि बाजन फागा । बन्दी बिरद किधौं खटरागा ॥
रुधिर प्रबाह कि रंग प्रचारा । उड़त अबीर क्षतजछटकारा ॥
दो० भूतप्रेत बैताल बहु योगिनि कृत आनंद ।
युद्ध किधौंबरफाग लखि बिहँसत यदुकुलचंद ॥
राग धनासिरि बीर गुहारी । रक्तनदी सारिरंग निहारी ॥
अतिअबिबेक समर भयकारा । द्विधाबिकलकृताविविधाबिचारा ॥
कठिनसमर लखि कृष्ण रिसाई । बध्यो बाण सारथि भुबराई ॥
अश्व समेत अचल क्षितिपागे । हरिकर असुग बज्रवतलागे ॥
बाण अबाहन समर पलाना । तेहिपाछे धाये भगवाना ॥
समाचार सुनि शर महतारी । बिकल भई भूपति बिधिचारी ॥
वेषभयानक कुंतल भंगा । अशुभरूपनग्नित प्रतिअंगा ॥
प्रभु सन्मुख आई चलिसोई । नग्न नारि देखत अघ होई ॥
दो० कृत पुकार रचौ प्रभू सुनि मूंदे हग श्याम ।
तबलगिखलभगिधामगा प्रभुसजयतिरणधाम ॥
जाइ निकेत बहुरि दल जोरा । असुर प्रबल रणकारिप्रघोरा ॥

सोहनि चन्द्रसाजि बलआवा। निजजननिहिनृपसदनपठावा॥
द्वंद्व युद्ध मंड्यौ खलराई। कहतबनत नहिंबिबिधलराई॥
कोपि श्याम खल दल संहारा। बिकलबाणतबतज्योजुझारा॥
शिव शरणागत गयउमहीशा। पाहिपाहि कह पाहिगिरीशा॥
सेवक दुखित देखि बनमाली। सामर्षितभे शिवरिपुशाली॥
बिषमज्वर प्रेर्यो ततकाला। सो आवा हरिकटक नृपाला॥
सहस किरण सम तेजप्रकाशा। अति बलवान रूप दुर्नाशा॥
दो॰ तीनि शीश नव चरणनृप बाहुतर्क चषकाल।
बेषभयानक जगतजित हरिदलकीन्हसिशाल॥
ज्वरबश बिकल भये यदुजाता। कम्पितकायकिचलदलपाता॥
बरबस ज्वलित देह ज्वरजानी। हरिहि पुकार्यो आरतबानी॥
विषमज्वर कि त्रिपुर भवकारी। रच्यौ नतभा नाश मुरारी॥
शमन समान बूझियत याही। बचिय उपाय सुदीसतनाही॥
क्षमापयोधि क्षमायहिकीजिय। सत्वरदासनकीसुधिलीजिय॥
कादरतामय सकल निहारी। प्रबलबिषमज्वर अग्निप्रचारी॥
तब शीतज्वर कृष्ण पठायो। कालकालज्वरपर ज्वरधायो॥
जल्यो जराय शंभुज्वरराई। जानि नाशगा शिवशरणाई॥
दो॰ जोरिहाथ कह रक्षिये हरि ज्वरते त्रिपुरारि।
तासुवचनसुनिदीनआति हरकहभूपबिचारि॥
त्रिपुर न कोउज्वरनाशनयोगा। देवअदेव चक्रि मुनि लोगा॥
बिनु हरिशरण न जीवन होई। सत्यवाक्य कह निजउरजोई॥
प्रभु शरणागत गा ज्वरसोई। सबिनय कहामान मदखोई॥
अनुकम्पा निधि रंजन दासा। प्रणतपालयश त्रिपुरप्रकासा॥
पावन पतित करण दुखहारी। जयति सच्चिदानंद बिहारी॥
रमारमण मघवा मदनाशन। मम अपराध क्षमौ गरुड़ासन॥
शीतज्वर ते मोहिं बचावो। निज विरदावलिकीलतबढ़ावो॥
अजबामादि त्रिदश सुरजाती। सबके कर्ता तुम खलघाती॥
दो॰ बिरचौ प्रतिपालौ जगत नाशौ निजकर आपु।

माया अगम अपार तुव चहुं दश प्रगट प्रतापु ॥
आयो शरण बच्यो ज्वर आजू। नतुहोत्यो तुव सकलअकाजू ॥
तव अपराध चम्यों धरु धीरा। अब न दयउ ममदासनपीरा ॥
कह ज्वर जो यह सुनै प्रसंगा। ताकर होइ त्रिज्वरकर भंगा ॥
यहसुनि बिदा किया यदुनाहा। गाबिषमज्वर नृप शिवपाहा ॥
इत बाणासुर पुनि युत रोषा। शतशतधनुष चढ़ायअतोषा ॥
संगर महिमहँ प्रभुहि बिचार्‌यो। पुनिअबिबेकितबचन उचार्‌यो ॥
यदपि श्याम तुमसों रणठाना। तदपिजीवनहिंमोर अघाना ॥
अस बदि बिशिखतज्योभुवराई। जेहिकरि बैकल भैकटकाई ॥
दो० प्रेरिचक्र तब बक्रधर हरयो भुजा बहुतास।
चारिबाहु राखत भये जानि शंभु निजदास ॥
कटतबाहुभो शिथिल महाना। गिर्‌यो भूमिनृप कुधरसमाना ॥
चतज तरंगिनि बही तुराई। भुजधौं मकर व्याल बहुताई ॥
कुंभी कुंभ चक्र उतराहीं। करिकर नक्र बक्र दिखराहीं ॥
सुंडी मृतक तटनि तट जानिय। गृद्धादिकनहातअनुमानिय ॥
काक शृकाल मान्स आहारी। भषत मृताक्ष प्रत्यच्च निकारी ॥
समर भयउ भयकर किमसाना। चणकमूर्छिजाग्यो पुनिबाना ॥
हृदय हारिगा पुनि हरपासा। रण वृतांत सबकर्‌यौ प्रकासा ॥
कहबिचारि मृडसुनु दानवपति। समरभये हरि क्रोधितभेअति ॥
दो० करि बिनती वश कीजिये जनपालक सुखकारि।
बाणासुरहि लगाय सँग गे प्रभुपहँ त्रिपुरारि ॥
कृत बिनती करजोरि हर प्रभु सन्मुख सुखपाय।
जो सुनिभये प्रसन्न हरि लयोबाण अपनाय ॥
तो०छं०जयदेवदयानिधिज्ञानघनं।भवताप बिनाशन शुद्धमनं॥
शरणागत बत्सल देवहरे। जनक्लेश बिनाशक कायधरे ॥
महि भारित पाप बिचारि हिये। च्युत अच्युतहैखल दूरिकिये ॥
जगतारण लोक प्रकाशिदयो। बहुदासन ध्याय स्वधामलयो ॥
लखहीन अनूप अकाम सदा। निर्बाण अगोचर बेद बदा ॥

निरभेद अद्वैत अखेद अहौ। गुणकाल अधर्मिक पंथदहौ॥
तुवकर्म अपार अखंडित है। तिहुंधाम तुहीयक मंडित है॥
नभशीश समीर तुश्वासबसै। चष पूषण भूषण में बिलसै॥
लपनीरज श्रीपति शंकरस्यौ। दुहुबाहु मनोहर तू बरन्यौ॥
जलजात तनै तुव बत्सबदा। त्रैधाम बिराजित पेट सदा॥
बहुकूधर अस्थि वनस्पतिहू। सुतनोरुह और शिरोरुहतू॥
जलदानि कहै शुभशुक्र प्रभू। अधपाद बिराजित सत्यविभू॥
तनभा त्रिषुलोक अभातुम्हरी। निशिद्यौस निमेषसुगत्तिहरी॥
बिसु वैभवहौ तुमहीं करता। करता प्रतिपालक औहरता॥
तववाणि चतुश्रुति देखिपरै। जेहि पायकछू उरज्ञान अरै॥
यहिरूप सुशोभित बालबनै। अवतार अपार सुकौन गनै॥
दो० जानि सकत को त्रिपुर तुव महिमा यादवराय।
दुखरूपी यहि जगत महँ अधिक अधिक अरुझाय॥
क्लेशउदधि भव बिदित सदाही। चिंतामोह नीरभर जाही॥
कामक्रोध मद द्रुविधा कोहा। बहुजलजीवदुखितजेहिसोहा॥
तृष्णायुत दुराश गहि राई। सुत वितादि पर्वत बहुताई॥
नानापंथ बीचिका तासू। जायपार अस समरथ कासू॥
तरणि विवेक नाम कैवारा। यकठा मिलै तहोइ उतारा॥
तरणहेत भवजन भवसागर। करतउपाय विविध नरनागर॥
जातनपार भजन बिनुतोरे। कृपासिंधु निश्चय यह मोरे॥
मनुज वपुषलहि तुमहिं बिसारै। संचित कर्म आपनो हारै॥
दो० जेनहिं ध्याये चरणतुव अरुयश गायोनाहिं।
त्यागिअमृततेहिविषपियो अंतहृदय पछिताहिं॥
जाके हृदय कमल तुवबासा। शोभामुक्त त्यागि सब आसा॥
बेदनेति बहु भांतिन गायो। ऋषि मुनि काहू पारन पायो॥
अबदयालह्वै सेवक जानी। बाणासुर शिरदीजिय पानी॥
यहममभक्त काय मनबानी। बरबश भिरयौ मूढ़ अज्ञानी॥
निज कर्तब फल पाय लजाना। देहुभक्ति निज कृपानिधाना॥

अधिकारिहि न निराशा कीजै । जनप्रहलाद बंश गुणलीजै ॥
बिहँसे कृष्ण सुनत शिववाणी । मोहिंतोहिंएककहतेसबप्राणी ॥
नर बिभेद कृत नर्किक होई । कोटि यतन मोहिं लहैनसोई ॥
दो० तन मन तव सेवनकरै दुबिधा तजि त्रैकाल ।
अंतमोहिं सो जन लहै सुनौमुदित शशिभाल ॥
जो बर जाहि देहु ईशाना । करत सदाहौं तासु प्रमाना ॥
जानि प्रसन्नित शीश नवाई । सैन सहित गिरिगयगिरिराई ॥
तब बाणासुर पदतल परेऊ । द्वौकरजोरि बिनयबड़िकरेऊ ॥
पुनिकहअवप्रभुचलिममधामा । करियपवित्रकृपानिधिश्यामा ॥
निज सुत जात पुत्रिका दोऊ । बेद रीतिकरि लीजिय सोऊ ॥
चले कृष्ण तब संग झषकेतू । गये बाण गृह सुत हित हेतू ॥
तहँ बाणासुर चरण पखारी । पादोदक लै भयउ सुखारी ॥
बिशदासन प्रभु कहँ बैठाई । बचो नीतिमय गिरा सोहाई ॥
दो० मुनिसुपर्व दुर्लभ जगत पादोदकहौं लीन ।
जन्मजन्मको कलुषबहु दूरिसहज सब कीन ॥
दुर्लभ त्रिपुर नाथ पग पाथा । सुरसरि यहै बिदित भवगाथा ॥
भरयो बिरंचि कमंडल जाही । शीश कपर्दी राख्यो ताही ॥
त्रिदश पितृ ऋषिराखतमाना । पावनपतित करत जगजाना ॥
नृपति भगीरथ सेइ त्रिदेवा । प्रगटायो प्रभु भवतल एवा ॥
भागीरथी बिदित भइ सोई । जात स्वर्ग परसत जग जोई ॥
दुःकृतहरणिकरणि भवपावन । पुनि अबाणसोपानसोहावन ॥
अमितजन्म अघन्हात नशाहीं । पानकरततवलोकहि जाहीं ॥
दरशत आन जन्म जनुहारा । अति पवित्र सोहर ध्वनिधारा ॥
दो० अस कहि ऊषा श्यामकहँ लायो प्रभुके पास ।
कह्यो दोष छमिलीजिये यह दासी अनयास ॥
श्रुतिवत दीन्हेसि कन्यादाना । दायज दयो को कहै प्रमाना ॥
सुत बिवाहि बाणहि समुझाई । चले मुदित तब यादव राई ॥
आनंदित यादव गण चाले । जयतिसमरलहिजनप्रतिपाले ॥

नगर निकट आये हरिजानी। धाइचलीं सिगरी रजधानी॥
प्रति गृह भयो मंगलाचारा। मंगलनाद गीत चहुं द्वारा॥
सुर बिमान सोहत बहुनाका। बन्दीजन बरणत शुचिशाका॥
कुसुम माल छोड़त सुरनारी। बिहँसहि देखि मदन मदहारी॥
रुक्मिणि आदिकरैं कुलरीती। लोक बेद बरणी जस नीती॥
दो॰ निज निज गृह सब जातभे सुन भूपति चितलाय।
ऊषा अरु अनिरुद्ध गृह प्रबिशे मोद बढ़ाय॥
ऊषारूप बिलोकि त्रिय बिहँसि लगावै अंग।
दै अशीश बहुबिधि सजै भूषण विविध सुरंग॥
बाणासुर करबल मथ्यौ दीन्हो बिष्णु स्वरूप।
ताहि त्यागि मंगल कुमति परत बिषय के कूप॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषांधकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांऊषाचरित्रवर्णनो
नामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥
दो॰ यहशरीर छणभंगहै करियन नेकभरोस।
यथा बुलबुला नीरको अथवा नाटककोस॥
कृमिकूकुर बायस भषै अंत होइकै क्षार।
तातेताजि मद मूढ़मन ध्याउसदा करतार॥
कालकालसुतत्रियपितामातुकोशधनजानु।
छूटिजाय यहि ठामहीं संगकासुअनुमानु॥
मार्तंड सुत पुरगये जीव हृदय पछिताय।
तब शोचे का होइमन अबहींभजु यदुराय॥
आन ओर हेरे नतू त्यागि रुक्मिणी कंत।
मुश्किलहै संशयनहीं भाषत संत महंत॥
सुनिय महीप पुराहरिवंसी। राजा नृग जग कीर्तिप्रशंसी॥
अगणित दिये भूप गोदाना। गिरा शेष नदिसकन प्रमाना॥
गनेजायँ कणिका सारिबालू। अथवा गनकोउतारा जालू॥
सुरभी संख्या दान नृपाज्ञा। गनिनसकतकाबिबरगुणपाला॥

तुच्छ पापबश सरट सो होई । पर कूपांध जान सब कोई ॥
ताहि मोच्छ कीन्हो यदुनाथा । करिबिस्तार कहिय मुनिनाथा ॥
असदाता धार्मिक नृप नायक । जासुसुयशसुरनरमुनिभायक ॥
केहिअघ अजर विवश ऋषिराई । गिरगिटभयउकहियसमुझाई॥

दो० केहि बिधि रुक्मिणि रमण तेहि उद्धार्यो सुखदानि ।
सुनु महीप चित शांति करि कहौं प्रसंग बखानि ॥

सूरजबंश नाम नृग राई । नित गोदानदेइ श्रुतिभाई ॥
यकदिन प्रात न्हाय नरनाहा । सुरभि सहस दीन्हीसउछाहा ॥
रजतमंडि बिग पग मढ़िरूपा । ताम्र पृष्ठि बासित सुनु भूपा ॥
अन्नदान पुनि दीन्ह नरेशा । अहिमहि बाहन बाहनदेशा ॥
दूसर अह पुनि सुरभि मँगाई । संकल्पी नित्यक समभाई ॥
लियेजात द्विजगो निजधामा । मिल्योअपरब्राह्मणगुणग्रामा॥
मग निरोधि कह सुरभी मोरी । संकल्पी महीश कस तोरी ॥
कालिह नराधि दानमहँ दीन्ही । तूखलअवधितस्करितलीन्ही॥

दो० आजु दान करि दीन्ह नृप बहुमुद्रा युत गाय ।
बूझिबाक्य नहिं कहत तुम तस्कर ताकोभाय ॥

निज निज बदत भूपपहँआये । समाचार सर्वांग सुनाये ॥
जान्यो नृपति दान भ्रमभारी । सत्य बदत द्वौ बिप्र पुकारी ॥
संकल्पित संकल्पौं ताता । यह अयानताामम विख्याता ॥
सबिनय बंदि चरण कहराई । लख मुद्रा यकजन लैभाई ॥
दूसर सुरभी लै गृह जाहू । वृथातजौ निजनिज उरदाहू ॥
क्रोधित बिप्र कोउ नहिं मानत । पुनिपुनि बादभूपप्रतिठानत ॥
किमि संकलिपत धन तजिदेहीं । पलटि तासु द्रव्य हम लेहीं ॥
यक गो हितन होइ द्विजकैसे । कहौ बिचारि मिटै दुख जैसे ॥

दो० बहुबिधि नृपतिबुझाइयो द्विज तामसबशदोउ ।
सुनु क्षितीश गुणज्ञानमय मानन दूमहँ कोउ ॥

करत अनीति दान कस राजा । जेहिकृत बिप्रलहतदुखसाजा ॥
तव गृह रहै न गो हम लेहीं । बिना मोल सुरभी तजिदेहीं ॥

असकहि महिसुर गे निजगेहा। दुखित भयो नृप कौतुक एहा॥
निजमनकृत बिचार पृथ्वीपति। यहिअघईश होइमम कागति॥
नित्य क्रियाकृत जन्म सिराना। अंत गहा यम चार सुजाना॥
महिषध्वज तट सो लै गयऊ। दान वृतांत बदत सबु भयऊ॥
धर्मसेतु नृप लखि यमराजा। हरि आसनत्याग्योयुतसाजा॥
करि सत्कार नृगहि बैठावा। प्रीतिसहितइमि बचनसुनावा॥

दो॰ संकल्पित गोदान किय भयउ पाप यह भाय।
सुकृत बिपुलअघ स्वल्पहै प्रथम भोग काराय॥

सो॰ प्रथम भोगिहौं पाप तापाछे पुनि पुण्य फल।
सहिहौं तनधरिताप सुनौ चतुर रबिजातनृप॥

सरट होउ गोमति सरितीरा। परि कूपांधलहो बड़िपीरा॥
द्वापर अंत कृष्ण अवतारा। तिनकरहोइहि तब निरधारा॥
भयउ तुरंत सरट नृप सोई। पर्‍यो कूप माधि बुधिगतिखोई॥
सघन बिपिन कूपांध महीपा। सदा रहै गोमती समीपा॥
बहुत काल क्लेशित तहँ रहेऊ। वृजिनप्रतापबिबिधदुखसहेऊ॥
द्वापर अंत प्रगट हरि भयऊ। ब्रज तजिद्वारावतिथलगयऊ॥
अति सन्तान वृद्धिभइ ताहाँ। कोकबि बरणि कहै नरनाहाँ॥
यकदिन बालक बिपुल नृपाला। मृगयाहित गयघनबनजाला॥

दो॰ तृषावंत ह्वै बालगण गये कूप तट सोइ।
पर्‍योसरट परिनाह तन कहतबालयकजोइ॥

सुनि समस्ततेहितट चलिआये। सरट बिलोकि महाभ्रमछाये॥
सम्मत करयो निकारौं याको। दिखरावो पुर भूप प्रजाको॥
फेंटा पाग जोरि लटकाये। सबोंदित ह्वै काढ़न धाये॥
करिनि प्रतिज्ञा यह यदुजाता। बिनु काढ़े न जाब गृहताता॥
बहुरज ग्राम नगर ते लाई। फांस्यो सरट सुनौ भुवराई॥
पौरुष करि थाक्यो सुत श्रोनी। सो न हल्यो नृप धर्मनिसेनी॥
महाबिकल शोकित बलकरहीं। अचल मेरुवत सरट न टरहीं॥
कोउयककहेसि श्यामप्रति जाई। समाचारशुचिअखिलसुनाई॥

दो॰ बिहँसि श्याम आये तहां जहां कूपतट बाल।
हरिहि देखि बरणत बिपुल बालहाल तत्काल॥
महाराज हम बलकरि हारे। सरट कूपते टस्यो न टारे॥
भूत दशामन अखिल बिचारी। प्रविशे कूप मध्य बनवारी॥
पद सरोज परस्यो शिरतासू। भयउ महा पूरुष सो आसू॥
क्षोणिप श्याम चरण गहिरहेऊ। करि विज्ञप्ति बहुरि असकहेऊ॥
दयापयोधि दास निज चीन्हों। महा बिपतिते मुक्तित कीन्हों॥
पूछत बाल हरिहि भ्रमखोई। कोयह कहिय नाथ समुझाई॥
नृगसों कहाकहौ निजहाला। कहिअघसरटभयउमहिपाला॥
बसत कौनपुर पूरुब आपू। तवमुखकांतिकि बिभवप्रतापू॥
दो॰ प्रभुहि प्रणतिकरि कहा नृप सब जानतहौ आपु।
तदपि प्रसन्नित बदतहौं सुनौ बिभव सन्तापु॥
पूषण कुल भूषण नृगनामा। सदादेउँ गोदान अकामा॥
यकदिन संकल्पित गोदीन्ही। दूसर बिप्रताहि गहि लीन्ही॥
बाद बदतभौ तटद्वौ आये। मानन तामस बश समुझाये॥
तजिगोनिजगृहगेद्विज दोऊ। मुद्रा लच्छन लीन्हसि कोऊ॥
नित्यक्रियाहौं कृत अघमूला। रंचक पापथूल दुखमूला॥
अंतकवश धर्मालय गयऊ। तहां धर्म अस पूछत भयऊ॥
अतिशय पुण्यतोरि अघथोरा। प्रथमकाहि भोगौ दुहुँ ओरा॥
पापभोगि पुनि सुकृतहि लेहू। बिबिधभांति जीवहिसुखदेहू॥
दो॰ सरट होउ गोमति निकट अंध कूप मधिजाय।
द्वापरांत अवतरिहि हरि मोच्छ परस तेहिराय॥
याहि कारण यह तनहौं पावा। तुवपदध्यावतसमय बितावा॥
आजु उदितभा भाग्य हमारा। मिट्योपापलहिदरशतुम्हारा॥
तेहिक्षण हरगण लावव्यमाना। तदारूढ़ ह्वै नृग बुधिवाना॥
गो बैकुंठ हरिहि शिरनाई। कहाश्याम निजसुतनबुझाई॥
ब्रह्म दोष सम दोषन आना। ब्राह्मणांश हर अघी प्रमाना॥
संकल्पितनभूलिधनलीजिय। सत्यभाषिद्विजकहँसुखदीजिय॥

दै धन द्विजहि लेइ नर जोई। नृग सम दंड अंत तेहि होई॥
सेइय बिप्र चरण शुचि धूरी। भवभय हरणि सजीवनमूरी॥

दो० द्विजसेवक मम भक्त नर रद बंदक शुचि दास।
समुझावत मग बालकन गये भवन अनयास॥
महा पापते मोचि नृग निज पुर दीन्हो बास।
मंगल भजु श्रीकृष्ण पद भव मंगल दशआस॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांराजानृगमोक्षोनाम
पंचषष्टितमोऽध्यायः ६५॥

दो० जे नर पूरब पाप कृत ते उपजत भव आइ।
करत लालसा दोषमय फिरिफिरि ज्ञाननशाइ॥
पीड़ित रोगनसों रहत महा बियोगित नीच।
बेद बाक्य निंदब सदा लहत न सुख भवबीच॥
झगड़ा कहत पुराणसों बहु बिधि दुबिधाखानि।
कल्पितकृत आचार नित बहुप्रसंग अनुमानि॥
बुद्धि आसुरी में पड़े त्यागे ब्रह्मबिचार।
आये नरकहि ते रहैं अंतहु नरक बिहार॥
तूमंगलमन सीख सुनि ध्याउ सदा सुखदानि।
जीवत मुद पुनि अंत में होइ पाप सब हानि॥

जिमि बलराम गये ब्रजराई। सो चरित्र बरणौं चित लाई॥
मणिमयसदनसुखद तिहुँकाला। शोभित हैं तहँ दीनदयाला॥
तहँ हलपाणि जाय कह ताता। हमरे एक मनोरथ गाथा॥
तब अक्रूर संग मुद पाई। बृन्दाबन ते आयउ भाई॥
तब यह प्रण हम कीन्ह सनेहा। शीघ्र आइ देखब पुर एहा॥
गोप सुता माता पितु दोऊ। प्रणसुनिभयमुदितकोउकोऊ॥
गयउ न बहुरि बसे यहि धामा। मिथ्या भई प्रतिज्ञा श्यामा॥
ब्रजबासी हैहैं मग हेरत। अवधिरज्जगासिप्राणहिंघेरत॥

दो० जो सम्मत होवै चतुर तौ भेटौं ब्रज लोग।

आनंदहिं मोहिं देखिनब प्रण पुरवौं यहियोग॥
जन्मभूमि लखि नैन जुड़ावौं। यशुमतिनंद भेटि सुख पावौं॥
सबहिंबुझाय आशु फिरिआवौं। प्रणप्रताप निजभूमि बढ़ावौं॥
जाहु बिलम्बन कीजिय भाई। उठे राम प्रभु सम्मत पाई॥
सुन्दर स्यंदन चढ़ि कृपाला। वृन्दाबनहि चले उत्ताला॥
जेहि पुरजात राम मगमाहीं। सेवकाईकृत अधिपति ताहीं॥
भेटत भव भूपति हलधारी। पुर अवंतिका गये सुखारी॥
संदीपन गुरु बिद्या दानी। तिनके सदनगये मुदमानी॥
चरण रेणु शुचिकर शिर धरेऊ। दशदिन रहि सेवाबड़िकरेऊ॥
दो० आज्ञालै गुरुदेव प्रति चले झटित यदुराय।
कुशलक्षेम महीपसुनु गोकुल पहुंचेजाय॥
देखि नगर शोभा बलरामा। जन्मभूमिकहँ कस्योप्रणामा॥
पुनिबनदिशिनिरख्योचितलाई। बिकलफिरिहिसुरभीअबलाई॥
करणऊर्द्ध बंशी ध्वनि चाहैं। तृण जलरहित चरतबनमाहैं॥
गोप अपार मुदित यशगावैं। पर्म्मसौख्यकह जनुबिसरावैं॥
पुरबासी लघु वृद्ध सनारी। हरियश गानकरैं अधिकारी॥
प्रभु लीला बिस्तारित बरणों। प्रीति रीति ग्राहे गति करणों॥
गो गोपति त्रियदशा निहारी। करुणामय करुणा उरधारी॥
चष प्रबाह पय अतिशयदाया। पुर दिशि देखत भूपसमाया॥
दो० ध्वजपताकरथनिरखिकै जानिश्यामब्रजलोग।
बेद सुताते झटित सब चले तजे संयोग॥
स्यंदन तज्यो देखि पुरबासी। आनँद मग्न राम गुण रासी॥
एक एक कहँ कंठ लगाई। भेट्यो समुद सबहि यदुराई॥
कुशलप्रश्न कीन्ही हितुजानी। सुखददशानिजकह्योबखानी॥
ततक्षण कहा नंद प्रतिकाहू। चढ़ि स्यंदन आये खलदाहू॥
समाचार सुनि दम्पति धाये। उपनंदादि अखिलसँगआये॥
नन्दहि आवत देखि समीपा। सत्वर गमन कियो यदुदीपा॥
परे चरणतल बिनय सुनाई। हृदय लगायो नन्द उठाई॥

फणिमणिकिधौंमृतकतनप्राना। गतधनपाव किधौंधनवाना॥
दो० गहे यशोदा के चरण चूमि लगायो हीय।
महामोद पायो नृपति रंक निपट कमनीय॥
भेटत सबहि चले हलपानी। नन्द सदनगय मुदउरआनी॥
पूछत कुशल क्षेम नंदराई। उग्रसेन बसुदेव गोसांई॥
सहयदुबंश कुशल मम प्राना। बिस्तृत कीजिय तातबखाना॥
तुम्हरी कृपा सकल कुशलाई। मंगलमय पुरलोग लोगाई॥
यश तुम्हार बरणत दिनराती। दम्पति वृद्धि न हृदयजुड़ाती॥
यशुदा सजलित अक्षबखाना। ममसुधिकतहुंकरत भगवाना॥
चष पूतरि यादव कुल भाना। हमहिंबिसार्‌योकृपानिधाना॥
जब ते सुत तजि ब्रजकहँगयऊ। तबते ध्वंत चहूं दिग छयऊ॥
दो० सिद्धियामहरिध्यानउर भावनतनधनगेह।
द्वरावति छाये प्रभू पूरण कीन्हो नेह॥
तजी रोहिणिहु प्रीति हमारी। बश अदृष्ट नहिं दोष बिहारी॥
मधुपुर बसत मिलत दिनकाहू। दूरिप्रदेश भयउ उर दाहू॥
बैकल रोदति नृप नंदरानी। प्रभुसमकरतिनकोउभवप्रानी॥
नीलाम्बर समुझावत ताही। करत प्रशंसा नृप बहुताही॥
उठि यशुदा भोजन चहुंखानी। बिरचिजिमायोसुनुनृपज्ञानी॥
लैताम्बूल चले बलरामा। निरखतनगरबीथिअभिरामा॥
मनमलीनभा क्षीण दुखारी। बिरह बिकल भूषणबिनुनारी॥
हरि रसमती तजे जगरागा। गावहिं हरिगुणसहअनुरागा॥
दो० युवतिन निरख्यो हलधरहि परीं चरणतल आय।
चारिओर रोधित खड़ीं सुनु प्रमुदित भुवराय॥
निजप्रण तुम पुर्‌यो ब्रजआये। पैनहिं प्राणनाथ कहँ लाये॥
कहां बिराजत तन मनहारी। तजीसकल बिधिसुधिहमारी॥
काहूकाल सुरतिकृत श्यामा। अथवा भूले लहि धनधामा॥
त्यागिहमहिं जादिनते गयऊ। तबते पुनि न नेहउर ठयऊ॥
एक बार ऊधौ सुख नाथा। योग ध्यान की पठइनिगाथा॥

मथुराहिरहत प्रीति परित्यागी। जरतरहीं हम बिरह दुरागी ॥
अब दधिकूल पंथ बहु दूरी। रचौ बिहार जगत जियसूरी ॥
कठिन भये नृपता पद पाई। को सुधिनाम दयउ बिसराई ॥
दो० जननिजनकजिन परिहरे कहतआन सखि बूझि।
तिनकी प्रीति प्रतीतिकस तू अलिबदत अरूझि ॥
वृषभमित्रजा बिनु घटिकाहू। रहत न रहै श्याम बिधिकाहू ॥
बिपति बियोग बिकल बरसाने। बसत अकेलताहि बिलगाने ॥
कुलकीरति भव लाज बिसारी। सेये हम त्रिबिधाहि बिहारी ॥
जगकर व्यंग हास्यसह आली। आठभांति बंदे बनमाली ॥
ताकर सुफल कलेश बियोगा। खायो निजकर भोगसुयोगा ॥
बसिदधितीर कीन्ह बहु ब्याहा। षोड़श सहस आठअनचाहा ॥
सुत नाती परिवार अपारा। बिदितभयउसुनुसखिसंसारा ॥
त्यागितिनहिंकेहिबिधिब्रजआवैं। छांछखाय पुनि गायचरावैं ॥
दो० अपर कहति जानिदुखकरौ ऊधो बचन बिचारि।
गहौ चरण बलदेव के जे सांचे तिहुं बारि ॥
गौर शरीर प्रीति मग जानैं। स्वप्नौ कपट चित्त नहिं आनैं ॥
श्याम छद्म मूरति जग गावै। कहा कहिय उर बिरहसतावै ॥
उत्तर संकर्षण अस दीना। ईश्वरजानि भजौ छलहीना ॥
हरिआज्ञा पुनि निजप्रणजानी। आये तुमहिंमिलनहितसानी ॥
अब सब तजौ बियोग कलेशा। ध्यावो सदा सहृदहृषिकेशा ॥
याहि थल हम रहिहैं द्वै मासा। रासठानि पुरउब तुवआसा ॥
मधुपत्र रजनि सोहावनआजू। काननआवौ सजिसजिसाजू ॥
सबहि बुझायरैनि सुखपाई। बिपिनगये हलधर सुनुराई ॥
दो० सम्मतसम ब्रजनारिहू करि षोड़श शृंगार।
गईं रेवती रमण पहँ हित रहस्य सुख सार ॥
निकटजाय किय हरिहिप्रह्रूना। अस बिभांतिहलधर तेहिजूना ॥
रजतबरण बासित पट नीला। बक्रइंदु चष बनजलजीला ॥
सानुरागकर बीन मृदंगा। मुरली अरु करताल उपंगा ॥

अपरयंत्र अगणित कर लीने। गावनलगीं राग रसभीने॥
नृत्यहि भाव बताय सप्रेमा। निरखहिं रेवतिरमणसप्रेमा॥
गानतान गति नृत्य निहारी। मोहितभे ततच्छण हलधारी॥
सानँद कर्‌यो बारुणी पाना। ह्वै मदगलित नचे भगवाना॥
अमित कुतूहल नृपवर करहीं। गावत नाचत गहिकरकरहीं॥
सुर गंधर्व यच्छ किन्नर गन। निरखतसुखसब्रामप्रमोदितमन॥
गावत हरियश छोरि प्रसूना। बारबार कृत प्रभुहि प्रहूना॥
पशुपच्छी गण ध्वनि सुनिधाये। मग्नितजीव रासथलआये॥
जसकौतुकभा श्याम बिलासा। रामकीन्ह तसबाम हुलासा॥

दो० सदाचारगति परिहरी थक मृगांक ततकाल।
झरत करावलिधारजल जगमोह्यो चहुँबाल॥

निशाअंत लखि गृहकहँ आये। अखिलयोषितनबहुसुखपाये॥
इमि मधु माधव रहि द्वौमासा। ब्रज युवतिनमोह्योअनत्रासा॥
रैनिरहस्य दिवस हरि गाथा। करहिं कहहिंयादवकुलनाथा॥
कृत रहस्य यक दिन श्रमपाई। कालिंदिहि प्रभु कहा बुझाई॥
ममतट आउ करौं अस्नाना। आज्ञा लंघत तुव अभिमाना॥
दूरि करौं छण महँ हरि जाया। नृपबर बचनन तेहिउरभाया॥
शासन लंघन हृदय बिचारी। कोपे नीलाम्बर रुट भारी॥
हल बल आकर्ष्यो निज ओरा। त्रियन सहित न्हाये बरजोरा॥

दो० टेढ़ भई यमुना नृपति तादिनते तेहि ठाम।
सदन आयमिलिसबनकहँ सानंदितपरिणाम॥
नंदयशोदा आदि दै त्रियनर अखिल बुझाय।
भेंटि बिरह दुबिधा सकल बिदाभये यदुराय॥
गये द्वारका मोद मय हरिहि सुनाव प्रसंग।
मंगल भजु यदुबर चरण लहै सौख्य प्रतिअंग॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धाकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांबलभद्रब्रजगमनवर्णनोनाम षष्ठषष्टितमोऽध्यायः ६६॥

दो० ज्यों बालक रचिख्यालबहु क्षणमें देत मिटाय ।
तथा ब्रह्म निजशक्ति बश त्रिपुर रचत सुनुभाय ॥
हरिकी शक्ति अपार है कोजग जानन योग ।
चतुर सुजन बंदत सदा शक्तिहोत बिनु रोग ॥
ज्योति प्रकाशित चारिदिशि नारायणकी आहि ।
मूरुख भ्रमत अनेक बिधि बिबुध बिलोकत ताहि ॥
बिनु जाने भ्रमणा बड़ी जाने नशै कलेश ।
ज्ञान कठिन कबि श्रुति बदत फलित ज्ञान चहुंबेश ॥
उत्तम शाखा ज्ञान तरु पाय भजै यदुराय ।
मंगल मन दृढ़ता गहै भवदधि सो तरि जाय ॥

गाथा रुचिर श्रवण नृप करहू । तुमहितुजानिसमुद अनुसरहू ॥
पौन्ड्रक नाम भूप यक काशी । बलनिधानभवबिभवबिलासी ॥
विष्णु वेष कीन्हों छल कारी । निजबशकिये पुरुषअरुनारी ॥
पीताम्बर धारे बनमाली । मुक्ता मणिसृक कंधरडाली ॥
कम्बु चक्रगद कजकर धारे । दुभुज काष्ट निज अंगसवांरे ॥
दारु खगेश धरे स्वतुरंगा । तदारूढ़ बिचरै दुख भंगा ॥
वासुदेव पौन्ड्रक निज नामा । कख्योप्रसिद्ध जगतगुणग्रामा ॥
सबसन निजहि पुजावै पापी । जो न मान तेहि दंडैतापी ॥

दो० बहु नृप कीन्हे स्वबश खल उद्यम संगर ठानि ।
आन प्रसंग महीप सुनु जोसुनि मिटै गलानि ॥

प्रतिपुर नगर लोग इमि कहईं । द्वै अवतार विष्णु कर अहईं ॥
मथुरा यदुबंशी हरि एका । जन्म्यो अरुश्रुतिबदतबिबेका ॥
द्वितिय जन्म बाराणसि आई । सत्य अनृतको बंदिय भाई ॥
यह चर्चा छाई चहुं ओरा । सुनि काशिपकरमनभायोरा ॥
रुटित बच्यो निज सभहि सुनाई । कोअह कृष्ण द्वारका भाई ॥
जाहि कहै जग हरि अवतारा । भक्त हेत हौं नरतन धारा ॥
छद्मी श्याम बधौं रण माहीं । प्रचरित होइ धर्म बहु धाहीं ॥
दूत बोलि प्रभु पास पठावा । कहिसंदेश भलिभांतिबुझावा ॥

दो० कपटरूप मम तू धरे बेगि त्यागु किनताहि ।
उद्यम संग्रम नतुकरौं ग्रस्यौ काम भ्रमनाहि ॥
हरिपुर सभागयउ चरसोई । करिप्रणाम बोल्यो रुखजोई ॥
हरपुर विष्णु पौन्डूक अहई । जिनकहँ विश्वईश करि कहई ॥
तिनकरनाथ सँदेशा लायउँ । याहिमिस प्रभुतवदर्शनपायउँ ॥
आयसुहोइ कहौं करजोरी । अवशिवदौ प्रपंच मतिछोरी ॥
कह काशिपहौं भव करतारा । प्रतिपालकनाशक श्रुतिसारा ॥
कोतू कपट कलेवर भांड़े । जगतलाज तीनों विधिछांड़े ॥
जरासंध भयतजि निजधामा । बस्यौ द्वारका बशमतिकामा ॥
तजि ममवेष ताकुमम शरणा । विधिप्रतिकूलभयउनतुमरणा ॥
दो० जोनध्याइहै मोहिंतो तुहि यदुबंश समेत ।
समरमंडि बधिहौं सही चलि द्वारावति खेत ॥
हरिमहिभार पालिहौं दासा । पूरणयश भवकरौं प्रकासा ॥
निराकार निर्द्वैत महाना । सोहौं पारब्रह्म भगवाना ॥
ऋषिवराक नरनाग खचारी । जपतप अर्चा करत हमारी ॥
बनजजातहै भव उपजाऊं । हरिहै शुचिजीविका पठाऊं ॥
शंकरबनि नाशौं तिहुंकाला । आदि पुरुषहौं जनगणपाला ॥
मत्स्यरूपहौं बेद बचावा । कच्छ धराधरि जगत बसावा ॥
शूकरबपु हाटक चषमारा । नर पंचानन भक्त उबारा ॥
रघुकुलमणिबनिजनदुखनाशा । बधिसुरारियश बिशदप्रकाशा ॥
दो० जब जब बाढ़त दुष्टभव ममभक्तन दुखदेत ।
तब तबहौं हौंस्वबशजग निज शरीर धरिलेत ॥
हरि आसन आसीन कृपाला । सुनतदूतमुखअखिलाहिवाला ॥
तस्मिन्समय कोउ यदुजाता । क्रोधितवद्यो दूतप्रति बाता ॥
शमन धाम चाहत खल देखा । कहतअबूझितबचन विशेखा ॥
दूत निधन भवनीति बिरोधा । छद्मीचर चुपभा उर क्रोधा ॥
चहियवशिष्ठ बुद्धि चषमूढ़ा । बदै विवेकित बचन अगूढ़ा ॥
प्रभुसनेह तेहिविविध बुझावा । सादर दूतहि निकट बुलावा ॥

जाइकहौ निज स्वामिहिं भाई । आवत कृष्ण सत्य शरणाई ॥
सावधान सब बिधिहै रहहू । निजकलेशसबबिधिकरिदहहू ॥
दो० बंदि चरण श्रीकृष्ण के हरपुर गयउ बसीठ ।
वासुदेव कृत महिनयो पस्यो दृष्टि नृपईठ ॥
काउत्तर बहु यदुबर दयऊ । चरपदबंदि कहत असभयऊ ॥
नाथ सँदेश कहा सबु जाई । भणयोश्यामइमिमोहिंबुझाई ॥
विष्णुरूप अबहौं परित्यागी । आवतहौं शरणागत लागी ॥
रहैं सचेत भूप बसु यामा । छलकृतपतिनाशतपरिणामा ॥
दूत संदेश कहत चितलाये । तदाकाल बहुचर चलिआये ॥
प्रणति सनीति कीन पुनिबोले । सुनो महीपति समरअडोले ॥
कस निशिंचत सभामधि राजै । युद्ध चमू नाना बिधि साजै ॥
यदुपति दल चतुरंग सवारी । पुर निरोध कीन्हो खलहारी ॥
दो० सुनि धायो निज कटकलै आयो प्रभुदलपास ।
संलग्नी तेहि अपर नृप जाकर काशी बास ॥
समर निशान तूर्य्य सहनाई । बजैं भेरि कर्नाल सोहाई ॥
ताल मृदंग दुन्दुभी आना । संगर यंत्र अपर बिधि नाना ॥
रावत सावत प्रबल प्रबीरा । लागे युद्ध काज रणधीरा ॥
महा मारु नहिं बरणि सिराई । खग खग समनभरहे उड़ाई ॥
कादर बिपुल निरखि रणभागे । समरशोर सुनि शंकर जागे ॥
वासुदेव पौन्ड्रक युत क्रोधा । प्रभुसन्मुख आयो कृतशोधा ॥
अनबद बदत कालबश सोई । बहु यदुजात कहत तेहिजोई ॥
हरिस्वरूप कसहरि रणमारैं । श्रुति मारग निंद्याहि प्रचारैं ॥
दो० सकल भ्रमित लखि कृष्णजू असबदि करयो प्रबोध ।
कपटी दुर्गामी बधे अघन कहत श्रुति शोध ॥
प्रेस्यो चक्र भाषि इमि श्यामा । दारु बाहु भंजौ खग जामा ॥
अरुगति बान पलाइत भयऊ । दुष्टभूमि तल मारग लयऊ ॥
खंड्यो कंठ चक्र तद बारा । महापापमय तेहिक्षण तारा ॥
काशी पस्यो भूप शिर तासू । बिदित प्रभाव ईशसमजासू ॥

त्रियगण निरखि बदैं अकुलाई। यहकरता कस अकथकथाई॥
तुमपति देव देव अवतारा। अजर अमर बहुबार पुकारा॥
क्षणमहँ त्यागि काय स्वर्गयऊ। हमरे तिमिरवेद दिशिछयऊ॥
नाम सुदत्त तनय तेहि राजा। पितुशिरदेखिलहीबड़िलाजा॥

दो० जेहि मार्‍यो ममतातरण ताहि बधौंहौं आजु।
असकहि शिव थल सोगयउ त्यागि भूपसुखराजु॥

प्रभुबदि ताहि गयेनिज धामा। अग्र चरित सुनुनृपबरकामा॥
बिपुलकाल तप करेसि कराला। भे प्रसन्न सितकंठदयाला॥
निकट आय कह सुतबर मांगू। देहौं तोहि सहित अनुरागू॥
बधौं कृष्ण यह बर मोहिं देहू। पिता बैर जेहि बललैलेहू॥
यह बरदान असंभव ताता। यतन एकहै यदुकुल पाता॥
वेद मंत्र प्रतिकूल प्रजापी। करिये यज्ञ जगत सन्तापी॥
मख प्रसिद्ध प्रगटिहि यकबाला। महा प्रबल जनु दूसर काला॥
तब आयसुवत काज सवाँरिहि। कृत्या नाम तोर प्रण पारिहि॥

दो० हर अनुशासन पाय खल कर्‍यो यज्ञ द्विज बोलि।
प्रगटी कृत्या तासुते धरा शेष शिर डोलि॥

चली द्वारकहि वेषभयंकर। जेहिकरहोत न भवकरशंकर॥
देश नगर जारत बहुधाई। मनुज निपातत हरिपुर आई॥
गर्जत घोर किधौं पविपाता। प्रेर्‍यो जलज द्वारका ताता॥
पुर बासी कृत त्राहि पुकारा। बाल युवा आये प्रभुद्वारा॥
सबहि बोधि प्रभुचक्र पवारा। बधि कृत्या हरपुर.करुद्वारा॥
चल्योसुदर्शन प्रज्वलितआगी। कृत्यानिरखिनगरतजिभागी॥
ताहि भंजि काशी पुरि गयऊ। गृह प्रति चक्र वेद सुतदयऊ॥
प्रजरत नगर बिकल नरनारी। देत सुदत्तहि कोटिनगारी॥
दो० बाराणसी जलाय करि गयउ चक्र हरि पास।
सुखीभये यदुजात सब रहै लगे अनयास॥
छलकारी मर्द्यौ दयउ निज पुरवास कृपाल।

मंगल तजि दुबिधा अखिल भजु तू मदन गोपाल ॥
इतिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांनृपतिपौनृक
मोक्षवर्णनोनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

दो० क्रोध प्रबल प्रजरत हृदय होत बुद्धि बिपरीत ।
बुद्धि भ्रमे ज्ञानौ भ्रमत बदत चतुर यह गीत ॥
ज्ञान नशे यहि जीवकी होत दशा बिकराल ।
ताते त्यागै क्रोध बुध सुख पावै त्रैकाल ॥
शांतिरूप ध्यावै सदा परमात्मा गुण खानि ।
जासुभजनते अखिल मति लहै मोक्षसुखदानि ॥
जीवत सेवै बचन मन तन शुचि रुक्मिणिकंत ।
भक्ति मुक्ति पावै सही सत्य सत्य बुधिवंत ॥
जे मूरुख अज्ञान मय तजियै तिनको संग ।
ज्ञान चतुरई जगत यह उपजै बुद्धि अभंग ॥

जिमि बलरामद्विबिदकपिमारा । कहौं यथा नृप युत बिस्तारा ॥
द्विबिदनामकपि अतिबरियारा । सचिव सुकंठ बिदित संसारा ॥
भौमासुर कर सखा कहावै । निज बल जो बहुबार लजावै ॥
तेहियकदिन निजसभा बखाना । शूल यक खटकत ममप्राना ॥
मित्र मोर भौमासुर रहई । मर्यौ ताहि कृष्ण रण अहई ॥
बैर लेउँ तौ हृदय जुड़ाई । कहि असउर बड़ मोह बढ़ाई ॥
कोप बलित चषभे अरुणारे । चल्यो द्वारकहि संग बिसारे ॥
नाशत देश नगर अन्याई । दंडत हरिजन ब्राह्मण गाई ॥

दो० जल बरसावत विविध मग बोरत बिपुल सजीव ।
अग्नि प्रकाशत योगबल कृत बिनाश अघसीव ॥

पाहन बिहति काहु शिर तोरै । काहुइ पकरि सिंधुमहँ बोरै ॥
बांधत बांधि मनुज बलखानी । बंदि कंदरा कृत अभिमानी ॥
काहू कर शिर बाहु उपाटा । तरु हति काहू करत न काटा ॥
महा बिपति किय गुर्जर देशा । मग बिपरीतचलत अघवेशा ॥
देवालय मुनि थान जो पावै । मूत्र पुरीष रुधिर बरसावै ॥

सब प्रकार भव करत उपाधी। गयोद्धारकहि कुमतिअराधी॥
धरिलघुरूप चढ़यो हरि धामा। देखि डरीं सुन्दरी ललामा॥
अस बिचारि रेवत गिरिगयऊ। निपट निशंकशंकतजिदयऊ॥
दो० प्रथमनिधनि रेवतिरमण पुनि मारौंघनश्याम।
अलख रूप निरखत भयो बल बिहार तेहिठाम॥
हरिमद गलित नारि गणसंगा। करत सरोवर तट बहुरंगा॥
न्हात त्रियनसँगकृत सुठिगाना। महामुदितकिमिकरौंबखाना॥
लखिचरित्र यहद्विविद कुजाती। पादप चढ़यो भूप उतपाती॥
किलक्योअमितभांतिमतिहीना। कपिलीलाबहुकरयोप्रबीना॥
तर्जत मृगशाखा महिपाला। त्रियनडरावतकरिकपिख्याला॥
जेहिंथलधरयोकलशशुचिहाला। अरुजहँ चीर बिराजतबाला॥
तहँ बिट मूत्र करयो खल जाई। युवतिन देखा दृष्टि उठाई॥
ह्वै भयभीत त्राहि बच भाषा। लखौ नाथ भयकरमृगशाखा॥
दो० तृसत हमहिं अनस्वारथहि बिट मदिरा घटकीन।
बस्त्र अशुचि पुनि सब किये सुनौ कृपाल अक्षीन॥
सुनि तड़ाग तजि बाहिर आई। अबिलोक्योकपिपतिबलदाई॥
डरपायो गहि उपल कृपाला। डरयोननेक द्विविदबशकाला॥
जानि बारुणी गलित नृपासू। दपट्यो कीश जाटितमृतपासू॥
उतरि दली शाखा धर आवा। किलकिलाइगरज्योअरुधावा॥
सुरापात्र पटक्यो महि माहीं। फारयो बिपुल चीर भयनाहीं॥
प्रभु मनजान बली मुख बाली। अहै असुर को डारिय घाली॥
आयुध हलमूशल कर लयऊ। तब तनु कीश बढ़ावतभयऊ॥
कनक भूधराकार भयानक। कपिपतिभयउमहीपअचानक॥
दो० भयउ उपस्थित समरहित गहिकर गिरितरुजूह।
प्रभु मूशल घारयो जबहिं तब धायो करिहूह॥
पत्री अग जग बिपुल बहाये। युद्ध भयानक बनत न गाये॥
निधड़कभिरत उभय रणकारी। कौतुकीय मन बिस्मितभारी॥
दुखितबिलोकि बराकअकाशा। हलधरकरयोकोपिकपिनाशा॥

मरत ताहि सुर मुनि आनंदे। बारबार प्रभुके पद बन्दे॥
कुसुमावली अमित बरसावैं। जयजयकहिप्रभुसुयशसुनावैं॥
त्रेता रह्यो रामदल माहीं। बिदितकथा बरणयोतेहिनाहीं॥
मित्र हेत निजप्राण गमावा। जगसुलोक उत हरिपुरपावा॥
कानन चर इमिस्वर्ग पठाई। द्वारावति आये यदुराई॥

दो० द्विबिद युद्ध बरणयों सकल प्रभुसन्मुख बलराम।
सुनिहरषे घनश्याम बहु पुर सुखभा प्रतिधाम॥
मंगलमन जो धर्ममय ध्याउ रुक्मिणी कंत।
दुबिधा नाशै अखिलभव अरु सुखलहै असंत॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांद्विविदवधवर्णनो
नामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

दो० जासुचरित लखिपरतनहिं सुगमअगम बिधिदोइ।
चतुर बिबुध खोजतयदपि तदपि न जानतकोइ॥
स्वबश बिरचि जेहिकाय निज लीन्हे बहुअवतार।
क्लेश हरे संसार के पतित किये भवपार॥
तासुचरण पंकजभजिय तजिय कृतिम सुरसर्ब।
सुखसागर इतमुक्ति उत बिनशिजाय दुखगर्ब॥
जो बिपदा भइ जीवकहँ मर्म मध्य मनुजान।
सो भूल्यो क्यों नीचतू करु यदुबर पद ध्यान॥
नरतन पारस पाय खल खोजत कांच पषान।
त्यागि याहि पुनि अंत में पछितावैं अज्ञान॥

कौरवेशशुचिमनसुनिलीजिय हरियशसुनतद्विचिततजिदीजिय
कहौं लक्ष्मणाकर उद्वाहा। दुर्य्योधन तनया नरनाहा॥
लखिबरयोग कुरुपअभिमानी। रच्यो स्वयंबर उर मुदआनी॥
धरापाल गुण गण युत जोई। पत्र पठइ बोलसि सब सोई॥
यथा योग सबकी पहुनाई। कस्यो अनेक भांति मनलाई॥
यज्ञ दिवस सुधि पाय नृराया। साम्ब नाम ऋक्षजाजाया॥

नाग नगर आयो कुरुराया । सादर ताहि सभा बैठाया ॥
चहुं दिशि दृष्टि देइ सो देखै । बैभव पति न चित्त निजलेखै ॥
दो० बस्त्राभरण बिभूति बहु राजत राज समाज ।
अस्त्र शस्त्रमय पंक्तिमय खड़े सुता के काज ॥
बहु कौरव सोहत तिन पाछे । महाबीर रण काछनि काछे ॥
बजतनिशानभांतिकिमिगाइय । अंतर गीत नाद बहुताइय ॥
रंग अवनि मधि राजकुमारी । रतिमूरति छबि मनहुंसवांरी ॥
हस्त कमल जयमाल सोहाई । त्रिपुर जयति शोभाजनुराई ॥
सखीवृन्द संग ऋक्ष प्रकासा । दुहितामुखभाजनुशशिभासा ॥
निरखत भूपति नैन उठाई । काहूगलन माल पहिराई ॥
कृष्णतनय तटआई बाला । गल परंतुनहिं डारिसिमाला ॥
तबतजि भय संकोच महाना । पकरिताहिघाल्यौनिजयाना ॥
दो० चल्यो द्वारकहि बालगहि देखत सब भुवराय ।
करण द्रोण भूरिश्रवा कुरुपति रहे लजाय ॥
मखबिनाश लखि कुरुपरिसाना । करणहि बोलिमंत्रअसठाना ॥
यज्ञभंग कीनसि यहि आई । यह अनीति पुनि सुतरबताई ॥
यदुबंशी अन्याय सदाहीं । कुसमय समयकरतभ्रमनाहीं ॥
शल्य कहा कुलहीन महाना । राज्यपाय पदशिरपर आना ॥
साम्बहि मर्दि सुताकिन लेहू । कतचुपबैठि सुयश निजदेहू ॥
सुनि कौरव सकोपि सबधाये । मगनिरोधि बहु अस्त्रचलाये ॥
हरिसुत अमित बाण रणमारे । तजितन रावत स्वर्ग सिधारे ॥
श्याम सूतभा जीव बिहीना । पदचर धायो समर प्रबीना ॥
दो० घेरि कौरवन बांधि तेहि लै आये निज धाम ।
सभामध्य नरछोट बड़ करत हँसी परिणाम ॥
अबकहँ गयउ पराक्रम तोरा । हरयौ सुताकेहि बलबर जोरा ॥
नृप आयसु बन्दी गृहराखा । नारदआय नरेशहि भाखा ॥
बध्यौन भूलि कृष्ण सुतराई । नतुपाछे पछिताहु अघाई ॥
मुशलपाणि क्रोध जल जाता । दारुनहोउ बंश युतताता ॥

तनयबन्दि सुनि हरि बलरामा । ऐहैं सह सहाय तुव धामा ॥
विग्रहसंधि उनहिं सँगकीजिय । दंडन भूपबाल कहि दीजिय ॥
बयकिशोर बुधि हीन नरेशा । कस्यौ अनीति सुयज्ञ सुदेशा ॥
ताहि बुझाय देवऋषि राजा । गये द्वारका श्याम समाजा ॥
दो० देखि मुनीशहि सहसभा उठि बन्दे नृपपाय ।
शुक्राशन आसन दयो कहतभये मुनिराय ॥
दुर्योधन साम्बहि गहि राखा । विविध दंड दीन्हों मनभाखा ॥
मख बिनाशि दुहिता हरितासू । आवत पंथ बन्दिकिय आसू ॥
बेगिसुद्धि लीजिय बनवारी । सुतबध सुनि नतहोहु दुखारी ॥
गर्वबलित कौरव सबजानैं । काहूकीन कानि जगमानैं ॥
शत्रु समान बांधि साम्बूकहँ । दंडिराख बन्दी आलय महँ ॥
सुनि कोपे सिगरे यदुजाता । उग्रसेनि क्रोधित भा ताता ॥
आज्ञा सबहि दयउ दुखमानी । करौ निरोध कुरुप रजधानी ॥
बधि कौरव सुत बेगि छुड़ावौ । हित सम्बंधकानि जनिलावौ ॥
दो० भूपरजायसु पाय नृप जुरे अखिल यदुजात ।
रामआय कह राउप्रति दलन पठाइय तात ॥
अकसर जाय उलाहन दैहौं । शिशुहि प्रमोचि कुरुप तेलैहौं ॥
कारण बंधन विविध प्रकारा । समुझिकरौं परिणामअखारा ॥
बिनुमम गमनन प्रगटिहिमर्मा । बूझेबिनुन करिय रणकर्मा ॥
नृपति रजाय पाय हलग्राही । गजपुर चले शोक तरुदाही ॥
कोबिद विप्र संगऋषि नारद । अपरसुबुधिगणधर्मबिशारद ॥
पुर बाहिर उपबन कियथाना । मोदितकौतुकऋषिहिबखाना ॥
कृपाराशि विनती ममानिय । भूपसमा गममोर बखानिय ॥
नारद नगर मध्य गयराई । आगम राम बद्यौ समुझाई ॥
दो० सुनि सचेत ह्वै सब चले सभा सहित सुनभूप ।
सुरसरिसुत गुरु द्रोण युत करणसुबीर अनूप ॥
दुर्योधन उर मुद अतिछायो । कह्यो मोर गुरु हलधरआयो ॥
आजु बंदि पद पाप नशाऊं । जीवत चहुंफल करतलपाऊं ॥

पथ बतरात गये उद्याना। बिबुधसभायुत जहँभगवाना॥
परसे चरणभूमिपति जाई। अस्तुतिकरयोअमितगुणगाई॥
युत पाटीर चर्चिसृक डारी। पूछि कुशलद्धबिधाहिबिसारी॥
करि बिज्ञप्ति सदन निजलाये। सादर हरि आसन बैठाये॥
छरसचारि बिधि व्यंजनसाजा। सबहि जिमाये कौरवराजा॥
आगम हेत पूछ कुरुनायक। आज्ञाहोय करौंनिज लायक॥
दो० उग्रसेन पठवा हमहिं लाये सुरुचि सँदेश।
सुनौ अवनिपति चित्तदै जेहिते मिटै कलेश॥
उचित बिरोध हमारे संगा। कुरुपति रहै न प्रीति प्रसंगा॥
तुम शत बंधु प्रबल रिपु घाती। बलबिलोकिबिहस्त अरिछाती॥
परिहरि नीति ज्ञान कुलकानी। बांधत बालक भैनगलानी॥
दृढ़ सम्बंध नशाव पुराना। शिशुहिदयउदारुणदुखनाना॥
अहंकार बश तज्यो सनेहू। अनुचित कर्म करयोसुतएहू॥
उग्रसेन की नाथ बड़ाई। अबन कृपाल करियहिठाई॥
कुल बिनु जानन भूपर कोई। दुखी रहत बहुकछु दिनखोई॥
अस नरेश नृपता महँ मोरी। अनगण अहैंसुनौं गुणघोरी॥
दो० मद छायो लहि राज्य लघु उग्रसेन उरतात।
सो यह तासु प्रताप नहिं भयउ हमारे नात॥
बीते कछुक दिवस सब जानैं। ब्रजग्वाल न सम्बंधित मानैं॥
भोज्यो भोज्य संगतिन केरे। कहत बनत नहिं कर्म घनेरे॥
जादिनते हम किय सम्बंधा। लह्यो राज्य तबते बुधिअंधा॥
सो अब हमहिं डरावत आही। अनुचितउचितबुझावतकाही॥
उत्तम जन गुण मानत नाथा। नीचबिसारि देत शुचिगाथा॥
यह संसार प्रसिद्ध कहानी। बालूभीति अकुल पहिचानी॥
इमि बहु व्यंग द्रोण रबिजाता। उग्रसेन कहँ भाष्यो ताता॥
भीष्म शल्य आदिककटुबानी। अमितप्रकार अनीतिबखानी॥
दो० उठि निजनिज आलय गये गर्बगलित कुरुजात।
देखि अनादर राम तब मन माखे सुनु तात॥

महा गर्बमय अबुध महाना । उग्रसेन कह ब्यंग बखाना ॥
त्रिसुर बंदनिय जेहि पदनवहीं । लखिप्रताप पाहन पयद्रवहीं ॥
बोरौं सकल कुरुज युत ग्रामा । दुखतरुनत बाढ़िहिपरिणामा ॥
हल समृद्धि गजपुर आकर्ष्यौं । बलबिलोकिकौरवजियधर्ष्यौं ॥
अति भयभीत पाहि कहिपाही । राम सुयश बहुभांति सराही ॥
कहा क्षमिय अपराध हमारा । शासन भंगनकरब तुम्हारा ॥
बांध्योशिशहि अनीतिबिचारी । सो कृपाल लघुधिषणहमारी ॥
सेवक चूक हृदय नहिं लाइय । कोयश गंग बोरि पुर पाइय ॥
दो० शांतिभये सुनि बिनय बड़ि दयासीव बलराम ।
नगर यथास्थित गंगतट करिदीन्हो गुणग्राम ॥
साम्ब प्रमोचि बेद बिधि व्याहा । कीन्हक्षितीश सहितउत्साहा ॥
कन्यादान सघन नृप दयऊ । पुर प्रमोद नानाबिधि छयऊ ॥
यौतुकअमित इलापतिदीन्हा । सबिनयहरिहिबिदापुनिकीन्हा ॥
यहि प्रकार कौरव मद घाली । शिशुहिब्याहिलायेरिपुशाली ॥
प्रविशत नगर द्वारका भूपा । भये मंगलाचरण अनूपा ॥
हारिपुर समाचार हल पानी । उग्रसेन पुनि बद मृदुबानी ॥
सुनि बिहँसे भूपति अवनीशा । भलकीन्होकुरुपतिमदखीशा ॥
देखि लक्ष्मणा आनन शोभा । हरिरनिवासमनहिंमनलोभा ॥
दो० मान मथत मानीन के नारायण सब काल ।
मंगल तजि अहंकार भजु दुख हर श्रीगोपाल ॥
इतिश्रीमाद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांसाम्बबिवाहवर्णनोनामै
कोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥
दो० देखि बिपति बिकलित महा होत जीव अज्ञान ।
तब ध्यावत हरिको अथिर जेहि होवै कल्यान ॥
सुखमें नहिं ध्यावत हरिहि बिषयभोग लपिटात ।
महा कृतघ्नी पातकी जीव जगत बिख्यात ॥
आनँद और निरानदहु समता जानि सुजान ।

शुक्लकृष्णशशि समनिरखि ध्याउसदाभगवान ॥
छूटि कलेवर जाय यह सेवत जेहि दिन राति।
समन सदन पछितायमन नाशै बिषयी भांति ॥
अखिलआशपरिहरिचतुर भजुयदुपतिकजपाद।
सुख पावै दुहुं ओरही बदत बिबुध मनुजाद ॥

नारद मुनिकर मोह बखानौं। दुख तरुअच कुठारितव मानौं ॥
श्रवण करौ भ्रम अशुचिबिहाई। एक समय नारद ऋषिराई ॥
निज मन यह कीन्हो सन्देहा। बहु युवती सोहत हरि ग्रेहा ॥
करत गृहस्थाश्रम केहिभांती। समुभतमोरसुबुधिबिकलाती॥
बिना परीक्षा भ्रमन नशाई। इमि बिचारि हरिपुरगे राई ॥
पुर बाहेर निरखे उद्याना। बड़लघुबिटपफलितबिधिनाना॥
अमित वृत्त बोझित महिलागे। दाता किधौं दीनहित पागे ॥
द्विज कपोत शुक चातकमोरा। बोलत शब्द सुखद घनघोरा ॥

दो० फूले पद्म तड़ाग महँ उठत गंधि सुख दान।
भ्रमत सिली मुख गुंजरत मनौं दूतभषभान ॥

जलचर बिपुल सरोवर तीरा। करत कुलाहल छूटत धीरा ॥
इमि देखत सरवर सुखदाई। प्रबिशे नगर मध्य मुनिराई ॥
हाटक सदन जटित मणि सोहै। जो बिलोकिबिधिहरमनमोहै ॥
पुरकि द्वितीय शूर परकासा। गृहप्रतिध्वजापताकबिलासा ॥
प्रति अगार शोभा को गावै। गिरा शेषमति लखतलुभावै ॥
बंदनवारि कलश प्रति द्वारा। धूपधूम्र प्रति धाम पसारा ॥
नगर मलिनता सोइमहिपाला। अघगतिबिपनकोउनरबाला ॥
बिप्र समूह बेद कृत गाना। कहुं मुनीश बैठे सहध्याना ॥

दो० हरिहरि कोउ हरहर रटत कोउ ध्यावतजगमात।
भिरत मल्ल कहुं पशुलरत पुरछबि बरणिनजात ॥

कहुं बहु सुजन करत मखराई। गोदानादि देत मुद पाई ॥
कोउ सुमिरत निज इष्ट सनेमा। पाठ करत आगम सहछेमा ॥
कहुं इतिहास पुराण प्रचारा। सुख छायोपुरविविध प्रकारा ॥

कहुँ यदुवंशी सभा सँवारे। जो अवलोकि शक्रमनहारे॥
जहँ लक्ष्मी नारायण राजैं। ऋद्धि सिद्धितहँ शोभासाजैं॥
तीनि भुवन लखिनगर निकाई। द्वारे हृदय नृप रहतलजाई॥
महा मग्न मन मुनि बिज्ञानी। करौं परीक्षा अस अनुमानी॥
केहि त्रियसदन प्रथम हौंजाऊं। दर्शन जहां कृष्णके पाऊं॥
दो० करि बिचार रुक्मिणि भवन गये प्रथम ऋषिराय।
देखि मुनिहि बन्दे चरण हरि आदस्यो स्वभाय॥
पद पखारि आसन शुचि दयऊ। षोड़श बिधिपुनि पूजा कयऊ॥
मुनिबर जहां शांत पद आवै। सुख शोभा सब बिधितहँछावै॥
तारण हित हमार परिवारा। दयउ दरश मुनिकृपाउदारा॥
सिंह शब्द सुनिगजगणभागैं। संत गिरा तिमिअघगृहत्यागैं॥
जिमिलखिद्विजपतिअहिबिकलाईतिमिलखिसाधुबिपतिसमुदाई
दै आशिष ऋषिकस्यो पयाना। प्रभुमुनिहृदय मोहअनुमाना॥
बिहँसि अनेक रूप बिस्तारे। ऋक्षसुता गृह मुनिपगधारे॥
देखि प्रभुहि बदि आशिर्बादा। सतिभामा तट गे सबिषादा॥
दो० तन उबटत देखो हरिहि घूमि चले मुनिनाथ।
तैल बिमर्दित आशिषा देइ न बद श्रुति गाथ॥
जो अजान कोउ करै प्रणामा। तदपिन आशिषबदगुणग्रामा॥
कालिंद्री आलय पुनि गयऊ। सेवत प्रभुहि बिलोकतभयऊ॥
शूरसुता लखि मुनि गुण खानी। सत्वर हरिहि जगायो आनी॥
जागि तपिहि बन्देउ यदुनायक। थिरचर जीवत्रिपुरसुखदायक॥
कर्मभानु मग उदयत भयऊ। मुनिवरदरशतिमिरअघगयऊ॥
चलै आशिषा दै गृह आना। गये मित्रबिंदा शुभथाना॥
ब्रह्मभोज्य तहँ नैन निहारा। बिस्मित बुद्धि ज्ञानमनहारा॥
ब्यंजन सरस परोसत श्यामा। ऋषिहिदेखिआदरयोसबामा॥
दो० रुचिर समय आयेऋषय भोजन करिय सनेह।
तजियनैक उच्छिष्टह्यां पूत होइ मम ग्रेह॥
अवसर नाहिं मखकर असुरारी। बार ब्यतीत भखौं सुखकारी॥

तब लगि विप्र जिमाइ पठाइय। ब्रह्मशेष पुनि हमहिंजिमाइय ॥
सत्या सदन गये असभाषी। भ्रमतसुमतिकौतुकअभिलाषी॥
कृत किलोल निरखेअघभानन। निंदत शरद चंद्रमा आनन ॥
कुसमय जानि चिन्हारिबिसारी। भद्रा धाम गये भ्रम भारी॥
भोजन कृत देखे खल गंजन। सत्यचिदानंदअलखनिरंजन॥
पुनि लक्ष्मणा सदन बनवारी। कृतस्नान देखे मुनिचारी॥
अति भ्रमबलितऋषयबशमाया। षोड़श सहस भवनगे राया॥
दो० आन आन बिधि हरि लखे प्रति अगार मुनिराय।
करत गृहस्थी कर्म प्रभु मन बुधि दुबिधा भाय॥
नारद हृदय महा भ्रम छयऊ। कहयह कहाचरित बिधिठयऊ॥
जौन सदनहौं जाय बिलोकौं।दम्पतिश्यामनिहारिसशोकौं॥
हरि लीला अपार बिस्तारी। जो अबिलोकि मोरमतिहारी॥
उपज्यो ज्ञान मोह बिनशाना। पारब्रह्म चीन्हौं भगवाना॥
अहह दैव मम बुधिकृत नाशी। मनुजसमानजानअबिनाशी॥
मम अपराध क्षमौ जनपालक। दयाधीशप्रभुअघगणघालक॥
ज्ञानवानहौ आपुहि जानत। बश मूढ़ता मोह उर आनत॥
धन्य ईश माया भवपारा। जाबश भ्रमतफिरयोबहुद्वारा॥
दो० पूछौं काहिको मोहिं कहै मर्म अकथ समुझाय।
एक कृष्ण एते सदन मिले आन अनभाय॥
प्रभतटजायबिनयबड़िकीन्हेसि। पूरणब्रह्मजान पुनिचीन्हेसि॥
अहित मुनीश न चिंतित होहू। सुनि ममबाक्य परिहरौछोहू॥
त्रिपुरमयी माया मम ज्ञानी। जेहिबशत्रिबिधदुबिधिसबप्रानी॥
को द्वितीय समरथ संसारा। जीतिसकै जो तासुपसारा॥
अस भवभूत न बिधिउपजावा। जाके हृदय न मोह जनावा॥
कामकला व्याप्यो नहिं काही। कोअसक्रोधदह्यो नहिंजाही॥
मद अबूझताकेहि न लगाई। लोभ न कासु बुद्धि बौराई॥
वृन्दारक मुनि पर्म सयाने। मायामय ऋषि तेपि भुलाने॥
दो० तजौ शोच अज्ञानता माया जानि अपार।

तब नारदमन शुद्धभा जब प्रभुभये उदार ॥
पुनि अस्तुतिकरि कहकरजोरी। दयासिंधु बिनती यक मोरी ॥
जो प्रसन्न जनपर सुर स्वामी। अस बरदीजिय अंतरयामी ॥
अनपायन जो भक्ति दयाला। बसै हृदयमम सो तिहुंकाला ॥
बहुरिन अस उपजै उर मोहा। बिषयवासनिक नाशै कोहा ॥
एवमस्तु कह यादव राई। सुनिनारद सुखलहो अघाई ॥
बन्दि हरिहिगे ब्रह्म अगारा। गावतहरियश बिबिधप्रकारा ॥
हरि मायाबश असमुनिज्ञानी। करत परीक्षा लही गलानी ॥
अकथ अनीह बिश्व कर्तारा। रुक्मिणिरमण बिदितसंसारा ॥
दो० यहै बिथाहन भव सुयश हरि कर्तब मतिहीन।
द्विजप जहांथाके सुकबि मशक अंतरुचिकीन ॥
तूमंगल आनंदमय त्यागि अखिल मदभूल।
आठयाम भजु कृष्णपद यहै ज्ञान को मूल ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांनारदमायादर्शनो
नामसप्ततितमोऽध्यायः ७०
दो० जोकारज आवश्यलखु सो प्रथमै करिलेह।
मोहमिलितहै शिथिल जनि निजकरतलतेदेह ॥
चौरासी लख योनिमहँ नरतन पूत महान।
ताहिपाय मन मूढ़तू ध्यावत निज बिषयान ॥
सुमनसतेरह जातिजे ते चाहत नरकाय।
परमात्माध्यावहि सुरुचि सुमन सुखद तनपाय ॥
धृक जीवन बिनुहरिभजन धृकतपसी भवलीन।
धृकसम्पति विनुदान धृक बिद्यारहित कुलीन ॥
थिरचितभजु यदुबरचरण मिटैअखिल भवशोग।
सत्य सत्य सुनु सत्यमन बदत बेद बुधलोग ॥
एकसमय प्रभु रुक्मिणिसाथा। रजनीकृत बिलास कुरुनाथा ॥
हरिमुख प्रभासिंधु सुत देखी। चख चकोर सुखलहतबिशेखी ॥

महामग्न दम्पति भुवराया। अकथअलोक मोदउरछाया ॥
क्रीड़ाकरत गौरिगत भयऊ। प्राची अर्कोदय तम गयऊ ॥
तमचुर शब्द कस्यो युत शोरा। अंबर अरुण बियोग चकोरा ॥
कोकमुदित कोका कुम्हिलाने। विकसे पद्म मित्रगट जाने ॥
निशिकर मलिनछुपे द्युतिकारी। जानि बिहान जगे नरनारी ॥
भीष्मक सुता लगी गृहकाजा। उठिप्रभु शौचकर्मकिय राजा ॥
बपुबिशुद्ध करि जाय नहाये। आपन ध्यान आपु उरलाये ॥
जप पूजाते भये सुचित्ता। जासुनामनृपनियमनिमित्ता ॥
दशन समाज सहोदर बोली। सुनि आई अवनी सुरटोली ॥
विविध दक्षिणा देइ कृपाला। किये बिदा भूसुर तत काला ॥

दो० करिभोजन तांबूल लै स्वच्छ बस्त्र तन धारि।
सायुधराज समाजगे सदादास सुखकारि ॥

आजित भे प्रभुरत्न सिंहासन। मुखछबिबरणिनजाइगिरासन ॥
तदा काल यक पालक द्वारा। आइप्रणाति करिबचनउचारा ॥
ब्राह्मण एक द्वार पर आयो। जनु बिरंचिबपु आपुबनायो ॥
दरश लालसा तेहि उरभारी। बिनुआयसुकिमिलाउहँकारी ॥
बारन होय बेगिही लावौ। द्विजबरदरश हमहिं करवावौ ॥
चररजाय लाहि बिप्रहि लायो। तेहिबिलोकिप्रभुशीशनवायो ॥
मर्म जानिकर गहि गृह आना। रुचिरासन दै बचन बखाना ॥
भाषाकिधौ ऋचा श्रुति बानी। केहिनिमित्तआयहुद्विजज्ञानी ॥

दो० बदौ तूर्ण सानंद हित करौं स्वबल अनुसार।
दयाराशि सुनुचित्तदै मगध प्रदेश हमार ॥

बीस सहस्र भूप बलवाना। बंदि किये मगधीश सुजाना ॥
बिपति बिभंजन तुमहिंबिचारी। पठवा हमहिं सुनौ बनवारी ॥
आरत बंधुनाम जग जाना। बिपदा हरण त्रिबयभगवाना ॥
तुवपद सेवत चारिउ भांती। जरासंधबश बिहरत छाती ॥
यह सर्बदा रीति प्रभुतोरी। मर्दहु असुर बदत गुणघोरी ॥
खल बिवर्द्धिलखि धरौ शरीरा। दुष्ट बिनाशि हरौ जन पीरा ॥

अष्टापद कश्यप बध कीन्हो । जनप्रहलाद शोकहरिलीन्हो ॥
नक्र बक्र बश पर्यौ गयंदा । धायतासु काढ्यौ भवफंदा ॥
दो० अपर अपार प्रसंगइमि को बरणै जनपाल ।
महा आपदा बिवश हम करुरचा बनआल ॥
समरथ अपर त्रिपुर नहिंकोई । मोचै बंदि बिपति ते जोई ॥
जीवनरक बसिचहुं सुखपावें । खलबशसुजनप्राणबिकलावैं ॥
बिष्ठाकीट समुद अनुमानिय । महा निरैथल बंदि बखानिय ॥
नाम तुम्हार दीन रखवारा । अवशिसुद्धिलीजिययाहिबारा ॥
करुणानिधि सुनि आरतबानी । जरासंध बध बुधि अनुमानी ॥
रसा अमर चिंता परिहरहू । बिधिकृत जानि धीर उरधरहू ॥
मोर नाम जनपाल बखाना । द्वबिधा तजौंकलेश नशाना ॥
महिसुरप्रभुहि अशीशन लागा । संतोषित ह्वै सह अनुरागा ॥
दो० तस्मिन समय महीश सुनु ऋषि नारद सुख पाय ।
गावत हरि यश बीणकर आये सरल स्वभाय ॥
देखि मुनिहि प्रभुकरयोप्रणामा । करि आसीन पूछगुणधामा ॥
मुनिबर तब गतित्रिपुर सदाहीं । कथा प्रसिद्ध अनृतबचनाहीं ॥
कछु दिनभये धर्म कुशलाई । तात न हम पाई द्वचिताई ॥
कहौ प्रसंग पांडुसुत केरे । जिनकी चिन्ता सुनिमनमेरे ॥
को कृत करत आपने गेहा । अधिकप्रवृतह्वै सहितसनेहा ॥
जीव जीव घटपुर प्रस्थाना । रहत सदा तुव वेद बखाना ॥
अन्तरयामी दशा तुम्हारी । बदत सुनौंअघतिमिरतमारी ॥
यहि च्चणहौं गजपुर ते आयो । पांडुतनय गृह बहुसुख छायो ॥
दो० कीन्ह चहत प्रारंभ शुभ राजसूय मखतात ।
महाचिंतामित आपुबिन पुनिपुनि शोचतगात ॥
प्रतिमुहूर्त्त सुमिरत तुहिराई । धर्मसूनु उर मोद बढ़ाई ॥
कहत न बिनुसहाय हरिकेरी । पूरण होइ लालसा मेरी ॥
मैं लहि सुद्धि आपु तट आयो । धर्म प्रसंग समुद प्रभुगायो ॥
बेगि कटकसह हरिपुर जाइय । दूसरिओर न चित्त डोलाइय ॥

मखसवाँरि कृत आन बिचारो। नतकृत भंग होइ बिधिचारो॥
नारद गिरा सुनत यदुराई। दूत पठइ ऊधवहि बोलाई॥
कहा मित्र तुम अछल सदाहीं। तुव परोक्ष भावत कछु नाहीं॥
सम्मत तोर मोहिं भलभावत। सिद्धतकार्य सुयशभवछावत॥
दो॰ मख आरंभत धर्मसुत कहा देवऋषि आय।
बिपतिविवशउतभूमिपति पठवा हमहिंबोलाय॥
दुहुंदिशिकरबअवश्यककाजा। चलियप्रथमकहँसाहितसमाजा॥
उत नरेश संकट महँ ध्यावैं। मम भरोस नाना दुखपावैं॥
पांडुजात इतयज्ञ पसारा। मग अवलोकत तात हमारा॥
जो तुम्हार सम्मत अबहोई। दूमहँ तात करिय कृत सोई॥
दोनों काज करिब निज हाथा। ताते तुमहिं सुनाई गाथा॥
असभणि मौनित भे असुरारी। मनशोचत ऊधव बुधिधारी॥
प्रभुनिजमन इमिकीन्हबिचारा। दासन हेत मनुज तनधारा॥
प्रभु सर्वदा सुजन हितकारी। महा दुष्टतेहि भजन बिसारी॥
दो॰ लीनहोत बिषयान महँ लहत नरकमें बास।
तू मंगल भजु कृष्णपद लहैं सौख्य अनयास॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांयुधिष्ठिरसंदेशवर्णनो
नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१॥
दो॰ कलिमें चारो ओरही बिपदा और बिकार।
छायरहे सुख हैं कहां भजु त्रिलोक कर्तार॥
भूत प्रेत बैताल बश नर नारी संसार।
पूजन तिनहीं को करत त्यागे ब्रह्म बिचार॥
जाकी इच्छा ते भये अज ब्रह्मांड अनेक।
पुनि नाशमिलिहैं जासुमहँध्याउताहिसविवेक॥
दैहिक दैविक तापको भौतिक मानत मूढ़।
तत्त्व बस्तु भूले फिरत को बालक को बूढ़॥
जे प्रवीण सज्जन सुमति ते ध्यावत यदुनाथ।

आनँद पावत विविधविधि रत्नक प्रभुजनसाथ ॥
मुनिवर बचन करावलि भानू । पातकनिबिड़तिमिरहणभानू ॥
भूपहि कहा सुनौ तजि छोहू । जोसुनिनशैअखिलदलमोहू ॥
बिहंग राज प्रतिबद यदुनायक । जाहुसुथाननृपनसुखदायक ॥
मोर सँदेश कहौ यह ताता । कछुदिनगतकरिहौंखलघाता ॥
मुक्ति बन्दिते करौं तुम्हारी । सत्य प्रतिज्ञा चतुर हमारी ॥
अपर अनेक भाँति समुझाई । बिदा कर्‍यो महिसुरकुरुराई ॥
ऊधव संग सभा चलि गयऊ । दुधा प्रसंग बखानत भयऊ ॥
उग्रसेन सुठि उतरन दीन्हा । तब ऊधव इमि भाषन कीन्हा ॥
दो० दोनौं काज अवश्यहैं तदपि सुनौं मतमोर ।
बधौ प्रथम मगधेश रण बढ़ै सुयश जगतोर ॥
पुनिमख गजपुर त्राता हूजिय । महामोदमय राज्य सभूजिय ॥
अमितनृपतिचाहिय हितजागा । अकुलनहोइनअबुधअभागा ॥
बिनक्षितीश गण कृत नहिंपूरे । कारिक रुचिर मनोरथ चूरे ॥
दुगुणदिशा सहस्र महिपाला । बधतजरानिधिमिलिहिंकृपाला ॥
तेगुण मानिकरहि मखकाजा । सादर बिनु बोले ब्रजराजा ॥
एतिक नृपतिन आन प्रकारा । प्राप्तिहोइ करि दीख बिचारा ॥
दिगबिजयीजगजितनरनायक । सहज होहिंमखशाला पायक ॥
तातेपांडु सदन कहँ चलहू । करि बिचारशत्रुहि दलमलहू ॥
दो० जरासंध बड़ धर्मधर दाता बिदित जहान ।
गोद्विज पूजक शत्रुजित बंदीकरत बखान ॥
जो याचत कोउ तासन जाई । देत अशोच ताहि सो राई ॥
बाक्य अनृत नबदत रसाधी । पुरवत बचन सदा मगधाधी ॥
कृत निबाह हितुतावय तीनौ । दशसहस्र गज बलतन चीनौ ॥
प्रबल महान तासुसरि भीमा । कृपासिंधु बूझिय निज जीमा ॥
नाग नगर चलि लै सुतबाता । कीजियसहजअरातिनिपाता ॥
ममभन यह दृढ़ता बिधिचारी । समर भीमरिपु बाधिहि प्रचारी ॥
सम्मतसुनि बिहँसेखल भानन । जलजप्रसिद्धदुष्टकुलकानन ॥

लाला अकथ अलौकिकठानौ। पुनि स्वतंत्र कारज अनुमानौ॥
बूझत भेद न कोउ पुर तीनी। सबकी मतितुव माया भीनी॥
भवभय भवँर परे सब प्रानी। जाानिनसकततुमाहिंधनुपानी॥
जग व्यवहार हमारे संगा।प्रतिच्छण करौ सनेह अभंगा॥
नाम भक्त बत्सल यहि कारण। दीनबंधु बहु पतित उधारण॥
जी सनेम पग सेवत तोरे। तजत संग तेहि नाथ न मोरे॥
मद छल दंभ दूरि प्रभु रहहू। सत बादिनके संकट दहहू॥
तवप्रसाद पूरी सब आसा। एक मनोरथ ममउर बासा॥
दो॰ बिनु आयसु तव दीन हितु करि न सकतहौं सोय।
अवशि बदिय महिपाल मणि कहौं जो संभवहोय॥
राजसूय मख करौं सनेमा। तुमहिं समर्पि लहौं भव छेमा॥
सुनत प्रसन्नित भये बिहारी। कहा तात भल बुद्धि बिचारी॥
नर सुपर्व मुनि तोषित होई। भावै सबहिं करिय कृतसोई॥
करत कठिनमख तुमहिं न भाई। बन्धु चारि तुव अतिबलदाई॥
त्रिधिन द्वितीयमनुजजगजायो। जेहिंबिलोकिरणभीमपलायो॥
शारंगधरन अपर भव कोई। अर्जुन समर अरूझै जोई॥
युगलबंधु तव प्रबल महाना। करौ यज्ञ मोरे मन माना॥
प्रथम रजाय सोदरन दीजै। दशदिशिबिजयकरैंयशलीजै॥
दो॰ स्वबश बसावौं भूमिपति बहुरि करौं मखठान।
बोलि बंधु आज्ञादई लहि आयसु भगवान॥
सदलयाम्य सहदेव सिधाये। नकुल प्रतीची मोद बढ़ाये॥
सुताधनद कपिकेतु महीशा। प्राचीभीम अभय छितिईशा॥
हरि प्रताप भंजत मद भूपा। बिजय करत बहुदेश अनूपा॥
अल्पकाल महद्वीप पहारा। नन्दखंड जीते सबिचारा॥
दशौदिशाके छोणी पाला। निजबशकीन्हसहजचहुंबाला॥
सबसँग नाग नगर चलिआये। देखिभये बहुभांति बधाये॥
हरि प्रति जोरि हाथ बदराजा। तुव प्रताप जीता भवसाजा॥
अब आज्ञा जसहोइ तुम्हारी। करिय नाथ यह बिनय हमारी॥

दो० कह ऊधव सुनु धर्मसुत तवबश भये नरेश।
मगधराज रह स्वबशही यहमम जीव अंदेश॥
यावद्धशन जरानिधि होई। तावत्सुफल यज्ञनहिं कोई॥
नृपति जयद्रथ सुत बरियारा। नाम जरादधि समर जुझारा॥
दाता धरमातम गुणराशी। अजितसुयशजगरहाप्रकाशी॥
संगर कोउन अरुझत तासों। निजबशकरतभिरतरणजासों॥
जीतैयोग कमल भव कीन्हा। सोहरिजान आनको चीन्हा॥
ऊधव बचन सुनत मन मोहा। धर्मराज उरभा अति कोहा॥
लखिउदास बोले असुरारी। चिंतादेहु महीप बिसारी॥
भीमार्जुनहिं संग मम दीजिय। मगधभूपनिजतंत्रितकीजिय॥
दो० कै प्रपंच बल बंदि तेहि लाउब नृप तव पास।
अथवा रणमहँ निधन करि होबतात अनयास॥
भूप पुंज बन्दीगृह तासू। मोचत करिहि यज्ञकृत आसू॥
आयसु बिजयपुरुष सहभीमहि। दयो महीश मुदित ह्वैजीमहि॥
मगध प्रदेश बाट प्रभुलीनी। निकटराजगृहअसमतिकीनी॥
बिप्ररूप धारौ अब ताता। करिछलकरियप्रबलअरिघाता॥
महिसुर बपुगे भूपदुआरा। पुस्तक कांखत्रिपुंड्र लिलारा॥
शुक्लबस्त्र मंडित तन सोहर। अंग अंग प्रतिरुचिर मनोहर॥
जनु बपु तीनि धरेगुण तीनी। अथवा तिहुंपुर देह नवीनी॥
किधौं त्रिकाल अकथ बरकाया। उपमा अबद शरीर निकाया॥
दो० गये समय मध्याह्न महँ द्वारपाल गहि पाय।
कहाजाय मगधेश प्रति बन्दिचरण रुखपाय॥
द्विजबर समय त्रिसुर समदेही। राजद्वार आयो क्षणयेही॥
तेजबलित पंडित गुणखानी। अतिथि कांक्षितबर बिज्ञानी॥
द्विज सेवक प्रसिद्ध नरनायक। आयोद्वार सुनत बच पायक॥
बंदिचरण कज बिनय बखानी। अंतर सदन गयउ लैज्ञानी॥
करिआसीनसुभगशुचिआसन। कर संपुटित मांगअनुशासन॥
लखितन थूल शोच उरछावा। सभय महीपति बचन सुनावा॥

यदपि बिप्र बपु मंडित अहहू। तदपि प्रपंच आपु किन कहहू॥
याच्यमान कृत अंगीकारा। कीन्हों कौन हेत यहि बारा॥
दो० इला देव मांडे बपुष महा बली तुम कोउ।
कपट भाव जस कालहौ अवशि बखानौ सोउ॥
आच्छादित द्विज बास शरीरा। भूपति क्रांति दुरात न बीरा॥
पौरुषीय तन समर प्रबीना। सोदर सबल नहौ द्विजदीना॥
अजहरि हर सम भांति तुम्हारी। बदौ मनोरथ निजभ्रम भारी॥
जो याचिहौ देव सो आजू। बेगि बखानि कहौ निजकाजू॥
जग प्रसिद्ध दाता द्विजराई। बाक्यमोघ नहिं हमहिं सोहाई॥
राज कलेवर त्रियसुत नाती। दान देत मम रुचि न अघाती॥
पुरा समय सूरज कुल माहीं। हरि बिधु भो दाता भ्रम नाहीं॥
कीरति जासु बिदित दिशि चारी। बदौं तासु नृप चरित बिचारी॥
दो० एक समय नृपता बिषय पर्‌यो दुकाल कलेश।
प्रजहि जिवायो देशपति बिक्रिय करि निज देश॥
रंक समान भयो धरणीसा। सकल दुखित भे पुरधन खीसा॥
तौने काल परीक्षा कारण। बिश्वामित्र ऋषय भवतारण॥
जाय भूप प्रति कह धन देहू। कन्या दान तुल्य फल लेहू॥
सुनतहि मुदित महिपमन भयऊ। सर्बसु निज आलय कर दयऊ॥
तोषित भे न ऋषय बश माया। बेचि भृत्यगण धन दियराया॥
तदपि न संतोषे मुनि ज्ञानी। भूपहि कहा सुनौ बर बानी॥
स्वल्प द्रब्य मम काज न होई। यांचौं काहि न दीसति कोई॥
तुम प्रसिद्ध धरमातम दाता। सुनि सुलोक प्रफुलित मम गाता॥
दो० श्वपच एक धनवान है जो नृप आयसु देह।
ताहि यांचि द्रब्यहि लहौं मन बिचार दृढ़ एह॥
यहि कृत आवत जीव गलानी। यांचौं खलहि यांचि नृपदानी॥
मुनि मुखबचन सुनत हरिचन्दा। चांडाल थल गे सानन्दा॥
देखि नरप आयो चांडाला। करि प्रणाम तेहि पूछ हवाला॥
गहने राखु वर्ष लगि मोहीं। दे धन अवशि पूछि मुनि सोहीं॥

नरपति मम सेवाखल कर्मा । केहि प्रकार पुरवौ बरधर्मा ॥
आरत मय बाणी नित बोलब । मम आज्ञाते बाहयन डोलब ॥
राजस तामस तव उर बासी । केहि बिधिते देहों नृप नासी ॥
नृप मणि तेजादित्य समाना । भृत्यकर्ममम अशुचिमहाना ॥
दो० ममगृह की रच्छा करौ मृतकन ते करलेहु ।
प्रीतिन मानौ काहुकी है हमरे कृत येहु ॥
जोपै यह कारज नृप होई । तौ धन देउँ कहैं मुनि जोई ॥
बंधक राखौं बर्ष प्रयंता । सुनि बोल्योद्योणिपबुधित्रंता ॥
जस सेवा तुम्हार गृह केरी । तसहम करिब अमिषरुख हेरी ॥
द्रब्य श्वपच दीन्हीं तत काला । जेहि प्रमाणमांग्योश्रुतिपाला ॥
निज निकेतगे ऋषि धन ग्राही । भूपसत्य निज हृदय सराही ॥
श्वपचायसुव्रत कृत नृप कर्मा । नीति बिदितजस सेवकधर्मा ॥
बिधि बश रोहिताश्वनृपजाता । तदा काल बशभयोअघाता ॥
मृतक पुत्रलै भूप कलत्रा । गई मशान भूप रह यत्रा ॥
दो० चिता बिरचि कीन्हा चह्यो संस्कार जल जात ।
तबहि रसाधिप आयकर मांगत भो रुटगात ॥
कठिन बिलाप कस्यो सुनिरानी । देखु च्छमाधिहृदयअनुमानी ॥
रोहिताश्व यह सुत प्रभुतोरा । मरत तिमिर छायो चहुंओरा ॥
मोरे द्रब्य न जो कर देहूं । पुत्र क्रिया करि गृहमग लेहूं ॥
जीरण पट मम शिर धनएही । कर महँ नाथ लीजिये तेही ॥
सर्बसु दया राशि दिय दाना । बच्यो सूनु सोहर भगवाना ॥
परबश नारि स्वामि सिवकाई । बिनुकर कर्म करत कठिनाई ॥
प्रीति करत मम सत्य नशाई । गतशत जीवनधृक मनुसाई ॥
रानी सारत सुनि प्रण राजा । कुसमयमहादुखितगतलाजा ॥
दो० बस्त्र उतारन हेत नृप रानी स्वकर पसार ।
कम्पत भे तिहुंधामतब निरखि सत्य व्यवहार ॥
तस्मिनअवसर सुभग बिमाना । हरिइच्छा आयोतेहि थाना ॥
धन्य गिरा सुरनाक पुकारे । प्रगट्यो प्रभुस्वतंत्र तनधारे ॥

जीव दान हरिसुत कहँ दयऊ । ममपुर गमनों आयसुभयऊ ॥
जोरि हाथ नृप बिनय बखानी । आरतहरण सुनिय ममबानी ॥
प्रगटे प्रभुकृतज्ञ अनकाया । तवपदपरसि भयउँ गतमाया ॥
बिनु चांडाल न जाउं कृपाला । यहथलत्यागि देवजनपाला ॥
नृपति अभिप्रिय हृदय बिचारी । कहसह श्वपचहोहुनभचारी ॥
पुरजन हितू तजे दुख होई । ममबिनुदुखित होइ सबकोई ॥
दो० बिहँसि कहा भगवान तब जाहु सपुर सम धाम ।
अवध सहित हरिचंदतब मुक्त भये गुणग्राम ॥
सुरपदवी हरि बिधुउत पाई । इतजग उज्ज्वल कीरति छाई ॥
दाता होइ अशोच महाना । जाइनदेइअतिथि बिनुमाना ॥
अरुरतिदेव कठिनतपठयऊ । अजलनागक्षुतिदिनचलिगयऊ ॥
महादुखित ह्वै जललै आवा । पान करनचाहत मुद छावा ॥
तबहींतृषित अतिथियकआयो । देजल आरत बचन सुनायो ॥
दया बलिततेहिदीन्हसि नीरा । प्रफुलितमनक्रमवचनसधीरा ॥
उदक दान बशहरि पुरपायो । जासुचरितभवकबिजनगायो ॥
बलिप्रसंगजग बिदित महीशा । नावतनितउठिहरिपदशीशा ॥
दो० दान प्रताप प्रसिद्ध भव अपर चरित सुनुभूप ।
जो सुनि मुनि दृढ़ता गहै उपजै ज्ञान अनूप ॥
उद्दालक षट मास बिताई । भोजन अन्न करत होराई ॥
एक समय कृत अशन भुराया । अमुकअतिथिपाकालयआया ॥
क्षुधितमलिनमुखभोजनयांचा । बिकलबिलोकिदयामनरांचा ॥
निजभषताहि मुनीश्वर दीना । महासुकृतनिजकर्तल कीना ॥
ऋषि बशक्षुधापरिहर्यो काया । अशनदानफल हरिपुरपाया ॥
बृत्रासुरकर अपर प्रसंगा । सुनु नरनाह समोदित अंगा ॥
महाबली अमरारि कुजाती । जेहिबशबिबुधबिकलबहुभांती ॥
अज उपदेश अवधपुर आये । बासव संयुत आरत छाये ॥
दो० कहादधीचिहि सुनौ नृप हमहिं महा दुख आहि ।
बृत्रासुर जीते असिल जीवन अबन लखाहि ॥

जोनिजअस्थि हमहिं नृपदीजै। अस्थि अस्त्र तौरिपु बध कीजै॥
नित स्वर्धमभिरहिं माहिपाला। रहतसदाक्लेशित तिहुंकाला॥
तासु अनीक बरण बिधिलेखे। अजरअमर बलबुद्धि बिशेखे॥
बिनु दधीचि के अस्थिनमरिहै। बिबिध प्रकार देव धनहरिहै॥
पर उपकार सरिस पुरतीनों। दूसरधर्म न भूपति चीनों॥
यह शरीर मृतिकामय होई। तजे जीव ग्रहणै नहिं कोई॥
बिहँसि महीप धेनु मँगवाई। तेहि जिह्वा निजकाय चटाई॥
जंघ अस्थि दीन्हो अमरेशहि। परितोषेउ बहुभांति सुरेशहि॥

दो० बज्र अस्थि रचि अमरपति हन्यो असुर रणजाय।
नृपति कलेवर त्यागि लह हरिपुर तेहि फलराय॥

आन अनेक दानि जग भयऊ। तिनको शुक्रसुयशभवक्षयऊ॥
जो दृढ़तामय दे नृपदाना। तौनिज स्वारथ करैं बखाना॥
कृत युगादि महँ मेघ स्माधी। दानी अति सुकृती अनुपाधी॥
जस प्रताप तसतुव नृपछायो। देशांतर बन्दीजन गायो॥
याचक अभिमत दानि महीपा। जगजित सुनौ धराधिप दीपा॥
मम अभिलाष पूजिये आजू। दीजियदान भूप निर्व्याजू॥
याचक याचत शोच बिहाई। दातादेत अचिंत सदाई॥
त्रिया तनय समेत धन गेहा। श्रुतिवत सत्य दानि ब्रतएहा॥

दो० जरासंध कह सुनिय द्विज याचक सदा अधीर।
तदपिन प्रणदाता तजत दुख सुख सहत शरीर॥

हरि बामन बपुकपट समेता। याच्यौबलिहि जायमखखेता॥
धरात्रिपाद महीपति दीजिय। पूरणलोक लोक यहलीजिय॥
शुक्रजानि छल ताहि चितायो। प्रणबशनृपतिचित्तनहिंलायो॥
रसा सकाय बामनहिं दीन्ही। उज्वल कीरति भूनृपलीन्ही॥
याचक बिष्णु सुकृत कोपावा। सर्बसुतहि हठ हृदय बढ़ावा॥
बलि बशभये भेटि प्रभुताई। प्रात आपु दरशावत जाई॥
यहि कारण निज मर्म बखानौ। नाम ग्राम उरशंकन आनौ॥
तब याचौ सो पावो ताता। अनृतबचनन ममशुचिगाता॥

दो॰ वासुदेव ममनामहै यदुबंशी जगजान।
पहिचानत तुम भांतिभलि मंथुरा समर प्रमान॥
भीम भीम रिपुगण रणतापी। पितु भगिनी सुतकुरजप्रतापी॥
सुभुजसुभाननशिशुरिपु पाका। अर्जुननाम समर भवशाका॥
संगरहित आये तुव पासा। रण परितोषि पुजावहु आसा॥
बिनुसहायपुनिकेहिलागियांचा। कारणतात बदियगुणिसांचा॥
मखकृत दुष्ट करत अपराधा। निजबश अवशिलगावतबाधा॥
अनुचित बूझि स्वबेष दुराई। याच्यौभूप मुदित खताई॥
बिहंसिमगधपतिश्रवणितबानी।कालविवश अहमित अभिमानी॥
मम सन्मुख तू समर पलाना। सोहन संगर ताजिय बखाना॥
दो॰ इषुधीपति त्रियबपु धर्यो पूरुबदेश बिदर्भ।
करत भटाई भव्यता करैबन्दि मतिखर्भ॥
जोपै अनिल सुतकरै गदाई। तौहौं लरौं अवशि मनभाई॥
मोर सरस याके बलकाया। संग्रह संगर करब अमाया॥
भोजहु भोज्य प्रथम तिहुंताता। पाछेभिरौं मुदित सुनिबाता॥
जेंयों सबन बहुरि नरपाला। लोहमयी युगगदा विशाला॥
देइ समीरिहि आपुन लीनी। सत्य प्रतिज्ञा रिपु बधकीनी॥
सभामंडली तल प्रभुवैसे। भीम मगधपति भूधर जैसे॥
उत्तमांग कटि टोपा काछे। मुरमुरारिधौं प्रफुलित आछे॥
द्वौरण बिदुष गदारिपु घाती। बन्दि हरिहि तर्जे रिपुपाती॥
दो॰ मत्तनाग समबीर बिबि भीमहि कह मगधेश।
मर्दु गदा मम अंगतू आयो ब्राह्मण भेश॥
यहिकारण प्रथमहिं नहिं मारौं। अनुचितकरि निजधर्मप्रहारौं॥
धर्मयुद्ध मम तुव महिपाला। यहाबिबेककसकृत यहिकाला॥
ताते आपु अस्त्र निज घातैं। कपट क्षुद्रता त्यागिय बातैं॥
उभयमांझ कोउ गदा न मारैं। युगल बलीनिज धर्म बिचारैं॥
यकसंग अस्त्र बिमर्दत भयऊ। निजनिजघातताकतकिलयऊ॥
दच्छिण बाम हनत बलवाना। रोधित गदा गदा बिज्ञाना॥

तजि सरुटभंजैं अनक्षोभा । त्यागे दोउ जीव कर लोभा ॥
हाहाभूत शब्द कृत दोऊ । सुनत शब्द चकृत सबकोऊ ॥
दो० बासरभरि कीन्हो समर बिजयी भयउ न कोउ ।
रजनी मुख गृह आय नृप एकसँग जेंये दोउ ॥
अरुणोदय पुनि समर सिधारे । आये दोउजन मुदितअखारे ॥
करत युद्ध पुनिदिवस सिराना । संध्या भवन गये गतभाना ॥
यहि प्रकार नित उठि रण भिरहीं । नानाभांति दांउ छलकरहीं ॥
दिवस माल कृत रणगतभयऊ । कोउनपराजितभोश्रमछयऊ ॥
प्रभु अंतरयामी अनुमाना । इमिनमरिहि मगधेशसुजाना ॥
जन्म्यो द्धितन बिदित संसारा । जरा राक्षसी तब तेहि बारा ॥
जोस्यो यहिबिधि करि चतुराई ।मूंदिनयनमुखदिहिसिमिलाई॥
सुनि सुधि समुद जयद्रथ राजा । बोले बहु ज्योतिषी समाजा ॥
दो० नाम भणौ खग भाव गुणि जरासन्ध यहिनाम ।
महा प्रतापी अजर वय अजित सदा संग्राम ॥
संधिबिलगबिनु निधनन होई । असबदि गये महीश्वर सोई ॥
मन बिचारि कारण बधतासू । निजबलपौनजतनहिं प्रबासू ॥
कोप्यौ भीम पाय बलभारी । मल्लयुद्ध कियअरिहि प्रचारी ॥
भिस्यो समर्षित मगध भुवाला । ततक्षणभयउसमरबिकराला ॥
सैनचीरि तृण भीम चेतायो । क्रोध्यो सरुट भेट जब पायो ॥
पटक्यो महितल पगपग दीना । करपदगहिद्धिकायरिपुकीना ॥
अमर नाक कौतुक हित छाये । भीम शीश बहुकुसुम बहाये ॥
बहु गंधर्ब बजाय निशाना । अबलनसहित करैंकलगाना ॥
दो० जयजय ध्वनि भइ व्योमभव पति बधसुनि नृपनारि ।
रोदति कृत करुणा अधिक आवति भई दुखारि ॥
बंदि श्याम पदकह धरि धीरा । जय जन बंधु हरण पर पीरा ॥
धन्य धन्य खल हरण कृपाला । ममपतिप्राणलयउयाहिकाला ॥
अमित जन्म मुनि यत्नसुकरहीं । महा कष्टलहि भवदधितरहीं ॥
मुक्त कंत ममभा अनयासा । सहजसमस्तबिगतभवआसा ॥

अनुचित कस्यो नाथ श्रुतिदूरी। मास्यो भूप धर्म मख भूरी॥
दान गवान्न करै तुव लागी। निशिदिनचरणनलिनअनुरागी॥
सछल ताहि मर्यो रणमाहीं। सुयश सुदेश लहाप्रभुनाहीं॥
करुणामय करुणामय बानी। सुनत दयाल भये सुखदानी॥

दो० नृपति क्रिया निजकर कस्यो सुत सहदेव बोलाय।
राज्य तिलकतेहि भाल प्रभु श्रीकर कस्योस्वभाय॥
विविध नीति समुझाय शुचि मंगल यादवराय।
गोद्विजादि रक्षा प्रजा तनमन कस्यो सदाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांजरासिंधुवधवर्णनोनाम
त्रयसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

दो० बिषद बाद वसुयामरत करत विविध अनुबाद।
जीव भुलायो आपुहीं मायामय सबिषाद॥
संचित पुण्य प्रतापबश परारब्ध अधिकार।
बिपुल भोग पायउ जगत अंतनिरै निरधार॥
सेवन विनु यदुनाथ पद गाये बिनुयशतासु।
बिपति बीज बोवतबपुष क्षेत्रभूठ फल आसु॥
मात तात सुत बंधुको प्रमदा हितु यहिलोक।
दशा स्वप्न समजानि मन ध्याउ चंद्रजनकोक॥
अपरबारता त्यागिबुध हरियश निशिदिनगाउ।
बिनुश्रम सुख संपति लहै हरिपुर अंतसुठाउ॥

मुनिवर बचन चंद्रिका तूला। बोलत भूपकोक हिय फूला॥
करि अभिषेक नीति समुझाई। कहा नृपति सहदेव बोलाई॥
जननि जनकको सुतहितुभाई। स्वप्न समान विविध प्रभुताई॥
परिहरि शोक तात तुम जावौ। बन्दी सबभूप तिनलावौ॥
दंड निरर्थ पिता तव दयऊ। तेहि अपराध कालबश भयऊ॥
कहि भलभूप बन्दि थलआवा। अगजगगुहाशिलाबहिरावा॥
मोचि अखिलनरपतिमुदमानी। भस्यो सबहिपुलकिमृदुबानी॥

प्रभु सन्मुख लैरसप निकाया। नृपसहदेव बेगिही आया॥
दो० कारागारित क्षितिपसब नखसस्मृद्धि शिरकेश।
सक्लेश गातमनमालिन अति दंडित अन्दकुबेश॥
पंक्ति पंक्ति जोरे कर ठाढ़े। मोद मग्न पुलकायत गाढ़े॥
धरि धीरज कहजय जन पाला। दास बनज पूषणतिहुँकाला॥
कुमुद असुर दलमोद बिनाशी। कोक दीनजनसौख्यप्रकाशी॥
ताप पापगण विविध कलेशा। खगद्युतिभंजकसुयशसुदेशा॥
बिधुरिपु शोभा हरण स्वभाये। बुधिविवेक जनसूत जगाये॥
मुनि जनजीवजंतु सुखदायक। मोह उलूक चक्षुद्युतिघायक॥
जय जय कृपा पयोधि कृपाला। जन रंजन तिहुँकालदयाला॥
जीवन आश त्यागि शरणाई। तव पद कमल गही यदुराई॥
दो० मृत्यु समय आवा निकट प्रभु तुवलयो बचाय।
मुनि दुर्लभ दर्शन दयो अघगण गयोनशाय॥
सबहि प्रबोधि बहुरि सुरदेवा। सैन बुझायो नृपसहदेवा॥
बंधन काटि चौर करवावा। सबहिन्हवायसुभक्त जिमावा॥
आच्छादित करिभूषण बासा। अस्त्र शस्त्र युतनृप अनयासा॥
प्रभुतट अखिल भूपलै आवा। नमत बिलोकि मोद उरछावा॥
सायुध चतुर्बाहु हरि भयऊ। सुरदुर्लभ दर्शन नृप दयऊ॥
दर्शत विविध मोह अनुरागा। कुमति कूरता खल दलभागा॥
ज्ञान विवर्द्धिकि अनुभव जागा। प्रभुपदनेह शोच सबत्यागा॥
भवतारण असुरारि गोसाईं। गिंडुक लवन नीरकी नाईं॥
दो० विपति बिभंजन अघहरण बदत सुयश परबीन।
जरासंधते हमहिं हरि मोचि परम सुखदीन॥
दारुण बंदि बिमोचन कयऊ। आरत बंधुलोक यशछयऊ॥
अबगृह कूप अंधते मोचिय। बिपुल प्रकार दासमनरोचिय॥
मार मान खल मोहनशाइय। लोभादिक हरिलोकबसाइय॥
अछलअचिन्तनलिनपदध्यावै। तृष्णा डसदन जीवहिलावै॥
जग अर्णव बोहित पद प्रेमा। चढ़ि उतरहिं हमनाथसक्षेमा॥

सुनि सज्ञान बिरागित बाणी। भे प्रसन्न परस्यो शिरपाणी॥
जिनके हृदय परम अनुरागा। बिषय रहित ममपद मनलागा॥
भव बंधन जीवत ही छूटै। मोह मार मूलक इव टूटै॥
दो० मन इंद्रिय पति बदत बुध बंधन मोचन दानि।
शुभअरुअशुभ दुबासना नृप श्रुतिप्रकटबखानि॥
सथिर जीवमन करतल साधे। मनबच क्रम ममपद आराधे॥
बिपिनिभवनशुचिमनहिंसमाना।तजौक्षोभयहसमुझिसुजाना॥
निजपुर राज्य करौ सह नीती। अबिचलममपद राख्योप्रीती॥
हितू समान प्रजा गण पालौ। अन्यायी खल रिपुसमघालौ॥
गुरु ब्राह्मण गोजन सिवकाई। सकल प्रकार करौ चितलाई॥
अनृत वाक्य तजि कामकलाई। क्रोध लोभ अभिमान दुराई॥
सर्बभाव शुचि ममपदध्यावो। यहिकृत तात पर्म्म पदपावो॥
मानी महिप बहुत जग भयऊ। अयशबहायसुयशकोलयऊ॥
दो० अहंकारमय बहु नशे यह यह बलमदलीन।
क्षितिजित मर्य्योंक्षणक महँ भाषतबिदुष प्रवीन॥
बली बेन मद बश मृतुपाई। रावण कथा प्रगट नृपताई॥
भौमासुर अहमित खल वाना। कंसादिक त्यागेउनिजप्राना॥
राज श्रीमद नरक बसावत। सुकृत सुदेश महीपनशावत॥
दरश अलौकिक पायो भाई। अब निज धाम जाहुसुखपाई॥
बहुत दिवस बन्दी गृह रहेऊ। सुधि परिवार न रंचकलहेऊ॥
नृपता भंग प्रबंधहि करहू। विविध कलेश प्रजाजनहरहू॥
नाग नगर सत्वर पुनि आई। धर्मराज मख देहु कराई॥
मगध राज बाहन धन दयऊ। रक्षक पाय बिदा सब भयऊ॥
दो० स्वथल महीपति सबगये प्रभु अनुशासन पाय।
भेंटि कुटुम्ब समोद पुनि नृपता बांधव नाय॥
हरि मग धेश संग निजलाई। भीमार्जुन युत चले नृराई॥
सानँद मंगल हरि पुर आये। शोधपाय पुरबासी धाये॥
युगल बंधुकर प्रभु अगमानी। लै नृप सभागये मुदमानी॥

उठि अजात अरि भेटत भयऊ। शुचिआसनपुनिहर्षितभयऊ॥
जरासंध बध श्याम बखाना। श्रवणितअवनिपबहुसुखमाना॥
अखिलनृपतिमोचनसुनिफूला। पावरंक जनु मंगल मूला॥
इमि बतरात सुद्धिचर लावा। अमितमहीपकटकचालिआवा॥
सब नृपलै उपहार अपारा। मिले धर्मराजहिं सबिचारा॥

दो० हरि आयसु उतरे सकल नाग नगर चहुँ ओर।
मखशालाके काज हित मन बिनोद नहिंथोर॥
मंगल हरिदुख हरतनित दासनके दिशिचारि।
त्यागि भूलभजु तासुपद शुचिमनज्ञान बिचारि॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णनृपगणसंयुक्तहस्तिना
पुरगमनोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः॥७४॥

दो० बिधि लिपि पलटतहै नहीं कोटि उपाय सुजान।
करिदृढ़ताभजुयदुबरहि सुखप्रदजिय अनुमान॥
चिंता भेष भुजंगिनी डसत हरत मुद प्रान।
परित्यागे यहि अखिलबिधि नाशै शोचमहान॥
मूरुख बूझतहैं नहीं गुरु श्रुतिवत उपदेश।
फिरिफिरिचलतअलीकमगकीरतिमिटतसुदेश॥
शिक्षाशुचिमन सुनतनहिं अभिमानी अघरूप।
बिषय बासनिक ह्वै रहो गुणतन ज्ञान अनूप॥
नरक भोगि दुख पाइकै नीच योनि अवतार।
तूमंगल तजिश्यामपद करु जनिआनबिचार॥

गुणौ सुनौ कुरुपति चित लाई। बधशिशुपाल कहौं समुझाई॥
जुरी नागपुर भूप अथाई। यह सुधिपाय अपर भुवराई॥
शशि भूषण बंशी बलखानी। धर्मालय आये रुचिमानी॥
सबकर शिष्टाचार समाना। कखौ धर्मसुत सह भगवाना॥
यथायोग मखकर अधिकारा। सौंप्यौ सबहि नृपतितेहिबारा॥
बिहँसि महीशहि कह यदुराई। सुनौ सुचितमनतजिदुबिधाई॥

हम सहभीम पंथ बिबिभ्राता। कारज आनकरैं शुचिगाता॥
आपु रसामर ऋषय समेता। मखारम्भ कीजिये सचेता॥
दो० आयसुपाय द्विजातिगण मुनितपखानि बोलाय।
यज्ञबस्तु पूछ्यो नृपति कहामुनिन श्रुतिभाय॥
मणिमुद्रा फल फूल सुबासा। तीरथ नीरादिक अनयासा॥
मंगलबस्तु जो नृप मखगाई। मुनि आयसुवत भूप मँगाई॥
करणभाव बेदी थल रेखी। निजनिजकार्य्यमुनीशन लेखी॥
भे आसीन प्रमोदित सोई। नृप सबाम तब ग्रंथिक होई॥
द्रोण कृपा बुधिनैन सोहाये। दुर्योधन भ्रातनसह आये॥
अपर महीप प्रशंसित जोई। मखशाला राजे नृपसोई॥
भट अजीत रण कोटिन ठाढ़े। कृत रक्षाहित आनँद बाढ़े॥
शशिद्विजपूजनद्विजनकरावा। शालामध्य सुकलश धरावा॥
दो० थापित करिखग करण मति ऋचा उच्चारेउ बिप्र।
बरण हेत उद्यतभये नृपबर भूप सुछिप्र॥
भरद्वाज गौतम मुनि व्यासा। बिश्वामित्र बशिष्ठ सुभासा॥
बामदेव कश्यप मुदपाये। ऋषि जमदग्निपराशर आये॥
अपर मुनीश पारको जानै। सहस अठासी संज्ञा गानै॥
सबके पदपूजे महिपाला। कस्यो बरण दैदान बिशाला॥
निगममंत्र मुनिवर उच्चरहीं। देवस्थापन श्रुतिवत करहीं॥
मखसंकल्प इलापति कीना। हवनारंभ भयउ छलछीना॥
जयति मंत्रपढ़ि ऋषिवरज्ञानी। आहुतिदेहिं शत्रु मदभानी॥
बिद्यमान बृंदारक लेहीं। सामग्री बहु छोणिप देहीं॥
दो० बेदपाठ महिसुर करहिं होमहिं धर्म भुवाल।
बिगतबिघ्न पूरणभयउ हवन यज्ञतेहिकाल॥
पूरण आहुति मोदित दीन्ही। चिंताअखिल निवारणकीन्ही॥
मुनि सुपर्ब नर आनँद पाई। धन्य धर्मसुत गिरा सुनाई॥
किन्नरयच्छ सतिय गंधर्बा। गावहिं यश खमोदमयसर्बा॥
बर्षावहिं प्रसून बहुरंगा। परिपूरण को बदै प्रसंगा॥

पुनि सहदेव बोलि महिपाला। मृदुबाणी कह बचनरसाला॥
प्रथमतिलक केहिनृपशिरदेहीं। सुयश बिशदहमभूतललेहीं॥
देव देवको ऋषि मुनि माहीं। सत्य बदौ हम जानत नाहीं॥
जेहिपद अरिहिम शीशनवाई। मुक्ति पदारथ लहैं बड़ाई॥
दो० देव देव जानत जगत बिद्यमान यदुराज।
पूजि प्रथम शुभयश लहौ स्वयंसिद्धि सबकाज॥
अज हरि हर ध्यावत असुरारी। तिनहिं बंदि प्रभुहोहु सुखारी॥
अज अनादि मायापति जोई। वासुदेव बपु प्रगट्यो सोई॥
सेवत सुलभ पदारथ चारी। बारबार श्रुतिनीति बिचारी॥
तरुवर मूल मेघरस जैसे। डारत बढ़त सुशाखा तैसे॥
हरि पूजत तोषत सब प्रानी। संतोषत दशभांति भवानी॥
सर्गस्थिति लय कृष्णाधीना। लीला अगम अनंत प्रबीना॥
अलख अगोचर हरिअबिनासी। चरण पलोटत कमलादासी॥
भक्तहेत नर तन महि धारा। अबद अलोककोजाननहारा॥
दो० नर व्यवहारहि करत प्रभु लखत भेदकोइ कोइ।
प्रभुमानत तुम बंधु करि हरि माया मतिभोइ॥
सो० हरितें बड़को आन जासु भालकीजिय तिलक।
सुनतहि गिरा प्रमान व्यासादिक बोले समुद॥
सत्य बदौ पंडित गुणखानी। प्रथम पूजिये शारँग पानी॥
त्रिपुर नाथ बंदित अजबामा। मायापति बिशेषि सुखधामा॥
हरिपूजत सब बिधिकल्याना। सुनिमहीप बोले भगवाना॥
पुंडरीक आसन बैसाये। पटरानिन समेत सचुपाये॥
षोड़श भांति अरच कुरुनायक। महा प्रसन्न चित्त प्रभुलायक॥
पुनि मुनिवर पूजे रुचिमानी। विविध दक्षिणादै अघहानी॥
बिप्रवृंद शुचि पूजि बहोरी। सुरप्रियतिलककस्योगुणघोरी॥
कुसुम दाम कंधर पहिराई। बिपुल सुगंधि शरीर लगाई॥
दो० बिनय बिनीत नरेश किय सबकर बय अनुसार।
सौख्य अबिकृत सबहिभा किमि बरणौ बिस्तार॥

लखि शिशुपालशीशभुवनायो। बहुत बारलगि बैनन आयो॥
बहुप्रकार अन्तर अनुमाना। बोल्योक्रोधित बचननिदाना॥
कालभगाइ सकत नहिं कोई। जेहि बशचतुरधिषणपतिहोई॥
बलमदमय महीप जगजाना। कालबिवशबदवाक्यअयाना॥
मंच बिहाय धरातल आवा। अभय अशोचरोष उरछावा॥
कटुबाणी कह अनुचित होई। भूप समाज न भाष्यो कोई॥
बुद्धि चक्षु दुर्योधन भीमा। द्रोण गंग सुतपौरुष सीमा॥
कृपाचार्य्य आदिक बलदाई। जुरीयज्ञथल नृपति अथाई॥
दो॰ यदपि कहावत चतुर सब भेमूरुख यहिकाल।
मुनिवरमतिधरबुद्धि निधि अपर लोग धीपाल॥
कोउन महीपति कहा बुझाई। लखि अयोग मम उररिसछाई॥
नंदगोप सुत पद पुजवायो। जेहिग्वालन सँगभोजनपायो॥
गहन अशुचिखायोसँगग्वाला। शूद्र प्रताप बढ़्यो मखशाला॥
दुष्ट गहेभूले छितिराई। द्विजपभागकाकहिदियजाई॥
पंचानन बलिदियशशबालहि। ईश्वरकरिमान्योसुतग्वालहि॥
परतियरमण कर्‍यो जगजाना। ताहि साधु समभूपतिमाना॥
बिबिपितु मातु बिदित संसारा। कोउ न दोषन कर्‍योबिचारा॥
बड़ आश्चर्य्य कहत बन नाहीं। बिप्र समाज अयोग सदाहीं॥
दो॰ नटवर तन नाच्यो बिपिन नारिन युतथलराश।
पूज्यो भूपति अबुध सम पूरण ब्रह्म प्रकाश॥
लंपट कर्म जन्म भरि कीना। बध्यो ताहि परमाणअधीना॥
तस्करतारह अहनिशिलीना। अजअनादि तेहियहिथलचीना॥
बाट दान ग्राह्यो जेहि नीचा। अकल रमापतिभा मखबीचा॥
कपट प्रपंच भोग पर नारी। सो परब्रह्म स्वधाम बिहारी॥
ब्रज पुरहूत मान्यता मेटी। करि अनंत खल माया चेटी॥
सामग्री द्वितीय तन खाई। नाटकमय गिरि लयो उठाई॥
अति निर्लज्ज मख भागभुवारा। गावतनृप त्रिभुवन करतारा॥
वर्ण धर्म कुल जासु न जाना। अलख अगोचर सो भगवाना॥

दो० बध्यो कंसकरि छद्म बपु तज्यो समर निःलाज ।
अपर कर्म निंदक सदा करत रहा ब्रजराज ॥
यहि प्रकार दुर्बचन अनेका । कहत भूप शिशुपाल अटेका ॥
मध्य सभा हरि आसन श्यामा । मौनितश्रवणितकृतगुणग्रामा ॥
प्रति कुबाक्य रेखा यक करहीं । शत अपराध पूर जेहि परहीं ॥
गंग सूनु गुरु द्रोण समेता । अपर नराधिप सहकुरुकेता ॥
हरि निंदा सुनि रोषित भयऊ । बोले बचन बीर रस छयऊ ॥
हे चांडाल कलुष गृह नीचा । निंदत प्रभुहि सभाके बीचा ॥
मष्ट होहुनत तजुजियआसा । अवशि देब यमआलय बासा ॥
असबदि अस्त्र शस्त्र कर धारे । सबहि बरजि हरि बचनउचारे ॥
दो० जनि मंडौ रण भूपवर देखो चरित सुनैन ।
यहखल आपुहिं नाशिहै क्षणमहँ संशयहैन ॥
शत अपराध क्षमा करि मारौं । प्रथम प्रतिज्ञा हौं न बिसारौं ॥
एक अधिक खल करबध करहूं । जुरत सुरासुर समर न डरहूं ॥
केहि कारण शतक्षमौअगासा । कृपापयोधि करिय परकासा ॥
जन्मा तीनिनैन भुज चारी । सुनि आश्चर्य्य भये नर नारी ॥
दमघोषक यहि पितु गुणखानी । बोलि बिप्र पूछ्यो मृदुबानी ॥
चतुर्बाहु त्रैचष सुत भयऊ । लक्षण बदौ मोह उर छयऊ ॥
शोधि लग्न तिथि बारसँभाला । ज्योतिषबलबदबिपुलहवाला ॥
उपज्यो पुत्र तेज बल खानी । यशी प्रतापी सुनु नृपज्ञानी ॥
दो० जेहिबिलोकि बिवि भुजनशौं पतनअक्षयकहोय ।
सत्य इलापति जानिये याहि बिमर्दै सोय ॥
शूरसेन जाता यहि माता । महा देवि संज्ञा बिख्याता ॥
हमरे सदन सुतहि लै आई । अति चिंतमित रहैं भुवराई ॥
मोहिं बिलोकि अतिआरतआई । बचै पुत्र अस गिरा सुनाई ॥
दृष्टित झटित गिरे भुज दोई । तीसर चक्षु बिनाश लहोई ॥
यहब्यवहार लखत दुख मानी । पितु भगिनीइमिबाणिबखानी ॥
बंधु तुम्हार अहै शिशुपाला । तवकर तात होइ यहिकाला ॥

बध्यो न ममसुत याचे देहू। बिशद सुलोक लोक सुतलेहू॥
समुझिदैव लिपि हृदयबिचारी। दोष एक शत क्षमौं सुखारी॥

दो० मंगलमय गृह सोगई अमर जानि निजसून।
बिनाकिये अपराध शत बधैं कृष्ण कबहूंन॥

इमि बुझाय मंडली महीपा। रेवागनत भये कुरु दीपा॥
शतते अधिक होत रिसबाढ़ी। बोले गिरा प्रमाणिक गाढ़ी॥
अबजनिकुबचबदासिमतिहीना। जीवन तोर बचन आधीना॥
अहमित पुनि दुर्बचन सुनावा। तबहिं सुदर्शन चक्र चलावा॥
खंड्यौ शीश सभामहँ तासू। हाहा भूतभयउ दश आसू॥
तेज तासु प्रभु मुखहि समाना। कौतुकदेखि नृपनभ्रममाना॥
जयध्वनिद्विदिशिछायनृपरहेऊ। तीसर मुक्ति निशाचरलहेऊ॥
मुक्तितृतीय कौन बिधि भयऊ। कहोबुझाय ऋषय भ्रमछयऊ॥

दो० मुनिवर शाप प्रतापभा हाटक कश्यप जाय।
नरहरितन मर्‍यौं तहां श्रीकर यादवराय॥

द्वितिय जन्म रावण अवतारा। जेहिकर पाक शत्रु मद हारा॥
राम रूप मास्यो जग जाना। यहशिशुपाल तृतीय बखाना॥
उभय पारषद हरिपुर बासी। अहंकार बश च्युतताभासी॥
पूरणमख विलोकि सुखपाये। पांडुतनय सबभूप बुलाये॥
पहिरावनि सबकी नृप कीन्हा। सात्विकदान सुबिप्रनदीन्हा॥
दानकर्म कुरुपति आधीना। जो रिपुतामय कपट प्रबीना॥
द्विगुणतिगुणतिहितेअधिकाई। यज्ञभंग हित द्रव्य लुटाई॥
हरि रक्षक जहँ सतन सोहावा। तहँकस भंग ज्ञाननहिं आवा॥

दो० सकल बिघ्न बर्जित भयउ पूरण यज्ञ नृपाल।
निजनिजगृहगयक्षोणिपतिमांगिबिदातरकाल॥
प्रभुकुटुंबयुत भेटिसब गये द्वारकहि राय।
आये हरि सुधि पावतहि घरघर बजी बधाय॥
मंगल जानि बिसारहीं मूरुख यादव राय।

तूब्लतजिभजुतासु पद गाय गायशुचिभाय ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांशिशुपालमोक्षवर्णनो
नामपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

दो० कालप्रबल सबुजगु भषत जड़ चेतन, चहुंखानि ।
अजरअमरवतभूलुजनि भजुहरिसुखप्रदजानि ॥
सेवत प्रेत अचेत भव पूजत बिषयी देव ।
अंत प्रेत थल बासि हैं हरिपदलहैं न भेव ॥
समुझावत बुधवेद नित सन्त सुजान सदाय ।
तदपि न मानत मूढ़नर भव दधि बूड़त धाय ॥
मुक्ति देत जनको सदा राधा बल्लभ सत्य ।
इतउत सहज स्वभावहीं मेटत त्रिबिध अपत्य ॥
यहिकारण परिहरिहरिहि आनसुयशजनिगाउ ।
मंगल प्रेम प्रताप सों चतुर मुक्ति पद पाउ ॥

मुदित सुकृत लखि पूरण राजा । कुरुपति उर दुखभायुत लाजा ॥
सो कारण बिस्तार समेता । बदियकृपाल सुनियसहचेता ॥
धर्मराज नृप बर बिज्ञानी । यज्ञस्थल महीप अनुमानी ॥
कार्य्याध्यक्ष किये यहिरीती । राख भीममख गृह युत प्रीती ॥
अर्चा कर्म्म सौंप सहदेवहि । बिदुष जान पूजाके भेवहि ॥
द्रव्यधाम अधिकार सक्षेमा । नकुलहि सौंपदयउ सहप्रेमा ॥
सेवा कर्म सुरुचि अधिकारा । मगहि समर्प्यौ नृप तेहिबारा ॥
करहिं श्याम आदर सत्कारा । धोवत चरण भूपज्यौनारा ॥

दो० जूठपात्र बाहिर धरहिं प्रभु अबिकार सनेह ।
दानकर्म्म दुर्योधनहिं सौंप्यौ शुचि मखमेह ॥

काजयोग्य नृप आन बिचारी । कियेधर्मसुत मख अधिकारी ॥
सबनिष्कपट करहिं निजकाजा । मनमाषित दुर्योधन राजा ॥
अगणित द्रव्यदान मिसदीन्हीं । यज्ञभंग हित मनसाकीन्हीं ॥
मनचिंतमन नाशकृत होई । हरिचरित्र बूझत नहिंसोई ॥

जोपै होत खल इच्छा काजा । तौनहोत भवमख शुचिसाजा ॥
दुष्ट प्रकृति नहिं शुभकृत करहीं । छूंछे अखिल मनोरथ परहीं ॥
मूरुख अबुध सदाकर सोई । चक्र चिह्न वृद्धकधन जोई ॥
सो कुरुकेत हाथ द्युति कारी । तेहि प्रताप बाढ़त धन भारी ॥
दो० भयउ धर्मसुत द्वितियनृप मम प्रभुतामहँ आय ।
जेहिविधि नाशौं सोकरौं यहिइरषा कुरुराय ॥
सो० हरि सप्रेम जेहिठाम रक्षक सतन महीपसुनु ।
कैसेहोय अकाम नहिं शोच्यो कुरुपति अबुध ॥
हियहार्यो करि विविध उपाई । पूर्योमख निर्विघ्न नृराई ॥
अपरचरित सुनु महिप सुजाना । गये द्वारकहि जब भगवाना ॥
तब सबकर करि आदर भाऊ । बिदाकर्यो पहिराय सचाऊ ॥
समुद बन्दि नृप सहित सहाई । निज निज देशगये मुदपाई ॥
सह परिवार धर्म्म महिपाला । कुरुपतिसहितचलेतेहिकाला ॥
ध्रुवनंदातट हेल नहाना । पहुंचेबहुबिधिबजत निशाना ॥
करभ तुरग रथ बिपुल पदाती । बरणत बनत न पूरण भांती ॥
न्हाय सबामचले मुदमानी । मयकृत धामगये सुनुज्ञानी ॥
दो० अर्जुन मणिमय गृहरचे निरखत दृष्टि भ्रमाति ।
हरि आसन तेहि गेहनृप सोहतभे यहिभांति ॥
मागध सूत बन्दिजन पायक । जयध्वनिकृतअपारगुणगायक ॥
नभसबाम सुरकृत कलगाना । नटत नाटकी संयुत माना ॥
अंतःपुर बिधुबदनी गावहिं । निजसुरसुरतियशब्दलजावहिं ॥
सोह सभासद बिपुल बराका । धर्मराज शोभित रिपुपाका ॥
तेहिपाछे सबाम कुरुराई । सभाद्वार आयो द्विबिधाई ॥
बहुऐश्वर्य बिभव सँगतासू । कपटसनेहमिलितचितजासू ॥
भ्रामिकसदनमयासुरकीन्हा । जलथलथलथलथलजलचीन्हा ॥
द्वाराद्वार अवार सुवारा । किमिबरणियगृहभ्रामिकअपारा ॥
दो० प्रविश्यौ कुरुपति भ्रमितथल लखिजलजानि परान ।
बस्त्रउठाये बुद्धिबिनु भयउ क्षितिप अज्ञान ॥

अग्रागमन कस्यो बड़ि लाजा। जानिसुथलजलप्रविशोराजा॥
क्लेदित बसन लखा कुरुराई। हँसे सभासद नृपति ठठाई॥
सदनोपर त्रियहँसी महीपा। पितुसमान कहिकुरुकुलदीपा॥
धर्मराज निज हँसी दुराई। बिहँसि हृदय मुखलयोघुमाई॥
बिहँसत सबहि देखि कुरुकेता। बैठि सभाकह क्रोध समेता॥
महा बिलज्जित भांति बिसारे। तेहिच्छण बल प्रतापजनुहारे॥
कृष्ण सहाय पाय अभिमाना। भयउ महीपबिदितजगजाना॥
कुल प्रधानता कानिगमाई। हास्य हमार कस्यो भुवराई॥
दो० जो जीवत हौं भूमितल तौप्रण सुनौ नृपाल।
करौं सलज्जित सभामहँ तुम कहँ कौनौ काल।
हरिप्रताप छायो जगत जानत सब नर नारि॥
बिदितन ध्यावत ईश्वरहि मंगल दीखबिचारि।

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांदुर्योधनमानभंगवर्णनोनाम षट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

दो० उपजत महितेथूलसब नाशि मिलत महिमाहिं।
लवण होत जल खारते होत नीर भ्रम नाहिं॥
यहिप्रकार जल थल बसे जीव ब्रह्मलवमान।
लिप्त होत पुनि ब्रह्म महँ बदत बेद बिज्ञान॥
महा प्रलयमें जीव जे द्विविधि सुकृत अघकार।
मोच्छ पदारथ लहतहैं कह सर्वांग बिचार॥
जोगति मुनिजन योगजग महायुक्ति करिलेत।
सोपावत हरिपद भजे समुझत सुबुधि सुचेत॥
जानत पै मानत नहीं माया बश अज्ञानि।
तूभजुयदुपतिनलिनपद मुक्तिदानिअनुमानि॥
रुचिर प्रसंग पाप जग मोरा। सुनौकुरुपतजि कुमतिप्रघोरा॥
शालव नाम दैत्य बलखानी। नृपशिशुपालहितूअभिमानी॥
कुंडिनपुर रुक्मिणि उद्वाहा। भयउ पराजित सो नरनाहा॥

दुखितहृदयमनबिपुलगलानी।त्रिविधभांतिनिजमनअनुमानी ॥
केहिउपाय जीतौं घनश्यामा । मनमलीन चिंत्यो परिणामा ॥
आराध्यो गिरीश चितलाई । क्षुधा तृषा बासना बिहाई ॥
इन्द्री जीति तपस बड़ कीन्हा । आतप बरषा शीत न चीन्हा ॥
तनमनभजे चरण शिरमाली । बर्ष एक इमि तपसा पाली ॥

दो० अति प्रसन्न है चंद्रधर कहा मांगु बरदान ।
अजर अमरवत होहुं मैं अनत्तय सहकल्यान ॥

हर बद अजर अमर को भाई । सुनु मम गिरा मनोरथ दाई ॥
तोहिं मायासुर देइहि जाना । इंगतज्ञ सो चलिहि सुजाना ॥
गति त्रिलोक महँ ताकर होई । मोर बाक्य सुत मृषान होई ॥
मयनमिलै अभिमतफलदानी । रथदीजिय जनपाल सुपानी ॥
तेहिअवसर यकयानसोहावा । मणिमयमय तत्त्वणलैआवा ॥
धनदविमान लजाय निहारी । पाययान जड़ भयउ सुखारी ॥
बंदि हरहि भारथ आरूढ़ा । चल्यो द्वारकहि बुद्धिबिमूढ़ा ॥
पाय शोध हरिगजपुर आहीं । पुरी निरोध कस्यो चहुं धाहीं ॥

दो० पुर निवासि बहुदुख लहैं खल बल माया कीन ।
तरवर जल शिखि वृष्टि कृत हरि पुर दुष्टअधीन ॥

उपल त्तार बरषा कहुँ करहीं । झंझाबायु कतहुं परचरहीं ॥
महाबिपति प्रभु पुर दिशिचारी । दुखित भये खग पशुनरनारी ॥
बिकलित बाल युवाबहु काली । बदत त्राहि दुखहर बनमाली ॥
आरत बदत भूपतट आये । करि प्रह्न खल कर्म सुनाये ॥
बेगिसुद्धि लीजिय त्तितिपाला । मीनकेतु बोले ततकाला ॥
अवशि सूनु मर्दौं खल जाई । हरिबिनुयहिजड़बिपतिमचाई ॥
रिपु बलखानि हृदय निहशंका । संबर शत्रु सदा रणबंका ॥
सजि सहाय नृप आयसु मानी । असुर सूत गे रण बिज्ञानी ॥

दो० देखो साम्बुहि भिरतरण बैकल चित झषकेत ।
धरौ धीर मर्दौं असुर पितु प्रताप रण खेत ॥

रे अघखानि अबुधि अन्याई । बरबस मृत्यु इहां तोहिंलाई ॥

अस्त्र शस्त्र करधरु करिचेता। देखिहि यमपुर सैन समेता॥
जुरे समरद्वौ संगर ज्ञाता। कोप्यो असुर सुनौ कुरुजाता॥
मायाबल तम निविड़ उपाया। दिवसनिशासमदलभ्रमछाया॥
तेजबाण छोड़यो तन हीना। बिनश्योतिमिरप्रकाशप्रवीना॥
पूषण तुल्य असुग नभधाये। कुहर च्णक महँ दूरि बहाये॥
तीव्रफली संगरहि अपारा। मार मार खलदल हियहारा॥
रथहिताकि मार्‍यो बहुबाना। अस्त व्यस्त भाहर प्रदयाना॥
दो॰ अति व्याकुलह्वै नीचतब रणतजि गयउ पलाय।
पुनिक्षण बीतत प्रगटभा तमचर माया भाय॥
करतविविधविधि निश्चरमाया। कहुंयक्षबपुकहुं बहुकृतकाया॥
देव दैत्य नर समर प्रचारै। महाबली संगर क्रिमिहारै॥
रण उद्यम अनेक बिधि कयऊ। हरिसुतसमरदुखितमनभयऊ॥
शालव सचिव द्विविद बरियारा। समरभूमि प्रगट्यो तेहिबारा॥
करिछल चरण मार उरमारा। मूर्च्छितधरा पर्‍यो बिकरारा॥
स्मृति रहित सुत समर निहारा। बध्योंकृष्णतनद्विविदपुकारा॥
सुनियादव दलहिय अकुलाना। भिरेसमरक्रोधित तजिमाना॥
सूतघालि स्यंदन अतुराई। गयउ नगरलै रति पतिराई॥
दो॰ पुरछायो आतंकयह जागिकहा झषकेत।
सूतकर्‍यो अनुचित महा रणतजि जान अचेत॥
क्षत्री युद्ध पलावत जोई। पावँर तासु प्राण जग होई॥
सुभट प्रबल रवतायन तजहीं। कादरजीव स्वप्रिय लै भजहीं॥
श्याम जात यदुकुल बिख्याता। तूदेख्यो रण काहि पलाता॥
अथवा हमहिं पलात निहारा। समुझि हृदय लायो दरबारा॥
यहबृतांत जगश्रवणिहि जोई। कादर बूझिहँसिहिभव सोई॥
बिनुस्वारथदियतिलककलंका। धृगजड़निरबुधिनिपटनिशंका॥
क्रोधितलखिजलचरअसवारहि। तज्यो यानसारथितदवारहि॥
करसंपुटित कहा सुनु नाथा। बूझतबिपुलनीतिश्रुतिगाथा॥
दो॰ बदत नीति जोरण गिरै रथी अचेत सुजान।

सूत घालिरथ तुरत तेहि लावै शुचि बरथान ॥
सो० सूझिपरै जो सूत ताहि प्रशंसे रथपती।
यह बिज्ञान बिनूत बदत चतुर सज्जन सुमति ॥
चरण घातउर रिपुबल घाल्यो। मुर्छितभयउद्वुचितउरशाल्यो ॥
प्रबल अराति बूझिलै भागा। स्वामि बचैंचित हितअनुरागा ॥
कोअनीति यहि कृत अधमाई। तोषितहै प्रभुकाहिय बुझाई ॥
सुनिभाशांति क्रोध अधिकारा। बहुरि सारथी बचन उचारा ॥
दंडएक गत व्यथा नशानी। चलिय समर मंडिय बिज्ञानी ॥
उर उपहास गलानि नलाइय। धर्मयहै निज प्राण बचाइय ॥
बिपदासहि सम्पातिहि बचावै। त्रिय सुत हित धनधामबहावै ॥
प्राणहेत परिवारहि तजई। जीवन धन पाये हरिभजई ॥
दो० अबचलि रिपुमाया हरौ बधौ शत्रु संग्राम।
नीरदयो आचमन किय उर सुमिरे घनश्याम ॥
चलु जहँ द्विविद करतरण घाऊ। ध्याय पितहि धारयोरथपाऊ ॥
झटित सूत तब तुरग चलाये। पवन बेग गति हेरिलजाये ॥
द्विविद पास जबगे असुरारी। मेघ गरज जनु गिरा उचारी ॥
कत खल भिरत चमूके संगा। मम सन्मुख करु दृढ़रणरंगा ॥
जहँ शिशुपाल गयउ तहँ तोही। पठवौं अवशि सत्य सुरद्रोही ॥
साभिमान दुर्बचन उचारा। लायो काल ग्रासि यहिबारा ॥
असकहि असुर पवारयो बाना। मध्य बिभंजे सुत भगवाना ॥
द्वंद युद्ध जिमि खल असुरारी। कोप्यो हरिसुत शत्रु निहारी ॥
दो० तात्क्षण शर शिरतासुको खंड्यो नृप तेहि बाल।
असुर सैन साम्बू बध्यो खगपतिधौं दल ब्याल ॥
शालव लरत रैनि दिन राजा। यदुबंशी धन्वा रण भ्राजा ॥
करत युद्ध बीते दिन माला। हरिपुरबासी भये बिहाला ॥
त्राहि त्राहि हरि पाहि पुकारैं। हरिपुरदिशिनिशिदिवसनिहारैं ॥
प्रभु अंतरयामी अनुमाना। नगर द्वारका बिपति महाना ॥
सबल अराति न मम बिनु मरई। जुरि सुरमनुज युगनत्ररुलरई ॥

धर्मराजहौं स्वप्न बिलोका । मम पुरबासी निपटसशोका ॥
असुर उपद्रव बहु बिधि ठाना । बिकलजुरतरणसुतबलवाना ॥
आयसु बेगि देहु पुर जाहूं । खलसैनाहिंतृणबलाशिखिदाहूं ॥
दो० हलधर युत प्रभु चलतभे राउरजायसु पाय ।
पुर बाहर असगुन सगुन देखिपरेद्वौ भाय ॥
बाम भाग मृगिनी पग धारा । सन्मुखश्वानशीशझझकारा ॥
दाहिन द्रोण शब्द शुचि करहीं । बिस्मित लखिहरिजूकछुउरहीं ॥
दाऊ तुम पाछे ससमाजा । आयउ अग्रचलत कहराजा ॥
बेगवंत हय द्विजप लजावन । जनुमद झंझाबायुनशावन ॥
पुर समीप प्रभु दीख निहारी । पीडतअसुरसबहिदिशिचारी ॥
बैकल यदुबंशी संग्रामा । आरत बदत त्राहि हरि रामा ॥
मंडत समर धीर उर धारे । बिबिधायुधत्यागतअबिचारे ॥
रण अवलोकि उपस्थित भयऊ । अरितृणक्रोधअनलउरछयऊ ॥
दो० तस्मिन अवसर भूप सुनु हलधर सैन समेत ।
पहुंचे प्रभुतट त्रास गत लखौ तात रण खेत ॥
असुर बित्रश जन प्रजा दुखारी । शालव करत बिबिध रणरारी ॥
पुरजन रक्षा हित चलि जाहू । खल बनक्रोधजलजकरिदाहू ॥
संतत मिलब आय क्षणमाहीं । बिधिकर्तब्र बूझतभ्रमनाहीं ॥
मूशलपाणि नगर चलिगयऊ । सुधिलहिपुरबासिनसुखलयऊ ॥
प्रभु प्रद्युम्न ढिग आतुर आवा । बंदि तातपद शंखबजावा ॥
मृतक प्राण दारिद सुर पादा । पाये सैन श्याम अबिषादा ॥
जयध्वनि पूरिरही पुर दोई । आनँद बरणिनसककबिकोई ॥
हष्टत प्रभुहि असुर नभ धावा । पावक बिशिख मंडिदलछावा ॥
दो० बिहँसिश्याम शारँग लयोत्यागे षोड़श बान ।
स्यंदन सूत बिनाशियो महितल पस्यो अमान ॥
सो० गिरतहि उठयो सम्हारि तीब्र बाण प्रभुकरहयो ।
भाष्यो दुष्ट प्रचारि आजु समर मर्दन करौं ॥
बध्यो भौम शंखासुर भारी । सबलहयो शिशुपालअवारी ॥

समर बिदुषहौं बिदित जहाना। ममसन्मुखअबबचिहिनप्राना॥
परिहरि छद्म मंडुरण द्रोही। महाकाल सम देखुन मोही॥
बिशिखासुर धरणीसुत जोई। यमपुर मगहेरतु तुवसोई॥
बेगिपठाय ज्वलनि उरभेटौं। चलिहिनकपटचालितवचेटौं॥
त्रिपुर पलाय प्राण प्रिय जानी। तदपिनबचौ मृत्यु नियरानी॥
मूरुख अभिमानी मति हीना। अनुचितबदतहोतबलछीना॥
समर धीर बरबीर प्रसूरा। अनृतन कहत करत रिपुचूरा॥
दो० बिद्यमान अरिसमर लखि कत निरर्थ कृतबाद।
कोपिदुष्ट घाल्यो गदा भाषि विविध अनुबाद॥
सहजगदा काढ़्यो यदुनायक। जयध्वनिबोलिउठेरणपायक॥
खलउर हत्यो गदा बनवारी। मायाओट भयउ बिबुधारी॥
बिकलित रहेउ दंड द्वैमूढ़ा। नरतन रच्यौ कपट मतिगूढ़ा॥
हरि अबिदूरि बद्यो करजोरी। सुनियदयानिधि बिनतीमोरी॥
दूतदेवकी मात पठायो। नाथसँदेश कहन हौं आयो॥
पितु बसुदेव बंदिखल कीना। नानादंड बांधि तेहि दीना॥
बादि अंतरित असुरपति होई। मायामय बसुदेव रचोई॥
बहुरि कृष्णके निकटहि लायो। दुर्मति इमि दुर्बचन सुनायो॥
कृतकृत समरन पितहि बचावत। जगउपहासलाजनहिं आवत॥
असि कठोर यहिशीश उतारौं। पाटौंसिंधु मृतक दलमारौं॥
पुनि बधितोहिं अकंटक होहूं। निजबल समकर्तब करुतोहूं॥
इमिभाणि हरिसन्मुख नरराया। काटितासु शिर भूमि गिराया॥
दो० शक्तिछेदि ऊरध कियो देखिचमू बिलखानि।
भये अचिंत सचिंत नृप मायाकृत अनुमानि॥
मायामोह श्याम तन नाहीं। नरइव चरित करत रणमाहीं॥
अल्पक बिस्मित ह्वै धनु धारा। सदृढ़ ज्ञान इमिचित्तबिचारा॥
लिख्योनबिधिखलकरपितुमरना। बिद्यमानहलधर किमिहरना॥
त्रिदश त्रिजगनरअसुरसमाजा। जीतै योग राम नहिं राजा॥
कछुक बार प्रभु ज्ञान दृढ़ायो। खल माया अपार भ्रमछायो॥

ज्ञान चक्षु पितु सदन बिलोकी। अश्रुककृष्णनृपभयेअशोकी ॥
जड़हि प्रचास्यो काल समाना। सुनत शब्दभा अंतरधाना॥
अस्त्र शस्त्र त्यागे चढ़ि नाका। भंज्यो कृष्ण सूत रथ चाका ॥
दो० पस्यो नीरनिधि उठ्यो पुनि आयो प्रभु ढिगराय।
क्रोधित ह्वै जगदीश तब दीन्हों चक्र चलाय ॥
छं० दीन्हो चलाय सुचक्र प्रभु तेहि तासुशिर खंडन कस्यो।
बिनुशीश धर रणभूमि लोट्यो वृत्त जनु मघवा हस्यो॥
मणितासु शिरते महिपरी प्रभु मुखहि तेजसमाइयो।
यदुजात जय सुरमालबर्षि अपारधा सुख पाइयो॥
दो० मर्दि दुष्ट रच्छतसदा निज दासन घनश्याम।
मंगलतजि छलभाव नित करु हरिचरण प्रणाम॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांशालवदैत्यबधोनामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥
दो० मनचिंतत सोहोत नहिं शुभ अरु अशुभ प्रवीन।
यहि कारण कोबिद चतुर करत नहीं मनदीन॥
हरि हर बिधि जेहि अंशते प्रगट होत बुधिवान।
तेहिध्यावततजिदुचित मतिलहतअंतकल्यान॥
जनपालक घालक असुर धर्म प्रचारक जोय।
निज इच्छा तन बिरचिभव कृष्ण रूपभासोय॥
किये चरितनाना जगत सूचक मुक्ति सुजान।
शिखि दाहक अघहारि सदा गावत बेद पुरान॥
समयभवन तेहिजाय बुधबदतशास्त्र सतिभाय।
जोगावत यदुपति सुयश दुबिधादोष दुराय॥
सुनुकौरवकुल कुमुद निशाकर। बदौं कृष्णयश अघतमभाकर॥
बक्र दंत शिशुपाल सहोदर। बिदुरथयुतजिमिबध दामोदर॥
जबते समर मस्यो शिशुपाला। तबते द्वौअति रहत बिहाला॥
बंधुबैर प्रभुसन खल चाहैं। निजसुखदारुशोकशिखिदाहैं॥

बहु बिचारमनजड़ नितकरहीं। जयतिलहैकेहिबिधिरणलरहीं॥
शालव द्विविद मरतंदल साजा। द्वारावती गये सुनु राजा॥
चहुँदिशिनगरानिरोधिसुजाना। बरषे अस्त्र शस्त्र बिधिनाना॥
भेन्दु अरधछायो आतंका। खलदललखिपुरजनउरशंका॥
दो० पायशोध स्यंदन चढ़े असुर बेणु बन ज्वाल।
पुर बाहर थितभे प्रभू जहँ दुबँधु शिशुपाल॥
प्रभुहि बिलोकि क्रोधउरबाढ़ा। बक्रदंत सन्मुख भा ठाढ़ा॥
बोल्यो अनुचित बुद्धि दुराई। द्विजपतिश्रुतिबिनुलखिकिडराई॥
प्रथममारु निजशरअरिभ्राता। देखिहिअवशिनगरहरिजाता॥
रहै नअंत समय पछिताऊ। यहिकारणकरु प्रथमहिं घाऊ॥
नतपरिताप हृदय अतिहोई। आयो काल देख मन जोई॥
विविध सुभट घाते संसारा। अबभा मरण रच्छा करतारा॥
इमि दुर्बचन बहुत खलभाषे। श्याम अनुत्तर नृप मनमाषे॥
मर्यो गदा बीच हरि काटी। जानत सकलसमर परिपाटी॥
दो० दुष्ट बहुरि दूसरि गदा गहि कृत युद्ध अपार।
अति व्याकुल यादव चमू प्रेरिचक्र तेहिबार॥
बध्यो बक्रदंतहि यदुराई। तासु तेज लय गयउ समाई॥
बिदुरथ तासु मरण लखि धावा। जनु मंदरगिरि तनुधरिआवा॥
बेगिहतौ प्रभु देव पुकारे। यहि जीवत बड़ त्रास हमारे॥
चक्रमेलि भंज्यो शिर तासू। पौरुष प्रगट भूमितल जासू॥
एक बाण बधि अपर सहाई। देवन दोखि पुहुप झरिलाई॥
किन्नर चारण सह गंधर्बा। सिद्ध साध बिद्याधर सर्बा॥
जयध्वनिबदि प्रसून झकडारैं। बामन सहयश गान प्रचारैं॥
प्रभु कर्त्तब सबभांति अलोकी। करतदास निजसदा अशोकी॥
जय अरु बिजय पारषद दोई। द्वारपाल तुव पुरके सोई॥
मुनिवर शाप बिवशतनतीनी। धरे असुरप्रभु तुमगति दीनी॥
धन्यभक्त रंजन भगवाना। करिप्रणामगे बिबुध सुजाना॥
भयउ यथाथितनगर बिशेखी। बक्रदंत बिदुरथ बधदेखी॥

दो० समररच्यौ बहु जोरिभट निज निज हित अनुमानि ।
कुरु पांडव निज जयति हित सुनौ राम बलखानि ॥
कहा करिय दुहुं ओरहितु दोनों चहत सहाय ।
जाहुतात अहि नगर तुम मम सम्मत उरलाय ॥
मैं तीरथ करि आतुरताई । मिलिहौं समर भूमि तल भाई ॥
प्रभु प्रस्थान ताहि क्षणकीना । गे कुरुक्षेत्र अचिंत प्रबीना ॥
मूशल पाणिगमन किय राजा । भवतीरथ थलसाधसमाजा ॥
न्हात मिलत उर मोद बढ़ाये । नैमिष बिपिनसमयबशआये ॥
देखि यज्ञकृत बिबिधमुनीशा । प्रीतिसहितधावतजगदीशा ॥
दूसर ओर बिमल सिंहासन । सोहत सूत बिगतभवबासन ॥
कहत कथा शुचिमुनिन सुनाई । रेवतिरमण गये तेहि ठाई ॥
सौनकादि लखि मूशल पानी । उठि बंदे सुनु भूपति ज्ञानी ॥
दो० उठ्यो न आसनते चतुर पौराणिक धरमज्ञ ।
क्रोधित ह्वै बोलत भये हलधर तब कटुबज्ञ ॥
बकता अस मूरुख केहि कीना । ब्यासासन मतिहीनहिंदीना ॥
भक्तिवंत ज्ञानी सविवेका । बक्ता चहियकुमतिअहिकेका ॥
मान रहित परमारथ लीना । मोह बिगत बर्जित छलदीना ॥
यह स्वारथ रत बड़ अभिमानी । लोभी अविवेकी अज्ञानी ॥
सोहन याहि पुराणिक गादी । बधै योग यह पुरुष कुबादी ॥
हनत परन्तु बिपुल अघ होई । ब्राह्मण अवध बदत बुधलोई ॥
यहियलते यहि बेगि निकारौं । बिप्र जानि नहिं अस्त्रप्रहारौं ॥
तब सौनकआदिकऋषिज्ञानी । बोले बिनय सहित मृदुबानी ॥
दो० तुम ज्ञानी धरमज्ञ प्रभु धीर बीर बलखानि ।
क्षमाकरौ अपराध यहि ब्रह्म बंश अनुमानि ।
अजमख काज लागि इहथापा । असबिचारित्यागियपरितापा ॥
ब्यासासन गर्बित अनुमानिय । आनभांतिनहिंचिंताआनिय ॥
उठिन प्रणाम कियो महि नाथा । यह अपराध क्षमियबरगाथा ॥
द्विजबर साधु बिदित संसारा । बधकीन्हें प्रभु अज्ञ अपारा ॥

क्षत्री तन तम विप्र सँहारौं। कोमल कहै कि धर्म प्रचारौं॥
क्षमा जन्म मरयादा हेता। शोचिय हृदय चंद्रकुल केता॥
बचन वृथा किमि जाय हमारा। बूझत सब बिधिबाक्य तुम्हारा॥
यदपिबधब अनुचित बिधिचारी। तदपि मूढ़ता कियर्याह भारी॥
दो० रोषरहित कुश सूत बपु मास्यो मूशल पानि।
बिधिकर्तब बिपरीत नृप भई जीव की हानि॥
सूत मरत भा हाहाकारा। त्राहि त्राहि बहु ऋषिनपुकारा॥
निपट उदास भये मख कारी। पुनि विवेक युत गिरा उचारी॥
मिटै न कमलजात लिपिताता। संभव होत कहत श्रुतिज्ञाता॥
दोषन तुमहिं करौ अब सोई। यज्ञभंग जेहि नाथ न होई॥
धर्म धुरीण अहौ तुम स्वामी। सुनि बोले प्रभु अंतरयामी॥
तजौ गलानि भंग मख नाहीं। मुनि प्रवीण जानत त्रिबिधाहीं॥
करगहि सूत तनय हलधारी। कह्यो बचन आसन बैठारी॥
पितुते अधिक करिहि बकताई। मम प्रसाद पाइसि अमराई॥
दो० गत चिंता कीजिय विविध यज्ञ कर्म मुद मानि।
प्रफुलित भे मुनिबर सकल बीती अमितगलानि॥
प्रभु कर्तब अतिशय अगम को भव जाननहार।
तू मंगल तजि मोह भ्रम भजु हरिपद बिस्तार॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांबक्रदंतबिदूरथसूतबध
बर्णनोनामअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥
दो० निजनिज स्वारथ निरत सब परमारथ रतकोइ।
दुख सुख पावत अंतमें करणी समनरदोइ॥
हरिमाया बश जीव जड़ भवबीथिका भ्रमात।
बिनुध्याये हरिपद नलिन शमनभवन पछितात॥
चतुर सुजन तजि द्वचित नित ध्यावत राधानाथ।
मेटत कलुष अनेक बिधि यथारजक मलपाथ॥
जे नहिंगावत कृष्ण यश ते मूरख पशुतूल।

अधिक मूछ दाढ़ीरची सींग पूछ की भूल॥
बिषय तजीसाधनसमुझि मलिनदुखदतिहुंकाल।
आराधत हरिपद सरज खलहित बिषय मराल॥
हरि आयसु सुतसूत बरासा। शोभित है किय बचनप्रकासा॥
मुनिजन मुदित करण मखलागे। विविधद्रुचित द्रुबिधापरित्यागे॥
तेहिअवसर जालव लवजाता। प्रबल प्रचंड दैत्य बिख्याता॥
कृत अवलोकि रोष उपजाई। कुटिल मीचुबश तज्योभलाई॥
मख बिध्वंस हेत लवपूता। माया मय प्रगटे जीमूता॥
मुदिर अनीघन बास अपारा। बर्षत रुधिर मूत्र मलधारा॥
गर्जत पयद प्रलय करभारी। डरपे सबऋषि तिमिर निहारी॥
अकथ उपद्रव आन प्रकारा। कीन्हसि दुष्टभूप तेहि बारा॥
दो० पट इंदुर त्रासत अहित तिमिखल लखि शुभ काज।
बिकल ऋषय त्रासित महा कहत त्राहि ब्रजराज॥
जड़ अनीति बलदेव निहारी। हरिजनसकलदुखितपुनिभारी॥
हल मूसल आवाहन कीन्हा। अंतरयामी जनदुख चीन्हा॥
इच्छावत आयुध चलि आये। पाय अस्त्र प्रभुऋषय बुझाये॥
धरौधीर खल मरण बिचारी। हलबल बलखींच्यो खलभारी॥
मूसल मर्दि तासु शिर तोरा। रुधिर प्रवाह मिच्यो चहुंओरा॥
मरत असुर सुर बरषहिं फूला। कहिजयजय प्रभुमंगलमूला॥
सब मुनिभे प्रसन्न यहि भांती। पक्षी यथा पाव जलस्वाती॥
करि अस्तुति मखकृत अनुरागे। हलधर चलत भये नृपआगे॥
दो० कृत यात्रा आये जहां कुरु पांडव संग्राम।
भिरत भीम भूपति प्रबल कौतुकीय घनश्याम॥
रामहिं देखि द्विजन अनुरागे। जानि बंधुगुरु पायन लागे॥
अजजनि तात करौखताई। मित्र तात सबगये नशाई॥
बंशरहै कुरु पांडव केरा। करौ सनेह तजौ भट भेरा॥
युगल सुभट बदपदशिरनाई। अबन तात त्यागा रणजाई॥
पुनि कुरुपति कह आरतबाणी। हलधर प्रति नरनाह बखानी।

हे गुरुदेव कृपानिधि ज्ञाता। रणभाहोत होय जो ताता॥
सो केवल हरिसम्मत पाई। स्वामिन गामम बंश नशाई॥
सेन श्याम रणछल कृत ताता। कोबापुरे पांडुके जाता॥
दो० दारु पुतरि नटुवा विवश जिमिनाचत बहुनाच।
तिमि ममकर नृत्तत सदा पांडुतनय यह सांच॥
हरिछल भीषम मृत्यु बताई। द्रोण मुयेयदुपति कपटाई॥
दुश्शासन भुजभीम उखारी। केवल कृष्ण छद्महितकारी॥
अपर सहायक बंधुनृपाला। राघव जिम्ह भये बशकाला॥
अनुचित समर कराय दयाला। तुरवाये मम जंघबिशाला॥
अपर कहौं का बिह्वल बाता। जीते पांडुश्याम उत्पाता॥
करुणामय दुर्योधन बानी। सुनत रामउर भई गलानी॥
प्रभु अविदूरि आय कह भाई। कस अधर्ममय रच्यौ लराई॥
क्षत्री धर्म धर्म संग्रामा। परिपूरण तुम गुणपति धामा॥
दो० शूरनभुज जंघा हरत भिरत रंकप्रति एक।
कारण अवशि बुझाइयै तात समर अविवेक॥
कुरुपति धर्म रहित अन्याई। छलकरि धर्महिं यूप हराई॥
दुश्शासन द्रुपदी गहि लावा। मध्यसभा चाहसि नँगियावा॥
दुर्योधन कह नारि उघारी। तात जंघ मम देह बिठारी॥
महा सती पांडव की नारी। तेहि लज्जा राखी बुधिचारी॥
जेहिकर कुंतल गह दुश्शासन। भुजतोरयोसोसुतअहिआसन॥
कुरुपति जंघा तेहि दुख तोरी। यहि महँ तात कौन ममखोरी॥
अपर अनीति करी कुरुराई। सो अयोग बरणी नहिं जाई॥
यहि कारण नहिंमिटिहि लराई। कर्यौ न तात विशेषि उपाई॥
दो० कृष्ण बचन सुनि राम तब बहु विचारमन आनि।
गये द्वारकहि मुदित मन हरिकर्त्तब अनुमानि॥
पद शिर नाय नृपति पितु भेटे। उचित अंग नहिं एकहु मेटे॥
अपर बंधु जन मिले समोदा। हरिपुर बढ़्यौ प्रमोद यशोदा॥
तीरथ विपुल भूमितल कीन्हे। सकल प्रकारदान प्रभु दीन्हे॥

भा अपराध एक बड़ भारी। कहिन सकतजेहिबुद्धिहमारी ॥
कृत तीरथ नैमिष चलि आये। तहां सूत बधभयउ स्वभाये ॥
बहुरि जाय नैमिष बन ताता। दर्शन मखकरि न्हाय प्रभाता ॥
ब्रह्म भोज्य करिहौं पुनि आई। यह कृत द्विजबध पाप नशाई ॥
बेगि जाहु सुत मानि रजाई। दर्शन नैमिष बन अघ जाई ॥

दो० बहुयदुबंशी साथ लै हलधर कस्यौ पयान।
न्हाय नैमिषारण्य दिय बिप्रन श्रुतिवत दान ॥

छं० बहुदान सादर मान युतदै पाप पूरब नाशियो।
पुनि आय द्वारावति मनोहर ब्रह्मभोजप्रकाशियो ॥
ब्राह्मणऋष्यअनगणितयदुवरनेवतिभोज्यजिमायो।
अघहरण आशिष बिप्रदै गमने सुनतसुखपाइयो ॥

दो० ज्ञाति जाति अनजाति जे हितू उदासी कोय।
सबहि जिमायो मोदमय आनंदे सब सोय ॥
यह चरित्र पावन परम सुनै जोनर अरु नारि।
मंगल कृष्ण प्रतापसों जाय शमन पुर हारि ॥

इतिश्री मद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्ण प्रियायां
मंगलदासविरचितायांबलरामतीर्थयात्रावर्णनो
नामैकोनाष्टाशीतितमोध्यायः ७६

दो० जे न भजत राधारमण विषय बदारत नित्य।
तिनके मुख अहि भवन सम जीह दादुरी सत्य ॥
द्रवत न हृदय सनेह बश यदुपति पद जिनकेर।
पबि कठोर चाहिय कहा उरन होय मत मेर ॥
श्रवत सलिल नहिंसुनि चरित पर्म पदारथ दानि।
मोर पंख सम नैन तेइ कहत चतुर अनुमानि ॥
धृक नरतन जो विषयरत तजिहरि चरण सनेह।
श्वान कोलमल मूढ़मय बदत वेद नित एह।
मंगलबार अपार तोहि समुझाये मनमूढ़ ॥
परिहरि हरिपद कमलमृदु आन घोर जनि ढूंढ़।

सुखद सुदामा चरित बखानौं। सुनौं महीप ओघ अघभानौं॥
याम्य सुता शुचि द्रविड़ प्रदेशा। बिप्र बणिक तहँ बसत सुवेशा॥
धन अधिकता धनद मदहारी। प्रभुपद निरत अखिल नरनारी॥
नृपता तहाँ बिप्र बर करहीं। श्रुति बिपरीत,चरण नहिं धरहीं॥
प्रजासुखी बिधि चारि नृपाला। गिरिधर चरण भजहिं तिहुंकाला॥
जप तप मखकृत दै शुभदाना। करत साध ब्राह्मण सन्माना॥
इंद्रीजित सब लोग लोगाई। भक्त प्रपंच रहित सनुराई॥
बसत देश तेहि बिप्र सुदामा। हरि गुरु बंधु चतुर गुणधामा॥
दो० बिधिबश दुखी अपार सो मनमलीन तनक्षीन।
अकथ दशाको कहै नृप सब प्रकार द्विजदीन॥
बिपति बिवशदुखबिबिध प्रकारा। कोउ न ताकर करत सहारा॥
प्रमदा तासु सती बुधिग्रामा। सभयकहापतिप्रतिशुचिबामा॥
नाथ प्राण प्रिय बिपति महाना। मीत बन्धु नहिंतजिभगवाना॥
जीवन वृथा कृपाल बिचारिय। करि उपाययहि दंडहिटारिय॥
एक बात मोरे मन आई। बिपति हरण यादव कुलराई॥
पूरुब नाथ एक दिन भाखा। हरिगुरु बंधु मित्र अनमाखा॥
त्रिपुर नाथ हरि अज करतारा। कृष्ण चरित को जाननहारा॥
जोपै जाहु श्याम पहँ नाथा। दारिद नशै बढ़ै कल गाथा॥
दो० चारि अर्थ दाता बिदित पारब्रह्म यदुराय।
नारिबाक्य सुनि बिप्रबर बोल्यो बैन रिसाय॥
कर्माक्षर नहिं मिटत अयानी। बदत वेद कवि कोविद ज्ञानी॥
रचत लोक बिधि कर्म प्रतापा। जनु कुलाल भाजन पुरथापा॥
नरतन बिष्णु धरत बहु नारी। कर्माधीन तु देखु बिचारी॥
विविध करयौ भिक्षातट बामा। भ्रमत सूर शशि नित प्रति ठामा॥
कोउन मेटत बिधि लिपि श्यामा। याचत मान जाइ परिणामा॥
को अज वरण जान जग माहीं। हरि सन्मुख दुर्लभ कछु नाहीं॥
जाकर नाम भजत सुरगादी। पावत दास बदत श्रुति बादी॥
भेटत सकल दरिद्र नशाई। जाइय नाथ मोद मन लाई॥

दो० बिनुदीन्हे नहिं देत हरि हौं दीन्हा नहिं दान।
मानभंग सब भांतिही करुमम बचन प्रमान॥
बिबुध नीति इमि कृत उपदेशा। बिपति काल पुनि होइ कुवेशा॥
मित्र द्वार भूलिहु नहिं जाई। काटहि काल यहै चतुराई॥
यह मित्रता कौन द्विजराई। जोन कुकाल सुहृद गृहजाई॥
अरुन सहाय करै हितु सांचा। सम्पति मांझ बहुत परिशांचा॥
दीनबन्धु पुनि हितू तुम्हारे। हरिहि बिपति बिश्वासहमारे॥
भूपति जहां न पावत जाना। तहां नारिको मम परमाना॥
सुनत नाम सादर यदुराई। भेटिहि तुमहिं प्रमोद बढ़ाई॥
प्रियहठ हेरि कहावर ज्ञानी। बदत शास्त्र असनीति सुजानी॥
दो० गुरू भिषजहरि जन हितू भूपति सचिव महीश।
जाइभेट बिनु चतुर नहिं इन गृह कहत मुनीश॥
यथा शक्ति चाहिय उपहारा। तंदुल त्रिय लाई तेहि बारा॥
बांधि बस्त्र द्विज कांख दबाई। सुमिरि गणेश चल्योसुवराई॥
मारग मन इमि करत बिचारा। बिधिनलिख्योधनमोरलिलारा॥
एक लाभ होइहि सुखदाई। अघजाइहि पदपरसि नशाई॥
अंतरयामी श्याम सुजाना। दुखित भक्तआवत बिनुत्राना॥
गति प्रचंड दीन्ही तेहि ऐसी। बायु प्रघोर घोर गति जैसी॥
हरिपद सुमिरत पद बिसराये। लोक यामपुर निकटहि आये॥
दधिमधि नगर इंद्रपुर तूला। किधौंसकल सुख मंगलमूला॥
दो० बन उपबन चहुंओर कल शुक पिक बिहँग समाज।
बरणिसकत कबिकुशल किमि जहँराजत ब्रजराज॥
पुरप्रबिश्यो करिगणपतिध्याना। देखेसदन कणक द्युतिभाना॥
संत विप्रहरि पद रति राजा। परमारथ मयकृत मखकाजा॥
यूथ यूथ सोहत यदुजाता। जनु पुरहूत बिबुध शुचिगाता॥
कहुं गोदान अन्न कर दाना। कहुंध्यावत मुनिजन भगवाना॥
कृष्ण चरित गावत कहुं लोगा। जोसुनिनाशतअखिलप्रयोगा॥
पुरबासी आनँद मय राजैं। ब्रह्म सुखहिबर बशजनुलाजैं॥

पूछत कृष्ण सदन बर बानी। देखत चरित जातद्विजज्ञानी॥
प्रभु मंदिर तटग। द्विज नायक। बंदि चरण बोल्यो बरपायक॥
दो० दयाधीश द्विज बर बदिय कहां जाइंगे आप।
हरिदर्शन की लालसा जिनकरअधिक प्रताप॥
अंतर सोहर शुक्ल निकेता। तहां बिराजत यदुकुल केता॥
भीतर चलि जाइय अनत्रासा। परि पूरण ह्वैहै तुव आसा॥
द्वारपाल कर पाय रजाई। अंतर भवन प्रविश सुखपाई॥
दूरिहि ते हरि द्विज पहिंचाना। मित्र सुदामा सुखद सुजाना॥
आतुर धाय चले बनवारी। बंदि चरण कीन्ही अकवारी॥
करगहि चले जगतपति भूपा। करि आदर हितुता अनुरूपा॥
निजआसन दै पाद पखारे। पादोदक लै बचन उचारे॥
कहो सखा गृहकी कुशलाई। पुनि चंदन चरच्यो सुरराई॥
दो० षोड़श बिधि पूज्यो द्विजहि गुरु बांधव अनुमानि।
प्रफुलित तनगदगद भये प्रीति अलौकिक जानि॥
सह रुक्मिणि पटरानि सिहानी। अपर नारिनर अचरज मानी॥
निज मनव्यंग बदत इमिभूपा। दुर्बल दारिद्र बिप्र कुरूपा॥
महा पुण्यको पूरब कीन्ही। यहमान्यता श्यामजेहिदीन्ही॥
सबकरजानि भ्रमित मनश्यामा। पूंछ सुदामहिं कथाललामा॥
कहो मित्र सुधि तुम कहँ होई। गुरु पाठक गृह हमतुम दोई॥
ईंधन हेतु गये घन कानन। आयसु दयउ गुरु अघभानन॥
दारु भार धरि शीश सिधाये। अर्द्ध प्रमाण पंथ जब आये॥
बरष्यो जल तब मूशल धारा। मिट्यो चिह्न मगभा दुखभारा॥
दो० निशिकाटी यक बिटप तल महा शीत जलखाय।
खोजहेत गुरु देव पुनि प्रात गये दुख पाय॥
हृदय लगायो देइ अशीशा। लै आये घरकहँ रद ईशा॥
जादिनते त्यागी चटसारा। तबते मिलबन भयउ तुम्हारा॥
अरु न सुद्धि पायउ कछु भाई। करिअनीति मोहिंदियबिसराई॥
अस मित्रता धर्म नहिं ताता। जो परिहस्यो प्रीति कलनाता॥

पुरा सुकृतभा आजु सहाई । दर्शन दयो मानि मित्राई ॥
पावन धाम भयउ सबभांती । मोहिंसुखभाजलचातृक स्वाती ॥
त्रिपुर व्यवस्था जानत ताता । पूछत हमहिं कुशल की बाता ॥
उर पुर बास रहै सबही के । सुकृतमूल पुनि जीवन जीके ॥
दो० सुनत चरित बूझौ सबन गुरु बांधव द्विजराज ।
मंगल असको दीनहितु करण सकल सुखसाज ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांसुदामाद्वारिकागमनो
नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

दो० मोह रज्जु बंधन पस्यो छूटब कठिन सुजान ।
विविध बासना उरबसे जीवहि नर्क निदान ॥
उपदेशत गुरुजन यदपि ज्ञान मनोहर बाणि ।
तदपि सुनत नहिं मूढमति बिष पावत निजपाणि ॥
यथाशब्द सुनि मोर कर अहि व्याकुल है जात ।
तथा कहत राधा रमण पाप पहार बिलात ॥
हरिमाया दुस्तर महा तरत कोउ मतिधीर ।
छल परि हरि जे शुद्धमति सेवत पद यदुबीर ॥
प्रगट लखत चहुं ओरही मुक्ति पदारथ दानि ।
मंगल मूरुख अंध किमि जानै हृदय गलानि ॥
कहा कहौं प्रिय संकट बाता । जीवन वृथा न उदर अघाता ॥
नित हरि बासर रहत हमारे । अंतर गति सब प्रगट तुम्हारे ॥
समुझि मनोरथ द्विजबर केरा । बोले बिहँसि श्याम तेहि बेरा ॥
प्रिय प्रिय कुछ दीन्हो उपहारा । दीजिय बेगि बन्धु बुधि सारा ॥
कहि कारण सो कांख दबाये । क्षुधाबलित जठराग्नि लुभाये ॥
सह संकोच बिप्र नरनाहा । मौनित कछु न कहा उरदाहा ॥
बरबस प्रभुद्विज लखि संकोची । गाठरि कांख आपुकर मोची ॥
खोलिसुतंदुल अतिरुचि मानी । युगमुष्टिका भषे नृप ज्ञानी ॥
दो० तृतिय मुष्टिका लेतही रुक्मिणि कर गहि लीन ।

कृपासिंधु कस दान यह होत आपुही दीन॥
उभय लोक प्रभुता किय दाना। तीसर देत कलेश महाना॥
कौन धाम बसिहौ यदुराई। पाछे देहु कहौ समुझाई॥
सम स्वभाव द्विजराज सुशीला। रागरहित त्यागी बर लीला॥
पाय बिलोक विभवन उछाहा। जनु निस्प्रेही धन अनचाहा॥
लाभ हानि दुखसुखरुट तोषा। पापपुराय सम लखत अदोषा॥
अति अधिकार महाधनकेरा। केहि कारण भाकरिय निबेरा॥
भामिनि पर्म मित्र द्विज मोरा। महा गुणी भव बासन भोरा॥
मग्न सर्वदा मम पद नेहा। समुझत तन धन नारिन गेहा॥
दो० संसारिक सुख इंद्र मुद जानत तृण समनारि।
त्रिपुर दान के योग यह निजमन देखु बिचारि॥
सो० कहि कहि विविध प्रसंग ज्ञान नीति तपसा मयी।
रुक्मिणि को भ्रम भंग करत भये यादव पती॥
बहुरि छरस भोजन बिधिचारी। रुक्मिणि रचेउ देव मुदकारी॥
सुरुचि सुदामहिं कृष्ण जिमायो। ताम्बूल दै सेज बिठायो॥
मगश्रम गालित गयउ द्विज सोई। सकल सुद्धि तन मन करखोई॥
भव कर्तहि बोलाय यदुनायक। शासन दयउ बचन बरलायक॥
हाटक भवन जटित रतनाई। रचौ सुदामापुर सुखपाई॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि तहँ भरहू। बेगिहि तात बिलंब न करहू॥
जग सुबस्तु कोउ रहै न थोरी। कांक्षा रहित होइ गुणधोरी॥
आयसु मानि चल्यो भवकारी। क्षणमहँ रचेउ नगर श्रुतिधारी॥
दो० बन्दि चरण दै शोध पुनि निजथल गयउ नृपाल।
सुख सोवत बीती निशा जागेउ प्रातःकाल॥
उठि महिदेव शौच कृत कीन्हा। न्हाय भजन पूजन मन दीन्हा॥
नित्य क्रियाकरि गे हरिपासा। मांग्यो बिदा जीव धन आसा॥
प्रेममग्न प्रभु उतर न दयऊ। द्विज बंदन करि मारग लयऊ॥
पंथ बिचारत इमि नरराई। यांच्यो धन न रही गुरुताई॥
जो मांगत सम्पति सह लोभा। हरि उर होत अधिक परिक्षोभा॥

मोह मग्न मोहिं जानि मुरारी । धन दै देते प्रीति बिसारी ॥
आपुसमुझि कछु द्रव्य न दीन्ही । यह भलिबात संत प्रिय कीन्ही ॥
जो ब्राह्मणी पूछि है आई । विविध प्रकार देव समुझाई ॥
दो० आदर मान अपार बिधि कीन्हो मम यदुराय ।
दीन्ह द्रव्य जनु त्रिपुर की मुदित गयउँ हौं पाय ॥
पुनि कछु समुझि दुसह दुखराजा । मनमाष्यो भूसुर सुख साजा ॥
बहु बिचार निज हृदय उपाई । ग्राम निकट आयउ दुबिधाई ॥
तहां न दीख भवन पुर सोई । अति आश्चर्य बिप्र उर जोई ॥
वासव पुर सम नगर निवासा । पुरबासी सुर द्विज मन त्रासा ॥
अहह कमल सुतगति प्रतिकूला । एक बिहाय द्वितिय दुख मूला ॥
बिपति बश्य सबु जन्म गमायउँ । आनँद एक दिवसनहिं पायउँ ॥
टूटधाम रह सोपि नशावा । केहि अघ प्रिया बियोग सहावा ॥
तजौं काय बिनु प्राणपियारी । पूछौंकाहि मिलै कहँ नारी ॥
दो० क्लेश बलित गृह द्वारपर द्वारपाल तट जाय ।
कहा कहौ कहि कर सदन बोल्यो चर शिरनाय ॥
सो० राधाबल्लभ मीत नाम सुदामा बिप्रबर ।
प्रविशिय तात अभीत यह मंदिर तिनकर रुचिर ॥
दूरिहिते लखि ब्राह्मणि धाई । बहु भूषण भूषित शुचिताई ॥
नख शिख लसत मनोहर बासा । मलित गंधितनु मुख बिधुभासा ॥
युत सहचरिन गहे पदराई । कर संपुटित कहा मुसुकाई ॥
नाथ ठाढ़ कहि लगि गृह द्वारे । अंतहपुरहि कस न पगधारे ॥
जनि बिस्मित हूजिय शुचिगाथा । बूझिय गुप्तदान यदुनाथा ॥
आयसु बिश्वकर्मा तुव पाछे । क्षणमहँ रच्यो निकेत सु आछे ॥
कत छल करत नारि लखि भोरा । स्वर्ण सदन समभाग्य न मोरा ॥
करिदाया मम धाम बताइय । अपर प्रसंग न भूलि चलाइय ॥
दो० बहुरि बुझाये कामिनी हरि प्रताप सबभांति ।
गयउ बिप्र अंतर सदन बढ़ी बदन बिधुकांति ॥
महाबिभव लखि हृदय सकाना । मन उदास नृप मोदन माना ॥

कृपापयोधि जगत नर नारी। लहि बैभव सब होत सुखारी॥
बिकलित नाथ भयउ केहि कारण। कहिय मनोरथ शोच निवारण॥
बड़ि ठगिनी मोहनि नरमाया। ठगि ठगि सकल जगत भरमाया॥
प्रभुअनकृपा बिदित प्रिय भयऊ। जेहि कारण अगाणित धनदयऊ॥
यांचे बिनहिं द्रव्य प्रभुताई। अमित दीन्ह कबि सकत न गाई॥
दोष रहित प्रभु शोच बिसारिय। मम बासना स्वचित्त बिचारिय॥
निज इच्छा जो देइ कृपाला। सो लीजिय अनत्रास दयाला॥

दो० बोध भयउ सुनि त्रिय बचन तनमन उपज्यो मोद।
इन्द्र धनद पदवी नृपति लाजत बिभव यशोद॥
सुख सोवत नित हरि कृपा भजत सुमन यदुराय।
अस प्रतिपालक दास पद मूढ़ देत बिसराय॥

सो० पाठक श्रोता जोय यहि प्रसंग के भूपबर।
लहैं विविध सुख सोय जीवत अंत सुधामहरि॥

इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांसुदामादारिद्रहरणवर्णनो नामैकाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

दो० बित्त रहित परिवार जिमि बन बिहीन कासार।
फल बर्जित पादप यथा विश्वा बिनु शृंगार॥
नीति बिवर्जित नृपति जस कपट बलित निजमीत।
संन्यासी बैराग बिनु स्वर बिहून जनु गीत॥
कृपण द्रब्य धार्मिक कुमति ज्ञान चतुरई हीन।
संत शांति संतोष बिनु कर बिहीन करि दीन॥
सुभट अस्त्र बिनु नृप असत याचक गुणहि बिहाय।
यथा वृथा ये सब विबुध बदत चतुर कबिराय॥
तथा जगत हरि भक्ति बिनु नर शरीर निहकाज।
यहि कारण मन मूढ़ तू ध्याउ चरण ब्रजराज॥

कुरुक्षेत्र जिमि यदुपति आये। सो प्रसंग सुनु सुरुचि सुभाये॥
एक समय हरि पर्ब बिचारा। युगल बंधु गे नृप दरबारा॥

करि जोहार मृदु बचन बखाना। सुनियमहीपति ज्ञाननिधाना॥
बिपुल कालगा भूप सिराई। पूषण पर्ब पर्यो अब आई॥
करिय पर्ब कुरुखेत सोहावा। महासुकृत पाइय श्रुतिगावा॥
दान देइ जो तेहि थल कोई। सहस गुणा फल पावै सोई॥
सुनि प्रभु बचन पूछ यदुजाता। बड़ प्रभाव तीरथ बिख्याता॥
सो केहिकारण भयउ दयाला। बिस्तृतकथाकहिय यहिकाला॥

दो० ज्ञान ध्यान तप तेजमय मुनि जमदग्नि सुजान।
त्रिसुत तासुके जेठ तन परशुराम जग जान॥

सो० युत बिराग तजु धाम परशुराम गुण ज्ञानमय।
तपसा हित परिणाम चित्रकूट निवसत भये॥

मृदु पद जलज अछल सोध्यावैं। द्वितिय बासना चितनहिंलावैं॥
मुनिवर नारि सहित तजिधामा। तपलागिबनहिं गये परिणामा॥
नाम रेणुका ऋषि बर नारी। पतिब्रता पति प्राणपियारी॥
सहसबाहु त्रिय भगिनी तासू। बैभव बिपुल बिदितजगजासू॥
चलिरेणुका सदन तेहि आई। दयो निमंत्र प्रमोद बढ़ाई॥
अमुक दिवस अनुजा रुचिमानी। ममनिकेत भोज्यो अगलानी॥
बिहँसिकहिसिभगिनीसुनिलीजै। कटक समेत निमंत्रण कीजै॥
नातरु चुपकि बैठि गृह रहहू। भूपन नेवतिय तपसिनिअहहू॥

दो० अति गलानियुत रेणुका गई भवन मन मारि।
लखि उदास मुनिवर बद्यो सारत कहि लगिनारि॥

कंत बात सुनि रोय बखाना। भगिनी कीन्ह मोर अपमाना॥
सकल प्रसंग पतिहि समुझावा। प्रियदुखनिरखिऋषयदुखपावा॥
बेगिनिमंत्र सहित कटकाई। स्वामिरजाय नेवति पुनिआई॥
हयहय प्रति प्रिय कहा प्रसंगा। बिहँस्यो बहुसुनि नृपमदरंगा॥
कत मतिहीन बिप्र अपमानिय। कहियकहाजाकरगतिजानिय॥
मुनि रिपुपाक सभा चलि गयऊ। बंदि चरण शुचिआसनदयऊ॥
कामधेनु दीजिय सुरराई। निवति जिमावौं हयहयजाई॥
बेगिहि देव देब पहुंचाई। सुनि बासव गोदीन्ह मँगाई॥

दो० लायधेनु राखी सदन बहुरिगये नृपपास।
चलि ससैन भोजन करिय यहमम चित्तहुलास॥
अगणित चमू संग नृपलाई। मुनिगृहगा उर शोच बढ़ाई॥
इच्छा भोजन सबहि जिमावा। लज्जितनृपउर अचरजआवा॥
कृत बिचार निजमन भूपाला। सामग्री अगणित छहुंकाला॥
द्विजवर कहाँपाव विधि आजू। भक्षि समोदित भयउ समाजू॥
कोउविभेद संक्षिप्त अपारा। भयउ न प्रगट शोच हियहारा॥
मांगि बिदा घर आतुर आई। पठवा महिसुर भेद बुझाई॥
कहिबल तापस निधन भिखारी। सबहि जिमायो अचरज भारी॥
यह कारण विस्तार समेता। बूझिय जाय ऋषीशनिकेता॥
दो० कहिये बहुरि बुझाय मोहिं पुनि हौं करौं उपाय।
देखि बिप्र पुनि आइकह कामधेनुहै राय॥
तेहि प्रभाव तब कटक जिमावा। निश्चित समाचार हौं पावा॥
भूसुर बहुरि बसीठी जाहू। सबबिधि चतुरनिपुणतुमआहू॥
कामदुधा मांगत महिपाला। समुझायो भयभेद बिशाला॥
सहसा विप्र ऋषयतट आवा। सहसार्जुन सन्देश सुनावा॥
मोर न कामधेनु महिदेवा। देतेउँ नतरु मानि नृपसेवा॥
लायउँ मांगि इंद्रते काली। कहचाहतअनुचित भुजमाली॥
दै न सकत हम कोटि उपाई। इलादेव बहु नृपहि बुझाई॥
कहिसि महीपहि मुनिवरबानी। सुनिसक्रोधभाजड़अभिमानी॥
दो० बिपुल सुभट पठये तुरत बरबस लाइय धेन।
खोलि सुरभिते लैचले मुनिवर हृदयकदेन॥
मारग रोकि ऋषय भाठाढ़ा। लखिअनीति उरक्रोधितगाढ़ा॥
सहसबाहु सुनि तेहि थल आई। ऋषिशिर असिकाट्योदुखदाई॥
कामदुधा भगि हरिपुर गयऊ। पतिबधसुनतप्रियहिदुखभयऊ॥
उर मर्दत कर करत बिलापा। कन्त समीप गई उरतापा॥
शिरध्वनि प्राण नाथ कहिटेरै। अकसर बिपिनदिशादश हेरै॥
रुदन शब्द सुनिचके दिगीशा। तप आसन चौंके भृगवीशा॥

अंतरयामी बिदित बिचारी। जनक मरण लखिभये दुखारी॥
कलकुठार कर धनुशारंगा। प्रज्वलितक्रोधजलजप्रतिअंगा॥
दो० मृतक पितातट आयमुनि जननिहिं पूछ प्रसंग।
सकल बखान्यो रेणुका बाढ़्यो रोष अभंग॥
प्रथम शत्रु बध करिहौं माई। जनकक्रिया पुनि करौं सुभाई॥
जो सुत पितुकर बैर न लेवै। पाँवर प्राण जीव जग सेवै॥
जलभष पितु शोणित समताही। जननीबदत नीतिअसआही॥
असभणि भूप सभा चलिगयऊ। सरुट बचन इमिभाषत भयऊ॥
रेखल अबुध बेणुकुलआगी। हन्योजनकममकेहिहितलागी॥
करु परितोष समर महँ मोरा। शमन ग्राम आलय भातोरा॥
असकहि परशु प्रघोर सिधारा। तबहिं सहस भुज धनुशरधारा॥
मंड्यो संगर अति बिकराला। कौतुक लगे देव दिगपाला॥
दो० चारिदंड बीती भिरत कोपित ह्वै भृगुनाथ।
हरी बाहु बहु बाहुकी बहुरि निपात्यो माथ॥
गिरत महिप आई कटकाई। विविध अस्त्र मंडेउ खताई॥
रोष वलित भृगुबर दल काटा। रण थल रुंड मुंड करि पाटा॥
घूमि जनक मृतु कर्म सम्हारा। अम्बहि बरणयो ज्ञान अपारा॥
शंभुयज्ञ पुनि तेहिथल ठाना। संतोषित भे सुर मुनि नाना॥
भयउ प्रसिद्ध क्षेत्र तब सोई। न्हात पर्ब सुकृती नर जोई॥
ब्रत मख दान न्हात फल ताता। लहतसहसगुणजगविख्याता॥
यह प्रसंग सुनि अखिल सिहाने। मृदु बिनीत बच हरिहि बखाने॥
अब न बिलंब करिय गुणराशी। परशिक्षेत्रअघ दीजियनाशी॥
दो० उग्रसेन प्रति बद्यो प्रभु सुनु महीप चितलाइ।
क्षेत्र न्हान सबु पुर चलिहि को रहिहै रखवाइ॥
रक्षक करि अनिरुद्ध कुमारा। चलिय पर्ब हित करिय न बारा॥
बोलि कुमार श्याम समुझावा। लघु बड़ पर्ब हेत मन लावा॥
तात रहौ पुरकी रखवारी। रुचिरायसु मम हृदय बिचारी॥
पालौ प्रजा देश द्विज गाई। आउब बेगिहि क्षेत्र नहाई॥

कोटि पर्ब फल आयसु दाता। जाइय अवशि रहौं गृह ताता॥
सुतहि समर्पि राज्य प्रभुताई। पितु नृप हितु सोदर सँग लाई॥
युवती वृन्द शिविक असवारा। स्वयं सिद्धि कहि चले भुवारा॥
धर्मधुरीण अपर जन जोई। अबलन संयुत गवने सोई॥

दो० पुर बाहर सब मिलि चले प्रभु रनिवास समेत।
बजत तूर्य्य भेरी विविध सबविधि शोभादेत॥
मारग में बीते घने दिवस कुरुप यदुराय।
सानँद मंगल क्षेत्रपर सम्यक पहुँचे जाय॥

पर्ब समय नृप सकल नहाये। युत शुचिता श्रम दोष बहाये॥
इम कम्बोज जान नर जाना। भूषण बसन अस्त्र परिधाना॥
रत्न अन्न धन विविध प्रकारा। यथा शक्ति दीन्हो सविचारा॥
याचक दीन भूप सम भयउ। दारिद दुरित दान लहि गयऊ॥
निवसे तहँ त्रैलोक बिभूषण। दास गटी बन जातक पूषण॥
प्रभु आगमन सुनत क्षितिपाला। कुरुक्षेत्र आये उत्ताल॥
सैन सहित शोभित सबभांती। भेटि हरिहि शीतल कियछाती॥
कुरु पांडव निज चमू समेता। प्रभुहि मिलन आये कुरु खेता॥

दो० गांधारी कुन्ती द्रुपदि भानामती समेत।
आनि मिली रनिवास कहँ दुहुँदिशिशोभादेत॥

कुंती श्री बसुदेव ढिग जाई। मिलि आरतमय गिरा सुनाई॥
सुनिय भ्रात हौं महा अभागी। दुखित रहत जेहि दिनसे मांगी॥
सुधि बिसरायो करि उद्घाहा। दया परिहस्यो यादव नाहा॥
भव सुखकरण श्याम बलरामा। अनुकंपा त्यागी बर कामा॥
भगिनी बचन दीनता साने। सुनि बोले बसुदेव सयाने॥
परबश जगत रच्यो अबिनासी। काल कर्म्म डारी गल फांसी॥
प्रज्ञ अज्ञविधि लिपि नहिं जानत। बश मूढ़ता बृथा दुखमानत॥
हरिइच्छा सबबिधि अविचारा। कंस बश्य दुख लहा अपारा॥

दो० नारायण आधीन जग कत तुम होत अधीर।
भजौ सदा जनपाल पद मेटौ विषयक पीर॥

अनुजहि ज्ञान बुझाइ बहूता । सन्मानी कहि बिबिध प्रभूता ॥
बहुरि सभा आये बसुदेवा । सेवत हरिहि जहां नरदेवा ॥
दुर्योधन सबन्धु आसीना । सोहत धर्म्म सभ्रात अखीना ॥
अपर क्षोणिपति करत प्रशंसा । कहिजय जनमन मानसहंसा ॥
उग्रसेन कर अधिक बड़ाई । करत महीप शोच बिसराई ॥
बड़भागी सुकृती तुम राजा । दरशत सदा चरण ब्रजराजा ॥
संचित पाछिल कृत अघनाशा । सकलसौख्यमहिमाजसभासा ॥
शिव बिरंचि मघवादिक जोई । खोजत चरण कमल रजसोई ॥
दो॰ सोपावत तुम सहजही प्रभुरच्छत चित चाहि ।
यशी प्रतापी सुकृतमय तुम सम दूसर नाहि ॥
मुनि योगीश यती गुणखानी । जासु भेद कोउ सकत न जानी ॥
सो प्रभु नित तव आज्ञाकारी । धन्य तपस क्षितिपाल तुम्हारी ॥
त्रिपुर ईश पूरण पद जोई । बंदत तुमहिं प्रात उठिसोई ॥
ज्ञानराशि मद रहित महीपा । सुनत प्रशंसा कृष्ण समीपा ॥
निज निज रुचि नृप करत बड़ाई । चरबर सुद्धि दई अस आई ॥
नन्दादिक ब्रज लोग समूहा । न्हात क्षेत्र दै दान प्रजूहा ॥
न्हाय नंद उपनंद सुभाये । हरि बसुदेव निकट चलिआये ॥
उठि वसुदेव सुहृद उर लावा । मृतक प्राण सम आनँद पावा ॥
दो॰ मणिगत हरि लहि अंधचष कामि कामना पाय ।
युगलमित्र तिमि मुदितभे बोले यादवराय ॥
तात कुशल कुल बंधु समेता । मिल्यो बहुतदिनगतहितसेता ॥
जेहिबिधि राम श्याम कहँ पाला । यदुपतिपाछिल बद्योहिवाला ॥
बड़ उपकार सखातुम कीन्हा । प्रतिफलात्रिपुरनममबुधिचीन्हा ॥
सुनि बसुदेव बचन नँदराई । बोले चक्षुमेघ रसछाई ॥
गदगद कंठ दीनता बानी । कोहम धन्य सखा बिज्ञानी ॥
पापराशि हरि चरण बिसारे । पूरण पुण्य प्रताप तुम्हारे ॥
हरि हलधर यशुदा पदबन्दे । मातु बिलोकि पर्म्म आनन्दे ॥
नन्दहि करि प्रणाम पुनि राई । मिले सखन कहँ मोद बढ़ाई ॥

दो० गोपीगण आये तहां हरिमुख चंद निहारि।
नैन चकोरन सुख दयो पूरब पुण्य बिचारि॥
यशुदा नन्द गोप सहबामा। प्रभुहिंबिलोक्योसबहिंअकामा॥
सुख अनूप पायो सुनुराई। ममगति उपमा सकत न गाई॥
सबहि प्रशक्त नेह प्रभुजानी। मोह बिनाशक गिरा बखानी॥
भक्ति मोर उर धरैं जो ज्ञानी। भवदधि पारलहैं सो प्रानी॥
मन बच क्रम मम कस्यो सनेहा। जीत्यो तदपि न संशय एहा॥
शिव अज तुमसमनहिंबड़भागी। तनमनधनअर्प्योमोहिंलागी॥
ध्यान बस्यो नहिं मुनि मन माहीं। सो तुम सँग मैं रह त्रिबिधाहीं॥
अलख अरूप निगम मोहिं गावै। सब के उर पुर बास लखावै॥
दो० पंचतत्त्व जिमि देह में तिमिहौं थिर चर माहिं।
ब्रह्मजानि बंध्यो सबन दुबिधा दुख कछु नाहिं॥
नीति बदत प्रभुदास कह प्रतिपालत छहुकाल।
मंगल जानिकि परिहरिय हरिपद सुखदबिशाल॥
इतिश्रीमद्विविधाकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णबलरामकुरुक्षेत्रगमन
बर्णनोनामद्वाऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ८२॥
दो० त्तर अक्षर लघु थूलपुनि सगुण अगुण प्रभु एक।
बिच्चरत निज माया बिवश बिभु ब्रह्मांड अनेक॥
आतप दिवस नशात द्यौ पूषण नाश बिहीन।
बहुरि होत बासर बिबुध आतप हरि आधीन॥
तथा तीनि पुर ब्रह्म महँ नाशि मिलत श्रम हीन।
प्रगटत वाके अंशबश बरणत वेद प्रबीन॥
अलख अगोचर अकथ अज माया रहित मुकुंद।
कृष्णरूप प्रगट्यो जगत जगहित दया समुंद॥
तेहि ध्याये बिनु सर्वथा हानि चारिहु ओर।
मन मूरख सुनि सीखभजु हरि यह कर्तब तोर॥
मुनिगुण अर्णव तिहुक्षणज्ञाता। कह्यो महीपहि प्रफुलित गाता॥

जिमि द्रुपदी पूछ्यो रुचिमानी। कह प्रसंग रुक्मिणी बखानी॥
सो चरित्र सुनु भरत नरेशा। श्रवणित कटै कराल कलेशा॥
एक दिवस कुरु पांडव नारी। प्रभु बामांगिन पास सिधारी॥
मिलि आसीन पूछि कुशलाई। हरियश कल बरण्यो शुचिभाई॥
चरचा बढ़त ब्याह परसंगा। चल्यो रसाधि सुनौ छलभंगा॥
कह द्रुपदी रुक्मिणिहि सुबानी। निजबिवाहगतिकहियबखानी॥
महाभाग्य भा उदित हमारा। तब भेट्यो बसुदेव कुमारा॥
दो० पितुबर यांच्यो श्याम कहँ बंधु रुक्म मति हीन।
तिलक कस्यो शिशुपाल शिर सुनतभई बुधिदीन॥
सजि बरात-भव भूप बोलाई। ब्याहनहित आयो दिनपाई॥
सो सुधिलहि मम जीव सशंका। सुमिस्यो मन हरिपद कजपंका॥
पक्षिराज यक बोलि सुभाई। हरिढिग पत्र दयो पठवाई॥
अखिल बिनयमय सोहर पाती। सजनीजनदुख शशमृगघाती॥
द्विजवर प्रभुहि देइ सँगलावा। आगम कहि मोहिं धीर धरावा॥
ब्याह दिवस पितु आयसु मानी। पूजन गौरि गइउँ सुनि रानी॥
खल दल चहुँदिशि रक्षक भयऊ। यह सुधि पायश्यामतहँगयऊ॥
निपट निशंक सकल दल फारी। मम समीप आये बनवारी॥
दो० गहिकर रथ धरिलै चले सुनि धाई जड़ब्यूह।
समर मंडि जीत्यो सबहि अरि क्षयकरन समूह॥
आइ द्वारका कस्यो बिवाहा। यथा बेद बरण्यो उत्साहा॥
मम पितु दायज दयो अपारा। किमिगावौं प्रसंग बिस्तारा॥
पुनि सतिभामा ब्याह बखाना। जामवंत उद्वाह सुजाना॥
कालिंद्री कर बद उत्साहा। भद्रा ब्याह भण्यो नरनाहा॥
सत्या मिलन बखान बहोरी। सुनु समोद भूपति गुण धोरी॥
बहुरि मित्रबिंदा सुख भाषा। ब्याह लक्ष्मणा बद्यो अमाषा॥
अपरज कृष्ण प्रिया बहुताई। सबकर कथा कही भुवराई॥
सुनि द्रौपदी मुदित मन राजा। पूछे आन बिबिधबिधि साजा॥
दो० सबहि भेटि निज बास नृप गईं कुरु पांडव नारि।

मंगल भजु यदुनाथपद द्विविधा दोष बिसारि ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीगीतबर्णनोनाम
त्र्यष्टाशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

दो० दूत प्रेरणा बश भ्रमत जीव अनेक कुभाव।
बार बार नरकहि लहत सुथल कौन बिधि पाव ॥
जो देखा नहिं बुध बदत सो चाहत मन नीच।
समुझि लेह निज ध्यान में भूल भँवर भव बीच ॥
सथिर अथिर क्यों होत तू ब्रह्म अंश शुचि रूप।
निज आतम में लीनरहु यह विज्ञान अनूप ॥
शिक्षा गुरु श्रुति शीश धरि प्रचरिय दृढ़ता साथ।
मोक्ष मोद द्वौ ओर है सहित मनोहर गाथ ॥
आराधत राधाबरहि होत सुकृत की खानि।
जानि बूझि क्यों जगतमहँ खोजत मन बिषयानि ॥

सूर किरण मुनि बचन उचारा। नृप अज्ञान तिमिर परिहारा ॥
भ्रम दुर्भाव ऋक्ष द्युति नाशा। मोह निशाकर हरयो प्रकाशा ॥
ज्ञान सुमति फूले कज कोका। छायो आतप सुयश सुलोका ॥
मोह निशागत जगे विवेकी। काम क्रोध तस्कर गति छेकी ॥
उभय बंधु नृप यादव जाता। सोहत सभा सुरुचि सुनुताता ॥
देश देश के अपर भुआला। बैठ सभा तन तेज बिशाला ॥
तेहि अवसर हरि दर्शन आसा। मुनि बशिष्ठ आये दुर्बासा ॥
बिश्वामित्र पराशर ज्ञानी। भरद्वाज भृगुबर सुर ध्यानी ॥

दो० मारकण्डेय पुलस्त्य मुनि युत नारद नरराय।
सहस अठासी ऋषय बर आवत भे तेहिठाय ॥

आवत मुनिगण भूपति जानी। उठे सभासद सब बिज्ञानी ॥
अभिबंदन करि किय आसीना। आशिष जैतिलही अघहीना ॥
सबके चरण कृपानिधि धोये। पादोदक लीन्हो भ्रम खोये ॥
सकल सभाशिर पदजल मेला। मुदित नरेश भये तेहिबेला ॥

पुनि श्रुतिवत पूजे मुनिराई। जोरि हाथ इमि गिरा सुनाई॥
अकथ भाग्य मम कस्यो प्रकाशा। जेहिबश दरशलहे अघनाशा॥
संत दरश धौं न्हान त्रिबेनी। अभिमतप्रद हरिधाम निसेनी॥
जेहि निज नैन दोष बिसराई। देखे संत चरण मुनिराई॥
दो० खोय पाप रुज तेहि मनौं पाई त्रिपुर बिभूति।
महिमा पद रज बिदितभव सुधि बुधिज्ञान प्रसूति॥
प्रभु बिनती कृत सबछल हीना। हृदय बिचारत ऋषय प्रवीना॥
आदि अनंत ज्योति तिहुधामा। त्रिसुरत्रिगुणमयअजहरिबामा॥
सो प्रभुता तजि दास बड़ाई। करत कहिय उत्तर कह भाई॥
निज जन महिमा कृत बिस्तारा। बरबस भुलवत नर अवतारा॥
बरु बिषान जामै हय शीशा। श्रवैअनलशशि हिमदिवसीशा॥
तदपि न मृषा होय हरि बानी। माया अगम अपार बखानी॥
उठि देवर्षि प्रमोद बढ़ाई। मृदुल मनोहर गिरा सुनाई॥
सुनौ सभासद मुनि महिपाला। हरिमाया अजान गुण काला॥
दो० बिरचत कमलज बपुष बनि पालत ह्वै द्विजकेत।
रुद्ररूप नाशत जगत पूरण शक्ति समेत॥
मन गोतीत अलख अबिनाशी। चिदानंद बिज्ञान बिलाशी॥
योनि रहित इच्छा बपुधारी। बेदनीति कहिगिरा बिचारी॥
इनकी कृपा हृदय असज्ञाना। प्रगट सुनौनरपति मुनिनाना॥
जनरंजन भंजन खल जूहा। करण प्रचार सुधर्म्म प्रतूहा॥
निरमानत भव बिबिध शरीरा। पूत चरित कृत हरिजर पीरा॥
इमि नारद बहुबिनय बखानी। चाह्यो गवन करन मुनिज्ञानी॥
तब बसुदेव जोरिकर भाषा। मुनिवरममउरअसअभिलाषा॥
नरतन लहि किमि कर्म पसारा। जीवत छूटै ऋषि गुण बारा॥
दो० असउपाय कोउ बदिय मुनि कर्म पाश छुटिजाय।
नारद बोले बचनबर समय सोहावन पाय॥
सुनौ सभासद मम बर बानी। हरिमाया दुस्तर श्रुति गानी॥
बिजयी त्रिपुर न जीत्यो कोई। प्रभु इच्छा अपार गो गोई॥

सुनि बसुदेव बचन मुनिजूहा। कस्यो न अचरजश्रुतिममब्रूहा ॥
निकट निवास प्रभाव न जानत। कल्पित बहु बिचार उरआनत ॥
जिमिसुपर्व सरितीर निवासी। न्हात कूपजल ज्ञान प्रनासी ॥
जलज सुगंधि शिलीमुखजोहत। बहुयोजन चलि ताकहँटोहत ॥
जलचर बिबिध संगानित रहहीं। शुचिसुगंधिते कतहुंन लहहीं ॥
मणि गुणहरि मोती दरिनागा। जानि न सकत करतअनुरागा ॥

दो० सीप न जानत गुलिक गति एण सुगंधि प्रधान।
तिमि यादवगण भ्रमितमति हरिमहिमा नहिंजान ॥

जिनकर नाम कोटि भवहारी। बिदितत्रिलोकश्यामअसुरारी ॥
तिनके चरण त्यागि जगमाहीं। मुक्ति पदारथ दूसरनाहीं ॥
पुनि नारद बसुदेव बुझाये। सुनौ वेदबद बदौं उपाये ॥
जपतप ब्रतमख शुभगति दाता। करत बिपुलजन जगबिख्याता॥
करौ यज्ञ यहिथल चित लाई। सामग्री समस्त मँगवाई ॥
कह बसुदेव यज्ञ करवाइय। दुबिधा दोष सकल बहिराइय ॥
मखशाला रचि देवी रेखी। आन कर्म सब किये बिशेखी ॥
सतिय आय बसुदेव बिराजे। बन्दि मुनिन मख कारजसाजे ॥

दो० भूपति सेवक ऋषय गण लगे सुमख के काज।
वेद बाक्य पढ़ि मुनिवरन आरंभ्यो नरराज ॥

बिबिध मंत्रपढ़ि आहुति देहीं। देव सदेह भाग समलेहीं ॥
मख प्रारंभ जानि सुरनाका। छाये किन्नर आदि बराका ॥
बहुनिसान हनि जै ध्वनि करहीं। शुक्लकर्म्म लखि उरमुदभरहीं ॥
अरु बर्षावत पुहुप सुमाला। दुहुँदिशिप्रमुदितसबतेहिकाला॥
इत मंगलाचार कृत नारी। मागध सूत भिक्षु जयकारी ॥
परिपूर्‍यो मख बिघ्न बिहाई। पूरण आहुति दयउ सोहाई ॥
सालंकृत कीन्हे द्विज बृंदा। यदुपति उरअतिबढ्यो अनंदा ॥
आशिष सुमनपढ्यो मुनिरायो। नृप पुनि नरनायक पहिरायो ॥

दो० याचकगण कहँ धनदयो जनु मयूर घनतोष।
बहुरि जिमायो सबहि नृप भोजन छरसअदोष ॥

नरपति अखिल बिदा लै गयऊ। जीवन सुफल सबनिकरभयऊ॥
नारदादि मुनि सकल सिधाये। नंद सहेत बहुरि चलिआये॥
आरत दशा कहत बन नाहीं। करुणाद्धिदिशिअमितमनमाहीं॥
गोपी गण अतिसारत ठाढ़े। उत यदुजात शोच उरबाढ़े॥
जो जेहिभाव बदत सो सोई। चहत बियोग न दुहुँदिशिकोई॥
नंदहि हरि बलराम बुझावा। मोह प्रबलता सकल मिटावा॥
बस्त्राभूषण शुभ पहिराई। अगणित द्रव्य दयो भुवराई॥
पठवा नंदहि सबन समेता। कछु दिन आपुरहे कुरुखेता॥

दो॰ न्हायचले प्रभु द्वारकहि सब कहँ संग लगाय।
मंगल मंगलमय गली काटि पहूंचे जाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायां बसुदेवयज्ञबर्णनोनाम
चतुरष्टाशीतितमोऽध्यायः ८४॥

दो॰ यह मनचोर लबार ठग अधम अलीन अलाज।
करिय न याकर कहा बुध लखि परिणाम अकाज॥
शुभवासी शुचि जीव है दुर्बासी मनजानु।
जीवाज्ञा कीजिय सुचित मन आयसु परिमानु॥
काहूविधि वश होत नहिं मन गति अधिक समीर।
योग और वैराग्य सों याहि धरत मति धीर॥
सब इंद्रिन को भूपमन साधत सब सिधि जाय।
नतरु बासना उरबसी लै जाइहै वहि ठाय॥
मनहिं रोकि निज बशकरै ध्यावै राधानाथ।
मुक्ति लहै संशय नहीं बदत वेद यह गाथ॥

मुनिवर कहा सुनिय नरराई। युगल बंधु यक दिन सुखपाई॥
पितु गृह जातभये रुचि मानी। उठे देखि बसुदेव सुज्ञानी॥
नारद बद्यो ब्रह्म कुरुखेता। सुमिरि सोबात उठे नृपकेता॥
द्वौ करजोरि कहा शिरनाई। अलख अगोचर तुम यदुराई॥
अबिनाशी कमलापति स्वामी। देवदेव तव चरण नमामी॥

अगुण सगुण प्रभु ज्योति सरूपा। शशि दिनकरतुवलव अनरूपा॥
पंचतत्त्व निज अंश उपाये। विविध लोक माया निरमाये॥
अनुपम अकथ ईश तव माया। बिधि हर काहू पार न पाया॥
दो० सुर नर मुनि तिर यग त्रिपुर माया केहि न भुलाव।
कारण सूक्षम थूल बपु तुम यक यादवराव॥
तव महिमा कर मर्म गोसाईं। वेद नेति कह कहत सकाईं॥
अरि हितु रहित सदा सम भाऊ। पितु सुत सोदर मातु न काऊ॥
केवल प्रीति प्रतीतिक नाता। मानत सर्व काल जन त्राता॥
अचला भार हरण तन धारा। यश सुखप्रद जन जग बिस्तारा॥
अगणित पतित किये निस्तारा। वेद प्रभुत्व प्रसिद्ध पुकारा॥
मोपर कृपा कृपा अनुकूला। करि निस्तार करौ जन तूला॥
जरा मरण बंधन मिटि जाई। गाऊं तव यश मोद बढ़ाई॥
कत पितु सेवक करत बड़ाई। अनुचित उचित दुधा चतुराई॥
दो० भगवति गति तिहुँ काल में सब विधि अहै अपार।
अबतक भयउ न जगत कोउ जोकरि सक निरधार॥
घट घट ज्योति ब्रह्म परकासा। लखि न परत तेहि निर्गुण भासा॥
कारक हारक पालक सोई। है प्रभु अबद अगोचर जोई॥
प्रतितन लिप्तालिप्त बिचारा। पद्मिनि दल जल कत निर्धारा॥
मुख अभास दर्पण महँ देखी। मिलितरहितकसकहौंविशेखी॥
भू अकाश जल अग्नि समीरा। पंचतत्त्व मय अखिल शरीरा॥
तिन के मध्य अंश भगवाना। जीव नाम कहि प्रगट बखाना॥
बंधन मुक्ति होतधौं काकी। कुमति सुमति मय मेधाजाकी॥
नहिं प्रतिबिंब सुकृत अघकारी। आपु आपु जगरहा पसारी॥
दो० प्रभुमुख बचन महीप सुनि मौनगही बसुदेव।
बंदिपितहि पुनि जात भे मातासन नरदेव॥
देखि मुखारबिंद महतारी। मुदित भई भूपति विधिचारी॥
हृदय लगाय सुथल बैठारा। पुनि अंबा इमिबचन उचारा॥
क्लेश बिवर्जित सौख्य निकाया। हमरे सदन सुनिय यदुराया॥

एक बिथुर उरदारुण मोरे । कहिय बेगि परिहरिय न भोरे ॥
बन्धु व्यकारबधे तुवकंसा । उपजे प्रथम हमारे अंसा ॥
बिसरतते न मोहिं दिन काहू । दिवस निशा उर अंतर दाहू ॥
धरोधीर जननी सुनिबानी । सबसुत बेगि मिलावौं आनी ॥
असबदिगे पाताल मुरारी । प्रभुआगमसुनिबलिगुणधारी ॥

दो० आय मिल्यो दंडवत करि बिनती बिबिध प्रकार ।
निज मंदिर आसीन करि पूजादशा ब्यकार ॥

चरणामृत लिय पाद प्रक्षाली । सबबिधि संतोष्यो बनमाली ॥
मांग्यो सहबिज्ञप्ति रजाई । आगम हेत कहिय यदुराई ॥
प्रथम सुनौ इतिहास पुराना । कृतयुग महँ बिज्ञान निधाना ॥
नाम मरीची मुनिबर बादी । सतबक्ता हरिजन अबिषादी ॥
ब्रह्माचार निरत मन बानी । उरना तासुप्रिया गुणखानी ॥
षटसुत तासु रूप सफरीशा । तरुणबुद्धिमय जनजगदीशा ॥
गये प्रजापति तट दिन एका । हँसेतिनहिं करिबड़ अविवेका ॥
नख शिख कोप व्याप तनतासू । दीन्हो शाप भूप तेहि आसू ॥

दो० असुर होहु तुम जाइ खल कपट रूप अज्ञान ।
हँस्यो हमहिं अनस्वारथहि अब न तात कल्यान ॥

सुनत शाप कम्पित भे सोई । बुधिबल बिपुल चातुरी खोई ॥
सभय बिनय युत गिरा बखानी । क्षमौ हमार दोष शुचिज्ञानी ॥
यौवनरूप अज्ञ धनपाई । खोवत विविध भांति चतुराई ॥
ह्वै अधीर पदतल सब परेऊ । हृदय प्रजापति दाया भरेऊ ॥
मृषा न होइहि शाप हमारा । बहुप्रकार करि दीख बिचारा ॥
मोक्ष उपाय बदिय जन जानी । बहुरि प्रजापति गिराबखानी ॥
दूसर जन्म कर्म्म बशपाई । दरशि कृष्ण पदमोचहु भाई ॥
तन परिहरि शापित मुनिजाता । हिरण्यकशिपु पुत्रज भे ताता ॥

दो० जन्मे पुनि बसुदेव गृह निधने कंस मँगाइ ।
मरतगहे माया सकल यहि थल राखे आइ ॥

मम जननिहि तिनकर दुखभारी । बिथुरत दिवसरैनि ब्रतधारी ॥

यहिहितहौं आयउँ तुव द्वारा। बेगि दीजिये बन्धु व्यकारा ॥
बिहँसि बिरोचनसुत सुतलावा। सौंपे हरिहि मेटि दुर्भावा ॥
अगणित धन दीन्हो उपहारा। बंधुन सहित चले तेहि बारा ॥
मातहिं दियेपुत्र सब आई। निरखितिनहिं सुखभाद्वौभाई ॥
समाचार पुरबासिन पाये। कौतुक लागित्रिधाजनधाये ॥
देवकिदुख तिनकर बड़शापा। नश्योसमयतेहिश्यामप्रतापा॥
पुर आनंद छयो दिशिचारी। बदतनिकर जयजयअसुरारी ॥

दो० अस प्रभुजन दुखहरण जो मूरुख तेहि बिसराय।
बिषय बासना में रमत मंगल भजुचित लाय ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांदेवकीमृतकपुत्रयाचनो
नामपंचाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

दो० जौन बस्तु प्रिय होत अति तेहि राखत युतनेह।
प्राणनाथ यदुनाथ पद नहिं सेवत नर देह॥
कोल श्वान खग काक लौं पोच शुद्ध ममजानि।
नरतनबिनु यदुपति भजन अशुचि बदौं प्रणठानि ॥
केवल स्वारथ ध्यान लगि मनुज रचे करतार।
मोह क्रोधमय मूढ़ नर किमि होवै निरधार ॥
पछितावैं गे शमन पुर मानी कामी कूर।
जे न भजत यादवपतिहिं गहे मोह तरु मूर॥
सीख मनोहर अघहरण सुखप्रद गुरुजन देत।
शुद्धस्मृति करि दुष्ट मन सकत ताहि सुनि लेत ॥

जिमि अर्जुन द्वारावति आये। हस्यो सुभद्रहि मोह बढ़ाये ॥
अरु जिमि मिथिला रहैं मुरारी। कथासो रुचिर कहौं बिस्तारी ॥
चितदै सुनौ नृपति सुख रूपा। सब प्रकार तुव बुद्धि अनूपा ॥
प्रभु अनुजा देवकि की जाई। नाम सुभद्रा बिदित नृराई ॥
रूपवती रति कोटि लजावनि। अंग अंग प्रति नारि सुहावनि ॥
भई बिवाह योग जब बाला। बसुदेवहि भा शोच बिशाला ॥

यदुबंशी सुत युगल बोलाई। अभिमत बचन बद्यो मृतुताई॥
सुताभई अब योग बिवाहा। केहि दीजिय असको नरनाहा॥
दो० कह हलधर पितु नीति यह ब्याह बैर युत नेह।
कीजिय सदा समान सँग परम धर्म्म है एह॥
दुर्योधनहिं दीजिये बाला। बिदित राज अधिराज भुवाला॥
कीरति बिमल सहित गुरुताई। यह बिवाह सब बिधि समताई॥
हरिकह दुहिता पंथहि दीजिय। लोकसुलोकसकलबिधिलीजिय॥
मौन भये सब हलधर बानी। भाई सबहि जो श्याम बखानी॥
लघु बड़ कहा पंथ जयकारी। ब्याहकरौ सुनि बिनय हमारी॥
सम्मत सुनि माषे बलरामा। उठिगे तुरत त्यागि सो धामा॥
रोषित रामहिं लोग निहारी। मष्टभये नहिं गिरा उचारी॥
समाचार सुनि पांडव जाया। संन्यासीवत रूप बनाया॥
दो० दंड कमंडलु मृग त्वचा पुस्तक कांख दबाय।
सुथल बैठ द्वारावती शुभ मृगछाल बिछाय॥
चारिमास पावसऋतु काटी। योग यतन प्रगटी परिपाटी॥
हरि बिनु भेद न जान्यो कोऊ। पहिचान्यो कहि सका न सोऊ॥
सेवहिं सकलअतिथि अनुमानी। परमभक्त जानैं बड़ ज्ञानी॥
केहिन भुलावत ठग निज काजी। बहु प्रपंच कौतुक गति साजी॥
प्रभुजान्यो पै कहा न काऊ। चीन्हिसकत भुलयो प्रभुताऊ॥
एक दिवस मूसलधर राजा। भवन गये लै भोजन काजा॥
भोजन करत पंथ मन लाई। इतउत चितवत दृष्टि दुराई॥
सहसा चितये दूसरि ओरा। लख्यो सुभद्रहि धौं चितचोरा॥
दो० बिधुबदनी छबि निरखतै इषुधीपति मन मोह।
उपज्यो काम महान नृप उरभा संगम कोह॥
रहित निमेष स्वरूप निहारा। निजमन कीन्हे बिबिध बिचारा॥
अहह दैव किमि यह त्रियपाऊं। बिनु प्रसाद नृपतातजि जाऊं॥
उतहि सुभद्रा मोहित होई। कस्यो बिचार नेह उर गोई॥
भूपति क्रांति न है संन्यासी। उत्तम ठाम सुधाम बिलासी॥

कर्म प्रबल जेहि बश तन त्यागा। बरबस तपसभाव मन लागा॥
उठि यकांत गृह बैठी बाला। मिलहि पंथयहशोच बिशाला॥
गुड़ाकेश भोजन करि राई। निज आसन आयो दुचिताई॥
बहु चिंता कृत बुधिबल खोई। धीरज तासु हृदय नहिं होई॥
दो॰ घने दिवस बीते नृपति पर्‍यो पर्व शिवराति।
हर अर्चन बाहर नगर गेजन नानाजाति॥
तहां सुभद्रा संग सहेली। रथ चढ़ि गवनी भूप सकेली॥
समाचार सुनि अर्जुन धायो। कर गांडीव बाण चलि आयो॥
मंदिर बाहर बीर प्रबीरा। ठाढ़ रह्यो त्रिय हेत सधीरा॥
पूजि हरिहि हरि भगिनी आई। देखि समोह भयउ कुरुराई॥
तजि संकोच शोच गहि बांहा। रथहि चढ़ावत भा नरनाहा॥
गजपुर मग लीन्हो धनुधारी। खबरिभई यह नगर मझारी॥
सुनि सक्रोध भे राम अपारा। निज आयुध लै कांधे धारा॥
अरुण चच्छु भृकुटी करि बांकी। रसद शब्द गरजे रिपु ताकी॥
दो॰ बलकत भे रुट बलित ह्वै कहा असंभव काज।
ममभगिनी प्रीतम हरी भिच्छुक कुलको लाज॥
बधौं अखिल संन्यासी जाई। जुरे जगत रण देउँ नशाई॥
क्षोणिप योग सुता बिधुरूपा। हरेसि भिखारी अधन अभूपा॥
बलकत रामहिं भूप निहारी। प्रद्युम्न अनिरुध साम्ब सुखारी॥
अपर प्रतिष्ठित यादव आये। जोरि हाथ मृदुबचन सुनाये॥
आयसु हमहिं देहु हलपानी। गहिअरि बेगिदिखावहिंआनी॥
समर चाउ हमरे उरभारी। सुनत चले हल मूसल धारी॥
तेहि अवसर आये घनश्यामा। नानाबिधि समुझायो रामा॥
भिच्छुक नहिं अर्जुन हरिभागा। परिहरिक्रोध करिय अनुरागा॥
दो॰ शूरसेन दुहिता तनय कुरुकुल बिदित सुजान।
इषुधीपति अरु मीतमम कर्‍यो कर्म अज्ञान॥
सोहत समर न काहु प्रकारा। परम धर्म नहिं तात हमारा॥
यदपि सुहृद अनुचित कृत करई। प्रीतम तासु दोष परिहरई॥

धर्म वेद भव ज्ञान बिरुद्धा। गुड़ाकेश सँग ठानत युद्धा॥
प्रीति प्रतीति नशाइ हमारी। तात हृदय निज देखु बिचारी॥
प्रभुमुख बचन सुनत दुखपात्रा। मन उदास अधशीश नवावा॥
बहुरि सरोष बयन बद राई। यह समस्त तुम्हरी भ्रमताई॥
जारि भवन खोजै जल जाई। बड़ मूढ़ता नहै चतुराई॥
जो आपनि पति खोवै कोई। बधै अवशि तेहि पंडित सोई॥

दो॰ तव सम्मत भगिनी हरी अर्जुन तपसी भेश।
नत समरथ का तासुकी चापि न सकत सुरेश॥

कोपि धरामंडलिहि निपातौं। तुव अरि अमर राजहू घातौं॥
करि न सकत कछुतव प्रतिकूला। तीनिभुवन शाखा तरु मूला॥
असबदि मौन गही सगलानी। बैठिरहे प्रभु आयसु जानी॥
उत बासव सुत निज पुर जाई। श्रुतिवत ब्याहकरयो दिनपाई॥
समाचार सुनि दिवस बिवाहा। पटभूषण हयगण गजगाहा॥
दायज मिसहरि नगर पठाये। भये समोद पांडुसुत पाये॥
दुहुंदिशि प्रीति भाव नृप भयऊ। पाछिल दोष शोक सबुगयऊ॥
अपर प्रसंग सुनौ नृप ज्ञानी। कहौंतुमहिं भलिभांतिबखानी॥

दो॰ परम भक्त सुत देव युत भव प्रसिद्ध बहुलास।
यक भूपति यक बिप्रबर मिथिला तिनको बास॥

परम सनेह बिचारि कृपाला। रथचढ़िमिथिलहिंचलेसुकाला॥
तिरहुति गवन सुनत मुनिराई। नारदादि आये मुद पाई॥
मिलि सप्रेम प्रभुसाथ सिधाये। नाना नगर देश चलि आये॥
जेहि प्रदेश आवत असुरारी। मिलत महीपति तहां अगारी॥
पूजि भेटदै पाप दुराई। जात सदन जीवन फलपाई॥
यहि प्रकार बहु दिवस बिताई। मिथिला निकट पहूंचे जाई॥
हरि आगम सुनि उभयतेधाये। कृतअभिलाषजीवशुचिभाये॥
महा अधम हम जग बिख्याता। देइ दरशधौं बिधिजनत्राता॥

दो॰ कृपारूप मंगल करण जन दुख हरण त्रिकाल।
आये निजजन जानि प्रभु धन्यबरण बिधिभाल॥

रूप त्रिभंगी देखि सिहाने। पदतल परे दंड अनुमाने॥
कर परस्यो शिर शारँग पानी। कहा भक्त तुम द्वौ बड़ज्ञानी॥
चरणरेणु किय तिलक लिलारा। जीवनमुक्त भये तेहिवारा॥
सुनौ नाथ हम पतित पुरानी। कुमतीकूर कुटिल अभिमानी॥
पावन कस्यो दरशदै स्वामी। जरा मरण छूटा द्विजगामी॥
उभय चहहि हमरे घर रहई। पै न प्रसिद्ध मनोरथ कहई॥
मुनि मंडलिहि बंदिद्वौ फूले। गृह धन राज विषय रसभूले॥
अंतरयामी बिबितन धारी। युगल सदन निवसे बनवारी॥

दो० बहुत दिवस रहि ज्ञानदै बिदाभये यदुराय।
मुनि गण पठये पंथते बहुप्रकार समुझाय॥
गये द्वारकहि कृष्णजी दासन देइ बड़ाय।
मंगल अस जनपालकहँ मूढ़देत बिसराय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगल
दासविरचितायांसुभद्राहरणश्रीकृष्णमिथिलागमनवर्णनोनाम
षष्ठाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८६॥

दो० मोद बढ़त जिमिजीव कहँ ज्ञानी गुणी मिलाप।
बुद्धि प्रतोषित होत तिमि कृष्ण नामके जाप॥
अंधनैन लहि चतुर जस मूक सुबाणी पाय।
नृपता लहि नर रंक पुनि साधक साधन भाय॥
ज्ञानी पूरण पदलहे ध्यानी पाय सुदेव।
कामी पावत कामना नामी पदवी सेव॥
सूरजकर लागि कोक जिमि सदा प्रमोदित होत।
जन्म पाय लहि भक्ति तस मेधाकरत उदोत॥
महा मूढ़ते जगत महँ जे न भक्ति रसलीन।
अंत शमनपुर दुष्टमति दंड पाइहैं पीन॥

जोरि युगलकर भूप बखाना। सुनिय मुनीश्वरज्ञाननिधाना॥
प्रथम बद्यो मुनिवर बरबानी। बेद बिनय हरिकेरि बखानी॥
सो प्रसंग जन जानि बखानिय। ममसन्देहबिबिधबिधिमानिय॥

सुनौ सथिरमन तजि दुचिताई। कहौं कथासो आनँद पाई॥
प्राण बुद्धि मन इंद्रिय धर्मा। अर्थ काम मोक्षादिक कर्मा॥
सबकर रचनहार है जोई। निर्गुण ब्रह्म कहावत सोई॥
जब ब्रह्मांड रचत रुचि मानी। सगुण होत तब सोदर ज्ञानी॥
अगुण सगुण यहि कारणएका। कबि पंडित श्रुति करतविवेका॥
दो० जौन प्रश्न तुम भूप किय नर नारायण पास।
सो नारद मुनि समय यक पूछ्यो सदृढ़ अत्रास॥
कहौं सो कथा भेद भ्रम त्यागी। जानि सत्य तुम कहँअनुरागी॥
सत्य लोक मुनि वृंद समेता। तप कृत नर नारायण चेता॥
तहँ देवर्षिबार यक गयऊ। मिलि सभीतपूछत असभयऊ॥
अकल अनीह ब्रह्म अबिनासी। चिदानंद घट घट प्रतिबासी॥
बेद बखान बिनय किमि तासू। समुझाइय भ्रमलहै बिनासू॥
सुनु बराक मुनि संशय हीना। यथा प्रश्न तुम कस्यो प्रबीना॥
सप्त ऋषय जन लोक निवाशा। यह सन्देह सुनिन परकाशा॥
सबहि सनंदन कहि समुझावा। मोह प्रबलता सकल मिटावा॥
दो० कह नारद प्रभु बसतहौं सदा काल जन लोक।
चरचा होत जोतौन थल सुनत्यों अवशिअशोक॥
जब प्रसंग यहभा तेहि धामा। तबन रहौ मुनिवर गुणग्रामा॥
श्वेत द्वीप दरश हरि हेता। गये रहौ ऋषि सुनौ सचेता॥
अबबरकथा श्रवण मुनि कीजै। मोह मिटाय स्वमारग लीजै॥
सुनि संदेह तपस बर केरा। कहा सनंदन अस तेहि बेरा॥
महा प्रलय जब होत मुनीशा। सब जग जलप्रवाहहौं दीशा॥
चारि खानि जग जीव नशाई। केवल सोवत ब्रह्म नृराई॥
सकल शक्तिमय शुद्धसकाया। निवसत आपु ब्रह्म गत माया॥
इच्छा सृष्टि कार जब आवै। तब निज श्वास वेद उपजावै॥
दो० तेबिनवत कर जोरिकै जस सेवक निजनाथ।
सोवत प्रात जगावहीं गाय गाय बर गाथ॥
छं० जय देव बिभु विज्ञानमय अबिनाश अलख प्रकाशकं।

जय सत्य चित आनंद पूरण पुरुष जय स्वनिवाशकं ॥
जय शरण रक्षक ज्योति माया नाथजय समधी धरे।
जय त्रिपुर कारक हरण पालक पर्म बिभु पूरण हरे॥
चैतन्यहै पुनि जगत बिरचिय जीव बंदि बिनाशही।
अति प्रबल माया नाथ तुव दंज्यो सबहि गासि पासही॥
माया रहित शुचि जीव है तवरूप प्रभु पहिंचानहीं।
ताजि मोह द्रोह बिचार उत्तम सुयश बरतव गानहीं॥
अज्ञान बश माया परे तिहुँकाल बिदित कहा कहैं।
माया प्रमोचत तुमहिं चीन्हैं बहुरि निज पदवी लहैं॥
तुव रहितको सामरथ जीतैं अजित माया गुण मई।
जाके हृदय जलजात निवसौ मुक्ति जनुताकहँ दई॥
कल ज्ञान रूप बिलास सज्जन मोक्ष पद दायक वदा।
दोषित सबहि संभव अभावहि प्रगट यह कौतुक सदा॥
उपजैं नशैं तव अंशते पुनि तुमहिं मांझ समात हैं।
महिते यथा चहुं खानितन तेहि माहँ पुनरपि जातहैं॥
सो० पूजे कौनो देव जनु अर्चत प्रभु पद कमल।
बिदित नाथ यहि भेव जिमि पूषण बहुस्वर्णके॥
ज्ञान दृष्टि निरखत चतुराशा। गत द्विभाव प्रभु एक प्रकाशा॥
निविड़ अपार प्रमोहन माया। जीतिन सकत त्रिपुर धरिकाया॥
सतरज तमरचि त्रिगुण बनावौ। तीनि देव बनि काम चलावौ॥
निरमानव पालव लयकारा। यह समस्त माया उपचारा॥
माया मर्म जान नहिं काहू। तुमहिं बिहाय तत्पदी ताहू॥
बिज्ञ न भा माया कर कोई। अहै न नाथ अगारिउ होई॥
जीवहि उचित भजै पद तोरे। देह सनेह सो तृण सम तोरे॥
ध्यावत लहै मुक्ति कल्याना। अपरविविधबिनती कियनाना॥
दो० सुनु नारद कहि यह कथा ऋषय सनंदन धीर।
निकर प्रबोधे नाशिभ्रम पन्नग बचन अहीर॥
अरच्योऋषिहिसबनसुनिबानी। तनमन बचन प्रीति उर आनी॥

कौतुक मुनिसुनि चरित सुहावा। बहु प्रमोद भूपति बर पावा।
मिथ्यो मोह दुबिधा द्विजराई। नर नारायण बिनयो भाई।
क्षोणिप यह प्रसंग जो सुनई। परिहरि अशुचिभाव जो गुनई।
भक्ति मुक्ति बिनु संशय पावै। त्रिबिध कर्म बंधनहि बहावै।
वेदस्तुति मुनिवर जो गाई। नारायण नारदहि सुनाई।
नारद भयो ब्यास मुनि पासा। दासजानि मुनिकह्यो प्रकासा।
सोहौं तुमहिं नरेश बखानी। आरोहण हरिपुर सुख खानी।

दो० जप तप ब्रत मष दान फल यह प्रसंग दातार।
मंगल पूरण ब्रह्म जो सोई कृष्ण अवतार॥
हरिहि भजै तजि दुर्मतिहि इंद्रीमन बश लाय।
अभिमत फल जीवत लहै अंत मोक्ष ह्वै जाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांवेदस्तुतिवर्णनोनाम
सप्ताष्टाशीतितमोऽध्यायः ८७॥

दो० बहुत अंत मिलिमत कियो गज पहिंचानन लागि।
धाय छुयो तन नाग कर विविधठाम अनुरागि॥
सूर्पभीति छति सर्परद सुंडि स्तम्भ नमान।
परसि बतावत बादमय गलित मूढ़ अभिमान॥
तथा पंथ बहु जगतके हरिहि बखानत सांच।
पैनहिं बूझत कोटि बिधि नाचत माया नाच॥
एक गहै दृढ़ता सहित परिहरि पंथ द्वितीय।
मुक्ति लहै दुबिधा तजै तोषित होवैजीय॥
समुझि यहै निज जीवहौं ध्यावत राधानाथ।
को घरघर भरमत फिरै अहित पसारै हाथ॥

प्रभुगति अकथ भूप तिहुंकाला। कहतबनतनहिंचरितबिशाला॥
हरिहर रीति सदा बिपरीती। दारिदि होइ करै जो प्रीती॥
सो दृढ़ता लगि दंड दिखावैं। पुनि निजधाम सुघरबिनशावैं॥
आन देव पूजक नर जोई। धनी गुणी जन मंडन सोई॥

जेहिते भूलहि जीव अपारा। त्यागै ध्यावैन चारि प्रकारा॥
सम्पतिसुख बिषयक अघदाई। हरिहर चरण प्रीति गतिगाई॥
शिव केशव विधि एक समाना। समुझौ प्रकट कर्म जो नाना॥
हरि कमलापति अंतरयामी। बिमलाकंत शंभु सुरध्यानी॥
दो० बेंदी मस्तक भाल शशि बनमाला शिरमाल।
भूषितयादव बाम शुचि बिदित तीनि षटकाल॥
चक्रपाणि जनरंजन श्यामा। हस्त त्रिशूलबिदित गुणग्रामा॥
धरणीधर नारायण जानिय। सुरसरिधरण शंभुअनुमानिय॥
मुरलीनाद लोक सुखदाई। शृंगी शब्द हरण जड़ताई॥
सुखद लोक बैकुण्ठ निवासा। बसत सदा शिवगिरि कैलासा॥
जाख्यो काल जन्म यदुराई। मृत्युंजय दिय अतन जराई॥
हरि ग्वालन संग कीन्ह बिहारा। जटी भूतगण विबिध प्रकारा॥
प्रभु चर्चत निजतन पाटीरा। रुद्र बिमर्दत भूति शरीरा॥
बस्त्र पीत आच्छादित श्यामा। मृगपति त्वच धारे शुभबामा॥
दो० हरिपाठक नृप निगमके आगमपाठक रुद्र।
पालक संहारक बिदित दोनों ज्ञान समुद्र॥
मोरमुकट कचजूटशिर असुर बिनाशकजोइ।
यज्ञसूत्र अहिकंधधर अंतरयामी सोइ॥
पच्छिराज बाहन असुरारी। नन्दीगण कामारि सवारी॥
अपर निधान विविध परिधाना। नृपतुल्यता करिय किमिगाना॥
उभय जीवतारक भगवाना। सेइय जाहि सत्य मनमाना॥
एक काल की रुचिर कहानी। धर्मराज प्रति श्याम बखानी॥
कुंतिज जेहिपर हौं अनुकूला। दारिद ताहिदेत दुखशूला॥
सो कारण यह अहै नरेशा। मीतन निधन देश परदेशा॥
सोदर पुत्र कलत्र सुज्ञाती। मात तात भगिनी युतनाती॥
दारिद लखि सब जात पराई। जीव बिराग गहत तबधाई॥
दो० उपजतही बैरागके मोह अनी नशिजात।
मोह बिना शत शुद्धमति मोहिं अनुरागततात॥

भजन प्रताप गहत निरबाना । विषय गलित भूपति धनवाना ॥
सुनौ परीक्षित तुम बड़ ज्ञानी । आन देव पूजत जेप्रानी ॥
ते अभिमत फलपावत अहईं । मुक्ति न कोटि जन्म लगि लहईं ॥
एक चरित्र अपर सुनु भूपा । कहौं तोहिं इतिहास अनूपा ॥
शंकर प्रकट तीनिपुर भोला । तिनकर चरित सुनौ अनमोला ॥
कश्यप तनय बृकासुर नामा । तपहित चल्यो त्यागि बरग्रामा ॥
मारग मिले देवऋषि ताही । कर्‍यो दंडवत भाग्य सराही ॥
जोरि युगल कर बिनय सुनाई । दीन गिरा पूछ्यो नरराई ॥

दो० अज हरि हर तिहुं देव में शीघ्रदानि बर कौन ।
जानिदास करुणायतन मोहिं कहिय किनतौन ॥

ध्यावैं ताहि कर्म मन बानी । इच्छित बर पावौं मुनि ज्ञानी ॥
आरत जानि मुनीश सुजाना । कहा रुद्रसम दानि न आना ॥
आशुतोष भव बिदित प्रमाना । रीझत थोरेहि तप जगजाना ॥
सहस्रबाहु हर तप किय जाई । दीन सहस्र भुजा बलदाई ॥
सहजहि क्रोधि नाथ तेहि कीन्हा । प्रगट प्रसंग कथान प्रबीन्हा ॥
इमि बुझाय सुरपुर मुनि गयऊ । खल आसीन तपसथल भयऊ ॥
शिव प्रसन्न हित यज्ञ पसारा । निजशिरपल कर हवनप्रचारा ॥
सुरदिन बीते नृप कृत एही । अष्टम दिवस भयउ सन्देही ॥

दो० शिर अरपौं ईशान हित असमन कर्‍यो बिचार ।
है प्रसन्न प्रगटित गहा करतेहि हर तेहिबार ॥

कतशिर हरत असुर पतिध्यानी । तोषित हौं बर मांगु सुबानी ॥
गंगाधरहि बिलोकि सुरारी । पर्‍यो चरण तल दशा बिसारी ॥
पुनि सचेति कर जोरिबखाना । सुनियकृपानिधि हर भगवाना ॥
जोजन जानि प्रसीदति स्वामी । यह बर दीजिय अंतरयामी ॥
धरौं जासु शिरकर गिरिराई । भस्म नाथ ततच्चण ह्वै जाई ॥
बिनु बिचार व्रषभध्वज भाषा । मम प्रताप पूरै अभिलाषा ॥
शाप अबूझ देव बर दाना । दायक प्रापक नहिं कल्याना ॥
कामी कुटिल असुर महिपाला । हरशिर करधर चहृ तेहिकाला ॥

दो० तासु मनोरथ बूझिमृड बिस्मित चले पराय।
पृष्ठि लग्न धावतभयो बिबुधशत्रु कुराय॥
जेहिथल शंकर जात पलाई। जात तहां पाछे जड़राई॥
तीनि धाम बिकलित भव धाये। पुर बैकुण्ठ भयातुर आये॥
क्लेशित बिमलाधरहि निहारी। बिप्ररूप धार्यो असुरारी॥
खल सन्मुख आये तेहि बारा। बिहसि मनोहर बचन उचारा॥
बीर व्रती तुम खलपति अहहू। दंडत तपिहि अर्थ निजकहहू॥
सकल भेद कहि असुर बुझावा। बचैं शंभु सो करिय बनावा॥
अस बिचारि कल गिरा सुनाई। कत मूर्खता करौ मति पाई॥
बड़ आश्चर्य्य मोहिं भा आजू। ज्ञानी तुम भूल्यो गुण साजू॥
दो० वेष दिगंबर बावला बिष भक्षी तप करि।
तासु बचन दृढ़ होइ किमि निज मनलेहु बिचारि॥
जोपै समर्थ होत यह भाई। कत भिक्षाटन करत सुभाई॥
तन बिभूति मर्दित अहि हारा। वेष भयानक अशुचि व्यकारा॥
भूत प्रेत संग बसत मशाना। करत कौन हर बचन प्रमाना॥
नहिं पतियाहु त करौ परीक्षा। मानि असुरपति मम बर शिक्षा॥
निज शिर धरौ हस्त भ्रम जाई। सत्यहोइ तौ परै लखाई॥
हरि माया अजहरिहि भ्रमावै। अपरजीव तेहि कस तरिजावै॥
माया बिवश सुनत प्रभुबानी। धर्यो आपु शिरकर अज्ञानी॥
तुरत भस्म तेहिथल भा सोई। जयसुर बदत चरित यह जोई॥
दो० मोक्ष पदारथ तेहि दयो निज थल गे ईशान।
धन्य कृष्ण मुनिजन बदत कृपाराशि भगवान॥
सो० जो यह सुनै प्रसंग मनसा बाचा कर्मणा।
तासु होइ अघ भंग मंगल कृष्ण प्रतापसों॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांबृकासुरमोक्षवर्णनो
नामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८॥
दो० अभय रहैं हरि भजैं नित सभय पापकी ओर।

तेज्ञानी संसार महं नतर अबुध मतिभोर॥
बिषय भोगकी बासना भक्ति बासना दूरि।
अमृत पीवत मूढ़ मति त्यागि सजीवन मूरि॥
अमर पदारथ कर लगै अमरनाथ पद जोपि।
बिनु ध्याये राधारमण बृथा जानिये सोपि॥
सर्बकाल दृढ़ता सहित काम मोह बिसराय।
जोगावै श्रीकृष्ण यश तेहिसम नहिं सुरराय॥
निष्प्रेही जे जगत महं आतमबिद गुणरूप।
तेपिभजत मम स्वामि पद उत्तमतत्व अनूप॥
भूप मुकुटमणि अवसर एका। बाणीसरितट ऋषिसबिबेका॥
बैठ करहिं चर्चाबहु भाई। कोउ मुनिकहासबहिंशिरनाई॥
कमलजात हरि गंगाधारी। त्रिसुर प्रसिद्ध जान नरनारी॥
को बड़ लघुजानिय केहिभांती। निजमतिसमबरणियमुनिज्ञाती॥
अज बड़ बदत चतुर मुनिकोई। शारँगपाणि भणत भ्रमखोई॥
सादर शंकर कहँ कोउ गावै। एकौ बात न सत्य दृढ़ावै॥
भणयो काहु असनृप तेहिबारा। मंत्र एक हम नीक बिचारा॥
जाइ परीक्षा कोउ मुनि करई। लघु बड़ कहै जानिजोपरई॥
दो० सत्य कहैं ताजि पक्ष मति तौ मानौ सतिभाय।
सम्मत करिपठञा भृगुहिजेहिते मोह नशाय॥
मुनिवर प्रथम ब्रह्मपुर गयऊ। मौनित सभा बिराजित भयऊ॥
अनुचित कीन्हा त्यागि प्रणामा। परिक्रमा बिनती अभिरामा॥
सुतहि बिलोकि अजहि रिसव्यापी। अनाचार शठता मेंधापी॥
शापित कीन्ह चहा तेहि बारा। पुत्रनेह नहिं शाप उचारा॥
सतगुण रहित रजोगुण लीना। भृगुनिजपितहिज्ञानमतिचीना॥
तजि अजधाम गयउ कैलासा। जहां उमा शिव करत बिलासा॥
हर अबिदूरि उपस्थित भयऊ। आशिर्बाद प्रणाम न कयऊ॥
मुनिहिं देखि मृड उठि हरषाई। चाहा मिलन सुकंठ लगाई॥
दो० शंकर दुकर पसार जब बैठि गयउ तब सोय।

हास्य जानि क्रोधित भये शशिधर द्विविधा भोय ॥
तासु निधन लगि लीन त्रिशूला । निजमनउमा कहा प्रभु भूला ॥
करिबिनती पद नीरज लागी । बिप्र न बधिय अबध अनुरागी ॥
पुनितुव अनुज बाल बय नाथा । कत अबूझकरि बिहारियमाथा ॥
शिशुताचूक साधुजन त्यागै । बरुअपमान करै नहिंखागै ॥
भव बुझाय साधे हिमिजाया । भृगु शंकरहिं तमोमय पाया ॥
परिहरिगिरि कैलास ऋषीशा । गरुड़ध्वजतट गयउ महीशा ॥
हरिमणि जटित सेज मय फेना । सोवत तेहि प्रभुभूपसुखेना ॥
रमा बामदिशि शोच बिहाई । हरिउर चरण हना मुनिजाई ॥
दो० कठिन घात पद उर लगी जागि परे असुरारि ।
भृगुहिदेखि तजिसेज हरिकस्यो बिबिध मनुहारि ॥
मुनिबर चरण चूमि धनु पानी । चापन लगेसकल मदभानी ॥
पुनि बर गिरा कहेउ सुनि सुनहू । मम अपराधक्षमौजनिगुणहू ॥
हृदय मोर अति कुलिश कठोरा । कोमल चरण ऋषय बर तोरा ॥
बिनजाने ममउर पद घाला । सहेउदंड बिनु काज बिशाला ॥
तजौ दोष निजमन परितोषी । ज्ञान निधान सुजन संतोषी ॥
सुनि प्रभुबचन बिनयमुनिकीना । जानि भेद निजमारगलीना ॥
मुनि मंडलिहि सपदि चलिआये । सरस्वती बरकूल सोहाये ॥
सब प्रसंग कहि ऋषिन सुनावा । सुनत मोह भ्रम बिपुल नशावा ॥
दो० अज राजस हर तमगुणी बूझ्यो विविध प्रकार ।
सत्य सतोमय बिष्णु हैं लघुबड़ करौ बिचार ॥
सो० मोह भूल बिध्वंसि जानि परम पददा हरिहिं ।
मुनिगण विविध प्रशंसि भक्ति अनूपम उरधरी ॥
अंतर चरित श्रवण अब करहू । प्रभुमाहिमा उदार उर धरहू ॥
उग्रसेन कृत राज सनीती । सेवक राम श्याम श्रुतिरीती ॥
प्रजा पाल धर्म्मिष्ट महीशा । शिवदधीचि हरिचंद सरीशा ॥
परिजन पुरजन निरत स्वधर्मा । कृतबिधान निगमागमकर्मा ॥
ज्ञानी गुणी धनी मद हीना । नारद शुक्र धनद पद क्षीना ॥

द्विज बर एक द्वारिका बासी। धार्मिक शीलवान गुणरासी॥
विधिबश तासु तनय मृतुपाई। सूनुमरण लखिद्विजअकुलाई॥
मृतक पुत्र नृप द्वारहिंलावा। आरत बलित क्रोधमनछावा॥
दो० उग्रसेन प्रति कटुबच्यो धर्म रहित अन्याय।
दुष्कर्मी लोभी अघी प्रगट अहौ भुवराय॥
तुम्हरे कर्म प्रजा दुख पावै। कपट धर्म सब भुवन कहावै॥
शिशु मम मुयउ पापतव भूपा। मोहिं प्रचास्यो बिनु चष कूपा॥
इमि बहुव्यंग नृपहि सो भाखी। गयउ भवन मृत सुत तहँराखी॥
यहि प्रकार बालक बसुवाके। मुये समस्त नयन मृतु ताके॥
क्रम क्रम राजद्वार धरि आवा। भूसुर धीरवान भ्रम छावा॥
नवम सूनु जन्मा गृह तासू। ग्रस्यो मृत्यु तेहिक्षण बणआसू॥
तब महिदेव अधीरज भयऊ। बिलपत सभा मांझ चलि गयऊ॥
घोर शब्द करि करत बिलापा। निधितन गत उर दारुण तापा॥
दो० प्रभुहि हेरि महिदेव कह धृक महीप अघखानि।
सेवक प्रजहि बहोरि धृक बसहि देश तेहि जानि॥
धृक धृक विविध भांति पुनि मोही। बसत नगरनृप पातकिजोही॥
जो करतेउं प्रथमैं पुरत्यागा। तौन मरत सुत अहौं अभागा॥
समरथ सकल भांति यदुराई। पैन भयउ दुख काल सहाई॥
रोदत बद्त बिपुल द्विज सोई। उतरनदेत सभासद कोई॥
सबहि अबाक दखि धनुधारी। बिकलितकहद्विजदुखितानिहारी॥
बकत निरर्थ बिप्र केहि काजा। सुनत सभासदनहिंपुनिराजा॥
धनुपति प्रजापाल कोउ नाहीं। कत खेदित हूजिय मनमाहीं॥
गुरु द्विज गो हरिजन रखवाई। करत नृपति जेहि धर्म सुहाई॥
दो० बीरब्रती दाया मयी सोन देखियत बिप्र।
जाहु भवन निश्चिंत तुम मम आयसु सुनि छिप्र॥
अबपुनि प्रसव काल जबहोई। ममढिग आयउ संशयखोई॥
सहसाहौं चलिहौं तव संगा। हरिप्रताप करिहौं मृतुभंगा॥
अर्जुन बचन सुनत द्विज कोपा। कोहसि मनुज अबुधि प्रणरोपा॥

बलहरि अतन अनिरुद्ध बिहाई । अपर सभासद को असभाई ॥
निजबल बिजय काल करि लेई । जीवदान मम सूनुहिं देई ॥
अभिमत बासव तनय बखाना । इला सुपर्व न मोहिं पहिचाना ॥
धनंजय हौं पांडु कुमारा । जगजित सुयश बिदित संसारा ॥
करौं प्रतिज्ञा इमि बर बानी । मृत्यु जीति तव हरौं गलानी ॥
दो० जोन बचावौं कालतौं सुनौ सत्य द्विजराय ।
मृतक सूनु जे सकल तुव अवशि मिलावौं आय ॥
सो० वृथाहोत प्रणतात गांडीव धनु सहित हौं ।
प्रविशि धनंजय गात तजौं जाउं पुनि नरक महँ ॥
प्रण सुनि तोषित गा निजधामा । प्रसवकाल आवा परिणामा ॥
गुडाकेश धनुलयो बिलोकी । चलेउ करन महिसुरहि अशोकी ॥
असुग पंजरा तेहि गृह लायो । असजहँ पवन प्रवेश न पायो ॥
संधानित कर चापनराचा । चहुंदिगसदन फिरै भ्रमसांचा ॥
अत्युपचार बुद्धि सजि ठाना । बिजयपालप्रभुगतिहिंभुलाना ॥
उपज्यो मृतक पुत्र भुवराई । चल्योपंथ निज हृदय लजाई ॥
मनमलीन मुख कांति दुराई । बैठेउ कृष्ण निकट शिर नाई ॥
जानि मर्म कछु कहन मुरारी । प्रभुकृतज्ञ निज जन मदहारी ॥
दो० तेहि पाछे आवत भयउ रोदत बदत भुदेव ।
बासव सुतहि बिलोकि तेहि कहे बचन कटु एव ॥
रेरेभीरु क्रूर बकवादी । धृकजीवन तव करसि बिषादी ॥
अधम नपुसंक बिप्र बिरोधी । कहि असत्य तव मोहिं प्रबोधी ॥
जोन समर्थ रहे मृतु जीता । तौप्रण कतखलकस्यो अभीता ॥
क्षत्री धर्म रहित अब भयऊ । मुखदरशाय अयशजगलयऊ ॥
सत्य प्रतिज्ञा चहत जोकीना । दूसर प्रणकस पुरइन लीना ॥
मृतक पुत्र मम देह मंगाई । भव सुलोक लागि करिय उपाई ॥
महागलानि ग्रसित मगराई । छुअतनसती कामि जनुभाई ॥
कर इषुधीशर कटि तूणीरा । गयउ शमनपुर कुंतिज धीरा ॥
दो० देखतही हरिसुनु उठि बिनय जोरि कर कीन्ह ।

स्वागत पूछि समोद पुनि भूप सुआसन दीन्ह ॥

केहिकारणआगमनबखानिय । अनुशासनिकचित्तअनुमानिय ॥
हेत बखानि कहा हरिमीता । महिषध्वज मुनि भाष सप्रीता ॥
बालक इहां तात नहिं आये । नत देत्यों मन मोदबढ़ाये ॥
बिस्मित दुखित तजेजिय आसा । चला बिहाय दंडप्रद बासा ॥
निजगति सरिस खोजबहुधामा । पै न मिले सुत श्रम बसु यामा ॥
द्वारावति पछिताय निदाना । आयो सुमिरत पद भगवाना ॥
दारु चिता रचि पावक लाई । जरन लाग बैठ्यो हरि ध्याई ॥
गर्ब रहित प्रभुदास निहारी । तेहि थल तब आये बनवारी ॥

दो० बिहसि हाथ गहि प्रभुभणेउ सखा तजौ कत प्राण ।
प्रण तुम्हार पूरण करौं अवशि गहौ धनु बाण ॥

यान मँगाइ चढ़े पथ साथा । खोजन सुवन चले यदुनाथा ॥
प्राची दिशि लंघे निधि साता । लोकालोक कुधर बिख्याता ॥
तासु निकट जब गये मुरारी । तज्यो स्वयान पंथ अघहारी ॥
गुफा भयानक निपट अँधेरी । प्रबिशब शक्ति न सुरपति केरी ॥
कोटिभानुवत चक्र प्रकाशू । अग्रागमन करत तमनाशू ॥
तेहि पाछे अर्जुन हरिजाहीं । झटित अत्रास शंक उरनाहीं ॥
मूंदि नैन पुनि प्रबिशे नीरा । पुर अनन्त पहुंचे सुनु धीरा ॥
तहां करत अहिनाथ बिलासा । मणिमय धाम सूरछबित्रासा ॥
नैन खोलि देखा बर गेहा । त्रिपुरभवन नहिंकोउसमतेहा ॥
शेष शीश सिंहासन सोहर । तेहिपर पूरण पुरुष मनोहर ॥
मेघबरण बिधुमुख अकलंका । जलज नैन धनु भ्रूनृपबंका ॥
अनुपम नासा रुचिर कपोला । शिर किरीटमणिजड़ितअमोला ॥

दो० श्रुति बिचित्र चितचोर शुचि राजत कुंडल लोल ।
भुज प्रलंब उर बिस्तरित गल मणि माल अमोल ॥
नखद्युति भानु अनेक सम उन्नत कंध बिशाल ।

कंबु कण्ठ उपवीत जनु त्रिसुर निवास नृपाल।

सुंदर उदर बिराज त्रिरेखा। केहरि कटि किमि कहिय विशेखा ॥
पद उपमा नहिं मम मन भासी। अमित पतितगण पापप्रणासी ॥
पीत बसन आच्छादित राई। विद्युद्भास कि सुरसरि गाई ॥
रूप मोहनी धारण कीन्हे। सोहत कृपासिंधु जन चीन्हे ॥
अज हर बासवादि सुर सेवैं। तन धारण फल जीवत लेवैं ॥
ब्रह्म बिलोकि चकृत मग भयऊ। श्यामरूप दूसर निरमयऊ ॥
परे दंड इव अर्जुन श्यामा। कीन्ह अाठगतिसुबिधिप्रणामा ॥
स्वारथ कृष्ण कहा सब गाई। सुनि बालक दिये तुरत मँगाई ॥

दो० अर्जुन उर संदेह लखि शेष शयन भगवान।
श्रीमुख इमि बरणत भये गिरा सुवेद प्रमान ॥

तुम विविकाय अंश मम अहहू। चितविचारि निज संशयदहहू ॥
भारहरण महिभा अवतारा। मम दासन सुखदेन अपारा ॥
सो तुम असुर अखिल संहारे। किये दासभव सकल सुखारे ॥
वृंदारक मुनिभये अत्रासा। जाहु भवन पूजीतव आसा ॥
बंदि चरण हरि आयसु पाई। पथ हरि चले शिशुन सँगलाई ॥
आय द्वारका द्विज सुत दीन्हे। दुख अघतासु दूरि प्रभुकीन्हे ॥
पुर मंगल छायो चहुं पासा। त्रिबिध नारिनर लहा सुपासा ॥
जोयह चरित सुनै चितलाई। पुत्र शोक तेहि होइ न भाई ॥

दो० इमि राखत प्रणदासकर मदनशाय यदुराय।
मंगल मूरुख मोहमय ताहि देत बिसराय ॥

इतिश्री मद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांद्विजकुमारागमनो
नामनवाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

दो० जिनकी मुक्तिन कोटि बिधि परे बिषय दधि मूढ़।

पारजात ते सरलगति हरियश त्राण अरूढ़ ॥
पहिचान्यो जान्यो सुन्यो गान्यो मान्यो नीक।
जग असार बड़ भार है हरि गुण गानव ठीक ॥
परखि परतनहिं मोह मय ज्ञान नैन बिनु सोय।
पारख अंधा खोटमणि कहत बुद्धि निज खोय ॥
गुरु दयाल पद उर धरै मारग सेवै तासु।
मंगल मत मुनिजन बदत मुक्तिलहै अनयासु ॥
युक्ति बिपुल बिषयानकी मुक्ति युक्ति है एक।
ध्यावै हरि परि हरि कपट तन मन सहित विवेक ॥

पुरी द्वारका श्याम बिराजैं। नव बसु चतुराशा नृप भ्राजैं ॥
प्रति गृह बित्त यक्षपति तूला। नरनारी गण मंगल मूला ॥
बसनाभूषण भूषित रहई। नवशृंगार वेष नव गहई ॥
पुर बीथिका अमल बर सोहैं। चरचित गंधि देव मन मोहैं ॥
रुचिर बजार न बरणि सिराई। जहं छाई त्रिलोक प्रभुताई ॥
देश देशके बणिक अपारा। क्रय बिक्रय कृत बस्तु बजारा ॥
नगरकुतूहल किमि कहिजाई। बहु लीला कृत लोग लुगाई ॥
जहंतहं बिप्र बेद ध्वनि करहीं। पाप समूह अघिनकर हरहीं ॥

दो॰ यदपिन पापी नगर कोउ प्रभुदरशन परसाद।
तदपि वेद संचित हरत गावत कबि मनुजाद ॥

घरघर आगम पाट पुराना। प्रभुगुण जन गावैंकल गाना ॥
बाहन विविध देखि मन लोभैं। रथगज तुरी पुवाहन शोभैं ॥
रथी महारथि हय गय स्वामी। शूर बीर रावत भट नामी ॥
भीर भूप दरबार अपारा। को कबि बरणि करै निरधारा ॥
मागध सूत बंदि जन गावैं। अस्त्र बस्त्र धन हाटक पावैं ॥
न्याय न्याय मय पक्ष बिहाई। उग्रसेन कृत हरि मतपाई ॥
किमि प्रभुता सब कहौं बखानी। माया ब्रह्म बास अनुमानी ॥
धनि यदुभूप हरण दुख दीना। आन चरित सुनु चतुर प्रबीना ॥

दो० पुर भूपति गृह बिभव अस हरि त्रिय गणके संग।
बिलसत नानारूप धरि विरचित अमित सुरंग॥

प्रेमासक्त त्रिया कहुं सोई। प्रभुहि सिंगारहि संशय खोई॥
कतहूं श्याम मिलित अनुरागा। आभूषहिं प्रमदान सरागा॥
बहु प्रकार क्रीड़ा अरु लीला। अकथकरहिं यदुनाथ सुशीला॥
एक समय निशि में जनपाला। करत बिहार संग त्रिय जाला॥
हरिकौतुक लखि बिपुल बराका। यानारूढ़ित सोहहि नाका॥
बीण पखावज भेर बजावें। तूर्य्य निशानश्याम यश गावें॥
जिन देखा यह चरित अलोका। प्रफुलित भये यथादिन कोका॥
करतकिलोल मनहिं असआवा। जलक्रीड़ाअबकरिय स्वभावा॥

दो० प्रियन साथलै दीन हितु गये सरोवर पास।
सब रसलीला बहुरची अभय दीख सुरदास॥

सरतट दिशि चकई पतिहीना। सारस भाषत गिरा प्रदीना॥
तासु शब्द सुनिकह यक नारी। पिय बियोग तें निपट दुखारी॥
कसन कंत सेवै मनबानी। जसहमस्वामि चेरिजगजानी॥
कोउ त्रिय कहत हेरि जलरासी। क्यों रतनाकर रहत उदासी॥
अह निशि थिरता गहतन ताता। कासु बियोग कष्टतव गाता॥
दूसरि कहतन जानत आली। भुवन रतनगत भयउ बिहाली॥
लखि निशिभानुबदतकोउबाला। दधिसुत राजरोगतोहि शाला॥
घटत बढ़त जेहि बशनित अहहू। तन मन मलिनन धीरज गहहू॥

दो० प्राणनाथ मुखदेखिवा गति मति तज्यो क्षपीश।
जसहम प्रेमासक्तहैं बिहसी नारि क्षितीश॥

कोकिल पर्बत मेघ समीरा। सब कहँ हंसहिं युवति बरबीरा॥
करि कौतूहल धाम बिराजे। काम कोटि लखि रूपहि लाजे॥
यहि प्रकार त्रिय सेवा करहीं। बांछित फल उर मोदहि भरहीं॥

षोडश सहस अष्टशत नारी । जो प्रथमैं बरणी बिस्तारी ॥
सबके दश दश तनय सोहाये । बीर ब्रती धर्मज्ञ कहाये ॥
अरु सबके घर यक यक कन्या । रूप शील गुण मय शुचिधन्या ॥
अगणित नृप तिनकी संताना । नहिं समर्थ जो करौं बखाना ॥
तीनि कोटि अरु सहस अठासी । यक शतषष्टि शाल परकाशी ॥

दो० पढ़त तहां संतान सब आगम निगम पुरान ।
यहि प्रमाण पाठक विविध किमिहौं करौं बखान ॥
एक एकते अधिक है रूप शील गुणमाहिं ।
यशी प्रतापी विभव मय केहिसन गाय सिराहिं ॥

छं० केहिबिधिबरणिगुणकहौं भूपतिश्यामगति अविचारहै ।
यहदशम हरियश सुचित भाषेउ पापगणक्षयकार है ॥
कह ब्रज चरित द्वारावती नर नारिजे कोउ गाइ हैं ।
अनयास कृष्ण प्रतापते मनि मुक्ति करतल लाइहैं ॥
द्विज क्षत्रधारी वैश्य पुनि सहशूद्र जो चित लाइकै ।
हरिचरित गावै कलुष भावै लहै हरिपुर धाइकै ॥
तप दानमख व्रततीर्थ फल निजहस्त सहजहि सोकरैं ।
मिटिजाय दुख उत्पति मरणक्यों जठरजननी पगधरैं ॥
निज बुद्धिसम हौं दशमबरणी सहज रिपु बैरहि तजो ।
यदुनाथ चरित उदारमन गुणि रैनि दिन चितदै भजो ॥
मैं मूढ़ हीन कुजाति बिद्या हीन यह भाषा रची ।
तजिदोषकबिताजानिगतिकबिसुजनहरियशमतिपची ॥
संसार यह दधि अगमहै बिनु तरणि को पारै लहै ।
गुरु बाक्य केवट नावहरियश बाट चढ़ि पारहि गहै ॥
कायस्थ हौं लघु बरण भव हरिभक्ति उत्तम जानिकै ।
यहदशमबरणयों मुदितमनसों स्वबश बुधिनिज आनिकै ॥

दो० बेद नैन मयनंद धर संबत मारग मास ।
शनितिथि हरिपूरण भयउ रुचिर ग्रंथअनयास ॥

धन्य गुरू धनि श्यामपद रजनिजमस्तकलाय ।
सुखद चरित बर्णनकरयो दुबिधा दोष बहाय ॥
जाके उर पुर ज्ञान बस जासु हृदय बुधि नैन ।
ताहि त्यागि भगवान यश जग दूसररसहैन ॥
जय जय राधारमण प्रभु जय गुरु देव दयाल ।
जन्म जन्म मंगल चहतपदरज प्रीति बिशाल ॥
जबलगि जग जीवत रहौं दुखरुज करै न पीर ।
अंत लहौं निर्बाणपद नशै अखिल भवभीर ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणि श्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांद्वारकाबिहार बर्णनोनाम नवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इतिश्रीमद्भागवते दशमस्कन्धेसमाप्तं शुभमस्तु

कविप्रियामूल ॥

श्रीकेशवदासजी रचित जिसमें काव्यके सम्पूर्ण अंग विधि सहित वर्णन कियेगये हैं ॥

कविकुलकल्पतरु ॥

भूषण चिन्तामणिजी रचित–जिसमें अति रुचिर छन्दों में नायकाभेदकी पूरीबातें लिखी हैं

सीतारामविवाहसंग्रह ॥

रामप्रताप चित्रकारी श्रीस्वामी जयनगरनिवासी रचित इसमें सीता महारानी और रामचन्द्रजीके विवाहकी सम्पूर्ण कथा छंदोंमें वर्णितहै कागज़ सफेद है ॥

॥ द्वादशमहावाक्यप्रश्नावली ॥

जिसमें प्रत्येक देवता व महात्माओं के नामपर प्रश्नका क्रम बांध कर प्रत्येक प्रश्नोंका फलाफल चौपाई में दर्शायागया है अर्थात् जिस नामपर अंगुली रक्खे उसी अंककी चौपाईमें फलाफल देखलेवै ॥

रसिकप्रियासटीक ॥

इसमें उत्तमोत्तम रसिक पुरुषोंको परमप्रिय कवित्त और सवैया छन्द वर्णित हैं और महाराजा काशीनरेशजी की आज्ञानुसार सरदार कविने भाषामें टीकाभी किया है ॥

शंकरदिग्विजय ॥

जिसका उल्था स्वामीरामकृष्णजी भारती ने अनेक छन्दों में किया जिसमें श्रीपरब्रह्म शिवस्वरूप धर्मरक्षक शंकराचार्यजी महाराजके जीवन चरित्र और अनेक मतवादियों से शास्त्रार्थ करके दिग्विजयके इतिहासहैं ॥

विजयचंद्रिका ॥

सरही ग्रामनिवासि मंगलदासजी रचित-इसमें जैमिनिपुराणांतर्गत श्रीरामचन्द्रजीके अश्वमेधकी कथा व श्रीजानकी परित्याग, लवकुश आदि का घोरयुद्ध अतिरमणीय मालती आदि अनेक छन्दों में वर्णित है ॥

सूरसागरजल्दीक़लम ॥

सूरदासजी विरचित-जिसमें अत्यन्त ललित २५ हज़ारके अनुमान भजनहोंगे जिनसे सैकड़ों कृष्णावतारकी विस्तारपूर्वक लीला वर्णितहैं ॥

रागप्रकाश ॥

राजामाधवसिंह कृत-इसमें अच्छे २ कल्याण, खेमटा, ठुमरी और अद्धा आदिहैं और सब रागोंके प्रमाण भी हैं ॥

ख़यालातमातादीन ॥

लखनऊ निवासी लालामातादीन कायस्थकृत- जिसमें ब्रह्म ज्ञान के मार्गपर लावनी व ख्यालहैं ॥

नवरत्नभाष्य बृन्दाबनविलास ॥

बाबू श्यामलाल रचित-जिसमें रासलीलाके सम्पूर्ण पद और गाने के दोहे लिखेहुये हैं ॥

बीणाप्रकाश ॥

तर्जुमा कानूनसितार भाषा पं॰ प्यारेलालकृत-इसमें सितारों केठाट, परदोंपर सीखने के लिये अंक, मिजराब वग़ैरहकी तरकीब भी और मीड़ोंके क़ायदे औरअन्तमें सबराग और रागिनियांपद समेत लिखीहैं जिनसे गान विद्या में बहुतही जल्दी बोध होताहै ॥

आनन्दसागर ॥

मुंशीजगन्नाथसहाय संग्रहीत-इसमें अच्छे २ प्राचीन व वर्त्त-मान समय के कवियोंके बनायेहुये उत्तम २ राग हैं ॥
